दबिस्तान-ए-सियासत

राक़िम दिनेश चन्द्र पुरोहित

उर्दु हास्य नाटक

प्रकाशक – राजवीणा मारवाड़ी साहित्य ,सदन.

अँधेरी-गली ,आसोप की पोल के सामने ,वीर-मोहल्ला ,

जोधपुर.

तौफ़ीक़ मियां – (होंठों में ही) – अरे जनाब यह बंदा उल्लू का पट्ठा नहीं, जिसमें कोई अक़्ल नहीं...हम ज़ानते हैं के, आप लोग हमें बाहर भेजना क्यों चाहते हैं? अजी साहब, हम वो परवाने हैं जो भामा का दम भरते हैं.... खामो ा रहकर, स्कूल के जर्रे–जर्रे की ख़बर रखते हैं!

(इसी पुस्तक में – अजज़ा (७) हुस्न की मलिका से..)

राक़िम दिनेश चन्द्र पुरोहित

प्रकाशक राजवीणा मारवाड़ी साहित्य सदन ,अँधेरी-गली ,वीर-मोहल्ला ,जोधपुर ,[राजस्थान.[

लेखक का परिचय

लेखक [राक़िम] का नाम –

दिनेश चन्द्र पुरोहित

जन्म तिथि - ११-१०-१९५४

जन्म - पाली मारवाड़

निवास स्थान - अंधेरी-गली,

आसोप की पोल के सामने,

वीर-मोहल्ला, जोधपुर

[राजस्थान].

संस्थान - राजवीणा मारवाड़ी साहित्य सदन, जोधपुर !

- शिक्षा - बी.एस.सी., एल.एल.बी., डिप्लोमा कोर्स इन क्रिमिनोलॉजी, पी.जी.डिप्लोमा कोर्स इन जर्नलिज्म !

शिक्षा विभाग से सेवानिवृत सन २०१३ में होना

लिखी गयी पुस्तकें [१] मारवाड़ी में हास्य नाटक - कठै जावै रै, कढ़ी खायोड़ा, गाड़ी रा मुसाफ़िर [२] मारवाड़ी कहानियाँ - मारवाड़ री कहानियाँ ! [३] उर्दु में - नाटक - दबिस्तान-ए-सियासत, कहानियाँ - बिल्ली के गले में घंटी ! [४] हिंदी में - संस्मरण डोलर हिंडो, नाटक - कहाँ जा रिया है, कढ़ी खायोड़ा, गाड़ी के मुसाफ़िर, भोला विनायक, कहानियों की पुस्तक - याद तुम्हारी हो..!

अनुभव - एक मारवाड़ी कहानियों की पुस्तक 'मारवाड़ री कहानियाँ" का लोकार्पण अगस्त २०१७, साहित्य शिल्पी, साहित्य सुधा और रचनाकार में नाटकों और कहानियों का प्रकाशन एवं पाठकों को पढ़ने के लिए ई बुक्स की श्रेणी में पुस्तकों का रखा जाना !

ई मेल - dineshchandrapurohit2@gmail.com

फ़ोन नंबर - **०२९१ - २६२३०४८**

मोबाइल नंबर - ७५९७९८०५०३, ६३७५२२८३६७

प्रकाशक और वितरक

राजवीणा मारवाड़ी साहित्य सदन,

१४९ अंधेरी-गली, वीर-मोहल्ला, जोधपुर

३४२००१

फ़ोन नंबर ०२९१ - २६२३०४८

मोबाइल नंबर ७५९७९८०५०३, ६३७५२२८३६७

इ मेल *dineshchandrapurohit2@gmail.com*
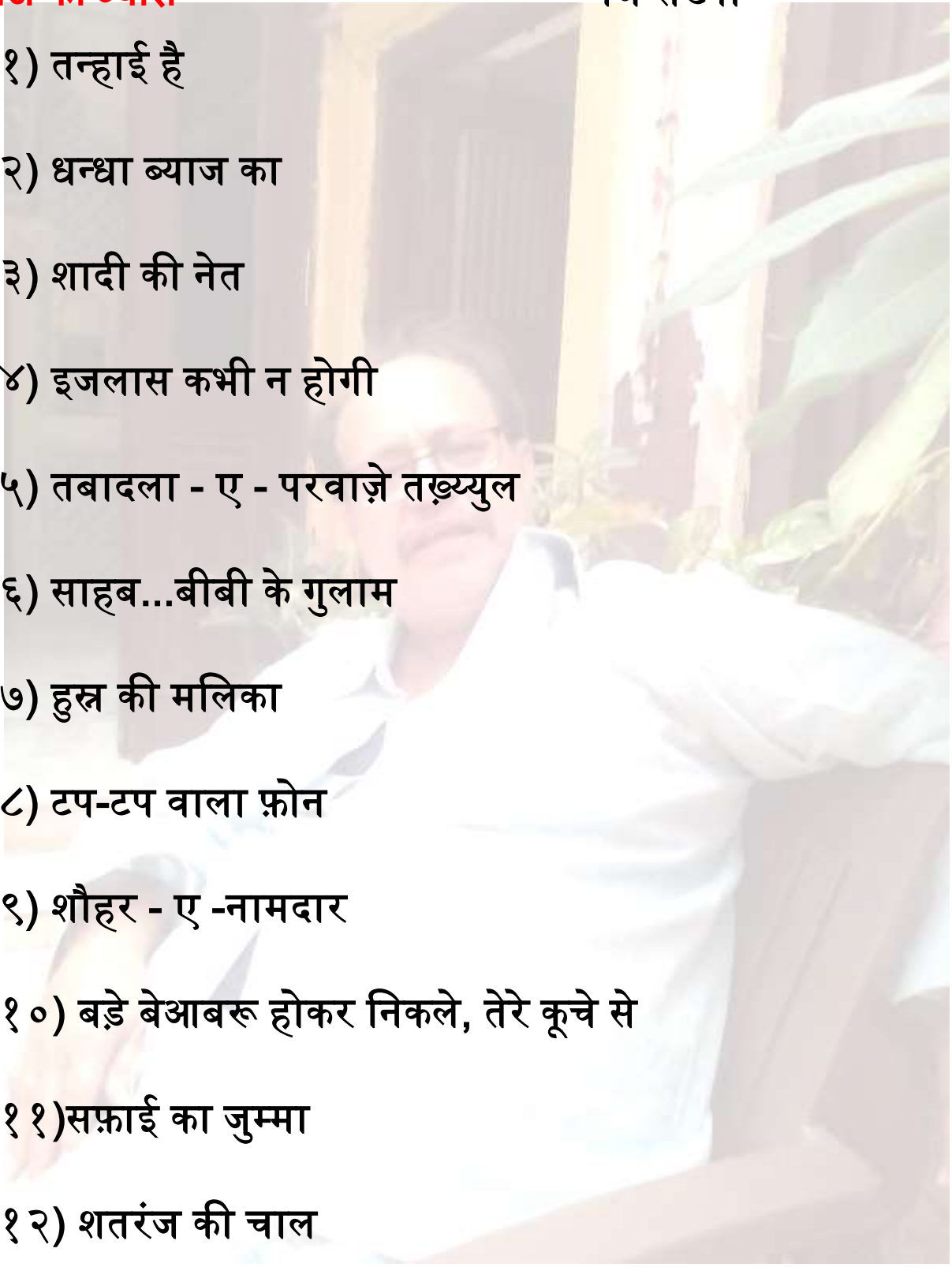
“रचनाकार’ द्वारा ई बुक्स पहला संस्करण २०१८

मूल्य.......

पेज का ब्यौरा **पेज संख्या**

(१३) लौट कर बुद्धु घर को आये

(१४) कलाग़ कभी लाय में नहीं जलता

(१५) आसेबज़द

(१६) जोलिन्दः बयाँ
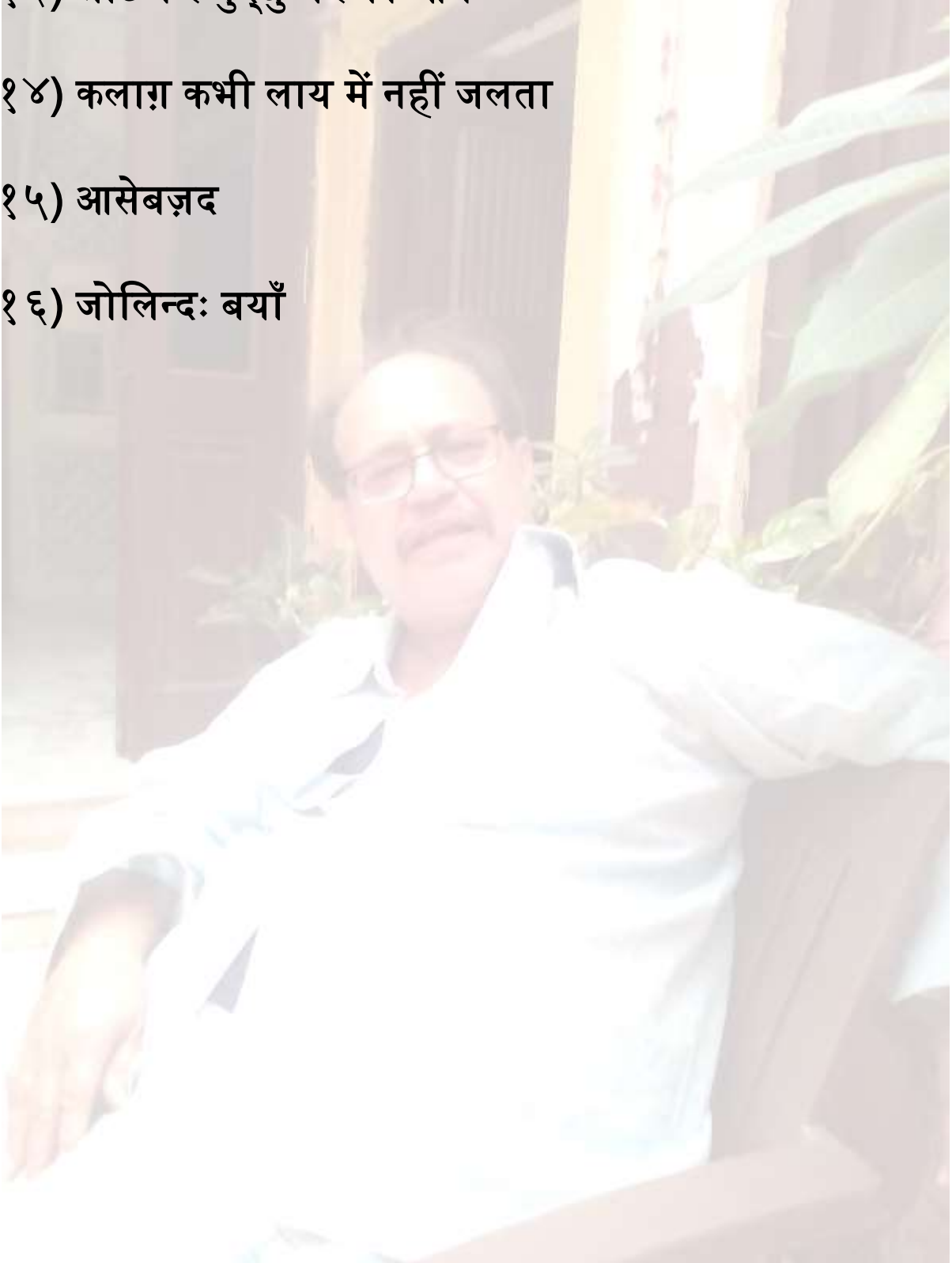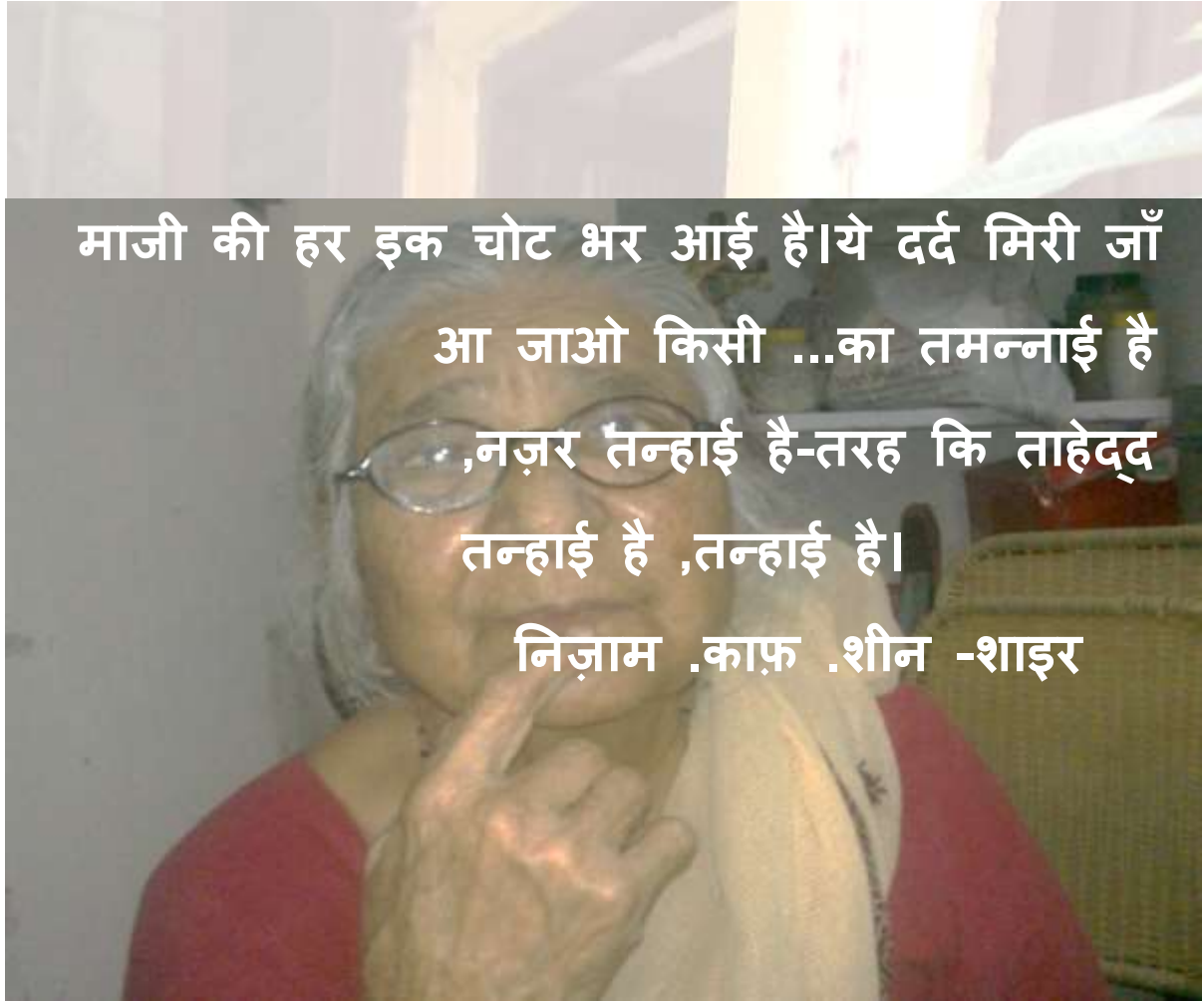
माजी की हर इक चोट भर आई है।ये दर्द मिरी जाँ

आ जाओ किसी ...का तमन्नाई है

,नज़र तन्हाई है-तरह कि ताहेद्द

तन्हाई है ,तन्हाई है।

निज़ाम .काफ़ .शीन -शाइर

(अजज़ा १) ‘तन्हाई है....।’ लेखक -०: दिनेश चन्द्र पुरोहित

(१)

(मंच रोशन होता है, मज़दूर बस्ती का मंजर दिखाई देता है। रफ़तह-रफ़तह रोशनी डेयरी रोड पर चली आती है, रोड पर लड़कियों की सेकेण्डरी स्कूल दिखायी देती है। उसके सामने

कतारबद्ध दुकानें दिखायी देती है। जिनमें ख़ास दुकानें, साबू भाई व मनु भाई की दुकानें हैं। साबू भाई कमठा मेटिरियल बेचने का काम करते हैं, जहां मनु भाई किराणे की दुकान चलाते हैं। अब एक नौजवान स्कूल का मेन गेट पार करता हुआ, सीधा सनसनाता हुआ बड़ी बी (हेडमिस्ट्रेस) के कमरे में दाख़िल होता है। उसकी बदतमीज़ी को बड़ी बी रशीदा बर्दाश्त नहीं कर पाती, और होंठों में ही अपनी भड़ास निकालती हुई कहती है।)

रशीदा - (होंठों ही में, कहती है) -बर्दाश्त ना होता, ऐसे बदतमीज़ लोगों को देखकर तबीयत बेकैफ़ हो जाती है। ऐसे ज़ाहिल बदतमीज़ इंसानों को अल्लाह पाक जहन्नुम में डाले, तो ज़्यादा अच्छा। क्या करें?

(तभी वह नौजवान, कमर पर दोनों हाथ रखकर तनकर खड़ा हो जाता है। फिर वह अपनी लाल सुर्ख़ आंखों से, बड़ी बी को जंगली ज़ानवर की तरह घूरता है। उसका यह रूप देखकर वह सोचती है के, ऐसे बदतमीज़ इंसान का यहां आने की वजह, क्या हो सकती है

? शायद दस्तावेज़ों का अटेस्टेशन तो नही ? बस, फिर क्या ? सारा गुस्सा म्युनिसपल्टी के वार्ड मेम्बरों पर उतर आता है। जो अक़सर इन नामाकूलों को यहां भेजते रहते हैं, अब वह अपने होंठों में ही बड़बड़ाने लगती है।)

रशीदा - (होंठों में ही, बड़बड़ाती है) - इस म्युनिसपल्टी ने इस स्कूल को भवन बनाकर क्या दे दिया, अब ये कम्बख़्त वार्ड मेम्बर आये दिन... अटेस्टेशन का मामला देकर, इन बदतमीज़ों को स्कूल में भेज देते हैं? भेजने के पहले, इन नामाकूलों को सरकारी ओहदेदारों से बात करने का सलीका तो सीखा देते?

(आख़िर, नाक-भौं की कमानी को चढ़ाकर वह गुस्से में कह बैठती है।)

रशीदा - (गुस्से में, कहती है) - आ जाते हो मियां, बदतमीज़ो की तरह? यह सरकारी स्कूल है, या बेग़म विक्टोरिया का पार्क ? इस इलाके में मेरे सिवाय कोई गजटेड अफ़सर नहीं है, जो मुंह खोले

यहां आ गये ? जाओ दूसरे दफ़्तर में, वहीं जाकर करवाना एटेस्टेशन।

नौजवान- (हकलाता हुआ, कहता है) - बे..बे... बेन.. जी...।

रशीदा - (फटकारती हुई, कहती है) - बे.. बे... क्या बकता है, नामाकूल ? बकरी है, क्या? चल, निकल बाहर।

(सकपका कर, वह नौजवान बाहर आ जाता है। उसके कमरे से बाहर निकलते ही, कमरे में बैठी मेडमों के कहकहे बुलन्द हो जाते हैं। कहकहे सुनकर, वह नौजवान खिल-खिलाकर हंस पड़ता है। फिर जेब से कंघा निकालकर, अपने खिचड़ी-नुमा बालों को संवारने लगता है। कमरे के बाहर, स्टूल पर बैठी जैलदार शमशाद बेग़म को कहता है।)

नौजवान- हम तो उस्ताद आये हैं, सरकारी मुलाज़िम बनकर। हमें डिस्को नचा दिया, बिना फ़रियाद सुने। लानत है, इन मेडमों को...

शमशाद बेग़म- हाय अल्लाह, क्या बक रहा है नामाकूल तू?

नौजवान- (तेज़ी खाकर, बोलता है) - क्या ज़ाने ये मेडमें, होता क्या है, डिस्को? ज़रा आ आ जाओ हमारे साथ, मंच पे। फिर सोचोगी तुम, खिसको खिसको।

(जेब से पर्स और साइकल की चाबी निकालता है, पर्स में लगी फिल्मी हीरो मिथुन चक्रवर्ती की फोटो निहारता है, फिर चाबी घूमाता हुआ आगे कहता है।)

नौजवान- (चाबी घुमाता हुआ, कहता है) - बाबा मिथुन अब हम हैं, अब देखो हमारा डिस्को। फिर लगाती रहना कहकहे, तब बोलेगी खिसको खिसको।

(इतना कहकर, वह मिथुन स्टाइल में डांस करने लगता है। उसके गाने की आज़ सुनकर, बच्चियां क्लसों से बाहर आ जाती है। फिर इस नाच रहे नौजवान को देखकर बच्चियां, खिल-खिलाकर हंस पड़ती है। इन बच्चियों पर निगाहें गिरते ही, वह अपने डांस की गति बढ़ा देता है। उसका डांस देखती हुई बच्चियां, ज़ोर-ज़ोर से तालियां पीटने लगती है। इधर बच्चियों का शोर, और उधर

शमशाद बेग़म की हंसी गूंज़ उठती है। अचानक शमशाद बेग़म की नज़र में, दीवार घड़ी के कांटें आ जाते हैं। रिसेस का वक़्त हो ज़ाने से, वह उठती है और जाकर घण्टी लगा देती है। अब शोर मचाती हुई बच्चियां, कलासों से बाहर निकल पड़ती है। फिर, मैदान में दौड़ पड़ती है। घण्टी के डण्डे को यथास्थान रखकर, ख़ाज़िन आक़िल मियां के कमरे की ओर क़दम बढ़ाती है। दरवाज़े पर दस्तक देकर, कहती है।)

शमशाद बेग़म- (दस्तक देकर, कहती है) - जनाब, अंदर आने की इजाज़त चाहती हूं ?

(रोकड़ बही लिख रहे आक़िल मियां, सर उठाकर कहने लगे।)

आक़िल मियां - आ जाइये, ख़ालाज़ान। पूछने की, क्या ज़रूरत?

शमशाद बेग़म- (अंदर दाख़िल होकर, कहती है) - आदाब अर्ज़ है, आक़िल साहब। एहबाब के तौर पर कहती हूं जनाब, के इन बेअक़्ल कोलोनी वालों को मुंह ना लगाया करो। आज़कल न ज़ाने कितने निक्कमें लोग सैर-ओ-तफ़रीह करने आ जाते हैं, स्कूल में?

आक़िल मियां - इससे, आपको क्या तकलीफ़ देखनी पड़ी..?

शमशाद बेग़म- (झुंझलाकर कहती है) - हाय अल्लाह, इन नामाकूलों को रोकती हूं तो बड़ी बी क्या कहती है? सुना, आपने? (रशीदा बेग़मकी आवाज़ में) ख़ाला, ये अवाम है अपने माई-बाप। इनकी ख़िदमत करना ही, आपका फ़र्ज़ है।

आक़िल मियां - (हंसते हुए, आगे कहते हैं) - आगे कहिये, ख़ाला। नहीं रोकने पर, मोहतरमा मुंह से अंगार उगलती रहेगी...आपको करना, क्या ? अपना काम करती रहना, और क्या ?

शमशाद बेग़म- अरे जनाब, वह तो ऐसे बोलेगी हुजूर के 'ख़ाला, आपको सलीका आता नहीं... मुलाकाती को अन्दर, कैसे भेजा जाता है ? ला हौल व ला कुव्वत, बेकैफ़ हो गयी मैं। लग्व छोड़ो, ख़ाला। पहले मिलने वाले की पर्ची भेजो, अंदर। फिर मेरी इजाज़त लेकर, उन्हें अंदर भेजा करो।

(अब इस लग्व के कारण, आक़िल मियां का ध्यान बंट जाता है। वे रोकड़ बही के जरब को सही नहीं कर पाते, आख़िर केलकुलेटर

लेकर जरब की क्रोस चैक करते हैं। फिर परेशान होकर, सर पर दोनों हाथ रखते हुए शमशाद बेग़म से कहते हैं।)

आक़िल मियां - (सर पर हाथ रखकर, आगे कहते हैं) - कितनी बार कह दिया ख़ाला, के क़ायदे का ध्यान रखा करो। तब तुम बेफ़जूल बकवास से, बची रहोगी।

(आक़िल मियां को सर पर हाथ दिये बैठे देखकर, शमशाद बेग़म उन्हें अचरच से देखती है। फिर गैस के चूल्हे के क़रीब जाकर, चाय बनाने लगती है। आक़िल मियां के कमरे के बाहर ही, दरवाज़े के पास मेज़ रखी है। जिस पर, गैस का चूल्हा रखा है। पास ही, एक पटवार साईज की अलमारी रखी हुई है। जिसमें 'टी-क्लब' का, चाय बनाने का सामान रखा है।)

शमशाद बेग़म-(चाय, फ़ानिज़ व मसाले के डब्बे, बाहर निकालती हुई) -जनाब, ऐसा लगता है..आपको शायद सर-दर्द ने, परेशान कर रखा हो.?फ़हवुल मुराद, चाय बनाकर लाती हूं हुजूर। एक मर्तबा सेरीडोन की गोली, चाय के साथ ले लीजिये।

(गैस का चूल्हा, जलाती है। अब चाय बनाने के लिये, भगोने में पानी डालकर चूल्हे पर चढ़ाती है।)

आक़िल मियां- (सर पर रखे हाथों को, हटाते हुए) -हां ख़ाला, आपने वज़ा फ़रमाया। ज़रा चाय में, तुलसी की पत्ती डालना भूलना मत।

शमशाद बेग़म- तुलसी की तो आख़िर कोई बड़ी बात नहीं है, हुज़ूर? वैसे भी आप जो कहोगे, दाल-चीनी, काली मिर्च, सूंठ वगैरा सब मसाले डाल दूंगी। मगर, आप पकड़ का बन्दोबस्त कर देते तो मालिक पूरे हुक्म की तामिल हो जाती।

आक़िल मियां - मतलब क्या है, आख़िर..? आपकी हर्ज मुर्ज क्या है, वही बयान कीजिये। ख़ाला आख़िर आप सोचती क्या है, अपने दिल में ? हमें, क्या मालुम ? क्या आपको कहीं जाकर, सांप पकड़ना है या..?

शमशाद बेग़म- (रूंआसी आवाज़ में) -ला हौल व ला कुव्वत, अरे जनाब सांप के दीदार ना करायें.. हुजूर नाम सुनकर, रौंगटे खड़े हो जाते हैं?

आक़िल मियां - फिर, सच क्या है?

शमशाद बेगम -रिदा से पकड़कर चूल्हे से उठाती हूं, भगोना। ख़ुदा रहम, कभी हाथ से भगोना छूट गया तो..हाय अल्लाह, जल गयी तो...किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहूंगी..?

(इतना कहा ही होगा शमशाद बेग़म ने, और इधर सनसनाता हुआ वहनौजवान आक़िल मियां के कमरे मे चला आता हैं... और, आक़िल मियां के पांव पकड़कर बैठ जाता है। बेचारे आक़िल मियां को क्या मालुम ? वे बेचारे तो रोकड़ बही लिखते-लिखते, बिना ऊपर देखे शमशाद बेग़म के साथ गुफ़्तगू करते जा रहे थे...अचानक जनाब पागल-ए-आज़म कमरे में दाख़िल होकर उनके पांव कसकर पकड़ लेते हैं। आक़िल मियां तो अपने काम में इस क़दर डूब गये थे, के उनको आस-पास क्या हो रहा है..?.कुछ मालुम ना पडा, मगर

जैसे ही उनके पांवों में झकड़न पैदा हुई..और, उनका ध्यान भंग होने लगा। उन्होनें पावों की तरफ़क्या देखा..? के, वो नौजवान ज़ोर लगाकर उनके पांव दबा रहा है? फिर, क्या? जनाब आक़िल मियां दर्द कम मारे चीख उठे, और कहने लगे।)

आक़िल मियां - कौन है रे, नामाकूल?

नौजवान- हुजूर..हुजूर, मैं आपका ख़िदमतगार आ गया हुजूर। अब तो आपकी, खूब ख़िदमत करूंगा हुजूर।

आक़िल मियां - यार सदका उतारूं, तेरा। कहीं, नज़र ना लग जाये मेरी..? ख़बर आयी है, के तू तो कमाल का डान्स करता है? तुझे तो कारचोब वाला इमामजामीन पहन लेना चाहिये, अब। अब यार, पांव तो छोड़ मेरे।

नौजवान- अरे वाह, हुजूर आप तो भूल गये? पहचाना नहीं, मुझको? अरे हुजूर, मास्टर साहब भंवरू खांजी का नेक दख़्तर नूरिया हूं। अरे हुजूर, आपकी दुआ से मेरा तबादला आपकी स्कूल

में ही हो गया है। आपकी ख़िदमत करने के लिये, आपकी स्कूल में आ गया हूं जनाब।

आक़िल मियां - ख़िदमत तो बाद में करना, अभी तो मेहरबानी करके मेरे पांव छोड़।

(नूरिया पांव छोड़ देता है, अब आक़िल मियां हाथ ऊपर करके जम्हाई लेते हैं। फिर, कहने लगते हैं।)

आक़िल मियां - अब तू ऐसा कर, मैं जोइनिंग लिख देता हूं तेरी। (जोइनिंग की दरख़्वास्त लिखकर, ंनूरिया को थमा देते हैं। फिर, नूरिया से कहते हैं।) ले नूरिया, अब इस पर दस्तख़त ठोक। फिर जाकर देकर आ जा, बड़ी बी को। जा.. जा, वापस आकर चाय पी लेना।

नूरिया - हुजूर, नूरिया अभी जोइनिंग देकर आता है, यह गया और यह आया। आकर ज़रूर पियेगा, गिलास भरकर चाय।

(दरख़्वास्त लेकर, नूरिया चला जाता है। नूरिये को लेकर, अब आक़िल मियां की फ़िक्र बढ़ जाती है..बेचारे मियां, सोचने बैठ जाते हैं।)

आक़िल मियां - (होंठों ही में) - यह बच्चा, भंवरू खांजी का नेक दख़्तर है। बड़े भाईज़ान जब सेकेण्ड्री स्कूल में पढ़ा करते थे, उस दौरान ये भंवरू खांजी उनके स्काउट टीचर रहे थे। अब यह कम्बख़्त नूरिया, इस रब्त को दूर की कौड़ी बनाकर ले आया।

(उधर रिदा से भगोना पकड़कर, शमशाद बेग़म भगोने को टेबल पर रखती है। इसके बाद, वह चीनी के प्यालों में चाय डाल देती है। चारों तरफ़ उबली हुई चाय की ख़ूश्बू फैल जाती है। मगर, न जाने क्यों आक़िल मियां के दिमाग़ में चल रहे विचारों में ख़लल पैदा नहीं हुआ ? वे तो अभी भी, होंठों में ही बड़बड़ाते जा रहे हैं।)

आक़िल मियां - (होंठों में ही, बड़बड़ाते जा रहे हैं) - ख़ुदा की पनाह। बड़ी बी ने देख ली है, इसकी बदतमीज़ी। अब, वह इस कोदन को माफ़ करने वाली नहीं। मगर मैं समझता हूं, के ऐसे

मंदबुद्धि के लोग साइकोलोजी ट्रीटमेण्ट से ठीक हो सकते हैं। बस, इन्हें सिम्पेथी मिलनी चाहिये। आख़िर, दिमाग़ भी एक तरह की मशीन है। बस, ऐसी मशीन की देख-रेख के लिये क़ाबिल इन्जिनीयर की ज़रूरत बनी रहती है।

(शमशाद बेगम मेज़ परएक चाय से भरा प्याला रखती है।प्याला रखने की आवाज़ से, आक़िल मियां के विचारों की कड़ियां टूट जाती है..अचानक सामने खड़ी शमशाद बेग़म को देखकर, आक़िल मियां कहते हैं।)

आक़िल मियां - देखो ख़ाला, यह नूरिया यानि नूर मोहम्मद चपरासी है। इस स्कूल में, तबादला करवा कर आया है। वापस आने पर, इसे चाय पिला देना। भूलना मत, ख़ाला।

(तभी नूरिया दरख़्वास्त देकर, लौट आता है। उसे देखते ही शमशाद बेग़म, चाय से भरा प्याला उसे थमा देती है। फिर कहती है, नूरिया से।)

शमशाद बेग़म- नूरिया चाय पी लेना, शर्म करना मत। आख़िर, तुम पराये नहीं हो। ज़ानते हो, तुम्हारे वालिद भंवरू खांजी मेरे दूर के फूफाजी ठहरे।

नूरिया - जो हुक्म, खालाज़ान। आपकी ख़िदमत करना मेरा फर्ज़ है, फ़रमाइये मेरे लायक कोई काम?

शमशाद बेग़म- (चेहरे पर मुस्कान लाकर, कहती है) - ठीक है, बन्ना। पहले चाय का प्याला थाम लो, और आराम से बैठकर चाय पी लेना। चाय पीकर चाय बनाने का भगोना, और जूठे बरतन मांज कर धो देना।

(फिर, शमशाद बेग़म चाय भरे प्यालों की तश्तरी उठाती है। तश्तरी उठाये, बड़ी बी के कमरे की तरफ़ क़दम बढ़ाती है। कमरे मे दाख़िल होकर, चाय के प्याले कमरे में बैठी सभी मेडमों व बड़ी बी को थमाती है। फिर, वह बड़ी बी से कहती है।)

शमशाद बेग़म- हुजूर, हमने सुना है, आप नूरिया बन्ना से नाराज़ है?

रशीदा बेग़म- देखो ख़ाला, कौनसा बन्ना और कौनसा टन्ना... ? मैं ऐसे कोदन इंसानो को,कभी बर्दाश्त नहीं कर सकती..... जो दफ़्तर में रहने के अदब से, अन्ज़ान हो। नूर मोहम्मद इसी तरह का कोदन इंसान है...

शमशाद बेग़म- हुजूर ज़ानती हूं, इसको हर घड़ी सामने देखना, आपको बर्दाश्त नहीं होगा। इसको ड्यूटी पर रखना, एक नसीबे दुश्मना ज़ान जोख़िम का काम है। मगर...

रशीदा बेग़म- मगर, क्या? पकोड़े तलकर, बताओगी क्या.. ? आख़िर आप चाहती क्या हो, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- (हाथ जोड़कर, कहती है) - हुजूर, यह बेचारा भोला है। दफ़्तर के तौर-तरीके ज़ानता नहीं। मगर, यह दिल का भोला है...रफ़्तह-रफ़्तह, सब सीख जायेगा।

रशीदा बेग़म- (तमतमाती हुई, कहती है) - क्या, सीख जायेगा? निरा उल्लू ठहरा, कोदन लंगड़ी बहू की तरह काम करेगा। दस-दस

आदमी चाहिये, इसको सम्भालने के लिये...जो, हर वक़्त हाज़िर रहे।

शमशाद बेग़म- हुजूर मकबूले आम बात यही है, मोहब्बत से इंसान क्या? पत्थर भी, मोम हो जाता है। फिर, यह तो हुजूर, इंसान ठहरा। आप नहीं ज़ानते, मेरे शौहर कैसी-कैसी वाहियात हरक़तेंकिया करते हैं? इतमीनान से झेलना पड़ता है, अफ़सोसनाक ज़हालत से गुज़रना पड़ता है मुझे।

रशीदा बेग़म-यह क्या, ख़ाला..? वापस अपने शौहर की तख़रीब पढ़ने बैठ गयी, आप..? आख़िर कहना क्या चाहती हो, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- हुजूर, आख़िर वह मेरे शौहर हैं। उनसे अमीक रब्त है, मुझे। दिल की तमन्ना है, कभी तो सुधरेंगे आख़िर। इनको कैसे छोड़ सकती हूं, हुजूर? आख़िर, अल्लाहताआला को क़यामत के दिन जवाब देना है, हुजूर। इसलिये...

रशीदा बेग़म- इसलिये, क्या? कुछ आगे कहो, ख़ाला।

शमशाद बेग़म- कहती हूं, आपका भला होगा...बस, आप इस पगले की नौकरी को सलामत रहने दें। इसकी बीबी-बच्चे, आपको दुआ देंगे। हुजूर अपने एज्यूकेशन महकमें में कई विकलांग, विधवाएं, तलाकशुदा वगैरा कई नाक़ाबिल लोगों को यह सरकार रोज़गार देकर सवाब लेने का काम करती है। फिर, आप रहम दिल..

(रशीदा बेग़म इतमीनान की सांस लेती है, फिर नूरिया की दरख़्वास्त थमाकर शमशाद बेग़म से कहती है।)

रशीदा बेग़म- जाओ, इस दरख़्वास्त आक़िल मियां को दे देना और कहना के, हाज़री रजिस्टर में दस्तख़त हो गये हो तो...इस जोइनिंग को फाईल में, नत्थी कर दें। यह भी कहना, दो मिनट के लिये मेरे पास आयें...किसी ख़ास मुद्दे पर, उनका मश्वरा लेना हैं।

शमशाद बेग़म- जैसी, आपकी मर्जी। अभी कहती हूं, उनसे।

(सभी चाय पीकर, ख़ाली प्याले मेज़ पर रख देते हैं। अब शमशाद बेग़म जूठे प्याले उठाकर, तश्तरी में रख देती है। फिर तश्तरी उठाकर वह, आक़िल मियां के कमरे की तरफ़ क़दम बढ़ाती है।

शमशाद बेग़म के रूख़्सत होते ही, अेक नौजवान कमरे में दाख़िल होता है। जिसका बदन इतना दुबला है, ऐसा लगता है..मानो अस्पताल से टी.बी. मरीज़ भागकर, यहां आ गया हो? या फिर उस इंसान की बढ़ी रीश (दाढ़ी) को देखकर ऐसा दिखायी देता है, जैसे कोई तिहाड़ जैल का कैदी जैल से छूट कर सीधा यहां आया हो? वह कमरे के अन्दर दाख़िल होकर, बड़ी बी को सलाम करता है।)

नौजवान- (झुक कर, सलाम करता है) - सलाम।

रशीदा बेग़म- (उसे सर से पांव तक, देखती हुई) - कौन हो, भाई? ज़ानते नहीं, यह सरकारी दफ़्तर है...अस्पताल नहीं? (होंठों में ही) आज़कल ये टी.बी. के मरीज़, खुलेआम अवारागर्दी पर उतर आये हैं, अभी थोड़ी देर पहले मेंटल अस्पताल का मरीज़ आ गया डयूटी जोइन करने और अब यह...?

(दोनों हाथ ऊपर करके, ख़ुदा से दुआ मांगती हुई रशीदा बेग़म अपने दिल में कहती है।)

रशीदा बेग़म- (दोनों हाथ ऊपर ले जाकर, होंठों में ही) -ख़ुदा रहम, इस स्कूल पर किस ख़बीस की बुरी नज़र गिरी है। सदका उतारूं...हाय अल्लाह, बुरे दिन आ गये हैं इस स्कूल के। ए मेरे मोला, कोई ख़ता मुझसे हुई हो तो, माफ़ कर। (बड़बड़ाते हुए) अस्पताल के चक्कर....

नौजवान- हजूर, वज़ा फ़रमाया आपने। अस्पताल के चक्कर काटता-काटता आख़िर थक गया हूं, हुजूर। आप मेरे लिये अल्लाह से दुआ मत मांगे, पैसे का काम पैसे से ही सलटता है, हुजूर। बस तनख़्वाह दिला दीजिये।

रशीदा बेग़म- (होंठों में ही) -हाय अल्लाह, यह तो वही ख़बीस है...जो अपनी अबसेण्टी तो भेज देता है, मेरे पास। मगर, यहां आकर ड्यूटी जोइन नहीं करता? (दुबले नौजवान से) अबे ओ बोतल में पड़ी पुरानी शराब, जहां काम करता है तू...वहीं जाकर तनख़्वाह मांग।

नौजवान- हुजूर, यही अर्ज़ कर रहा हूं, आपसे। दफ़्तर से रिलीव होकर आपके पास आ गया हूं, इस स्कूल ड्यूटी जोइंनंग करने। ड्यूटी पर ले लीजिये, मुझे...फिर, मेरी बकाया तनख़्वाह दिलाने के हुक्म इज़रा करें।

पहलू में बैठी ग़ज़ल बी - बड़ी बी, बेचारे पर रहम करें। तनख़्वाह नहीं मिलने पर, आख़िर दुखीः होकर इसने तबादला-ए-ख़्याल...ं

रशीदा बेग़म- (अचरच से) - क्या कहा? क्या तुम सच कह रहे हो...

नौजवान- हां हुजूर, आपने सही सोचा। हमारा तबादला आपकी स्कूल में हो गया है, अब ड्यूटी जोइन करके आपकी खूब ख़िदमत करूंगा। आप बेफ़िक्र हो जायें, हुजूर।

(इतना कहकर वह नौजवान अपनी जेब से, जोइनिंग की दरख़्वास्त निकालता है। निकालकर, बड़ी बी को थमाता है। बड़ी बी उस पर दस्तख़त करके दरख़्वास्त लौटाती है, दरख़्वास्त लेकर वह नौजवान कमरे से बाहर आ जाता है। उसे वहां बरामदे में खड़े,

चपरासी चुग्गा खां दिखायी देते हैं। वे करीने से क्रीज़ की हुई सफ़ेद सफ़ारी पहने हुए हैं, उनकी परसनल्टी एक सभ्य दफ़्तरे निगार के समान लगती है। उनको स्कूल का दफ़्तरे निगार समझ कर, वह नौजवान उन्हें सलाम कर बैठता है।)

नौजवान- (सलाम करता हुआ, कहता है) - सलाम, साहब। बड़ी बी ने भेजा है, कहा है के जोइनिंग की दरख़्वास्त आपको दे दूं। (दरख़्वास्त थमाता है) हुजूर लीजिये, मेरा नाम मोहम्मद अली है..प्यार से सभी मुझे, मेमूना भाई कहते हैं।

(मेमूना भाई की बात सुनकर, चुग्गा खां एक दफ़्तरे निगार की तरह अकड़कर खड़े हो जाते हैं। फिर, उन्हें सर से लेकर पांव तक घूर कर देखते हैं।)

चुग्गा खां - (सर से पांव तक, उन्हें देखते हुए) - हुमऽऽ ठीक है, ठीक है। अब, जी लगाकर काम करना।

मेमूना भाई - (ख़ुश होकर) - हुजूर, आपको कभी भी शिकायत का मौक़ा नहीं मिलेगा।

(दरख़्वास्त लेकर, चुग्गा खां सोचते हुए दिखायी देते हैं।)

चुग्गा खां - (होंठों मे ही, कहते हैं) - जब तक तू नहीं ज़ानता के, मैं कौन हूं? तब तक मियां, तेरे जैसे कोदन से खूब ख़िदमात लेता रहूंगा। कबूतरों को छोड़ो, मैं तो वह परवाना हूं जो इंसानों को भी चुग्गा डाल सकता है।

(फिर चेहरे पर मुस्कान लाकर, चुग्गा खां कह बैठते हैं।)

चुग्गा खां - जोइनिंग मैं अपने पास रख लेता हूं, मेमूना भाई। रजिस्टर में आपके दस्तख़त, बाद में करवा दूंगा। अभी मियां जाओ, वहां रखा है झाड़ू (झाड़ू रखने की जगह की तरफ़, उंगली से इशारा करते हैं) बस आप झाड़ू लेकर, कमरा नम्बर एक से छः तक की सफ़ाई करके आ जाओ। फिर वापस आकर, चाय के प्याले धो डालना।

(बरामदे में बैठकर चाय पी रही शमशाद बेग़म, मेमूना को देखकर कह बैठती है।)

शमशाद बेग़म-(मेमूना भाई से) -अरे मियां, चाय के प्याले तो धुलते रहेंगे। पहले तुम बाहर दुकान से दूध लेकर आ जाओ, पहली पारी ख़त्म होकर दूसरी पारी चालू होने वाली है। सफ़ाई भी वापस आकर, कर लेना। ये लो, दूध के पैसे।

(मेमूना दूध के पैसे व ख़ाली बरनी लेकर, रूख़्सत होते हैं। तभी नूरिया आता है, चुग्गा खां उसे रोक कर स्टूल पर बिठाते हैं। फिर नूरिया को हिदायत देते हुए, कहते हैं।)

चुग्गा खां - देख नूरिया, तूझे अगर स्कूल में रहना है तो, सबकी आंखों का तारा बनकर रहना होगा।

नूरिया - (पागलों की तरह, चाबी घुमाता हुआ कहता है) - हां जी, दिल का तारा बनेगा...डिस्को डान्स करेगा, जनाब आप मेरा डिस्को डान्स देखना चाहोगे? चलिये, आपको डान्स करके दिखाता हूं। (डान्स करता हुआ गाने लगता है) 'मैं हूं डिस्को डान्सर' (डान्स रोक कर, कहता है) अजी साहब, हमारी डान्स पार्टनर छमकछल्लो ऐश्वर्या को तो बुला दीजिये।

शमशाद बेग़म- तुम्हारी ऐश्वर्या को, कहां ढूंढे ? कर ले, किसी दूसरे को एडजस्ट।

नूरिया - वाह ख़ाला, क्या बात कही? चलिये, आपका हुक्म मान लेते हैं। ऐश्वर्या न सही तो, क्या? (चुग्गा खां की बांह पकड़ता है) चलिये ख़ाला, हम इस हेमा मालिनी से काम चला लेंगे। मगर, आप भी अपने राजेश खन्ना को लेकर आ जाइये। ख़ूब अच्छा नाचती हैं आप, हेलन की तरह।

(फिर क्या? वह नूरिया तो जबरा ठहरा, बेचारे चुग्गा खां का हाथ पकड़कर उन्हे नचाने लगा। बेचारे चुग्गा खां की बुरी हालत हो गयी, अब कैसे इस पागल से पिण्ड छुड़ायें? किस्मत अच्छी थी उनकी, तभी आक़िल मियां तशरीफ़ रखते हैं। आक़िल मियां को देखते ही, नूरिया डर कर चुग्गा खां का हाथ छोड़ देता है। हंसी को दबाकर आक़िल मियां, चुग्गा खां से कह बैठते हैं।)

आक़िल मियां - चुग्गा खां, इस नूरिया बन्ना को पाठ पढ़ाते रहना। बड़े काम की चीज़ है, परसों हाफ ईयरली इमतिहान चालू होगें।

इसे अपनी नाइट ड्यूटी में साथ ले लेना, आपकी दी गयी ट्रेनिंग से यह कोदन कुछ सीख लेगा। बड़ी बी ने बुलाया है, अब चलता हूं।

(आक़िल मियां जाते हैं, उनके पदचाप की आवाज़ सुनायी देती है। अब बड़ी बी के कमरे में, आक़िल मियां दाख़िल होते हैं। बड़ी बी एक रजिस्टर लिये बैठी है, उनके पहलू में ग़ज़ल बी कुर्सी पर बैठी हुई है।)

आक़िल मियां - फ़रमाइये, हुजूर।

रशीदा बेग़म- एक बात कह देती हूं, ध्यान से सुन लेना। सरकारी नौकरी में ना तो रिश्तेदारी चलती है, ना चलती है ज़ान-पहचान। मुझे मालुम है, आपने......

आक़िल मियां - क्या ज़ानती हैं, हुजूर?

रशीदा बेग़म- आपने नूरिया का केस, थोड़ी सी ज़ान-पहचान के कारण लिया है। मैं चाहती हूं, आप इस कोदन के मामले में किसी तरह की सहूलियत नहीं बरतोगे। हमारे लिये सभी मुलाज़िम बराबर है, समझ गये? (ग़ज़ल बी की तरफ़, मुंह करके) देखो गज़ल

बी, इमतिहान के रोज़ आप मांगोगी डोरा और यह कोदन ले आयेगा रस्सी।

ग़ज़ल बी - (हंसती हुई, कहती है) - वज़ा फ़रमाया, आपने। कुछ नहीं, मेडम। अगर यह कोदन रस्सी लायेगा तो, मैं इसे ही बान्ध दूंगी।

रशीदा बेग़म- रस्सी से बान्धकर, इसे बन्दर की तरह नचाते रहना। फिर कोई आपको मदारी कहे, तब हमें दोष देना मत।

ग़ज़ल बी - बन्दर बनाकर नचायें, या इससे स्कूल की चौकीदारी करवायें? यह काम ठहरा, आक़िल मियां का। आख़िर, वे ठहरे इनके निज़ाम। जहां आक़िल मियां जैसे निज़ाम, और आप जैसी तुजुर्बेदार ऑफ़िसर। वहां हम लोगों को, मदारी बनने की काहे जुरअत करें..?

रशीदा बेग़म- क्यों झूठी तारीफ़ कर रही हो, हम कहां इतने तुजुर्बेदार?

गज़ल बी - भूल गयी मेडम, जिस स्कूल से आप यहां आयी हैं, वहां केदफ़्तरेनिगार को छठी का दूध पीलाया था आपने..? बेचारे को सस्पेण्ड करवा दिया, कोर्ट का हुक्म लाकर। अब कम्बख़्त भूल गया होगा, सरकारी नौकरी के साथ प्राइवेट धन्धा कैसे किया जाता है..?

रशीदा बेग़म- वक़्त वक़्त की बात है, गज़ल बी। दिनमान का असर है, देख लो आप। आज़कल ये छोटे-मोटे टटपूजिंये चढ़ आते हैं स्कूल में, फ़रमाते हैं 'डेवलपमेण्ट कमेटी के ख़र्चां का हिसाब दीजिये।' हम ख़ुद चेयरमेन है इस कमेटी के, वे आख़िर है कौन...जो, हमारी ओर उंगली करनी की जुरअत करें?

गज़ल बी - बड़ी बी, परेशानियां इंसान ख़ुद पैदा करता है। उसे अपनी ग़लतियां, कभी दिखायी नहीं देती।

रशीदा बेग़म- क्या बक ही हो, ग़ज़ल बी? ध्यान है, तुम्हें? महकमें ने तजवीज़ आख़िर (फाइनल जज़मेण्ट) लेने का हक़ मुझे दिया है, कमेटी की चेयरमेन मैं ख़ुद हूं। किस हक़ से ये टटपूजिंये पूछते हैं

मुझे, के 'मैं उनको हिसाब देऊं? अब कहिये ग़ज़ल बी, मैने कौनसी परेशानी अपने लिये पैदा की है?

ग़ज़ल बी - मैने ऐसा कुछ नहीं कहा, बड़ी बी। आपका नाराज़ होना नागवर है, हमने तो ख़ाली मकबूले आम राय रखी है। बस यही बताया है आपको, के 'इंसानी फ़ितरत क्या काम करती है?'

आक़िल मियां - बड़ी बी, वक़्त काफ़ी बीत गया है.. अब मैं ज़ाने की इजाज़त चाहता हूं।

(बड़ी बी कोई जवाब नहीं देती है, इधर क्लासों में टीचर नहीं होने से बच्चियों का शोर-गुल बढ़ जाता है। फिर, क्या? ग़ज़ल बी उठ कर खड़ी हो जाती है, उन्हे शक हो जाता है के 'कहीं बड़ी बी उन पर, क्लास ख़ाली रखने का आरोप नहीं जड़ दें ? अब वह इस डर को ज़ाहिर नहीं होने देती, और फिर खिड़की के पास जाकर बाहर झांकती है। मगर अब उसे शोर-गुल सुनाई नहीं देता है, क्योंकि पी.टी.आई. मेडम के राउण्ड काट लेने से बच्चियां चुप-चाप कक्षा में बैठ गयी है। तसल्ली हो जाने के बाद, वह बड़ी बी के पास रखी

कुर्सी पर आकर बैठ जाती है। मगर आदत से लाचार ग़ज़ल बी, बिना बोले रह नहीं सकती। आख़िर अपनी कतरनी की तरह चलने वाली ज़बान, चला बैठती है।)

ग़ज़ल बी - इंसान को सुधारा कैसे जाय, मेडम? बस, आपको फ़ितरत के कानून को एक बार नज़र देखना होगा। देखिये, एक गोपनीय ख़बर आपको सुनाती हूं...आपको। आपसे रिक्वेस्ट करूंगी, आप सुनने के बाद किसी से यह नहीं कहोगी के... यह ख़बर, मैने आपको दी है।

रशीदा बेग़म- कहने में, क्या उज्र है? वल्लाह वसूक की बात है तो, आपको वसूक होना चाहिये हम पर। अगर वसूक नहीं रहा, तब काहे कहने की तकल्लुफ़ करती हो? मत कहिये, आप।

गज़ल बी - बात को समझिये, हुजूर। मुझे डर है, कहीं यह मआमला बाइसेरश्क का ना बन जाये? जो ख़बर मैं आपको दे रही हूं, बाद में इमतियाज़ बी यही कहेंगी के 'जलन के कारण ग़ज़ल बी

ने हमारे खिलाफ़ यह मसाला परोसा है। अब आगे क्या कहूं मेडम, आपको..

रशीदा बेग़म- कह दीजिये, अब मत चूको कहने में। नहीं कहने से अगर पेट का दर्द चालू हो गया, तो आप मुझे दोष मत देना।

ग़ज़ल बी - मैं यह कह रही थी, हुज़ूर। के आज़ इमतियाज़ मेडम, दूसरी मेडमों को आप भड़का रही थी.... के, 'यह ग़ज़ल बी ख़ूब मस्कागिरी करती है, अपनी बड़ी बी की।

रशीदा बी - आगे बको।

ग़्ाज़ल बी -इसलिये ख़ुश होकर, बड़ी बी ने मुझे लोकल इमतिहान इन्चार्ज बना दिया। अब आप यह बताइये, क्या आप अपनी चमचागिरी करवाना पसंद करती हैं?

रशीदा बेग़म- (गुस्से में) - उस इमतियाज़ की, इतनी हिम्मत? (गुस्से को दबाती हुई) और भी, कुछ कहा होगा?

गज़ल बी - आगे कहा, के 'बड़ी तो है, ख़बीस की चाची, और इसकी यह चमची ग़ज़ल बी है शैतान की ख़ाला। यह वही शख़्स है, जो पारी इन्चार्ज आयशा मेडम की हर गति-विधि की रिपोर्ट..

रशीदा बेग़म - (नाक-भांं सिकोड़ती हुई) - और क्या बोला, इस ख़न्नास की बच्ची ने..?

ग़ज़ल बी -बड़ी बी नाम की ख़बीस की चाची को दे आती है, पूरी रिपोर्ट। यही कारण है, इस ख़बीस की चाची को पूरी जानकारी रहती है.. के, आयशा कब आती है, कब जाती है?'

रशीदा बेग़म- और कुछ कहना है, आपको?

ग़ज़ल बी - आप सोचिये, हुजूर। मैने क्या ग़लत कहा? यही कहा 'जब ख़ुद इन्चार्ज बच्चों की तरह, स्कूल छोड़कर घर भग जाती है। वो ख़ुद बच्चियों को, स्कूल के क़ायदे क्या सीखायेगी?'

(चुप्पी छा जाती है, थोड़ी देर बाद रशीदा बेग़म आक़िल मियां पर निगाह डालती हुई कहती है।)

रशीदा बेग़म- उचक लट्टू की तरह, खड़े क्या हो?बैठ जाईये, ज़नाब।

(आक़िल मियां पास रखी कुर्सी पर, बैठ जाते हैं। रशीदा बेग़म के सामने आयशा की बुराईयों का कच्चा चिट्ठा खुल ज़ाने पर, अब वह आयशा को सही रास्ते पर लाने की स्कीम सोचने लग जाती है।)

रशीदा बेग़म- (सोचती हुई) - बहुत चालाक है, आयशा। अब ऐसा करती हूं, जिससे मज़बूर होकर आयशा ख़ुद मेरे पास आकर गिड़गिड़ायेगी और कहेगी के 'पारी इन्चार्ज उसे नहीं रखा जाये।' फिर पारी इन्चार्ज बनाऊंगी, इस ग़ज़ल की बच्ची को। तब इसे भी मालुम पड़ेगा, के 'स्कूल के क़ायदे, क्या होते हैं?

(ग़ज़ल बी आयशा की बुराई करके, ख़ुश हो जाती है। अब, आगे क्या होगा ? ऐसी बातें सोचना, उसकी फ़ितरत में शामिल नहीं। उधर बड़ी बैठी-बैठी सोचती जा रही है, के अगला क़दम अब क्या उठाना हैं ?)

रशीदा बी - (होंठों में ही) - 'उलाहने देने जितने आसान हैं, उतना ही क़ायदों को निभाना मुश्किल है?' अब अगला क़दम उठाकर, इन दोनों को आईना दिखाना ज़रूरी हैं। फिर,इस इमतियाज़ की बच्ची को..?

(उधर ग़ज़ल बी अभी भी सोचती जा रही है, किस तरह इमतियाज और आयशा नाम की चुहिया को रशीदा बी नाम की बिल्ली के सामने लाना है ? फिर, क्या ? होने वाले इस आपसी वक़्ती इख़्तिलाफ़ का फ़ायदा, कैसे उठाना है ? अब इधर रशीदा बी के दिमाग़ में अलग से हलचल होना वाज़िब है, वह बैठी-बैठी सोचती जा रही है...किस तरह, इन दोनों चुहिया को काबू में करना है ? और उसके बाद, इमतियाज़ नाम की बंदरिया को कैसे नचाना है..?)

रशीदा बी - (होंठों में ही) - ये दोनों आपस में लड़ेगी, बाईसे इफ़्तिराक़ से मेरे पास आयेगी और वे एक दूसरे की कमज़ोरियां बताती जायेगी। इनकी कमज़ोरियां मालुम करने के बाद, हम इन्हे

बतायेंगे के ‘क़ायदा किसे कहते हैं? और उसे, लागू कैसे किया जाता है?’

(पूरी प्लानिंग सोचकर अब, रशीदा बेग़म आक़िल मियां से कहने लगी।)

रशीदा बेग़म- आक़िल मियां, ज़रा आप आयशा बी के ख़िलाफ़ दफ़्तरे हुक्म तैयार करें। आप ज़रा क़लमबन्द करें, के ‘उनके पारी इन्चार्ज होने व टेन्थ क्लास की क्लास टीचर होने की हैसियत से, हमने उनको हुक्म दिया था कि...

आक़िल मियां -क्या हुक्म दिया था, आपने?

रशीदा बेग़म- हुक्म यह दिया था ‘जो बच्चियां सेकेण्ड्री बोर्ड में बैठ रही है, उनकी डेट ऑफ बर्थ स्कोलर रजिस्टर से मिलान करके आपको वेरीफाई करनी है। मगर, उन्होने हुक्म-अदूली की है।

आक़िल मियां - ठीक है, जी। अब, आगे क्या लिखूंं?

रशीदा बेग़म- अभी तक, रिपोर्ट पेश नहीं की है।

आक़िल मियां - लिख दिया, जी। अब आगे क्या लिखूं?

रशीदा बेग़म- लिखिये, इसलिये आज़ छुट्टी के पहले वे अपना जवाब तैयार कर मेरे समक्ष पेश करें। उसमें आगे यह भी लिखें कि, उन्होने हुक्म अदूली क्यों की? क्यों नहीं उनके ख़िलाफ़, कोई एक्शन लिया जाये?' समझ गये, आक़िल मियां?

आक़िल मियां - आपके मेहर से सब लिख दूंगा, अब ज़ाने की ़इजाज़त चाहता हूं।

रशीदा बेग़म-अभी कहां रूख़्सत होते हो, मियां? अभी तक आपने यह नहीं बताया क़ि, नूर मोहम्मद का क्या करना है? उसका लड़खड़ा कर चलना, कमर पर हाथ रख कर मेरे सामने....

(कहती-कहती, रशीदा बेग़महांप जाती है। फिर लम्बी सांसें लेती हुई, आगे कहती है।)

रशीदा बेग़म- (लम्बी सांसें लेती हुई) - बदतमीज़ी से दारूख़ोरे की तरह, लाल-लाल आंखों से घूरते हुए, उसका बात करना...अब

बर्दाश्त के बाहर है, मैं उसे एक मर्तबा दफ़्तर में देखना नहीं चाहती।

आक़िल मियां - उसको नाइट ड्यूटी दे देंगे, हुज़ूर। आप बिल्कूल भी फ़िक्र ना करें, सब इन्तज़ाम हो गया है। परसों हाफ ईयरली एक्ज़ाम में नाइट ड्यूटी के लिये दो आदमी चाहिये, एक तो चुग्गा खां है और दूसरा यह नूरिया उनकी शागिर्दी में साथ रह जायेगा। बाद में...

रशीदा बेग़म- ख़ाक नाइट ड्यूटी देगा, यह कोदन इतना शातिर है। रात में पूरे मोहल्ले वालों को जगाकर, उनको डिस्को डान्स नचा देगा?

आक़िल मियां - नहीं हुज़ूर, ऐसा नहीं होगा। चुग्गा खां एक क़ाबिल आदमी है। वे अपने इस शागिर्द को सीखा देंगे कि, नाइट ड्यूटी कैसे की जाती है? फिर क्या? क़ाबिले एअतबार है, आप ख़ुद बेकरार रहेगी यह मुज़दा सुनने के लिये कि, 'नूर मोहम्मद सुधर गया।'

रशीदा बेग़म- चुग्गा खां को कह देना कि, पूरी जिम्मेदारी के साथ यह काम करें। हिदायत दे देना कि, काम में चूक आने पर वे गांव जा नहीं पायेंगे। क्योंकि, उनकी छुट्टी का क़ाबिलियत एतराफ़ नहीं होगा।

आक़िल मियां - ज़रा एक बार, कमरें में जाकर आ जाऊं? फिर, तसल्ली से रिपोर्ट दे दूंगा।

(आक़िल मियां रूख़्सत होते हैं, उनकी पदचाप सुनाई देती है। मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, आक़िल मियां अपने कमरे में बैठे दिखायी देते हैं। ड्यूटी रजिस्टर लिये बैठे हैं, उन्हे एक ही फ़िक्र है...चपरासियों की ड्यूटी किस तरह सेट की जाय? फिर उन्हे ख़्याल आता है, चुग्गा खां का। उनका ख़्याल आते ही, वे होंठों में ही बड़बड़ाने लग जाते हैं।)

आक़िल मियां - (होंठों में ही) - यह चुग्गा खां तो चला गया, घर। यहां ग्राउण्ड में, कबूतरों को दाना क्या डालता है...? कम्बख़्त, ख़ुद भी कबूतर जैसा बन गया। इसके घर को चाहे कुअ◌ा◌ं ही कहो, तो कोई ग़लत नहीं।

(अलमारी खोलकर, आक़िल मियां चपरासियों का ड्यूटी चार्ट बाहर निकालते हें। फिर उसे, टेबल पर रखते हैं। फिर, वापस बड़बड़ाना चालू कर देते हैं। कमरे के बाहर, गैस के चूल्हे के पास खड़ी शमशाद बेग़म उनका बड़बड़ाना सुन लेती है।)

आक़िल मियां - (बड़बड़ाते हैं) - बस, इस नामाकूल को यह कुअ◌ा◌ं ही नज़र आता है। बार-बार वहीं चला जाता है, कम्बख़्त। अब, बड़ी बी के हुक्म का क्या करूं? थोड़ी सी, क्या ज़ान-पहचान ठहरी इसके वालिद से ? साल्ले इस नूरिये-जमालिये ने फंसा डाला, मुझे?

◌़शमशाद बेग़म- (आकिल मियां का बड़बड़ाना सुनकर) - ज़नाब, काहे फ़िक्र करते है आप? हुजूर, आप तो दानिश ठहरे। आप ने

कभी कहा था, 'हजरत मोहम्मद ने कई भूले-भटके लोगों को राह दिखायी।

आक़िल मियां - (तमतमाते हुए, कहते हैं) - और कुछ कहना बाकी रह गया, ख़ाला ? दिल में मत रखना, वो भी उगल दीजिये।

शमशाद बेग़म- (मुस्कराती हुई) - काहे नाराज़ होते हो, जनाब ? कह रही थी, के 'महात्मा बुद्ध ने अपने दुश्मनों के दिल में मुहब्बत का चराग़ जलाया, और महात्मा गांधी ने इस ख़िलक़त में मुहब्बत कायम करने के लिये अपने सीने पर गोलियां खायी।'

आक़िल मियां -ज़ानता हूं, ख़ाला। इन सब को आज़ भी, यह ख़िलक़त याद करता है। मगर यहां तो मैं ख़ुद ही, मारा गया... मेरी ख़ुद की दी गयी तकरीरों के आगे। (सम्भलते हुए) आप क्या कहना चाहती हैं, ख़ाला? वही बात बतायें, आप। बाकी, लग्व करने की क्या ज़रूरत?

शमशाद बेग़म- बस इंसान को इस लायक बनने के लिये, मशक्क़त करनी पड़ती है। पाक परवरदीगार के दिये गये दिमाग़ से जुगत लड़ानी पड़ती है।

आक़िल मियां - समझ गया, ख़ाला। (खिन्न होकर) आप आगे यही कहना चाहती हैं के, हमारा नाम आक़िल है, इसलिये लोगों को मश्वरे देकर उनकी....

शमशाद बेग़म- (मुस्कराते हुए) - हमने यह कभी नहीं कहा कि, आप नसीब बी और सितारा मेडम को बिना मांगे मश्वरा दे दिया करते हैं...के, 'ब्लड प्रेसर का अलील आपने ख़ुद, पैदा किया है। फ़िक्र करती-करती, इस मर्ज़ को आपने ही हवा दी है। और अब, गोलियां फांक कर, पैसे बरबाद कर रही हैं?'

आक़िल मियां - (अपनी बात को कायम रखते हुए) -मैने क्या ग़लत कहा, ख़ाला? अल्लाहताआला पर वसूक रखती हुई, सारी तकलीफ़ें अब भूल जाओ। दिमाग़ में कोई तकलीफ़-देह बात नहीं रहेगी, तो

काहे की फ़िक्र? फिर, ब्लड प्रेसर होगा कहां से? ना ब्लड प्रेसर होगा, ना बढ़ेगा अलील।

शमशाद बेग़म- तब यही बात आप पर लागू होती है, आप क्यों इस नूरिये की फ़िक्र करते जा रहे हैं? अल्लाह ने बनाये हैं, मिट्टी के पुतले। जिसमें ख़ास चीज़ डाली है, नूर। जिसे यह ख़िलक़त पसंद करता है, बस आपको उस ख़ास चीज़ यानि नूर को अल्लाह के मेहर से ढूंढ़ना है।

(फिर क्या, आक़िल मियां को सारी बात समझ में आ जाती है, के 'किस तरह इस नूरिया को काम में लेना है? इस नूरिये में, ऐसी क्या ख़ासियत है? जो स्कूल के, हित में हो। इस कारण अब मियां को याद आने लगे, चुग्गाखां। झटपट, वे शमशाद बेग़म से कहने लगे।)

आक़िल मियां - जाओ ख़ाला, चुग्गा खां को घर से बुला लाओ। उनको कहना, के ज़रूरी काम है।

शमशाद बेग़म- अभी-अभी तो मियां रूख़्सत हुए, यहां थे तब ही कह देते जनाब? जो, आपको कहना था।

आक़िल मियां - ख़ाला, आपका फ़र्ज़ है 'हुक्म की तामिल करना।' यह आप ख़ुद ज़ानती है, के मै बिना वजह आपको ज़हमत नहीं दिया करता हूं। जाईये, जल्दी लेकर आ जायें चुग्गा खां को।

शमशाद बेग़म- (होंठों में ही) - हाय अल्लाह, अभी-अभी चाय से फारिग़ हुई हूं...और इधर सुर्ती चखी नहीं, खाने का टिफन खोला नहीं बस आक़िल मियां ने दना-दन चला दी हुक्म की दुनाली। ख़ुदा रहम, अब पांवों को तकलीफ़ देनी होगी।

(शमशाद बेग़म की पदचाप सुनाई देती है, धीरे-धीरे यह आवाज़ मंद पड़ जाती है। मंच पर अंधेरा, छा जाता है। थोड़ी देर बाद, मंच वापस रोशन होता है। स्कूल का बरामदा दिखायी देता है, दीवार पर टंगी दीवार घड़ी टन-टन की आवाज़ करती हुई जुहर के दो बजे का वक़्त बताती है। आक़िल मियां लघु-शंकाज़ाने के लिये उठते हैं, तभी बरामदे में शमशाद बेग़म के साथ चुग्गा खां आते

दिखायी देते हैं। उन्हें देखकर, आक़िल मियां वापस कुर्सी पर बैठ जाते हैं। फिल्म स्टार मीना कुमारी की तरह, चुग्गा मियां की भी एक हाथ की छोटी वाली उंगली नदारद है। उस हथेली को रूमाल से ढांपते हुए, वे कमरे में दाख़िल होते हैं। आते ही, आक़िल मियां को सलाम ठोकते हैं।)े

चुग्गा खां - सलाम। माफ़ करना, हुज़ूर। सुबह आया था, मगर आपसे गुफ़्तगू नहीं हो सकी। अचानक घर से बीबी का फ़ोन आ गया, ज़ाना पड़ा हुज़ूर।

आक़िल मियां - कुछ नहीं अब गुफ़्तगू कर लीजिये, बरख़ुदार। देर आये, दुरस्त आये। (नाक भौं की कमानी को ठीक करते हुए) ऐसा करो, मियां। अपनी रात की ड्यूटी में, इस नूरिये बन्ने को साथ ले लो।

चुग्गा खां - (चहकते हुए) - क़िब्ला, उसको तो हम शागिर्दी में कब का ले चुके हैं... बस अब तो, हमें नाइट डयूटी का इंतज़ार है। आपने हुक्म दिया हुज़ूर, मगर आज़ की बात है.....

आक़िल मियां - (बात काटते हुए) -ज़ाने दीजिये, बेचारा नादान है। इसे छोड़िये, आपकी कहिये। नाइट ड्यूटी नहीं मिलने पर, आप क्या फ़रमाते थे? कहते थे 'बाबो भली करे, नाइट डयूटी मुझे ही मिले। दूसरे को क्यों मिलती है ?'

(पटवार साईज की अलमारी में चाय के प्याले रखती हुई, शमशाद बेग़म कहने में चूकती नहीं।)

शमशाद बेग़म- मियां ख़ुदा के मेहर से आज़ मौक़ा मिला है, इस्तेमाल कर लीजिये। ऐसे मौक़े, बार-बार नहीं मिलते हैं। मेरी नाकिस राय है, यह आपका इमतिहान है। हफ़्ते भर हाफ-ईयरली इमतिहान के दौरान इस नूरिये बन्ने को अपने साथ रखकर माकूल तालीम दें दे।

चुग्गा खां - शुक्रिया, ख़ालाज़ान, आपकी नाकिस राय के लिये। (आक़िल मियां की ओर देखते हुए) हुजूर, कुछ अर्ज़ करना चाहता था के....

(इतना कहकर चुग्गा खां चुप हो जाते हैं, फिर बाहर बरामदे की तरफ़ अपनी निगाहें डालते हैं। प्याले रखकर शमशाद बेग़म चली जाती है, अब वहां कोई उनकी बात सुनने वाला दिखायी नहीं देता। तसल्ली होने के बाद मियां, अपना मुंह खोलना चाहते ही थे, और तभी तपाक से आक़िल मियां कह उठे।)

आक़िल मियां - चुग्गा मियां, वल्लाह आप आप तो बार-बार कहते-कहते रूक जाया करते हो? मियां आपको बेग़म का ख़ौफ़ है, या बिल्ली रास्ता काट गयी? दोनों यहां नहीं हैं, आप तसल्ली से अपनी बात रख सकते हैं।

चुग्गा खां - (धीमी आवाज़ में) - कल ही, गांव से ख़ालाज़ान आयी है। आज़ उनको वापस भेजना है, जनाब। महीने के आख़िरी कम्युनिष्ट दिन चल रहे हैं, जेब ख़ाली हो चुकी है। बस ख़ुदा के वास्ते (रूक कर)...आप फ़िक्र ना करें, एक तारीख को तनख़्वाह से काट लेना।

आक़िल मियां - (होंठों में ही) - अब समझा, एक ही बुलावे पर मियां झटपट कैसे आ गये? ये जनाब तो ऐसे है, जो घर बैठे कहला देते हैं के डाक देने गये हैं, गांव गये है या ना मालुम क्या-क्या बहाने गढ़ लेते हैं?

(आक़िल मियां को बोलते नहीं पाकर, चुग्गा खां के चेहरे पर फ़िक्र की रेखाएं उभर उठती है। मगर, आक़िल मियां को उनके फ़िक्र से क्या लेना-देना ? वे तो अभी भी, होंठों में ही बड़बड़ाते जा रहे हैं।)

आकिल़ मियां - (होंठों में ही) - क्या करूं ?कभी-कभी इनकी बीबी घूंघट निकालकर घर के बाहर आ जाती है, और टिच टिच करती हुई कह देती है, के 'फक़ीरे के अब्बा, घर पर नहीं हैं।' इतना कह कर, झट घर का दरवाज़ा बंद करके वह अंदर चली जाती है। वाह रे वाह। इनकी अक़्ल तारीफ़े क़ाबिल है। मगर, आज़ ऊंट पहाड़ के नीचे आया है। अब इनकी सारी होश्यिरी, धरी रह जायेगी।'

(अब जनाब की अक्ल काम करने लगी, और उन्होनें सोच ली सारी प्लानिंग... के, पहाड़ के नीचे आये ऊंट को काम में कैसे लगाया जाय ? फिर, वे थोड़ा ग़मगीन होकर चुग्गा खां से कहने लगे।)

आक़िल मियां - (ग़मगीन होकर) - मियां आपका काम कर दें, तो ख़ुदा ज़रूर मेहर बरसायेगा हम पर। मगर, क्या करें?

चुग्गा खां - क्या हो गया, जनाब? काम तो हो जायेगा, हमारा?

आक़िल मियां - आपका काम क्यों नहीं करते, मियां? मगर ज़माना ज़ालीम है, आज़ तड़के आते ही दाऊद ने उधार मांग लिये और ले गये जमा राशि...अब कुछ नहीं बचा, मियां अब क्या करें?

चुग्गा खां - क्या हो गया, जनाब? (हताश होकर) क्या भैंस पानी में बैठ गयी, हाय अल्लाह अब काम नहीं होगा?

आक़िल मियां - काम नहीं हो सकता, यह मैने नहीं कहा। हो सकता है, अल्लाहताआला ने चाहा तो बन्दोबस्त हो सकता है। (खिड़की के बाहर झांकते हुए) यह क्या? यहां तो इतना कचरा पड़ा है, हाय अल्लाह यह बदबू यहां से आ रही थी?

चुग्गा खां - क्या कह रहे हैं, जनाब? क्या, इंतज़ाम हो जायेगा?

आक़िल मियां - (मुंह अंदर लेकर) - देख नहीं रहे हो, मियां? कितना कचरा पड़ा है, बाहर? कूड़ादान यहीं उण्डेल देते हो, आप? जाओ फावड़ा लेकर, पहले कचरा हटा दीजिये, बरख़ुदार। कुछ कीजिये ना, दुआए मिलेगी आपको।

चुग्गा खां - आप फ़िक्र ना करें, हुजूर। शाम को सारा कचरा हटा दूंगा, अभी तो आप पैसों का इंतज़ाम कर दीजिये ना।

आक़िल मियां - किसने देखी है, शाम? मियां, यहां तो एक पल का भी भरोसा नहीं.... और तुम, शाम की बात कर रहे हो? फिर देख लेना, बच्चियां छुट्टी लेकर चली गयी तो पैसे भी कल उनके आने पर मिलेंगे। कह देता हूं मियां, साफ़-साफ़।

(फिर, क्या? आख़िर फावड़ा लेकर चुग्गा खां बाहर जाते हैं। कचरा हटा कर, सीधा तनकर खड़े होते हैं...और, दोनों हाथ ऊपर ले जाते हुए अंगड़ाई लेते हैं। तभी आक़िल मियां झट वहां पहुंच जाते हैं, और कह बैठते हैं।)

आक़िल मियां - वाह मियां, वाह। क्या सफ़ाई की है, जनाब ने? सदका उतारूं, कहीं आप पर बुरी नज़र ना लग जाये? बस, एक कसर रह गयी है।

चुग्गा खां - (घबरा जाते हैं) - ऐसी क्या कमी रह गयी, हुजूर? पैसे तो, मिलेंगे ना?

आक़िल मियां - अब ऐसा करो, मियां। इस जगह केली के रोप लगा दीजिये, फिर कोई माई का लाल यहां कचरा डालने की ज़ुरअत नहीं करेगा। और इस जगह की ख़ूबसूरती देखकर, बच्चियां कहेगी 'वाह, चुग्गा मियां की केलियां, क्या ख़ूबसूरत बहारे बिखेर रही है?

(उधर बगीचे पानी दे रहे मेमूना भाई, आक़िल मियां की बात सुन लेते हैं। वे उधर आते हैं, फिर हंसते हुए कह बैठते हैं।)

मेमूना भाई - अरे जनाब, वो क्या शानदार मंजर होगा? ऐसा मंजर तो जनाब, जन्नत में भी नहीं होगा। बच्चियां कहेगी 'माशाअल्लाह, क्या केलियों के फूल खिले हैं? अब तो कोयले

कूकेगी, बुलबुले उड़ेगी और तितलियां और भंवरे मिलकर गायेंगे गीत।'

आक़िल मियां - कुछ गाकर तो बताइये मेमूना भाई, ऐसा कौनसा गीत गायेगी?

मेमूना भाई - (गाते हुए) - खिड़की के पास किस चमान ने कूड़ा करकट डाल दिया, हाय अल्लाह क्या देखूं मैं? उजले धवल कपड़े पहने बाबूजी ने, सारा कूड़ा हटा दिया। अब क्या देखूं, हाय अल्लाह...

चुग्गा खां - (गुस्से में) - अरे मरियल, क्या बोल रिया है? अभी ठहर...

(फिर क्या? चुग्गा खां ने आंखें तरेरते हुए, मेमूना भाई को ऐसे देखा, मानो बकरईद के दिन बकरे की ठौड़ इस मेमूना भाई को ही कुरबानी का बकरा बनाना हो? कई लोगों से पैसे मांगकर, चुग्गा खां देख चुके हैं। मगर, कोई माई का लाल उन्हे बिना ब्याज़ पैसे उधार दे नहीं रहा है? यहां तो चुग्गा मियां अपने आप को इतना

होशियार समझते आये हैं, के स्कूल का कोई बन्दा क्या ज़ानता होगा... के, 'जनाब ने कई रूपये -पैसे बचत करके, लेखक में जमा कर रखे हैं।' अल्लाह पाक के फ़जलो करम से, मियां ने कभी लेखक से रूपये-पैसे बाहर निकालना नहीं सीखा...जब आक़िल मियां जैसे रहमदिल इंसानों से रूपये मिल सकते हैं, तब ऐसा कौन उल्लू का पठ्ठा होगा जो लेखक से मिलते ब्याज को छोड़ना चाहेगा? उन्होंने यह सोच रखा है के, 'लेखक से पैसे बाहर आते ही, जुड़ता ब्याज कम हो जाता है। इसलिये, इधर-उधर लोगों से उधार लेकर अपना काम निकाल लेना चाहिये।' मगर, अब यहां उनकी क़िस्मत उनका साथ नहीं दे रही है ? क्योंकि, उधर ख़ाला है भी, जिद्दी फ़ितरत की। कई दफे समझा दिया, चुग्गा खां ने..के, 'दो-तीन दिन रूक कर एक तारीख को चली ज़ाना, ऐसा साथ रहने का मौक़ा बार-बार मिलता कहां हैं?' मगर वह मानी नहीं, इधर चुग्गा खां की बीबी ने यह बात कहकर गुड़-गोबर कर डाला... खातूने ख़ान कहने लगी, 'हाय अल्लाह, ख़ानदानी औरतें ज़्यादा दिन ससुराल के बाहर रहती नहीं।' फिर तो मियां के पास, एक ही चारा रहा...रूपये-पैसे

बंदोबस्त करने का, वह था आक़िल मियां से उधार लेना और तनख़्वाह के दिन वापस लौटा देना। अब बेचारे चुग्गा मियां मज़बूर होकर गार्डन के एक हिस्से की तरफ़ जाते हैं, जहां 'केलियों' के रोप का झुरमट लगा है। फिर, क्या ? कुछ केलियों के रोप निकालकर वहीं आ जाते हैं, जहां उन्होने अभी-अभी कचरे के ढ़ेर हटाये थे। अब वहां ख़ुदाई करके, केलियों के रोप लगाते हैं। बेचारे चुग्गा खां इस काम अन्जाम देने में, इतने व्यस्त हो जाते हैं.. के, उन्हें निगाहें ऊपर उठाकर, देखना भी नसीब नहीं होता ? जैसे ही काम ख़त्म होता है, वे तनकर सीधे खड़े होते हैं। फिर, चारों तरफ़ अपनी निगाहें दौड़ाते हैं। उन्हें कहीं भी, मेमूना भाई और आक़िल मियां के दीदार नहीं होते। वे मालुम नहीं कर पाये, कब मेमूना भाई और आक़िल मियां यहां से चले गये? जो अभी थोड़ी देर पहले यहां खड़े-खड़े, उनकी शान में कसीदे निकाल रहे थे। फिर, क्या ? दीवार की ओट से बाहर निकलकर, चुग्गा खां बगीचे को निहारने लगे। उन्होंने देखा, मेमूना भाई तो वापस बगीचे में आ गये हैं... और, खड़े-ख़ड़े पाईप से पौधौं की क्यारियों में पानी दे रहे हैं। और,

आक़िल मियां अपने कमरे की ओर क़दम बढ़ा चुके हैं। गार्डन में काम करते-करते अब चुग्गा खां को ऐसा लगने लगा, के उनकी कमर की घमोरिया जलने लगी है। पसीने से मियां का पूरा कमीज़ भींग गया है, आख़िर मियां अपना कमीज़ उतार देते हैं। और उसे, नीम के दरख़त की डाल पर लटका देते हैं। इसी पेड़ के पास खड़े मेमूना भाई, पौधों को पानी पीला रहे हैं। इधर ठण्डी हवा का झोंका उनकी नग्न कमर को छू कर, घमोरियों की खुजली को बढ़ा देता है। ऐसा लगता है, मानो यह खुजली उनके बर्दाश्त के बाहर है। फिर तो मियां मज़बूरन अपनी कमर को, ज़ोर-ज़ोर से खुजाते जाते हैं। ख़ुदा ज़ाने, कहां से एक खुजली वाला कुत्त्ता बगीचे में दाख़िल हो जाता है, और आकर ठण्डी-ठण्डी घास के ऊपर लोटने लगता है ? वह अपने बदन की खुजली मिटाने के लिये, घास से अपनी खाल रगड़कर उसे खुजाता जा रहा है। चुग्गा खां और इस कुत्त्ते को इस तरह खुजाते देखकर, मेमूना भाई बेनियाम हो जाते हैं। फिर, क्या? मुगल्लज़ गालियां बकते हुए, कुत्त्ते को बगीचे से बाहर भगा देते हैं।)

मेमूना भाई - अरे, हरामी के पिल्ले। कमज़ात तूझे यही ठौड़ मिली, खुज़ाने के लिये? अब जाता है, बाहर? या मारूं, चार लात। कम्बख़्त मेरे बगीचे में पड़िया-पड़िया खुजा रिया है, बदन? (पत्थर फेंकते हैं)

(इधर, चुग्गा खां की खुजली, बरदास् त के बाहर..? बेचारे चुग्गा मियां, अब हाय तौबा मचाने लगे। उधर उस कुत्ते की फ़ज़ीहत में बोले गये जुमले को, अब चुग्गा खां अपने ऊपर लेने लगे। फिर, क्या? वे झल्लाते हुए कहने लगे।)

चुग्गा खां - (झल्लाते हुए) - हाय हाय, इधर पूरा बदन घमोरियों से जल रहा है...और यह दोजख़ का कीड़ा मुझे गालियां बकता हुआ मेरे घाव पर नमक छिड़क रहा है, हाय अल्लाह इसे ज़रूर जहन्नुम नसीब करें। (सोचते हुए) अब, बदन ठण्डा कैसे करूं? अब तो आक़िल मियां के पास जाकर, रूपये मांग आता हूं।

(फिर क्या ? चुग्गा खां फावड़ा एक तरफ़ रख देते हैं, फिर आक़िल मियां के पास ज़ाने के लिये पांवों में चप्पल डालते हैं। फिर कमीज़

पहनने के लिये, पेड़ की डाल पर लटके कमीज़ की ओर हाथ बढ़ाते हैं...ताकि, अपना सफ़ेद कमीज़ पहन सकें। मगर सफ़ेद उजला कमीज़ पहनना, उनके नसीब में कहां? उस नीम की डाल पर बैठा कम्बख़्त कलाग़ (कौआ) उड़ता है, और उड़ता हुआ गरम-गरम बींट छोड़ देता है। कुछ बींट गिरती है कमीज़ पर, तो कुछ गिरती है उनकी सुराहीदार कमर पर। गरम-गरम बींट कमर पर गिरते ही, उनकी कमर जलने लगती है। जलन के मारे, अब चुग्गा खां चिल्ला उठते हैं। फिर, क्या ? बेनियाम होकर उस उड़ते कलाग़ को निशाना बनाते हुए, उस पर पत्थर फेंकते हैं।)

चुग्गा खां - हाय अल्लाह, इस कलाग़ की ऐसी की तेशी। (उड़ते कलाग़ का निशाना बनाकर, पत्थर फेंकते हैं) कम्बख़्त यह मेरी कमर है, तेरा पाख़ाना नहीं। जब मर्ज़ी आये तब, इस पर बींट करके उड़ जाता है?

(उधर चुगा खां का निशना चूक जाता है, और उनका फेंका गया पत्थर कलाग़ को ना लगकर, लग जाता है मेमूना भाई के सर पर।

फिर ख़ुदा ज़ाने, दर्द के मारे उनके हाथ में पकड़ा हुआ पाईप का मुंह छूट कर जा गिर पड़ता है। जो गोल-गोल घूमता हुआ, चुग्गा खां के मुंह पर आ गिरता है। पाईप का बिखरा पानी, मुंह के साथ हाथ में पकड़े उस कमीज़ को भी भींगा देता है। गीले कमीज़ को देखते ही, चुग्गा खां गुस्से से लाल-पीले होते हुए ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगते हैं।)

चुग्गा खां - (चिल्लाते हुए) - मार डाला रे, कभी कमर अंगारे की तरह धधकती है तो कभी हमारे कमीज़ का हो जाता है सत्यानाश।

(उनकी चीख-पुकार सुनकर मेमूना भाई समेटे गये पाईप को बरामदे में रखकर वापस बगीचे में लौट आते हैं, और आकर चुग्गा खां से कहने लगते हैं।)

मेमूना भाई - अमां यार, क्या हाय-तौबा मचा रखी है? यदा-कदा कभी आपकी बिरादरी वाले आपकी सुराहीदार कमर को पाख़ाना समझकर बींट कर भी दे, तो आपका क्या बिगडत़ा है? आपको तो ख़ुश होना चाहिये, आख़िर ये कलाग़ ठहरे आपकी बिरादरी के।

चुग्गा खां - (नाराज़ होकर) - होगें तुम्हारी बिरादरी के, आ गये कम्बख़्त यहां.. इन नामाकूलों की, हिमायत करने?

(तभी छुट्टी का वक़्त हो जाता है, शमशाद बेग़म जाकर छुट्टी की घण्टी लगा देती है। फिर, क्या? मेमूना भाई बरामदे की ओर क़दम बढ़ाते हैं, और जाते-जाते उनके मुख से यह जुमला बरबस निकल जाता हैं।)

मेमूना भाई - आप तो जनाब बड़े बाबूजी ठहरे, हम तो ठहरे छोटे चपरासी। इसलिये, सुबह ही हमने नत्थी करने के लिये दरख़्वास्त आपको दी थी। हुजूर अब आप रूके रहना दफ़्तर में, स्कूल का कोई पेण्डिग काम हो तो करते आना। ताले-वाले भी देख लेना, हुजूर। कहीं, कोई चूक ना हो जाय? (हंसी के ठहाके लगाते हुए, मेमूना भाई रूख़्सत होते हैं)

चुग्गा खां - (कमीज़ पहनते हुए, बडबड़ाते जाते हैं) - यह भाण्डा, आख़िर फोड़ा किसने? किसने बताया, इस कम्बख़्त को.. के, हम

दफ़्तरेनिगार नहीं है...? अक़्सर नाइट ड्यूटी में रहने वाले, चौकीदार ठहरे।

(घण्टी लगने से बगीचे में बैठी बच्चियां बस्ते उठाकर, यकायक चिल्ला उठती है 'छुट्टी हो गयी, भागो भागो।' फिर क्या? ये बच्चियां एक साथ तेज़ी से चुग्गा खां के नाजुक बदन को धक्के मारती हुई गेट की तरफ़ बढ़ जाती है। बेचारे चुग्गा खां, चारों खाना चित्त हो जाते हैं। जब वे उठते हैं, तब तक बगीचे से बाहर निकलने का पूरा रास्ता पैक (बंद) हो जाता है। आक़िल मियां के पास ज़ाना, अब हो जाता है दुश्वर। उनसे रूपये उधार लेने, अब कैसे जाया जाय? अब तो मियां के नसीब में, ख़ाली इंतज़ार करना ही बाकी रहा। अपनी बुरी दशा देखकर, बेचारे मियां बड़बड़ाने लगे।)

चुग्गा खां - (बड़बड़ाते हैं) - हाय रे, मेरे नसीब। ख़ुदा रहम, अब कैसे पहुंचा जाय आक़िल मियां के पास? हाय अल्लाह, अब इन बच्चियों की दीवार कब ख़त्म होगी? कब पैसे मिलेंगे, मेरे परवरदीगार?

(गेट पार करके बच्चियां रूख़्सत हो चुकी है, मगर अभी यह दूरी की दीवार ख़त्म नहीं हुई। बहुत दूर से आक़िल मियां अपना बेग लिये, स्कूटर की तरफ बढ़ते दिखायी देते हैं। मगर, उनके पास पहुंचना इतना आसान नहीं। क्योंकि उनके आगे अब स्कूल की मेडमें, स्कूटर लिये बाहर निकलने लगी है। इधर मेडमों का झुण्ड बाहर आता है, और उधर सड़क पर एक चरवाहा भेड़ों का झुण्ड लिये गुज़रता दिखायी देता है। मेडमों के झुण्ड के कारण, भेड़ें इधर-उधर बिखर जाती है। जिससे नाराज़ होकर, आंखें तरेरता हुआ चरवाहा ज़ोर से चिल्लाता है।)

चरवाहा - (चिल्लाकर, ज़ोर से कहता है) - ओ बैनजियां रौ रेवड़ सांतरो है, अरे मालक इन्नो चरवाहो कठै बळ्यौ है म्हारा बाप?

(मनु भाई की दुकान के बाहर लगी बैंच पर बैठे साबू भाई, चरवाहे की बात सुनकर ज़ोर से कहने लगे।)

साबू भाई - (ज़ोर से चिल्लाकर कहते हैं) - ग़नीमत है रे, चरवाहा नहीं होना ही अच्छा। इस रेवड़ के चरवाहे ने तूझको देखा नहीं,

देख लिया होता तो छुट्टी के वक़्त तेरा यहां से निकलना बंद हो जाता?

(मेडमों के गुज़र ज़ाने के बाद, नूरिया बन्ना दिखायी देते हैं। जो 'डिस्को डांसर का फिल्मी गीत' गाते हुए साइकल उठाते हैं। उनको बाहर रूख़्सत होते देख, चुग्गा खां ज़ोर से उन्हें पुकारते हैं।)

चुग्गा खां - (ज़ोर से पुकारते हुए) - अरे ओ नूरिया बन्ना। ज़रा ठहरना, भाई।

(नूरिया ठहरा उस्ताद, वह तो आकाश की तरफ़ ऊंचा देखता हुआ आराम से साइकल बाहर ले आता है। फिर साइकल पर सवार होकर, नौ दो इग्यारह हो जाता है। अब सभी रूख़्सत हो चुके हैं, उनके निकल ज़ाने के बाद चुग्गा खां आक़िल मियां का स्कूटर देखना चाहते हैं। मगर, अब वहां स्कूटर है कहां? जनाब कमरे का ताला जड़कर, आगे-आगे ही रूख़्सत हुए हैं। बदक़िस्मत रही मियां की, जो उनके पास रूपये उधार लेने जा नहीं पाये। हताश होकर, चुग्गा खां बरामदे की ओर अपने क़दम बढ़ाते हैं। वहां पहुंचकर,

सारे कमरों के ताले जड़ देते हैं। काम से फारिग़ होकर, मेन गेट के बाहर आकर खड़े हो जाते हैं। अक्समात, उनकी निगाह मनु भाई की दुकान पर गिरती है। जहां नूरिया बन्ना खड़े-खड़े गुटका खा रहे हैं, और साथ में मनु भाई को शेर सुनाते जा रहे हैं।)

नूरिया - 'वो गुनगुनाते रास्ते, ख़्वाबों के क्या हुए। वीरान क्यूं है बस्तियां, बासिन्दे क्या हुए। हम इतने पागल नहीं हैं, जितना ज़माना समझें। हम क्या शागिर्द बनते, जो ख़ुद शागिर्द रखते हैं।'

(बेचारे चुग्गा खां अपने को तन्हाई में पाकर, दुखी हो जाते हैं। अब वे होंठों में ही शायर सीन क़ाफ निज़ाम का शेर गुनगुनाते जाते हैं।)

चुग्गा खां - (होंठों में ही) -'मांजी की हर इक चोट उभर आई है। ये दर्द मिरी जाँ का तमन्नाई है...आ जाओ किसी तरह कि ताहेद्द-नज़र तन्हाई है, तन्हाई है, तन्हाई है।'

(चुग्गा खां हताश होकर साइकल उठाते है, अपनी। फिर, अपने घर की तरफ़ चल देते हैं। उनके ऊपर, कुछ कबूतर उड़ते दिखायी देते

हैं। ऐसा लगता है, मानों ये कबूतर भी अपने घर ‘कुए’ की तरफ़ जा रहे हो ?)

(अजज़ा २) धंधा ब्याज़ का लेखक -०: दिनेश चन्द्र पुरोहित (१)

(मंच रोशन होता है, बरामदे में एक तरफ़ अकेले दाऊद मियां बैठे हैं, और कुछ दूर जमाल मियां अपनी सीट पर बैठे हैं। कुछ वक़्त बाद, जमाल मियां से मुलाकात करने कुछ मुसाहिब आते हैं। जिनमें पड़ोस की सैकेण्ड्री स्कूल के दफ़्तरे निगार साबीर मियां, मौजूद है। इन सबको दाऊद मियां देखते-देखते अपनी बुलंद

निगाहों से मालुम करना चाहते हैं, के ये लोग इनके पास आये क्यों? अब बातों का सिलसिला, चालू होता है।)

एक व्यक्ति - जनाब आप ठहरे रहम दिल इंसान, आप ज़रूर हमारा काम कर देंगे।

दूसरा व्यक्ति - क़िब्ला, आपके दादा मियां और हमारे वालिद साहब लंगोटिया यार थे। मां कसम, इस रब्त के कारण आपको हमारा काम करना ही होगा।

तीसरा व्यक्ति - (दूसरे व्यक्ति से) - अरे ओ बीबी फातमा के नेक दख़्तर, आपकी यहां दाल गलने वाली नहीं। तीन पीढ़ी से हमारा ख़ानदान, इनके ख़ानदान की ख़िदमत करता आ रहा है। मियां अब तुम, गधे के सींग बनकर उड़न छू हो जाओ।

जमाल मियां - ख़ामोश हो जायें, मेरे मुअज़्ज़मों। सबका काम, बन जायेगा। तसल्ली रखो, आप सबके घर पैसे पहुंच जायेंगे। पहले यह बतायें, आपकी ख़ातिर कैसे की जाय? चाय मंगवाऊ, या लस्सी? बस पहले आप मुझे, अपने काम से फारिग़ होने दें।

(अब जमाल मियां मेज़ की दराज से डायरी व टिकट निकालते हैं, तभी शमशाद बेग़म शीशे की गिलासों में शरबत-ए-आज़म ले आती है। फिर सभी मुसाहिबों को शरबत भरे गिलास थमाकर, टी-क्लब की चाय बनाने गैस के चूल्हे के पास चली जाती है।)

जमाल मियां - (मुसाहिबों से) - मेरे हमदर्द, आपको ख़ुदा पर पूरा वसूक होना चाहिये। ज़रा, सुनिये। ख़ुदा के मेहर से एक स्कीम हमारे हाथ आयी है, जिससे आप सबका भला होगा।

एक व्यक्ति - कहिये जनाब, कहिये। ऐसी कौनसी स्कीम आपके हाथ में आ गयी, जिससे हम सबका भला हो?

जमाल मियां - (ख़ुश होकर) - सुनिये, जनाब। एक आदमी तीन आदमी को टिकट बेचेगा, इस तरह तीनों आदमी बारी-बारी अपने तीन-तीन ग्राहक बनायेंगे। बस, चेन बनती जायेगी।

दूसरा व्यक्ति - फिर क्या होगा, जनाब?

जमाल मियां - आप समझ लीजिये, हर सौदे के तीसरे दौर पर पैसे रिटर्न होते रहेंगे। इस तरह हर आदमी, खूब रूपये कमा लेगा। बस ध्यान रहे, यह चेन टूटनी नहीं चाहिये। चेन टूट गयी, तो रूपये आने बन्द।

(फिर क्या? सभी मुसाहिब उनके जाल मे फंस जाते हैं, और जमाल मियां हरेक को टिकट बेचकर अपना कोटा पूरा करते हैं। हरेक

आदमी का नाम और पत्ता डायरी में नोट करके, सभी मुसाहिबों को रूख़्सत करते हैं। मुसाहिब ख़ुश होकर, चले जाते हैं। उन्हे वक़्त पर रूपये उधार मिलने की आशा बन जाती है, और साथ-साथ में पैसे उगाने की स्कीम भी हाथ आ जाती है।)

दाऊद मियां - (जमाल मियां से) - काफ़ी देर से देख रहा हूं, आपका ड्रामा। आज़कल कहीं आपको, कौम-ए-ख़िदमतगार बनने का शौक तो नहीं चर्राया?

(जमाल मियां की एक आदत है, बुरी। ज़नाब दूसरों पर रौब जमाने के वक़्त, अपनी रीश (दाढ़ी) को सहलाते रहते हैं।)

जमाल मियां - (हाथ से अपनी रीश को सहलाते हुए) - परवरदीगार ने इस बंदे पर रहम बख़्सा है, अजी क्या कहूं आपको? लोगों में मुहब्बत, फैलाने का जुम्मा दिया है, ख़ुद ख़ुदा ने। बस इसी मुहब्बत ने, हमारा लम्बा सर्कल बना दिया है।

(इतना कहकर, मियां टेबल पर रखी फाईल उठाते हैं। फिर फाईल खोलकर, फाईल में दबी मेग्जीन के पन्ने उलटते जाते हैं और साथ में दाऊद मियां से बात करते जाते हैं।)

जमाल मियां - (मेग्जीन के पन्ने उलटते हुए) - जनाब हम लायंस-क्लब के मेम्बर ठहरे, हमारे साथ शाम को ये ए.डी.एम., एस.डी.एम., वगैरा कई बड़े-बड़े ओहदेदार गेम्स खेलते हैं। आपका कभी इन लोगों से कोई काम हो तो, ज़रूर बता देना।

(अब जमाल मियां, फाईल में रखी फिल्मी मेग्जीन के पृष्ठ बदलते जाते हैं। उस मेग्जीन में ख़ूबसूरत फिल्मी हिरोइनों की अधनंगी तस्वीरों को देखते हुए, उन हिरोइनो के बढ़े हुए उरोज़ों पर हाथ रखते जाते हैं... और साथ में, मुंह से सिसकारी निकालते जाते हैं। फिर रौब जमाते हुए, दाऊद मियां से कहते हैं।)

जमाल मियां - (तस्वीरों पर, हाथ रखते हुए) - यकिन के साथ कहता हूं, हमारे मुसाहिबों की बहुत लम्बी फ़ेहरिस्त है।

दाऊद मियां - क्या कहना चाहते हो, मियां?

जमाल मियां - यह कहता हूं के, ये वे ही मुसाहिब है...जिन्हे अक़्सर पैसों की ज़रूरत बनी रहती है, वे भले आदमी जायेंगे कहां? इस ख़ुदा के बंदे के पास ही आयेंगे, आख़िर हम ही उनके दोस्त ठहरे।

दाऊद मियां - आख़िर, पैसे आते कहां से? कहीं आपने कारू का खज़ाना, लूट लिया क्या?

जमाल मियां - (हंसते हुए) - अरे हुजूर, अम्मीज़ान ने अपनी जमा राशि हमारे लेखक में रख छोड़ी है। बस वही राशि, इन ख़ुदा के बंदों के काम आती है।

दाऊद मियां - (अपने आप) - इस ख़िलक़त को हमने करीबी से देखा है, उसे परखा है ये बाल धूप में सफ़ेद नहीं किये हैं। एक-एक पैसा जोड़कर बनायी है, हमने अपनी हैसियत। आज़ कहीं जाकर दो पैसे उधार देने की क़ाबिलियत आयी है हम में, मगर...

(कहते-कहते दाऊद मियां के नाक में एक बदतमीज़ मच्छर चला जाता है, और मियां को लगा-लग छींकें आने लगती है। नाक सिनक कर, वे वापस जमाल मियां के बारे में सोचने लग जाते हैं।)

दाऊद मियां - (हांठों में ही) - यह जमालिया कल का छोरा, ऐसे बात करता है, मानों इसके हाथ कारू का ख़ज़ाना आ गया हो? मरते-गुड़ते इस मर्दूद ने टेन्थ पास की है, अब अपने वालिद की ठौड़ मृत राज्य कर्मचारी के कोटे से, पा गया नौकरी। वह क्या ज़ाने, हमने क्या-क्या पायी है तकलीफ़ें? कैसे पायी है, यह नौकरी?

(सोचते-सोचते दाऊद मियां, अतीत के सागर में गौता खाने लगते हैं। उन्हे याद आता है के, टेन्थ पास करते ही उनके वालिद साहब ने हाथ झटक लिया। अब उनकी आवाज़ दाऊद मियां के कानों में गूंज़ने लगती है 'बरख़ुदार, अब जवान पठ्ठे हो गये हो...अब तुम कमाओ, और खाओ। कुछ बचे तो, दो पैसे हमको लाकर दो।' फिर, करे क्या जनाब? नौकरी कोई पेड़ों पर लगे अनार नहीं, जो

तोड़कर हासिल कर ले? अरे जनाब, उसके लिये जुगत लड़ानी पड़ती है। फिर, क्या? कोशिश करते-करते, दाऊद मियां की नौकरी बिजली-घर में लग जाती है। मगर, इस दफ़्तर में बिजली के बिलों के साथ माथा-पच्ची करना जनाब को भाया नहीं। बस झट इस्तिफ़ा देकर, चले आये घर। तब से इंशाअल्लाह, घर में पड़े-पड़े वक़्त काटना हो गया मुश्किल। अब उस दिन का मंजर उनकी आंखें के आगे छाने लगता है, जब एक दिन जुहर की नमाज़ से फारिग़ होकर, उनकी अम्मीज़ान दालान में तशरीफ़ लाती दिखायी देती है..जहां दाऊद मियां पांव पसारे, आराम कुर्सी पर आराम फ़रमा रहे हैं। वहां आते ही, उनकी नातिका कहर ढाह देती है। अब दाऊद मियां के कानों में, अम्मीज़ान की आवाज़ गूंज़ने लगती है। आवाज़ धीरे-धीरे बढ़ती जाती है, और अब मियां की आंखों के आगे पुश्तेनी मकान के बाहर पानी के लिये लड़ रही जंगजू मोहतरमाओं की शक्लें छाने लगती है। धीरे-धीरे मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, दालान में आराम कुर्सी पर दाऊद मियां उनींदे पांव पसारे बैठे हैं। तभी जुहर की नमाज़ से फारिग़ होकर, उनकी अम्मीज़ान दालान में तशरीफ़ रखती है। वह आते ही, निक्कमाई करते दाऊद मियां पर बरस पड़ती है।)

अम्मी ज़ान- शर्म नहीं आती, घर बैठे बाप के टुकड़े तोड़ रहे हो? ज़रा सोचो, कल तुम्हारा बाप हो जायेगा रिटायर तब भीख मांगते दिखायी दोगे। लोग कहेंगे, के 'कैसा बेवकूफ है इनका बेटा, जो हाथ आई नौकरी छोड़ आया। अब यह बरख़ुदार, घर पर निक्कमा बैठा है।'

दाऊद मियां - अम्मीज़ान, अब करूं क्या? नौकरी कोई पेड़ पर लगा अनार नहीं, जिसे तोड़कर खा लिया जाय?

अम्मीज़ान- ज़रा देख जोहरा बीबी के नेक दख़्तर शमसुदीन को, बेचारा कड़ी धूप में मजदूरों के साथ काम कर रहा है। मेहनत की रोटी खाता है, एक...तू...? यहां कुर्सी पर बैठा सुस्ता रहा है, रइसों की तरह।

दाऊद मियां - (आंखें मसलते हुए) - हाय अल्लाह, अम्मीज़ान तुम तो सोने नहीं दे रही हो? अभी-अभी आंख लगी, और हाय तौबा मचाकर उठा दिया। अम्मी कर लेंगे नौकरी, फ़िक्र क्यों करती हो?

अम्मीज़ान- (गुस्से में) - अरे कमज़ात, तेरी अक़्ल पर ताल जड़ गया क्या? समझते नहीं, छोटी बहन की उम्र शादी लायक हो गयी है। बरख़ुदार, कैसे करेंगे उसकी शादी? घर में पैसों का झाड़ नहीं लगा है, जो तुम उससे काम चला लोगे?

दाऊद मियां - (कुर्सी से उठते हुए) - अम्मीज़ान, वसूक रखें हम पर। हम कोशिश कर रहे हैं, अल्लाह ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। मैं आज़ ही शमसु से मुलाकात करता हूं, शायद पी.ढब्लू.डी. महकमें में कोई वेकेण्ट पोस्ट बची हो?

(दाऊद मियां रूख़्सत होते हैं, उनके क़दम शमसु के मकान की तरफ़ बढ़ते हैं। कुछ ही देर बाद, वे शमसुदीन के दौलतख़ाने के दरवाज़े पर दिखायी देते हैं। दरवाज़े पर दस्तक देकर, उसके खुलने का इंतजार करते है। अन्दर से, जोहरा बी जवाब देती है।)

जोहरा बी - दरवाज़ा खुला है बेटा, उसे धकेलकर अन्दर आ जाओ। (शमसुदीन की बीबी से कहती है) अरी ओ कमरू दुल्हन, दाऊद मियां तशरीफ़ लाये हैं। ज़रा, पानदान इधर भेज देना। फिर तुम भी इधर आ ज़ाना, दुल्हन।

(दीवानख़ाने में दाऊद मियां तशरीफ़ लाते हैं, जोहरा बी को देखकर उन्हे सलाम करके आदाब अर्ज़ कहते हैं।)

दाऊद मियां - (सलाम करते हैं) - आदाब अर्ज़ हो, चाचीज़ान। ज़रा जहमत दी, आपको।

(घर का नौकर दूदू पानदान देकर आता है, जोहरा बी पान की गिलोरी उठाकर मुंह में ठूंसती है। दूदू पानदान जोहरा बी के पहलू में रखकर, वापस लौट जाता है।)

जोहरा बी - (पान की गिलोरी चबाती हुई) - कोई जहमत नहीं दी, बेटा। तुम में और शमसु में, क्या फ़र्क है? तुम दोनों, हमारे बेटे हो। बेटा, खड़े मत रहो? आ जाओ, अन्दर। दस्तरख़्वान लगा है, आज़ खाना खाये बिना तुमको ज़ाने नहीं दूंगी।

(अन्दर आकर दाऊद मियां क्या देखते हैं, दस्ख़्वान लगा है। मेज़ के चारों तरफ़ कुर्सियां रखी है, एक कुर्सी पर जोहरा बी बैठी है। दाऊद मियां आकर, एक कुर्सी पर बैठ जाते हैं। कमरू दुल्हन आकर खाना परोसती है, अब जुहर की नमाज़ से फारिग़ होकर शमसुदीन दीवानख़ाने में आते हैं। मेज़ के पास लगी कुर्सी पर बैठते हुए शमसुदीन, दाऊद मियां से कहते हैं।)

शमसुदीन - खाना ठण्डा हो रहा है, जनाब ज़रा पढ़िये 'बिस्मिलाहि रहमान रहीम।' शर्म कीजिये मत, खाना स्टार्ट कीजिये। इसे अपना घर ही समझें।

(दोनों दोस्त अब एक साथ बोलते हैं 'बिसमिलाहि रहमान रहीम।' इतना कहकर, वे भोजन करना चालू करते हैं।)

दाऊद मियां - (पहला निवाला मुंह में रखते हुए) - भाभीज़ान ने लज़ीज़ खाना बनाया है, शमसु। ऐसी बीबी पाकर शमसु, तुम्हारी क़िस्मत चमक गयी है।

(अपनी बेरोजगारी का रोना लेकर, दाऊद मियां होंठों में ही बड़बड़ाते जाते हैं।)

दाऊद मियां - (होंठों में ही) - अरे कमज़ात तूने एक्सइन 'मिर्जा साहब' की इकलौती बेटी से क्या ब्याव रचाया, नौकरी और बीबी दोनों का हक़दार बन गया रे तू। वाह भाई, वाह। क्या क़िस्मत पायी है, तूने..? मां और बीबी दोनों मनुआर करके खाना खिला रही है, और दूसरी तरफ़ हम ठहरे अपनी बदकिस्मत के शिकार एक लाचार बेरोज़गार।

(कमरू दुल्हन प्याज व चाकू लाकर दाऊद मियां की थाली के पास रखती है, फिर नमक और नीम्बू लाने बावर्ची खाने में चली जाती है। मगर अभी भी दाऊद मियां होश में न रहते हुए होंठों में ही बड़बड़ाते जा रहे हैं। इधर कमरू दुल्हन, नीम्बू और नमकदान लेकर लौट आती है।)

दाऊद मियां -(होंठों में ही) - बेरोज़गारी के आलम में, रोज़ सुनते हैं, अम्माज़ान की झिड़कियां। सभी मतलबी है, प्यारे। पैसा ही सब

कुछ है, पैसा ही इज़्ज़त दिलाता है इंसान को। बस अब हमने ठान ली, ख़िलक़त को झुकाना है तो पैसे-पैसे को पकड़ना होगा चोंच से।

(दीवानख़ाने में रखे रेडियो पर, यह गीत सुनायी देने लगा 'आसमान को झुकाने वाला चाहिये... कत्था चूना।' इधर जोहरा बी प्याज और नीम्बू काटने के लिये, चाकू उठाना चाहती है। मगर, तब तक होश में न रहने की स्थिति में... दाऊद मियां पैसे को पकड़ने की जगह, उस चाकू के फलक को ज़ोर से पकड़ लेते हैं। चाकू हाथ में न आने से जोहरा बी ज़ोर से कहने लगती है, उनकी तेज़ आवाज़ के कारण मियां का ध्यान भंग हो जाता है। अब वे चेतन होकर सामने देखने लगे, उन्होने देखा के जोहरा बी उनसे ही कुछ कह रही है।)

जोहरा बी - पैसे को पकड़ो बेटा, इस चाकू को ताकत लगाकर ना पकड़ो। बेटा, कहीं हथेली से खून ना निकल जाये? अब क्या सोचने बैठ गये, बेटा? बेटा, अब भोजन की तरफ़ ध्यान दो। बन्द करो, सोचना। मुझे पता है, बेटा।

दाऊद मियां - (होश-हवाश में आकर) - चाची, क्या कह रही थी, आप?

जोहरा बी - (चेहरे पर मुस्कराहट लाकर) - आख़िर, तुम चाहते क्या हो? अल्लाह पर भरोसा करो, वह करीम है... सबकी सुनेगा। बस, तुम रोटी खाओ। ज़रा एक मिनट, मैं वापस आती हूं।

(जोहरा बी जाती है, पदचाप सुनाई देती है।)

शमसुदीन - क्यों फ़िक्र करते हो, यार? अम्मीज़ान सब ज़ानती है, उससे कुछ भी छिपा नहीं है तुम्हारा ग़म। (शेर पढ़ते हैं) 'ना वाकिफ़-ए-ग़म अब दिल-ए-नाशाद नहीं है।'

दाऊद मियां - (परेशान होकर) - तो, मैं क्या ज़ानू? क्या करूं?

शमसुदीन - (लबों पर मुस्कान लाकर) - बात यह है कि, कल चाचीज़ान की मुलाकात अम्मीज़ान से हो गयी। मस्तान बाबा के मज़ार पर मिली तब उन्होने, तुम्हारे बेरोजगार रहने की बात की और मिर्जा साहब से मदद मांगने का कहा।

दाऊद मियां - क्या यह सच है, शमसु..?

शमसुदीन - सदाकत से कह रहा हूं, अभी-अभी अम्मीज़ान मिर्ज़ा अंकल को फ़ोन करने ही गयी होगी..? तुम फटाफट खाना खा लो, फिर मिर्जा अंकल के घर चलते है। शायद तुम्हारी दरख़्वास्त का जवाब, आ गया हो गया होगा?

(जोहरा बी लौटकर आती है, वापस आकर वह कहती है।)

जोहरा बी - बेटा, तुम दोनों को मिर्जा अंकल ने अभी-अभी अपने दौलतखाना बुलाया है। तुम अभी खाना खाकर, चले जाओ।

(दोनों खाना खाकर, वासबेसीन में हाथ धोते हैं, फिर तौलिये से हाथ पोंछकर दोनों रूख़्सत होने की इजाज़त मांगते है।)

शमसुदीन - रूख़सत होते हैं, अम्मीज़ान। दुआ करना अम्मीज़ान, इसका काम बन जायें।

दाऊद मियां - आदाब, चाचीज़ान। चलते हैं, ख़ुदा हाफ़िज़।

(सभी जाते हैं, उनके पैरों की आवाज़ दूर तक सुनायी देती है। मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(३)

(मंच रोशन होता है, मिर्जा साहब के दीवानखाने का मंजर दिखायी देता है। दोनों दोस्तों को दाख़िल होते देख, मिर्जा साहब उन्हे सोफे पर बैठने का इशारा करते हैं।)

मिर्जा साहब - आओ साहबजादों, तुम्हारा ही इन्तज़ार था। अभी-अभी, जोहरा भाभी का फ़ोन आया..। ख़ैर, तसल्ली से बता देना। ज़रा, पहले तसल्ली से बैठ जाओ एक बार।

(दोनों सोफे पर बैठते हैं, तभी घर की नौकरानी रौनक चाय-नाश्ता लाकर मेहमानों के पास रखी टी-टेबल पर रख देती है। फिर, सलाम करके वापस चली जाती है।)

मिर्जा साहब - दाऊद मियां, ऐसे करो... अभी तो नौकरी के लिये, दरख़्वास्त की एक कोपी देते जाओ। कल वापस दूल्हे मियां के साथ आ ज़ाना, और नौकरी का हुक्मनामा लेते ज़ाना।

शमसुदीन - हुजूर, इन्हें अभी कौनसा ओहदा दिया जा रहा हैं?

मिर्जा साहब - अभी तो गालीबन मेट की नौकरी दे रहा हूं, आगे इनकी मेहनत और ईमानदारी काम आयेगी। वैसे यह नौकरी कोई बुरी नहीं, तो उम्दा भी नहीं। मगर, वक़्त गुज़ारने के लिये काफ़ी है। कोलेज की तालीम के साथ-साथ, यह नौकरी भी चलती रहेगी।

शमसुदीन - वज़ा फ़रमाया हुजूर, वक़्त गुज़ारना भी है। और पढ़ाई के खर्चे निकालने के लिये, अब किसी के सामने हाथ पसारना नहीं पड़ेगा।

(सभी चाय पीकर, अब नाश्ता लेने लगते हैं। मिर्जा साहब अंगड़ाई लेते हुए, कहते हैं।)

मिर्जा साहब - (अंगड़ाई लेते हुए) - चाय पी चुके, आप लोग। अब दो मिनट के लिये आपको रोकूंगा।

शमसुदीन - मगर, क्यों..? बात तो पूरी हो गयी, ना...?

(दरवाज़े पर दस्तक की आवाज़ सुनायी देती है, थोड़ी देर बाद वहीं से तिर्याक साहब की आवाज़ सुनायी देती है।)

तिर्याक - (दरवाज़े पर) - मिर्जा साहब, तशरीफ़ रखते हैं...?

मिर्जा साहब - (आवाज़ देते हुए) - तिर्याक साहब, अभी हाज़िर हुआ। (रौनक को आवाज़ देते हैं) अरी ओ रौनक, तिर्याक साहब आये हैं। ज़रा, पानदान लेते आना।

(मिर्जा साहब दरवाज़ा खोलने जाते हैं, फिर वापस दोनों दीवानख़ाने में दाख़िल होते हैं। तिर्याक साहब को सोफे पर बैठाकर, ख़ुद अपनी आराम कुर्सी पर बैठ जाते हैं।)

तिर्याक - (सोफे पर बैठते हुए) - आदाब। माफ़ कीजिये, आपको जहमत दी।

मिर्जा साहब - (हंसकर कहते हैं) - तशरीफ़ लाये आप, और जहमत दी मुझको...? क्या खूब कहा... कत्ल भी करे हैं, ख़ुद ही ले सवाब उल्टा।

तिर्याक - यह आप क्या कह रहे हैं, जनाब?

मिर्जा साहब - तिर्याक साहब सच कहें, तो जहमत हम दे रहे हैं आपको। हमारा वक़्त और पैसा दोनों बचा रहे हैं, आप।

तिर्याक - अरे हुजूर, आप तो हमारी तारीफ़ करके, हमें राई के पहाड़ पर चढ़ा रहे हैं..?

मिर्जा साहब - आप तो ज़ानते हैं हुजूर, पैसा टिकता नहीं... क्योंकि उसके चार पांव है, मगर आपने आर.डी., सी.टी.डी., किसान विकास पत्र, वगैरा वगैरा की प्लानिंग बताकर उस पैसे के चारों पांवों को बान्ध दिया। और, हमारा पैसा बच गया। आपकी इस मदद के लिये, शुक्रगुज़ार हूं।

तिर्याक - (मुस्कराते हुए) - छोड़िये जनाब, लीजिये अपनी पास बुकें। (टेबल पर पास बुकें रखते हैं, फिर दोनों साहबजादों पर निगाहें डालते हुए कहते हैं) ये दोनों कौन है, हुजूर...? इनसे, हमारी ज़ान-पहचान नहीं करायेंगे क्या..?

दाऊद मियां - (तपाक से) - आपको तो हम ज़ान गये...पहचान गये। आप अल्प-बचत के सफल एजेण्ट ठहरे। अब तो हम भी, आपको जहमत देंगे....इसके लिये, हम मिर्जा साहब के शुक्रगुज़ार हैं।

मिर्जा साहब - (ख़ुश होकर) - वज़ा फ़रमाया, बरख़ुदार। नौकरी आपको मिल गयी, चाहे पक्की हो या कच्ची। आज़ से तुम लोग उसूल बना लो, 'आज़ की बचत, कल की आमदानी' हम ज़ानते हैं, अभी आप पर कोई विशेष जिम्मेदारी नहीं। आसानी से, बचत करने की आदत बन जायेगी।

शमसुदीन - वज़ा फ़रमाया, हुजूर।

मिर्जा साहब - तुम हर छः माह बाद या बारह माह बाद, एक आर.डी. खुलवा सकते हो। बरख़ुदार, बूंद-बूंद से घड़ा भरता है। देख लो, मुझे। हर साल आर.डी., सी.टी.डी. वगैरा खुलवाकर, मैने बड़े-बड़े खर्चे निपटाये हैं।

तिर्याक - (ज़ोर-शोर से) - अहा हा। सुबहान अल्लाह, क्या कहना है..? ये बचत ही बुनियाद है, बचत ही तामिर। उस्ताद मान गये, आपको। अल्प-बचत के एजेण्ट हम ठहरे, मगर तकरीर हासिले-तरह आपने पेश कर दी।

(सोफे से उठ जाते हैं, फिर दाऊद मियां की तरफ़ देखते हुए कहते हैं।)

तिर्याक - (दाऊद मियां से) - बरख़ुदार, मिलते रहना। इमामबाड़े के पास वाली चांदनी गली में, हमारा ग़रीबखाना है। ज़रूर, तशरीफ़ रखना।

मिर्जा साहब - तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं, साहबजादे समझदार है मियां। ख़ुद ही मकान ढूंढ़कर, आ जायेंगे।

तिर्याक - ख़ुदा हाफ़िज। अब जनाब, रूख़्सत होने की इजाज़त चाहता हूं।

शमसुदीन - आदाब, हुजूर। हम ज़रूर मिलेंगे, आपसे।

(सभी रूख़्सत होते हैं, दूर तक उनके क़दमों की आवाज़ सुनाई देती है। मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(४)

(मंच रोशन होता है, सूरज बीच आकाश में दिखायी देता है। ़अंगार उगलती धूप में, सड़क बनाने का काम चल रहा है। मज़दूर कंकरी बिछा रहे हैं, एक तरफ़ कंकरी में डामर मिलाकर रोलर चलाया जा रहा है। दूसरी तरफ़ सड़क को समतल बनाने के लिये, सड़क पर बिछी कंकरी पर इंजन चलाया जा रहा है। कुछ दूर, एक बबूल के तले एक टेबल और दो कुर्सियां रखी है। जहां दोनों दोस्त बैठे-बैठे मास्टर रोल को देखते हुए, मज़दूरी का हिसाब-किताब तैयार कर रहे हैं। तभी इंजन का ड्राइवर घड़ी देखकर, कोयला डालने वाली मजदूरनी को पास बुलाता है। फिर, उसको ख़ुश करने की गर्ज़ से कहता है।)

ड्राइवर - बस कर चुकिया, अब आराम कर। डेड बज गये हैं, लंच का वक़्त हो गया है। (जेब से सिगरेट की डिबिया से सिगरेट

निकालकर, उसे जलाता है।) देख री छोरी, टिफिन में पाव-भाजी लाया हूं तेरे लिये। आ जा, नीम के तले। दोनों बैठकर, खायेंगे। (सिगरेट का एक लम्बा कश लेकर, मुंह से धुंए के बादल छोड़ता है)

(तभी अठारह-बीस साल का जवान छोरा, जिसका नाम है पारस। तगारी ज़मीन पर रखकर, ड्राइवर पास आता है। फिर, उससे कहता है।)

पारस - हुजूर, हम भी आ जाते हैं चुकिया के साथ। एक से दो भले, माल तो कमाल का है।

ड्राइवर - (तुनक कर) - भग यहां से, कम्बख़्त आया लापसी में धूल मिलाने? बड़ा आया, चुकिया के साथ बैठने वाला? कभी कुछ लाया, चुकिया के लिये? कमज़ात दस बार बाज़ार में घूम कर आ जाता है, ख़ाली हाथ। मैं तो इसे, शहर का हर पकवान खिलाऊंगा।

पारस - (हंसते हुए) - हुजूर, आज़ नये मेट साहब आये हैं। ज़रा, ध्यान रखना। पाव-भाजी खिलाकर, काम पर लगा देना चुकिया

को। बिठाना मत, अपने पास। नहीं तो, उसकी ग़ैरहाज़री लग जायेगी..?

ड्राइवर - अरे कुचमादी के पिल्ले, इसका बहुत ध्यान रखता हूं मैं। तेरी कलाग़ (कौए) जैसी चोंच को बन्द रखा कर, आख़िर तू है किस खेत की मूली? कभी लंच में इस नीम के आस-पास फटकना मत, आ गया कम्बख़्त तो पिटाई कर दूंगा तेरी।

(तभी, लंच होने की घण्टी बजती है। सभी मजदूर काम रोक कर हाथ-मुंह धोते हैं, फिर छायां में बैठ कर लंच लेते हैं। इधर दोनों दोस्तों के बीच गुफ़्तगू चल रही है, दोनों अपना टिफिन खोलकर लंच लेते हैं। दोनों की बातें, साफ़-साफ़ सुनाई देती है।)

दाऊद मियां - (अचरच करते हुए) - अमां यार, ना तो आपने वजू किया और ना हाथ धोये..? और जनाब बैठ गये, खाना खाने.....? अरे ओ ख़ुदा के बंदे, जुहर की नमाज़ अदा कौन करेगा..?

शमसुदीन - (हंसते हुए) - अरे जनाब। ज़माना लद गया, कहां पुराने ख़्यालों की बातें लेकर बैठ गये यहां? दुनिया कहां की कहां पहुंच गयी है, और आप वहीं के वहीं? (निवाला उठाते हैं)

दाऊद मियां - इसमें हंसने की क्या बात है, मियां..? भाभीज़ान क्या सोचती होगी, के उनके शौहर-ए-नामदार घर पर पांच वक़्त नमाज़ी बनने का ढोंग करते हैं.. और घर के बाहर ना तो नमाज़ अदा करते हैं, और ना करते हैं वजू?

शमसुदीन - पहले पेट पूजा, फिर दूसरी बातें। ज़नाब, क्या बोरिंग मुद्दा लेकर बैठ गये हो?

दाऊद मियां - अरे वाह? बिना वजू किये, खाना खाने बैठ कर आप दीनदार मोमीन कैसे बन सकते हो..? कम से कम, आप यह कह देते 'बिस्मिलाहि रहमान रहीम।' असतग़फिरूल्लाह। लाहौल विला क़ूवत, क्या ज़माना आया है?

(दाऊद मियां तो फुजूल का मुद्दा लेकर बैठ गये, मगर अपने मतलब में सावचेत रहने वाले शमसुदीन ने खाना खा लिया है। अब वे हाथ

धोकर, उठ चुके हैं। अब मियां शमसुदीन बेग से एन्टीसेप्टिक क्रीम निकालकर, अपने हाथों पर लगाते हैं। फिर, दाऊद मियां से कहने लगते हैं।)

शमसुदीन - ज़माने के बदलने के साथ बरख़ुदार, इंसान की अक़्ल और इल्म का भी इजाफ़ा होता है। कुरान-ए-शरीफ़ में हजरत मोहम्मद ने कहा है के, 'मैं आख़िरी नबी हूं। मेरे ज़ाने के बाद इंसान की अक़्कल व इल्म में इतना इजाफ़ा हो जायेगा, के वह ख़ुद ही तजवीज़-आख़िर ले लेगा। उसको मेरी ज़रूरत, महसूस नहीं होगी।

दाऊद मियां - (निवाला गिटते हुए) - मेरी समझ में कुछ नहीं आया, आख़िर कहना क्या चाहते हो? साफ़-साफ़, कहो।

शमसुदीन - (अंगड़ाई लेते हुए) - इसका मायना है, बदलती दुनिया के साथ अपने-आप को ढालो। ख़ुदा ना करे, आप ज़माने के माफ़िक ना रहे तो इंशाअल्लाह तख़रीब बनकर रह जायेंगे आप।

दाऊद मियां - अफ़सोसनाक जहालत है, जबीं यह है कि आपको बेदिली से अक़्लेकुल कहूंगा, मगर तसलीम तब करूंगा जब आप

रसूल अलद सली अलद अलाया वसलम के ज़माने में आदमी पांच बीबी रख सकता था, उसका जबीं क्या रहा? बतायेंगे, आप?

शमसुदीन - मैं क्या बताऊं, जनाब? (नीम के पेड़ की तरफ़ उंगली दिखाकर, इशारे से बताते हैं) आप ज़रा नीम तले अपनी निगाह डाल दीजिये, हैरत रह जायेंगे और इस सवाल का जवाब आप ख़ुद ढूंढ लेंगे।

(अब दाऊद मियां खाना खा चुके हैं, अब हाथ धोकर रूमाल से साफ़ करते हुऐ नीम तले देखते हैं। वहां से किसी मर्द और जनाने की खिल-खिलाहट की आवाज़ सुनाई देती है। ग़ौर से देखने पर मालुम पड़ता है, वहां ड्राइवर और चुकिया बैठे-बैठे वहशी हरक़तें करते जा रहे हैं। चुम्मा और बाहुपोश में लेने की सिसकारियों की मदभरी वहशी आवाज़ें बार-बार इन दोनों दोस्तों के कानो में सुनाई देती है। यह मंजर देखकर, दाऊद मियां अपनी आंखें मूंद लेते हैं। बरबस उनके मुंह से, ये अल्फाज़ निकल पड़ते हैं।)

दाऊद मियां - तौबा..तौबा। ख़ुदा रहम, (गले में पहने इमामजामीन को आंखें पर लगाते हैं) यह क्या वाहियात मंजर दिखा दिया, मियां? (आस्मां की तरफ़ देखते हुए) परवरदीगार, माफ़ करना। अनज़ाने में, यह ख़ता हमसे हो गयी। काश, हम उस मंजर को नहीं देखते..?

शमसुदीन - अरे मियां यह वाहियात नहीं, तुम्हें ज़िदगी की सच्चाई दिखा रहा हूं। यह आग ही ऐसी है, जो बढ़ती जाती है मगर ख़त्म नहीं होती।

दाऊद मियां - ऐसी क्या बात है, बिरादर..?

शमसुदीन - आदमी इस भौतिक युग में, अपनी इन्द्रियों को काबू में नहीं रख सकता। इसलिये उस ज़माने में दुनिया ज़हान के एब ख़त्म करने के लिये, मर्द को पांच बीबी रखने की सहूलियत दी थी।

(तभी लंच का वक़्त बीत ज़ाने की, घण्टी सुनाई देती है। दोनों दोस्तों ने अपने टिफिन, बेग मे रख दिये है। अब वे मजदूरों को, उनकी मजदूरी भुगतान करने के काम में, जुट जाते हैं। सूरज अब,

अस्त होने जा रहा है। काम ख़त्म करने से पहले, मज़दूरों ने सामान सम्भाल कर रख दिये हैं। छुट्टी हो गयी है, सबके ज़ाने की पदचाप सुनाई देती है। धीरे-धीरे, मंच की रोशनी लुप्त होती जाती है।)

(५)

(मंच रोशन होता है, पोर्च में बैठे दाऊद मियां ख़्यालों में खोये दिखायी देते हैं। ख़्यालों में डूबे दाऊद मियां, अपने गुज़रे वक़्त के बारे में सोचते जाते हैं।)

दाऊद मियां - (सोचते हुए, साथ-साथ बड़बड़ाते हैं) - मेट की नौकरी के बाद में, एज्यूकेशन महकमें में छोटे दफ़्तरे निगार की नौकरी हासिल कर ली। फिर धीरे-धीरे वक़्त बीतता गया, और सही वक़्त पर परमोशन पाकर हम दफ़्तरे निज़ाम यानि कार्यालय सहायक बन गये। इस नौकरी में पैसा बचाने का नायाब तरीका ढूंढ़ निकाला, भविष्य को सुरूक्षित करने के लिये भविष्य में भाव बढ़ने की ठौड़ हमने एक प्लोट ख़रीद लिया। फिर हर दो साल बाद, उसे बेचकर दुगने प्लोट ख़रीदते रहे। इस तरह इधर प्लोटों की बिक्री से

कमाई होती रही, और उधर हमने लोगों को ब्याज पर पैसे देने का धंधा अलग से खोल दिया। बस, चारों तरफ़ से पैसों की बरसात होने लगी। मगर ऐश-मौज़ के लिये, कभी भी पैसे बरबाद किये नहीं। जब भी इस शमसु को देखता हूं, कलेज़े पर सांप लोट पड़ते हैं। पैसा भी उसने खूब कमाया, मगर सारे ऐश-मौज़ करते हुए। कम्बख़्त कहता है, के 'ट्यूशन पढ़ाने जाओ तो, साइकल पर सवार होकर मत जाओ। स्कूटर पर सवार होकर जाओगे तो, चार ट्यूशन ज़्यादा पढ़ाओगे। मगर, क्या करूं? हमारी आदत तो पैसे को चोंच से पकड़े रखने की बन गयी, बेफ़ुजूल ख़र्च हमसे होता नहीं। बस अब हम तो साइकल का ही इस्तेमाल करेंगे, कह देंगे उन नामाकूलों को जो हम पर हंसते आ रहे हैं ... के, 'साइकल की सवारी से, बदन की कसरत हो जाती है। अमां यार, स्कूटर, मोटर साइकल, कार वगैरा जितनी इस्तेमाल करते रहोगे, ज़रूर बीमार पड़ोगे। जवानी यूं ही ढल जायेगी, जल्दी बूढ़े दिखने लग जाओगे।'

(इधर दाऊद मियां उधेड़बुन में लगे थे, उधर चुग्गा खां बगीचे मे पानी देकर अब पानी भरी बाल्टी और लोटा लिये जाफ़री के पास

आते हैं। उस पर लगी पांच पत्ती की बेल पर, अब वे पानी का छिड़काव करना चालू कर देते हैं। जैसे ही ठण्डे पानी के छींटे, दाऊद मियां पर गिरते हैं और मियां चमक उठते हैं, और ख़्यालों की दुनिया छोड़कर लौट आते है वर्तमान मे। मगर यहां तो उनकी बदक़िस्मती से चुग्गा खां सुन लेते हैं, दाऊद मियां का बोला गया लास्ट जुमला। सुनते ही, मियां चुग्गा हो जाते हैं बेनियाम। और, झट अपने बोलने का भोम्पू स्टार्ट कर देते हैं।)

चुग्गा खां - (बाल्टी ज़मीन पर रखकर) - बूढ़े होगें, हमारे दुश्मन। हुज़ूर, हम बूढ़े नहीं हैं। पूरे बगीचे को, पानी पिलाकर आ रहे हैं। घण्टों का काम, मिनटों में निपटा दिया हुज़ूर।

दाऊद मियां - (आंखें मसलते हुए) - माफ़ करना, बिरादर। ज़रा, आंख लग गयी। क्या करें? आज़कल बैठे-ठाले पुरानी यादों में, अक़सर खो जाया करते हैं।

(चाय का प्याला लेकर आती है, शमशाद बेग़म। पास आकर, उन्हें चाय का प्याला थमाती है। प्याला थमाकर, कहने लगती है।)

शमशाद बेग़म- (चाय का प्याला थमाकर) - हुज़ूर, साबीर मियां तशरीफ़ लाये थे। आपके पास आकर, उन्होने आदाब भी कहा। मगर, क्या करें, हुज़ूर? आप उस वक़्त, सुनहरे सपनों में खोये थे। फिर, क्या? वे जमाल मियां से मिलकर, चले गये।

दाऊद मियां - ऐसे ही आये, या कोई काम रहा होगा जमाल मियां से? ऐसा क्या काम रहा होगा, ख़ाला? आप बता सकती हैं, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- (लबों पर मुस्कान लाकर) - आज़ के ज़माने मे, बिना काम आता है कौन? थोड़ा-बहुत इन कानों से सुना था, शायद कुछ पैसे लेन-देन का काम रहा होगा?

दाऊद मियां - यह क्या कह दिया, ख़ाला आपने? पैसों की लेन-देन का मआमला रहा होगा, तब ख़ाला आपने जगाया क्यों नहीं हमें? कहीं इस जमाले ने, मुर्ग़ी तो ना फांस ली?

शमशाद बेग़म- फांस क्या ली हुज़ूर, अब तक तो क़बाब बना दिया होगा?

दाऊद मियां - ऐसा हो नहीं सकता, जमाले की क्या औकात? हमारे बाक़ीदार का खून चूष ले, फिर हम यहांबैठे हैं। किस, काम के?

शमशाद बेग़म- आपसे कब साबीर मियां ने कर्ज लिया, हुजूर? फिर कैसे बन गये, आपके बाक़ीदार? अभी दूर नहीं गये हैं, जनाब। अभी जाकर पकड़ लीजिये, उनको। बाद में, आराम से खून चूषते रहना। बस हुजूर, गेट तक ही पहुंचे होंगे अभी तक?

दाऊद मियां - अरे ख़ाला, दो मिनट क्या आंखें मूंद ली? आपने तो समझ लिया, हम दुनिया से रूख़्सत हो गये हैं?

शमशाद बेग़म- रूख़्सत हो, आपके दुश्मन। नींद में, खलल कैसे डालती? आख़िर, आपकी तंदरूस्ती का सवाल ठहरा। अब नहीं उठाया तो जनाब आप नाराज़ हो रहे हैं, आगे से कह दूंगी बड़ी बी को के 'हेड साहब काम के वक़्त, नींद ले रहे हैं। फिर, क्या? आपको बड़ी बी आकर उठा देगी।

दाऊद मियां - (धीरे से) - क्या कहती हो, ख़ाला? जबान सम्भाल कर, बोलो। अरे ख़ाला, वो बड़ी बी उठा देगी क्या? वह तो हमें रूख़्सत कर देगी, इस ख़िलक़त से? (फटाफट चाय पीकर, दाऊद मियां ख़ाली कप मेज़ पर रख देते हैंं)

(चाय का ख़ाली प्याला लेकर, शमशाद बेग़म जाफ़री की जाली से बाहर देखने लगी। अचानक, वह साबीर मियां को मेनगेट की तरफ़ जाते हुए देख लेती है। फिर क्या? तपाक से, दाऊद मियां को कह देती है।)

शमशाद बेग़म- (चाय का प्याला, नल के नीचे रखकर) - हुजूर, साबीर मियां तशरीफ़ ले जा रहे है। जनाब जाईये... जाईये। फटा-फट पकड़ लीजिये, उन्हे। न तो आप...

(दाऊद मियां ने आव देखा ना ताव, झट लपक पड़े साबीर मियां को पकड़ने। फिर, क्या? तुरन्त, उन्हें जा देबोचा। अचानक कन्धो पर दबाव पाकर, साबीर मियां घबरा घबरा उठे और बहदवासी मे तुनक कर कह उठे।)

साबीर मियां - (तुनक कर) - अरे, कौन है कम्बख़्त?

(इतना कहकर दाऊद मियां को बिना देखे, धक्का मारकर अपना कन्धा छुड़ाते हैं। मगर, यह क्या...? बेचारे दाऊद मियां धक्का खाकर, पास के हेडपम्प से पानी ला रही मोहल्ले की एक मोहतरमा के ऊपर जा गिरे। आज़कल ये मोहल्ले की औरतें, स्कूल का गेट खुला पाकर झट घड़ा सर पर ऊंचाये स्कूल में दाख़िल हो जाती है। फिर अन्दर आकर, हेडपम्प से पानी भरकर चली जाती है...और साथ में गेट का दरवाज़ा भी, खुला छोड़ जाती है। बदकिस्मती से अभी भी एक औरत पानी भरकर लौट रही थी, और तभी उसकी टक्कर दाऊद मियां से हो जाती है। फिर, क्या? टक्कर खाने से, उसके सर पर रखा पीतल का घड़ा जा गिरता है दाऊद मियां पर। बेचारे मियां गये चुग्गा चुगने, मगर उल्टे ग़लत जगह अपना पांव फंसा बैठे। फिर, क्या...? वह मोहतरमा मुगल्लज़ गालियां बकती हुई, वापस मुडती है... पानी भरने के लिये, हेडपम्प की ओर क़दम बढ़ा देती है। अब वापस उठकर दाऊद

मियां सामने देखने लगे, सामने अब मियां साबीर को खिलखिलाते हुए हंसते देखकर, वे ख़ुद खिसयानी हंसी हंसते हुए कहने लगे।)

दाऊद मियां - (खिसयानी हंसी हंसते हुए) - हीऽऽ हीऽऽ हीऽऽ .. मियां ऐसा हो जाता है, कभी-कभी। (कपड़े झाड़ते हुए) अब मियां, अपनी सुनाओ। क्या लोगे, चाय-वाय या और कुछ?

साबीर मियां - (अपने आप) - क्यों मियां, चच्चा करीम के मक्खीचूस भतीजे। क्या चाय-वाय, पिलाओगे? अभी फोकट की सुर्ती चखाकर, नाक की बारह बजा दोगे? आप तो यही कहोगे अभी, 'स्कूल में चाय-वाय तो जनाब ने ले ली होगी, अब क्या बार-बार चाय पीलाना...? यार ज़्यादा चाय लेने से, एसीडीटी बढ़ जाया करती है। चलिये मनु भाई की दुकान पर बैठकर, सुर्ती चखते हैं।'

(मगर, यह क्या? इधर साबीर मियां ने, दिल में सोचा... और उधर दाऊद मियां ने कह डाला।)

दाऊद मियां - क्या मुंह बनाकर बैठ गये, मियां...? चलिये मनु भाई की दुकान पर, अभी सुर्ती चखते हैं। और बदन में आती है, फुर्ती।

(दोनों फटा-फट मेन-गेट पार करके, पहुंच जाते हैं मनु भाई की दुकान पर। दुकान के आगे लगी पत्थर की बैंच पर बैठ जाते हैं दाऊद मियां, फिर पास खड़े साबीर मियां से कह बैठते हैं।)

दाऊद मियां - क्यों मुंह लटकाये खड़े हो, मियां? रूपयों का बन्दोबस्त जमाल मियां नहीं कर पाये तो कोई बात नहीं, हम कर देंगे यार बन्दोबस्त। मुस्कान लाओ यार, लबों पर। चलिये बिरादर, पहले सुर्ती चख लेते हैं। (फिर मनु भाई की ओर देखते हुए, कहते हैं) आदाब, मनु भाई।

(इस आदाब का, क्या मायना? मनु भाई अच्छी तरह से ज़ानते हैं, बस झट उनकी मांग समझते हुए झट पेसी पकड़ा देते हैं दाऊद मियां को। अब दाऊद मियां पेसी से जर्दा और चूने लेकर, हथेली पर रखकर अंगूठे से मसलते हैं। फिर, मनु भाई से कहने लगते हैं।)

दाऊद मियां - (मनु भाई से) - जनाब, ख़ैरियत है? आप भी चखिये, सुर्ती।

(इतना कहकर हथेली पर, दूसरे हाथ से थप्पी लगाते हैं। खंक उड़ती है, जो उड़कर मनु भाई, साबीर मियां व दुकान पर खड़े ग्राहकों के नासा-छिद्रों को खोल देती है। फिर क्या? छींकों की झड़ी लग जाती है। बेचारे ये कई अनज़ान मोमीन, मनु भाई से ख़ुर्दाफ़रोश यानि घी, तेल या किराणा का सामान ख़रीद रहे थे, उनका हाल बेहाल हो जाता है... इन बेरहम छींकों के कारण। मगर, दाऊद मियां को क्या? वे तो झट थोडी सुर्ती उठाकर पहले ख़ुद चखते हैं, फिर बची हुई सुर्ती थमा देते हैं मनु भाई और साबीर मियां को। फिर पेसी दुकान के काउन्टर पर रखकर, वापस आकर बैठ जाते है बैंच पर। बैंच पर बैठकर आराम से हूंकारते हैं, 'अल्लाहो अकबर'। उधर अभी तक बेचारे मनु भाई लगातार छींकते जा रहे हैं, परेशान होकर वे मन ही मन में बड़बड़ाते हैं।)

मनु ़भाई - (मन ही मन, बड़बड़ाते हैं) - फोकट का चन्दन, लगा मेरे भैया। मेरी जर्दे की पेसी मुझ से ही लेकर, मुझे ही छींकों की झड़ी लगा रहा है कम्बख़्त? फिर जनाब अपने मुंह से बोलते जा रहे हैं, 'मियां, ख़ैरियत है?' काहे की, ख़ैरियत....? मज़बूरी का फायदा, उठा रहे हैं।

(उधर गली में, बर्फ के गोले बेचने वाला आ गया है, अपनी लोरी को कोने में खड़ी करके वह घंटी बजाता जा रहा है। उस घण्टी की आवाज़ सुनकर, क्लास टेन्थ की चार-पांच दुख़्तर क्लास छोड़कर वहां आ जाती है...गोला खाने। वहां खड़ी-खड़ी, वे वसीम मियां का इन्तज़ार करती है। उधर मनु भाई के लख़्ते जिग़र वसीम मियां अपने अब्बा हुजूर को विचारों में तल्लीन पाकर, हाथ की सफ़ाई करने की कारश्तानी पर उतर आते हैं। फिर क्या? दबे पांव जाकर, झट गल्ले से दस रूपये पार कर लेते हैं। थोड़ी देर बाद वे उस लोरी वाले के पास खड़े दिखायी देते हैं। अब वे हंसी के ठहाके लगाते हुए, बच्चियों को शरबत में डूबे हुए बर्फ के गोले खिलाते जा रहे है। मगर, अभी भी मनु भाई सोचते जा रहे हैं।)

मनु भाई - (होंठों में ही बड़बड़ाते हैं) - हाय अल्लाह, रसूख़ात तोड़ नहीं सकता। वक़्त-बेवक़्त उधार रूपये लाकर देने वाले, इनके सिवा है कौन? यहां, किराणे की दुकान क्या खोली? जी का जंजाल बन गयी, यह दुकान। बस पूंजी डालते ही जाओ, डालते ही जाओ। मगर, फ़ायदा क्या? मोहल्ले वाले माल ले जाते हैं, उधार।

(दस रूपये ख़त्म होने के बाद, वसीम मियां वापस आ जाते हैं दुकान पर। और आकर चुप-चाप काउन्टर पर रखी चोकलेट की बोतल से दस-पन्द्रह चाकलेट निकालकरए उन बच्चियो के बीच चाकलेट बांटने चले जाते हैं। मगर अभी भी मनु भाई विचारों में खोये हैं, वे सोचते जा रहे हैं।)

मनु भाई - (होंठों में ही, बड़बड़ाते हैं) - मगर, अल्लाह के फ़जलो करम से हमें तो नकद देकर ही माल उठाना पड़ता है। इधर हमारा नालायक बेटा वसीम, मर्दूद अक़सर दुकान पर बैठता नहीं। बैठता है तो, मोहल्ले की जवान छोरियों को कभी आईस-क्रीम तो कभी बर्फ के गोले खिलाकर कर देता है गल्ला कम। अरे, करें क्या? आडे

वक़्त ये दाऊद मियां रूपये तो दे देते हैं उधार, मगर बाजार रेट से ज़्यादा ब्याज रेट लगाकर। बस यही कारण है, फोकट में सुर्ती खिलाकर इनको ख़ुश रखना पड़ता है।

दाऊद मियां - (मनु भाई को विचारों में तल्लीन पाकर) - किस फ़िक्र में बैठ गये, मनु भाई? एक ओर जर्दे की फाकी लगाकर, एक बार फिर आपके नासा-छिद्र खोल दें क्या?

साबीर मियां - (बीच में बोलते हुए) - एक बार खुल गये, नासा-छिद्र। अब बार-बार क्यों खोल रहे हो, उस्ताद? सुनो हमारी दास्तान, हम क्यों जमाल मियां से मिलने आये थे?

दाऊद मियां - बोलिये, हुज़ूर।

साबीर मियां - कुछ महीने पहले हम गये थे, कलेक्टर आफिस। उस दौरान, ये जमाल मियां और पोलीटेक्नीकल कोलेज के जूनियर एकाउण्टेट याह्यिया खां कन्ट्रोल रूम में डेपुटेशन पर लगे थे। उनके कमरे के बाहर, उनकी ख़िदमत में चपरासी नवाब शरीफ एक स्टूल पर बैठे थे।

दाऊद मियां - हमारा क्या काम, नवाब शरीफ से? हम तो पाकिस्तान के वजीर-ए-आज़म नवाब शरीफ से भी, कोई रब्त नहीं रखते।

साबीर मियां - सुनिये तो सही, मियां। बेचारा नवाब शरीफ इनकी ख़िदमत करता-करता, हो गया परेशान। ये दोनों तो ठहरे, चटोखरे। कभी लस्सी मंगवाते तो कभी मिठाई-नमकीन, इनकी मांग पूरी करता-करता, वह अपने पांवों को दर्द का अलील दे बैठा।

दाऊद मियां - पांवों को, क्यों तक़लीफ़ दी? फोड़ देता सर इस जमाले का, कम्बख़्त मौज़ मनाने के लिये बैठ गया डेपुटेशन पर। क्या कहूं, मियां? उसका सारा काम करना पड़ा, मुझे...उस दौरान।

साबीर मियां - आप तो नवाब मियां की हालत देखिये, छोड़िये जमाल मियां को। अल्लाह की ताज़ीर देखिये, हुजूर। एक नवाब शरीफ बना हुआ है वजीर-ए-आज़म, और दूसरा नवाब शरीफ बेचारा दफ़्तर में जूठे कप-प्लेट उठाता है। वाह अल्लाह, तेरे दर पे ऐसी नाइंसाफ़ी?

(गुफ़्तगू करते-करते साबीर मियां के पांवों में दर्द होने लगा, अब वे आराम से बैंच पर बैठ जाते हैं। इधर, मनु भाई के विचारों की तल्लीनता ख़त्म हो गयी है। अब वे इन लोगों को, रूख़ी नज़रों से देखते हैं। फिर, धीरे-धीरे बड़बड़ाते जाते हैं।)

मनु भाई - (घीरे-धीरे, बड़बड़ाते जाते हैं) - आ गये, निक्कमें कहीं के। धंधे के वक़्त आकर बैठ गये यहां, और अब उठने का नाम नहीं लेंगे। ख़ुदा रहम, कहीं इनको देखकर निक्कमे-आज़म फन्ने खां आ नहीं जाय यहां?

दाऊद मियां - (मनु भाई की तरफ़, ध्यान नहीं देकर) - बोलिये साबीर मियां, फिर क्या हुआ?

साबीर मियां - होना क्या था, जो हमेशा होता आया है। घण्टी सुनायी देती है, और हमारे नवाब साहब हो जाते हैं तैयार। और मनसूबा बना लेते हैं, के अगर मिठाई मंगवाई तो दस्तरख़्वान पर मिठाई रखेंगे बाद में, पहले वे अपना हिस्सा ज़रूर अलग रख लेंगे। अल्लाह ज़ाने, फिर मिठाई बचे या नहीं?

(साबीर मियां दास्तान सुनाते जा रहे हैं, एक फिल्म की तरह सारा वाकया दाऊद मियां और मनु भाई की आंखों के आगे छाने लगता है। धीरे-धीरे मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(६)

(मंच रोशन होता है, कन्ट्रोल रूम दिखायी देता है। टेलीफ़ोन के पास, जमाल मियां व याह्यिया खां बैठे हैं। कमरे के बाहर, स्टूल पर नवाब शरीफ बैठे हैं। इनके पास, मुसाहिब साबीर मियां खड़े हैं। तभी नवाब शरीफ को, घण्टी सुनाई देती है। पीछे-पीछे, याह्यिया खां की गरज़ती आवाज़ सुनाई देती है।)

याह्यिया खां - (नवाब शरीफ से) - नवाब साहब, ज़रा तशरीफ़ रखिये ः हुज़ूर। तीन मर्तबा घण्टी बजा चुका हूं, (नवाब शरीफ को अन्दर दाख़िल होते देखकर) जाओ, पांच छाछ की बोतलें केन्टीन से लेते आईये। देखिये तो, जमाल साहब से कौन साहब मुलाकात करने आये हैं?

नवाब साहब - हुजूर, छाछ मंगवाने से हमारे जमाल साहब की शान में बट्टा लग जायेगा। कहो तो गुलाब हलुआ के साथ, शाही कोफ्ता भी लेते आऊं? आख़िर, वह हमारे जमाल साहब के ख़ास मेहमान ठहरे।

जमाल मियां - क्या अनाप-शनाप बके जा रहे हो, मियां? आपकी यही मर्जी है, के हम बार-बार पाख़ाना जाते रहें? यार नवाब मियां, हम पर कुछ रहम करो। नीचे का दफ़्तर, दो दिन से दुरस्त नहीं है। अब गुलाब हलुआ खिलाकर, मारोगे क्या?

नवाब हुजूर - (हंसते हुए) - हुजूर। ज़रा अलील है आपको, क़िब्ला हमें नहीं है। हम तो जनाब, बड़े लुत्फ़ से खायेंगे। आप मंगवाइये, तो सही।

याह्यिया खां - बिल्ली की तरह, छीका मत तोड़ो भाई। (याह्यिया खां अपनी दोनों हथेलियों को कटोरे की शक्ल देते हैं, फिर मायूसी से कह बैठते हैं।) ला दे, मंगा दे प्यारे जमाल मियां, अल्लाह के नाम से मंगा दे। अल्लाहताआला, तेरा भला करेगा।

(इस तरह भिखारी की तरह उन्हें मांगते देखकर, जमाल मियां अपनी हंसी रोक नहीं पाते। फिर क्या? ज़ोर से खिलखिलाकर, हंस पड़ते हैं। और फिर, नवाब मियां को मिठाई नाश्ता लाने का हुक्म दे देते हैं। फिर याह्यिया खां को चिढ़ाते हुए, जमाल मियां कह बैठते हैं।)

जमाल मियां - कुरबान हो जाऊं, मियां। कभी-कभी हमारे दर पर, कटोरा लिये तशरीफ़ रखें। अरे हुजूर, रूपये पैसों से मुंह भर दूंगा आपका। (नवाब शरीफ की तरफ़ देखते हुए) अरे नवाब मियां, अभी तक रूख़्सत हुए नहीं? क्या आपको भी, भीख देनी पड़ेगी क्या?

याह्यिया खां - (साबीर मियां की तरफ़ देखते हुए) - ओ ख़ुदा के बन्दे, बाहर क्यों खड़े हैं, हुजूर? अन्दर तशरीफ़ रखिये, मेहरबान।

जमाल मियां - (ख़ाली कुर्सी आगे खिसकाते हुए) - आइये साबीर मियां, बैठिये, हुजूर।

(मुंह नीचे किये हुए, नवाब शरीफ केन्टीन की तरफ़ क़दम बढ़ाते हैं। साबीर मियां अन्दर आकर, कुर्सी पर बैठते हैं। फिर, याह्यिया खां जमाल मियां से कहने लगते हैं।)

याह्यिया खां - ओ मेरे मसीहा, तेरे रहम से ही बचे-खुचे दिनों में हमारा गुज़ारा चल जाता है। तनख़्वाह तो मियां, बस दस-पन्द्रह दिन में ही ख़त्म हो जाती है। बचे-खुचे दिन तुम्हारे सहारे बसर हो जाते है, मेरे यार। अब ए अल्लाह के बन्दे, साबीर मियां की मदद कर। अल्लाह रसूल तेरी सारी ख़ता माफ़ कर देगा, यार।

जमाल मियां - (साबीर मियां से) - आपकी क़दमबोसी से, हमारे दफ़्तर में क्या हुई? अल्लाह पाक के दीदार हो गये, हमें। ख़ैरियत तो है, मियां?

साबीर मियां - आपके हुस्ने-समाअत से जी रहे हैं, मेरे ख़ैरख़्वाह। कुछ काम था, हुजूर। थोड़ी जहमत दे रहा हूं, माफ़ करना।

जमाल मियां - अल्लाह का फ़जल है, आपने इस नाचीज़ को ख़िदमत करने के क़ाबिल समझा। अजी हमारा तो यह कहना है, के

परवरदीगार ने इंसान को ये दो हाथ ज़रूरतमन्दों की मदद करने के लिये दिये है। अब आप मआमला बतायें, गोया मैं आपके कुछ काम आ सकूं...?

साबीर मियां - (ख़ुश होकर) - आपकी इस सलाहियत की क़द्र करता हूं, आज़ दुनिया में कहां ऐसे रब्त रहे ?

याह्यिया खां - चलिये अब इस मोहमल लग्व को छोड़िये, असली काम के मुद्दे पर आ जाईये।

साबीर मियां - औलिया के मेहर से, ख़ानदान-ए-चराग़ रोशन हुआ है। अगले जुम्मेरात अजमेर जाकर, ग़रीब नवाज़ की मज़ार पर चादर चढ़ानी है। बस हुजूर, आपकी मेहरबानी से ख़ाली पांच हज़ार रूपयों का इंतज़ाम हो जाय। आप जैसे नवाबी ख़ानदानी मुसाहिबों के लिये, यह मामूली बात है।

(इतनी बात सुनते ही, दोनों हथेलियां अपनी हिचकी के नीचे रखते हुए जमाल मियां सोचने बैठ जाते हैं।)

जमाल मियां - (सोचते हुए) - एक तो साबीर मियां ठहरे, हमारे अज़ीज़ दोस्त। एक बार बैठे-ठाले डींग हांकते हुए, साबीर मियां को कह दिया था के 'अमां यार, तुम तो ठहरे हमारे जिगरी यार। कभी भी ज़रूरत पड़े, रूपये-पैसे मांग लेना... एक पैसा ब्याज का नहीं लेंगे तुमसे, बस तुम शर्म मत करना मांगने में।'

(जहां जमाल मियां बैठे थे, उनके पीछे ही एक खिड़की खुली हुई है। बाहर ओपोज़िट सियासती पार्टी वालों का हजूम नारे लगाता हुआ गेट की तरफ़ बढ़ता दिखायी देता है। वहां खड़ा दरबान, उनको रोकने की भरपूर कोशिश करता है। फिर क्या ? अन्दर न आने देने से, वो हजूम ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाता जाता है। इतना शोर-गुल होने के पश्चात भी, जमाल मियां विचारों में डूबे रहते हैं।)

जमाल मियां - (होंठों में ही) - अब यह काफ़िर साबीर मियां, आ गया रूपये मांगने? हाय अल्लाह, दोस्ती में पैसों का आना गंजलक? कल वक़्त पर पैसा नहीं लौटाया तो, पैसे तो डूबेंगे ही।

मगर साथ में, मुहब्बत पर ख्ंजर चल जायेगा। कल रात को ही मरहूम अब्बाज़ान सपने में आये थे, और आकर कह गये के...

(अब कलेक्टर साहब ने, नारे लगा रहे सियायती पार्टी के लीडर को गुफ़्तगू के लिये अन्दर अन्दर बुला लेते हैं। इससे, अब नारों की आवाज़ सुनायी नहीं देती। इससे जमाल मियां को कोई फ़र्क पड़ता नहीं, वे तो अब भी पहले की तरह सोचते जा रहम हैं।)

जमाल मियां - (होंठों में ही) - अब्बा हुजूर ने कहा, के 'अम्मी के पैसे हिफ़ाजत से रखना बेटा, बिना ब्याज किसी को पैसे देकर ख़ानदानी वज़ा के ख़िलाफ़ काम मत करना। यह भी याद रखना, दोस्ती जैसे पाकिजा रिश्ते में पैसा बीच में लाकर... रब्त, गारत मत करना। क्योंकि, इस मआमले में ब्याज आना तो दूर..मूल से भी हाथ धो बैठोगे।'

(इतना सोचकर, जमाल मियां अपने बेग से डायरी निकालकर देखने लगे। तभी, नवाब शरीफ मिठाई और नमकीन लिये लौट

आते हैं। अब नवाब शरीफ मेज़ पर, मिठाई-नमकीन वगैरा रखते हैं।)

नवाब शरीफ - कहां खो गये, उस्ताद? माल-मसाला आ गया, हूज़ूर। बिस्मिलाहि रहमान रहीम कहकर माल-मसाले का लुत्फ़ उठाइये, जनाब।

जमाल मियां - (आंखें मसलते हुए) - नवाब साहब, छाछ लाने का हुक्म दिया था, जनाब भूल गये क्या?

नवाब शरीफ - (माथे का पसीना पोंछते हुए) - सारी टोपी गीली हो गयी, जनाब। (टोपी उतार कर, खूंटी पर टांकते हैं) अब कैसे जाऊँ, बिना टोपी पहने?

याहिया खां - (जमाल मियां की टोपी उतार कर, नवाब शरीफ को थमाते हैं) - यह टोपी पहन लो, नवाब मियां। क्या फ़र्क पड़ता है? अहमदिया की टोपी, महमूदिया के सर।

नवाब शरीफ - (वापस जमाल मियां को टोपी पहनाते हुए) - फिर भी महमूदिया फिरे, ऊघाड़ा सर? हुजूर, ऐसी टोपी पहनने की

क्या जुरअत? वैसे भी हुजूर, हम है नवाब शरीफ। जो ख़ाली लोगों को टोपी पहनाना ज़ानते हैं, मगर...

याहिया खां - इस कमबख़्त टोपी को, मारो गोली। छाछ का इन्तज़ाम करो, यार। अब फूटो यहां से, गला सूख गया है। यार, छाछ की बोतलें लेकर आ जाओ। अब ख़ुदा के लिये, इस गले को तर कर दो।

जमाल मियां - (होंठों में ही) - इसकी टोपी, उसके सर। वह खूब बक डाला...कम्बख़्त। अब छाछ की जगह लगाता हूं, तेरे मुंह में आग। फिर कैसे बचता है, तू?

(जेब से, मेडम सुपारी निकालते हैं। फिर मुंह में डालकर, अपने दिमाग़ के कल-पूर्जा को ठीक करते हैं। सुपारी मुंह में जाते ही, दिमाग़ की नसों में हरकत होती है। यकायक, सोचने की पोवर बढ़ जाती है। फिर, याह्यिया खां से कहने लगते हैं।)

जमाल मियां - ऐसा करते हैं, ज़रा साबीर मियां को नवाब साहब के साथ बाहर टहलने भेज देते हैं...तब तक हम अपनी डायरी देख लेते हैं, के पैसों का इन्तज़ाम हो सकता है या नहीं?

साबीर मियां - चलिये नवाब साहब, ज़रा टहलकर आते हैं।

(फिर क्या? नवाब साहब और साबीर मियां केन्टीन की ओर क़दम बढ़ाते हैं, क्योंकि अब तो नवाब मियां को छाछ लाने का हुक्म जो तामिल करना है। उनके रूख़्सत होने के बाद, जमाल मियां याह्यिया खां से कहने लगते हैं।)

जमाल मियां - ऐसा क्यों नहीं करते मियां, अभी आपके लेखक खाते से साबीर मियां को रूपये उधार दे दिये जाय?

याह्यिया खां - क्यों जनाब, हम क्यों बने कुरबानी का बकरा?

जमाल मियां - बात ऐसी है, मियां। कुछ समझा करो, यार। साबीर मियां, हमारे ख़ास दोस्त ठहरे। पैसा लौटाने की उतावली कर नहीं सकते, और इनसे ब्याज भी ले नहीं सकते।

याह्यिया खां - ज़रा नवाबी के तौर-तरीके दिखाइये, जनाब। दे दीजिये ना, बिना ब्याज लिये? आख़िर, साबीर मियां तो ठहरे आपके ख़ास दोस्त। दोस्त दोस्त के काम आता है, मियां। ज़रा, दोस्ती निभाइये मेरे दोस्त।

जमाल मियां - अमां यार, यही बात आपको समझाना चाहते हैं हम। आप इतने बड़े दानिश होकर, इतनी छोटी बात समझ नहीं पा रहे हैं?

याह्यिया खां - खुलकर बोलिये, जनाब। जल्दी कीजिये, कहीं साबीर मियां वापस लौटकर ना आ जाय?

जमाल मियां - देखो मियां, हम आपके दोस्त ठहरे और हम दोनों का धंधा, एक ठहरा। अब आप यह साचिये के, एक दोस्त वक़्त आने पर एक दूसरे की मदद करेगा या नहीं? इसलिये, मैं आपकी मदद करना चाहता हूं।

याह्यिया खां - आपका मफ़हूम समझ ना पाया, आप सिलसिले वार बयान कीजिये ना।

जमाल मियां - कहना चाहते हैं, मियां आपकी ज़ान-पहचान अभी तक एज्यूकेशन महकमें के लोगों से नहीं हुई है। साबीर मियां को रूपये उधार देने से, दो फ़ायदे हैं। वक़्त पर पैसे मिलने से, साबीर मियां ख़ुश हो जायेंगे और वे अपने महकमें के लोगों को कहते रहेंगे के..

याह्यिया खां - क्या कहेंगे? यही कहेंगे ना, अल्लाह माफ़ करें यह नामाकूल तो बड़ा शातिर सूदख़ोर निकला।

जमाल मियां - अजी वे तारीफ़ करते हुए कहेंगे के, 'देखो बिरादर, वक़्त पर काम आने वाला ऐसा मोमीन कहां मिलता है आज़कल? वक़्त-बेवक़्त आप इनसे पैसे उधार लेकर, अपना काम निकाल सकते हैं। अरे मियां, आपका धंधा बढ़ जायेगा। बस, आप तो झट साबीर मियां को उधार दे दीजिये।

याह्यिया खां - (ख़ुश होकर) - बात तो वाजिब है, प्यारे। फ़ायदा ही फ़ायदा है, मियां। अब तो मैं तैयार बैठा हूं, हुक्म दीजिये मेरे दोस्त।

जमाल मियां - (चेहरे पर, मुस्कान लाकर) - ठीक है, मियां। अब सुनो, यह ग्राहक हमने दिया है आपको। आपका फ़र्ज़ बनता है, आप हमें वाजिब कमीशन देंगे हर माह।

(दोनों ठहाके लगाकर हंसते हैं, फिर दोनों ख़ास गुफ़्तगू में तल्लीन हो जाते हैं। उधार देने की शर्ते तय होती है, कुछ देर बाद पदचाप सुनायी देती है। साबीर मियां, नवाब शरीफ के साथ लौट आते हैं। साबीर मियां कुर्सी पर बैठ जाते हैं, और नवाब शरीफ अपने काम में लग जाते हैं। वे छाछ की बोतलें मेज़ पर रख देते हैं, फिर मेज़ पर रखी मिठाई व नमकीन को प्लेटों में रखकर दस्तरख़्वान सज़ा देते हैं। इस काम को अंजाम देते हुए, वे अपना हिस्सा बनाना नहीं भूलते। इसके बाद, नवाब मियां अपना हिस्सा उठाकर स्टूल पर बैठ जाते हैं। फिर, 'बिस्मिलाहि रहमान रहीम' कहकर अपनी पेट पूजा करने में तल्लीन हो जाते हैं।)

याह्यिया खां - (साबीर मियां से) - आओ मियां, झट-पट हाथ साफ़ करो। आपका ही माल है, हुजूर। काहे की शर्म? अब झट कह

दीजिये, 'बिस्मिल्लाहि रहमान रहीम'। फिर करते हैं, आपकी क़िस्मत का फैसला।

(इतना सुनकर साबीर मियां की बांछे खिल जाती है, अब तो जनाब के दिल और दिमाग़ में एक ही बात घर कर गयी...के, अब पैसों का इंतज़ाम हो गया और बेग़म के सामने हमारी इज़्ज़त बच गयी। फिर क्या? झट पेट के क़बरिस्तान में, मिठाई-नमकीन डालना चालू कर देते हैं। अब खाते-खाते, याह्यिया खां कहते हैं।)

याह्यिया खां - (खाते हुए) - देखो साबीर मियां, कल ही जमाल मियां से रक़म लेकर, हमने अपने किसी रिश्तेदार को दिला दी। अब यही कारण है मियां, जमाल मियां के पास तो एक्सट्रा रक़म देने की रही नहीं। फिर, अब आप क्या करेंगे?

(साबीर मियां की जब्हा पर फ़िक्र की रेखाए उभरने लगी, उस पर पसीने की बूंदे छलकने लगी। उन्हें फिक्र होने लगी, कहीं बना-बनाया काम बिगड़ तो नहीं गया? अब उनका चेहरा, उदास नज़र

आने लगा। फिर, क्या? बेचारे साबीर मियां, सर पर हाथ रखकर बैठ जाते हैं।)

याह्यिया खां - (कहकहा बुलंद करते हुए) - कहां फ़िक्र करने बैठ गये, साबीर मियां? ज़रा दिल को थामों यार, मर्द हो आख़िर। कभी सुना है, आपने? हिम्मते मर्दा मदद दे ख़ुदा, बादशाह की लड़की फ़कीर से निकाह।

साबीर मियां - (रूंआसी आवाज़ में) - बरख़ुदार, मर्द ज़रूर हूं। मगर मुझे निकाह नहीं करना है, हुजूर। एक निकाह किया, जिसकी सज़ा अभी तक भुगत रहा हूं। हमने एक मर्तबा कहा बेग़म से के, 'रूक जाओ, बेग़म। एक आर.डी. दो साल बाद पक रही है, तब चल पड़ेंगे बेग़म।

याह्यिया खां - कहां चल पड़ोगे, हुजूर? हनीमून ज़ाना था, या और कहीं?

साबीर मियां - अरे हुजूर, बेग़म कहने लगी के 'ख़ानदान-ए-चराग़ रोशन हुआ है अब बिरादरी में आप मुंह दिखलाने क़ाबिल बने हो।

अब पैसों की कंजूसी करके, ओछी हरकत मत करो। मैं अपने पीहर वालों को, शिरनी खाने का न्योता दे चुकी हूं...

याह्यिया खां - ऐसा, क्या हुआ? जो, आपको न्योता देना पड़ा?

साबीर मियां - अमां यार, बेग़म तो भड़क उठी। कहने लगी के, 'क्यों भद्दी लगाते हो, मेरी? घर में इतनी भूख नहीं आयी है, जो दस जनो को दावत दे नहीं सकते? अगले जुम्मे रात अजमेर चलना हैं, चादर चढ़ाने। ओ मेरे ग़रीब नवाज तू बिगड़ी की बनाता है, कोई रास्ता निकाल।'

(इतना कहकर साबीर मियां रूंआसे बने, आस्मां को देखने लग जाते हैं। माहौल ग़मगीन हो जाता है, अब साबीर मियां के कंधे पर हाथ रखकर याह्यिया खां कहते हैं।)

याह्यिया खां - फ़िक्र मत करो, ख़ुदा के बंदे। जहां एक रास्ता बंद होता है, वहां ख़ुदा दूसरा रास्ता अपने बंदों के लिये खोल देता है। (जेब से रूमाल निकालकर, साबीर मियां को देते हैं) पसीना पोंछ लो, यार। मर्द बनो, अब दुनियादारी की बात हमसे सुनो।

साबीर मियां - (रूंआसी आवाज़ में) - अरे हुजूर, पसीने को मारो गोली। (वापस रूमाल थमाते हुए) आप मुद्दे को न छोड़िये, फ़रमाईये हुजूर। क्या हुक्म है, हमारे लिये?

याह्यिया खां - अब, तुम क्या करोगे? शायद अब तुम जाओगे बनिये के पास, उधार लेने। बनिया बोलेगा 'जेवर गिरवी रखकर चार गुना ज़्यादा ब्याज पर, रक़म ले जाओ।' फिर तुम बेग़म क पास जाकर, गिरवी रखने के लिये जेवर मांगोगे। अब तुम सोचो, मियां के...

साबीर मियां - क्या सोचूं, मियां मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा?

याह्यिया खां - इस मौक़े पर आपकी बेग़म जेवर पहनेगी, या अपने जेवर गिरवी रखकर खून के आंसू निकालेगी? अगर, वह रजामंद ना हुई तो...यह सब तुम ज़ानते हो। क्या इतनी परेशानियों से गुज़रना, तुमको गवारा है? फिर, ऐसा क्यों नहीं कर लेते के...

साबीर मियां - क्या कर लूं, हुजूर? अब बाकी रहा, क्या ?

याह्यिया खां - दो परसेण्ट ब्याज पर, हमसे रक़म उधार ले लो और क्या? हम तो आपके एहबाब ठहरे, इसलिये एक मर्तबा कह दिया के 'आपको फ़िक्र में डूबा हुआ, हम आपको देख नहीं सकते।' फिर आप ज़ानो, और आपका काम ज़ाने।

(बस, फिर क्या? काम बन गया, साबीर मियां चहकते हुए उठते हैं। उठकर, याह्यिया खां को अपनी बाहों में भर लेते हैं। फिर, उनको वापस कुर्सी पर बैठाकर ख़ुद उनके पहलू में कुर्सी खींचकर बैठ जाते हैं। अब ख़ुश होकर, उन्हें शुक्रिया कहते हुए आगे कहते हैं।)

साबीर मियां - शुक्रिया जनाब, आप पर कुरबान हो जाऊं मियां। आपने इन कम्युनिष्ट दिनों में, मेरा काम निकाला।

याह्यिया खां - (मुस्कराते हुए) - कुरबानी तो बाद में देते रहना, मूल और ब्याज चुका कर। पहले मर गये तो मियां, हमारा बकाया पैसा कौन चुकायेगा? आख़िर, धंधे का सवाल है। (हंसी के ठहाके लगाते हैं)

(चैक पर रक़म लिखकर, दस्तख़त करते हैं। फिर चैक काटकर, साबीर मियां को थमाते हैं। फिर, हिदायत देते हुए कहते हैं)

याह्यिया खां - लीजिये चैक, अब शुक्रगुज़ार बनो अल्लाह मियां के। जिन्होने अपुन की मुलाकात करवायी है, आपसे। अब आप नोट कर लीजिये, ब्याज बराबर हमारे दीवानखाने भेजते रहना।

साबीर मियां - ना तो मियां, क्या होगा?

याह्यिया खां - हम आपके दर पर पहुंच गये, तो मियां.... बुलाने पर, मेज़बानी का ख़र्च आपको भुगतना होगा। आप तो ज़ानते ही हैं, बड़ा अफ़सर दौरे पर आता है...आपकी स्कूल, तब वह अपनी कार का पेट्रोल किसके पैसे से भरवाता है ?

साबीर मियां - उसकी कार में पेट्रोल, हम ही भरवायेंगे हुजूर। (उदासी से) ज़ानता हूं, हुजूर। आप आला ख़ानदान के हैं, और आपके सारे रिश्तेदार पुलिस महकमें में ऊंचे ओहदों पर बैठे हैं।

(इतना कहकर, साबीर मियां उठते हैं। उठते ही उनकी नज़र कमरे के दरवाज़े के पास, खड़े केन्टीन के छोरे दूदू पर गिरती है। जो

मिठाई, नमकीन और छाछ के रूपये लेने आया है। अब दूदू रास्ता रोक कर, साबीर मियां से पैसे मांगता है।)

दूदू - साहब, ज़रा मिठाई-नमकीन व छाछ के पैसे देते जाईये।

(बेचारे साबीर मियां लाचारी से, याह्यिया खां व जमाल मियां की तरफ़ देखते हैं। मगर, उन पर कोई असर नहीं। क्योंकि, यहां तो साबीर मियां ठहरे कुरबानी के बकरे।)

याह्यिया खां - (हंसते हुए) - नावाकिफ़ मत बनो, मियां। हमने तो आपसे पहले ही कह दिया, आपको। के, 'मियां हाथ साफ़ करो, आपका ही माल है।'

(दास्तान कहते-कहते, साबीर मियां गले के में अलूज आती है। वे खंखारते हैं, खंखारने से दाऊद मियां व मनु भाई वर्तमान में लौट आते हैं। आंखों के आगे आ रही वाकया की तस्वीरें, आनी बन्द हो जाती है। दास्तान सुनकर, दाऊद मियां बैंच से उठते हैं। उठते हुए, कहते जाते हैं।)

दाऊद मियां - (उठते हुए) - फिर क्या हुआ, बिरादर?

साबीर मियां - (दाऊद मियां से, नज़र हटाकर) - होना क्या....? पैसे चुका दिये, और होना क्या? (मनु भाई की तरफ़ देखते हुए) बोलिये मनु भाई, आख़िर करता क्या? कहिये, इनसे।

मनु भाई - (हंसते हुए) - किसको, कहूं? और क्या कहूं, साबीर मियां? आपके सेठ दाऊद मियां, स्कूल की तरफ़ क़दम बढ़ा चुके हैं। वाह मियां, आपको पत्ता ही ना लगा? अरे जनाब, उनको अब समझ आ गयी... के, 'ब्याज का धंधा, आख़िर चलता कैसे है ? कहीं

आप उनसे पैसे मांगकर, और भी सीख़ देना चाहते हैं उन्हें ?

साबीर मियां - वज़ा फ़रमाया, हुजूर। इस बेरहम याह्यिया खां की किश्तें पड़ रही है भारी, अभी हमने सोचा ज़रूर था... के, दाऊद मियां से कम ब्याज पर रक़म लेकर याह्यिया खां की पूरी रक़म चुका दें....? मगर, हाय अल्लाह। यह दीनदार मोमीन, कहां चला गया?

मनु भाई - रहने दें, ये कब रहे दीनदार मोमीन? जर्दा फांक कर जनाब हूंकारते हैं 'अल्लाहो अकबर।' मगर, कुरआन में कहां लिखा है के 'ब्याज का धंधा' सच्चे मोमीन को करना चाहिये?

साबीर मियां - आप क्या कहना चाहते हैं, मनु भाई? अब दाऊद मियां कम ब्याज पर पैसे नहीं देंगे, क्या?

मनु भाई - इतनी लम्बी दास्तान सुनाने के बाद, क्या आप उनसे कम ब्याज की उम्मीद रखते हैं? अरे हुजूर, ब्याज कौन कम करेगा? यहां तो सभी सूदखोर, उधार लेने वाले को...

साबीर मियां - (झुंझलाते हुए) - क्या समझते हैं, आपका मफ़हूम क्या है?

मनु भाई - हक़ीक़त यह है मियां, कोई किसी की मदद नहीं करता। सभी कर्जा लेने वाले को समझते हैं, मुर्ग़ी। बस, उस मुर्ग़ी को कैसे हलाल किया जाय? नायाब तरीके ढूंढते हैं, सब।

साबीर मियां - (ग़मगीन होकर) - बस समझ गया हुजूर, यही दुनिया का तुजुर्बा है। ब्याज का धंधा इसी पर, पनप रहा है, भाई।

हम लोगों की मजबूरी, इनके लिये बन जाती है मुर्गी। और ये सारे सूदख़ोर, इसको हलाल करने के लिये मौक़े तलाशते हैं। इनकी शमशीर....

(उनकी राय सुनकर इतने मायूस हो जाते हैं, साबीर मियां। बेचारे, आगे बोल नहीं पाते। फिर, क्या...? लड़खड़ाते हुए, रूख़्सत होते हैं। धीरे-धीरे, उनके क़दमों की आवाज़ दूर से सुनाई देती है। मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।)

(अजज़ा ३) शादी की नेत लेखक : दिनेश चन्द्र पुरोहित (1)

(मंच रोशन होता है, स्कूल के बाहर का मंजर दिखायी देता है। वहां अपनी दुकान पर बैठे मनु भाई, ग्राहकों को किराणे का सामान तौलकर दे रहे हैं। पड़ोस की दुकान पर कमठा मेटिरियल बेचने वाले साबू भाई, टेलीफ़ोन का चोगा पकड़े लम्बी गुफ़्तगू में मशगूल है। तभी मोहल्ले के मौजीज मुसाहिब जनाब फन्ने खां, अपने दोस्त हाजी मुस्तफ़ा साहब के गले में हाथ डाले हुए वहां तशरीफ़ रखते हैं। वहां आकर दोनों मुसाहिब पत्थर की बैंच पर

बैठते हैं। अब फन्ने खां साहब बैठे-बैठे, मनु भाई को सलाम करते हैं।)

फन्ने खां - (सलाम करते है) - मनु भाई, असलाम वालेकम।

मनु भाई - (बेरूख़ी से) - वालेकम सलाम। (होंठों में ही) आ गये निक्कमे, ग्राहकी के वक़्त। ऐसे मर्दूद पैदा हो गये इस मोहल्ले में, जो व्यापारी को चार पैसे कमाने नहीं देते? अभी कहेंगे आकर, 'लाओ शतरंज, और जमाते हैं मोहरे।'

फन्ने खां - (उतावलेपन से) - क्या सोच रहे हो, मियां? लाओ ना शतरंज, और जम जाओ यहां मोहरे बिछाकर।

मनु भाई - (शतरंज व मोहरे थमाते हुए) - अजी जनाब, आप ही बिछाये शतरंज। और मोहरे भी आप ही जमाये, हम तो जनाब बैठे हैं दुकान पर। कुछ सौदा पटा रहे हैं, साहब।

साबू भाई - (चोगा रखकर, फन्ने खां को देखते हुए) - ओ मनु भाई, निक्कमे आज़म आ गये, क्या? कहां से आ जाते हैं, ये निक्कमे? आज़कल ये नामाकूल इंसान, लोगों को धंधा नहीं करने देते?

फन्ने खां - (झुंझलाते हुए) - क्यों साबू मियां, आपको कुछ नहीं कहा हमने? फिर, आग क्यों उगल रहे हो मियां? काहे इतना करते हो, लग्व? आपको अलील हो गया, हमें देखकर। हमारे आते ही, जनाब हो जाते हैं बेक़ैफ।

साबू भाई - क्या कहा, मियां? हमारा ही धंधा ख़राब करते हो, और हम कुछ ना बोले? आपको, क्या पत्ता? बड़ी मुश्किल से ग्राहक हाथ आया, उससे गुफ़्तगू कर रहा था फ़ोन पर।

फन्ने खां - (तिलमिलाते हुए) - हो गया, क्या? कोई आस्मां फट नहीं गया, जो इतने लाल-पीले हो रहे हो?

साबू भाई - जनाब आपने ऊंची आवाज़ में बोलकर उसे भड़का दिया, वह कहने लगा 'जनाब तेज़ आवाज़ों के आगे, कुछ सुनाई नहीं दे रहा है। अभी फ़ोन रखता हूं, बाद में इतमीनान से बात करेंगे।

फन्ने खां - (हंसते हुए) - काहे की फ़िक्र? नूरे ख़रादी के जाव की ज़मीन बेचनी है, कोई शीश महल बेचने नहीं बैठे थे?

साबू भाई - शीश महल न सही, आप क़ीमती तस्वीर ही समझ लीजिये। जिसकी मार्केट में ज़्यादा क़ीमत है। हजारों क्या, लाखों रूपये वसूल कर सकते हैं, उसे बेचकर।

फन्ने खां - तसल्ली रखो, मियां। सबको अपनी चीज़ कीमती ही लगती है, मगर कीमत तुजुर्बेदार इंसानों की नज़र में होनी चाहिये। अभी सुबह के नौ बज जायेंगे, और आपको दाऊद मियां के दीदार हो जायेंगे। वे ज़मीन बिकवा देंगे आपकी, आख़िर वे आपके एहबाब ठहरे।

हाजी मुस्तफ़ा - सौ टका सच्ची बात कही, आपने। दाऊद मियां सौदा पटा नहीं पाये, तो क्या? अपने लाइब्रेरियन साहब मियां शेर खान ज़रूर सौदा पटा देंगे आपका, वे ठीक बारह बजे यहां आकर ही स्कूल में दाख़िल होंगे। अरे मियां वे तो उस्ताद ठहरे, प्लोटों की ज़ानकारी के।

मनु भाई - उस्ताद क्यों नहीं बनेंगे, इन दोनों का काम है भी क्या? इनके पास हफ़्वात मारना और नींद लेने के अलावा, काम है भी क्या? लाइब्रेरियन साहब के पास, किताबें लेने ये बच्चियां आती नहीं...

फन्ने खां - और स्कूल में, दाऊद मियां के पास करने को काम नहीं। अजी जनाब, दो दफ़्तरेनिगार और बैठे हैं काम करने वाले.. फिर, दाऊद मियां के पास काम ठहरा ख़ाली...सुर्ती चखना, नींद लेना और हफ़्वात करना।

साबू भाई - फिर क्या? इन निक्कमों को करना क्या ? पूरे जिस्म की ताकत लगा देंगे, इन फ़ुजूल के कामों में।

हाजी मुस्तफ़ा - अजी साहब, स्कूल की छुट्टी होने के बाद घर ज़ाने के लिये... ये दोनों मुअज़्ज़म, साथ-साथ पैदल निकलते हैं। रास्ते में कई लोगों से मुलाकात करते हुए, आख़िर करीब साढ़े सात बजे अपने रिहायशी मकान में पहुंचते हैं।

साबू भाई - अरे बिरादर, इन दोनों की बेग़में इन पर वसूक रखती नहीं। पीछे से इन दोनों की बीबीयां, तहक़ीक़ात करने में जुट जाती है। तहकीकात क्या करती जनाब, बार-बार हमारी दुकान पर फ़ाेन लगाती है।

(पहली पारी की ग़ज़ल बी और मेमूना भाई, मेन गेट को पार करके बाहर आते हैं। ग़ज़ल बी अपने रिहायशी मकान की तरफ़ क़दमबोसी कर बैठती है, मगर गुफ़्तगू के शौकिन रहे मेमूना भाई आकर बैंच पर बैठ जाते हैं। उनके बैठने से चल रही गुफ़्तगू पर कोई असर नहीं पड़ता, मनु भाई आगे कहते जाते हैं।)

मनु भाई - साबू भाई, गनीमत है...आपने शेर खान साहब की ख़ातूने खान की तल्ख़ आवाज़ नहीं सुनी, परसों की बात ठहरी.. आपके हाज़र ना होने पर हमने फ़ोन का चोगा क्या उठाया, जनाब ? ऐसा लगा, कोई मोहतरमा नहीं बोल रही हो...बस, कोई जंगजू शेरनी दहाड़ रही हो...?

हाज़ी मुस्तफ़ा - यह गरज़ती आवाज़ ज़रूर, शेर खान साहब की बीबी की होगी। फिर, मोहतरमा ने कुछ कहा होगा?

मनु भाई - अजी साहब, क्या कहूं आपसे? उनकी बीबी गरज़कर ऐसे बोली 'इतना वक़्त, कहां गुज़ार दिया? यह कोई वक़्त है, घर ज़ाने का..? यह घर है, या सराय?' अजी क्या कहूं, आप से? आवाज़ सुनकर, हम दहल गये। हाय अल्लाह, हमें तो शक हो गया... कहीं यह फ़ोन, हमारी ख़ातूने खान का तो नहीं है?

हाजी मुस्तफ़ा - फिर क्या हुआ, बिरादर?

मनु भाई - हाजी साहब क्या करें, कौन उलझे ऐसी शेरनी से? हमने डरकर, चोगे को क्रेडिल पर रख दिया। मगर, क़िस्मत ख़राब, फ़ोन की घण्टी वापस बजने लगी। हमने चोगा उठाया...अरे सुना क्या, हुजूर? हमारा जिस्म, थर-थर काम्पने लगा।

हाजी मुस्तफ़ा - फिर क्या हुआ, बिरादर ?

मनु भाई - मोहतरमा की कड़कती आवाज़ चोगे से निकली..के, 'कैसे बदतमीज़ हो मियां? क्या आपको, किसी मोहतरमा से बात

करने की तहज़ीब नहीं? क्या बात करने की तहज़ीब, हम वहां आकर आपको सीखायें?

साबू भाई - आप तो जनाब साबीर ठहरे, कुछ बोले नहीं ?

मनु भाई - हमने तो जनाब यही समझा, के हम अपनी ख़ातूने खान से बात कर रहे हैं। बस, हमने प्यार से इतना ही कहा 'मेरी महबूबा, नाराज़ मत हो...' ऐसा क्या कह दिया, हुजूर? अरे जनाब, आसमान फट पड़ा। वो चीख कर बोली 'बदतमीज़ किसको कह रिया है, महबूबा? ज़ानता नहीं, हम है शेर खान साहब की ख़ातूने खान बीबी बेनज़ीर।'

हाजी मुस्तफ़ा - (हंसते हुए) - फिर तो जनाब, ज़रूर आपकी पतलून गीली हो गयी होगी ?

साबू भाई - जनाबे आली, वक़्त ख़राब है। तसलीमात अर्ज है, इन एहबाबों की बीबीयों से दूर रहना ही अच्छा। ये जनाब...

मेमूना - मैं आपको राज़ की बात कहता हूं, जनाब। ये दोनों मुसाहिब स्कूल से निकलते, अपना वक़्त जाया नहीं करते हैं। स्कूल

से घर तक के सफ़र में, कई महकमें के दफ़्तरेनिगार और कई काम से ताल्लुकात रखने वाले मुसाहिब.. इनकी इंतजार में खड़े रहते हैं।

साबू मियां - इन लोगों से क्यों मिलेंगे? ये तो बिना मतलब, किसी से बात नहीं करते हैं।

मेमूना - साबू साहब, महकमें के बाबू लोगों से महकमें की ताज़ी ज़ानकारी हासिल करेंगे तो इन मुसाहिबों से ज़मीन के प्लोटों की ज़ानकारी। कई मर्तबा इनको, कर्ज लेने वाले ज़रूरतमंद ज़ान-पहचान वाले मिल जायेंगे, जो अपनी अबसार बिछाये इनका इंतजार करते....

हाजी मुस्तफ़ा - बस फिर, क्या? इन दफ़्तरे निगारों से ढेर सारी ज़ानकारी हासिल कर लेंगे, महकमें में होने वाले तबादलों की। फिर क्या? चर्चा का मसाला, इनकी जेब में। किनका तबादला हो रहा है, व किनका तबादला क्यों रोका गया?

फन्ने खां - ये सारा मसाला यहां बैठकर परोस देंगे, और हम उन्हे ज़ानकारी दे देंगे.. के, मोहल्ले में कौन-कौन है सफ़ेदपोश? किस-

किस के बीच में चल रहा है, याराना? अजी हम तो यह भी उनको बताते रहे हैं, के हमारे एम.एल.ए. साहब का याराना मोहल्ले की किस-किस मोहतरमा के साथ चल रहा है?

साबू भाई - अरे छोड़िये, इस याराना को। हमें तो ख़ाली, याराना दाऊद मियां के साथ बढ़ाना है। जो अभी यहां आकर, इस ज़मीन बेचने की हर्ज मुर्ज से निज़ात दिला देंगे। लो देखो, (सड़क की ओर, उंगली का इशारा करते हैं) साइकल को थामे हुए, दाऊद मियां आ रहे हैं।

(सबकी निगाह, दाऊद मियां पर गिरती है। दाऊद मियां को आते देखकर मेमूना भाई ऐसे उठते हैं, जैसे उन्हें बिजली का करण्ट लग गया हो ?)

मेमूना भाई - (घबराते हुए) - लो आ गये, साहब बहादुर। सलाम, साहब लोगों। हम तो रूख़्सत होते हैं, कहीं ये जनाब हमें कोई स्कूल का काम ना सौंप दें ? अब तो छुट्टी होने वाली है, ख़ुदा कसम कहीं वक़्त ख़राब ना कर दें हमारा?

(फिर क्या? तेज़ क़दमों से चलते हुए मेमूना भाई वापस स्कूल में चले जाते हैं। थोड़ी देर बाद, दाऊद मियां आते हैं। साइकल को स्टेण्ड पर रखकर, बैंच पर बैठ जाते हैं।)

साबू भाई - (थोड़ा नज़दीक आकर, बैठते हैं) - सलाम, दाऊद मियां। ख़ैरियत है? (मनु भाई से) ज़रा मनु भाई, जर्दे की पेसी थमाना। चलिये, दाऊद मियां को सुर्ती चखाते हैं।

(मनु भाई दाऊद मियां को जर्दे की पेसी थमाते हैं, अब दाऊद मियां पेसी से जर्दा व चूना निकालकर अपनी हथेली पर रखते हैं। फिर, अंगूठे से मसलते हैं। फिर लबों पर मुस्कान लाकर, साबू भाई से कहते हैं।)

दाऊद मियां - (लबों पर मुस्कान लाकर) - वालेकम सलाम, मियां। आप जैसे एहबाबों की दुआ से, अब तक ख़ैरियत है। बस आपकी मेहरबानी से जी रहे हैं, हुज़ूर। ना तो हम जैसे निक्कमों को, कौन पूछता है?

(फिर साबू भाई और मनु भाई को सुनाते हुए, फन्ने खां साहब से कहते हैं।)

दाऊद मियां - (फन्ने खां साहब से) - क्यों, फन्ने खां साहब? आप भी इस बात की तसलीम करते हैं, या नहीं? कहीं हमने, क़ाबिले एतराज बात तो ना कही?

साबू भाई - (खिसयानी हंसी के साथ) - हैं..हैं.हैंऽऽ मुझे अफ़सोसनाक जहालत में ना डाले, हुजूर। जबीं यह है...

फन्ने खां - हां बिरादर, आप ठहरे साबू भाई। काम करते हैं ऐसे, जैसे 'नहर पर चल रही पनचक्की, धुन की पूरी है काम की पक्की।' ख़ैर आ जाईये मक़सद पर, अब समझा दीजिये अपना मफ़हूम... आख़िर, आप चाहते क्या हैं?

हाजी मुस्तफ़ा - क्या कहूं साहब, निक्कमों से काम लेना आसान है।

साबू भाई - (आब-आब होते हुए) - गुस्ताख़ी के लिये, मुआफी चाहता हूं। (फन्ने खां साहब की तरफ़ देखते हुए) फन्ने खां साहब, आप जैसे दानिशों को हमने निक्कमा कहा। क्या करें, अब मज़बूरी

है। अब तो ऐसा वक़्त आ गया है, आज़कल। के, गधे को बाप बनाना पड़ता है।

दाऊद मियां - जनाब यह भी बोल दीजिये साथ में, के गधे की लात भी खानी पड़ती है। (उठते हैं)

साबू भाई - (चौंकते हुए) - कहां चल दिये, बिरादर? आपकी लातें-दुलती जो भी आप कहे, खानी तो पड़ेगी ही। अजी ये आपकी लातें और दुलती नहीं है, पैसों की बरसात है।

(हथेली पर जर्दा-चूना मसलकर, दाऊद मियां ने अच्छी-ख़ासी सुर्ती तैयार कर दी है। अब वे दूसरे हाथ से फटकारा लगाकर खंक उड़ाते हैं, जो नज़दीक बैठे साबू भाई के नासा छिद्रो में पहुंचकर छींकों की झड़ी लगा देती है। मगर, साबू भाई अब बेनियाम नहीं होते। आख़िर अब मियां को, गधे की लात और दुलती अच्छी लगने लगी है। अपने होंठों के नीचे सुर्ती दबाकर दाऊद मियां, सभी को सुर्ती चाखाते हैं। मनु भाई को पेसी थमाकर, साबू भाई से कहते हैं।)

दाऊद मियां - हुक्म कीजिये, मेरे आका। इस गधे के लिये, क्या हुक्म है?

साबू भाई - (सुर्ती होंठों के नीचे दबाते हुए) - हुआ यूं बिरादर, धंधा कुछ हमारा मंदा चल रहा है। इधर सिमेण्ट के भाव बढ़ गये, और उधर बाज़ार में मंदी। पैसा वापस लौटकर, नहीं आ रहा है। आप तो ज़ानते ही है, हुज़ूर।

दाऊद मियां - इस गधे के, बिरादर। वापस याद दिला दीजिये, जनाब। वैसे भी आप, मोहल्ला-ए-आज़म साबू भाई अभी निक्कमें ही बैठे हैं...हम निक्कमों की तरह। अब तो आप और हम, एक ही बिरादरी के हैं, यानि निक्कमें कहो या गधे के बिरादर। फिर काहे की, फोरमल्टी ?

साबू भाई - आपका पड़ोसी जग्गू मियां, है ना? उसका मकान हमारे पास गिरवी पड़ा है, पैसा देकर छुड़ाना तो दूर.. यह मर्दूद, ब्याज भी नहीं दे रहा है।

दाऊद मियां - इसमें पूछने की क्या बात है? ले लीजिये, ब्याज...किसने मना किया, आपको? हम खिलाफ़त नहीं करेंगे, जब चाहे आप डण्डे मारकर ब्याज वसूल करें...आपको मोहल्ले में, कोई रोकने वाला नहीं।

साबू भाई - यही तो मुसीबत की जड़ है, हुजूर। उसका मकान बिकवाने के लिये, जिस-किसी ग्राहक को मकान देखने भेजता हूं...यह नामाकूल ग़रीबी का रोना रोकर, उसे भगा देता है। हाय अल्लाह, अब पैसे कहां से लाऊं?

दाऊद मियां - (बैंच पर वापस बैठते हुए) - अब बताइये मेरे मुअज़्ज़म, आपकी क्या ख़िदमत करूं?

साबू भाई - देखिये जनाब, नूरे ख़रादी के जाव में हमने सौ बाइ सौ का एक प्लोट ख़रीद रखा है। अरे जनाब, अब तो वहां बस्ती भी बसने लग गयी है। बस हुजूर, ख़ाली पक्की सड़क नहीं बनी है।

दाऊद मियां - अरे जनाब, आपने क्या मुझे म्युनिसपलटी का वार्ड मेम्बर समझ रखा है? जाईये, जाईये अपनी पड़ोसन मुन्नी तेलन के

पास, जो आपके मोहल्ले की वार्ड मेम्बर बनी बैठी है। वह सड़क बना देगी, हुजूर। ना तो वह अपने ख़ास एहबाब एम.एल.ए. साहब के पास सिफ़ारिश भेजकर बज़ट मंगवा लेगी।

साबू भाई - जनाब, आप ग़लत समझ रहे हैं। हमें सड़क नहीं बनवानी है, बस ख़ाली अपना प्लोट बिकवाना है। कुछ पैसे आ गये तो, मैं आपके कोई काम आ सकूं।

दाऊद मियां - (लबों पर मुस्कान लाकर) - देखो साबू भाई, गये महीने हमने मज़ीद मियां के जाव में आये हुए कुछ प्लोट ख़रीद लिये थे। अरे साहब, सारी रक़म प्लोट ख़रीदने में लग गयी। अब हमारे पास, रोकड़ रक़म कुछ बची नहीं। आप हमारे अजीज ठहरे, अगर आप....

साबू भाई - संकोच मत कीजिये, कह दीजिये। आपकी हर शर्त मंजूर है, जनाब। बोलिये मेरे एहबाब, क्या कहना चाहते हैं आप?

दाऊद मियां - बात ऐसी है, हुजूर। आपका प्लोट ख़रीदने के लिये, ग्राहक लाना होगा। ग्राहक ढूंढने के लिये मेहनत करनी पड़ेगी, यह

भी हो सकता है हमें इस काम के लिये स्कूल से छुट्टी लेनी पड़े। बस, आप...

साबू मियां - आप तो जनाब अपना काम बोलिये, क्या किया जाय, आपके लिये?

फन्ने खां - (साबू भाई से) - मैं राज़ की बात बता देता हूं, आपको। बस आप दाऊद मियां को दो परसेण्ट कमीशन दे दीजिये, जनाब। सौदा पक्का (दाऊद मियां की तरफ़ देखते हुए) अब तो, ख़ुश?

(दाऊद मियां मुस्कराते हैं, फिर दोनों आराम से बैठकर प्लोट के मुद्दे पर गुफ़्तगू करने बैठ जाते हैं। स्कूल की छुट्टी होने का वक़्त हो जाता है, हमेशा की तरह आज़ भी सितारा मेडम के शौहर-ए-आज़म अपनी बाईक लिये आ जाते हैं। तभी, स्कूल में छुट्टी की घण्टी लगती है। बगल में बस्ते लटकाये, सारी दुख़्तराएं गेट पार करके अपने-अपने घर की तरफ क़दम बढ़ा देती है। अब दाऊद मियां उठते हुए, साबू भाई से कहते हैं।)

दाऊद मियां - (उठते हुए) - अब रूख़्सत होता हूं, हुजूर। काम की चिन्ता अब करना मत, उसका भार अब हमारे कन्धे पर। बस प्लोट के काग़ज़ात की फोटो कोपी, किसी के साथ हमारे पास भेज देना।

साबू भाई - शुक्रिया, बिरादर। आपको, ज़रा जहमत दी।

दाऊद मियां - (हंसते हुए) - अब यह निक्कमा गधा, अपने बिरादर गधे के मुंह से ख़ुदा हाफ़िज़ की जगह 'ढेंचू-ढेंचू' की आवाज़ सुनना चाहेगा...क्या जनाब, क़ाबिले एतराफ़ है ?

(साबू भाई को छोड़कर, सभी बैठे मुसाहिब ठहाके लगाकर हंसते हैं। अब दाऊद मियां, साइकल थामे स्कूल मे दाख़िल होते दिखायी देते हैं। उनके जाते ही, फन्ने खां मनु भाई को अपने पास बैठाकर शतरंज खेलना शुरू करते हैं। साबू भाई और हाजी मुस्तफ़ा साहब, उनके खेल को टकटकी लगाकर देखने लगते हैं। मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, बरामदे की दीवार पर लगी घड़ी सुबह के दस बजने का वक़्त दिखा रही है। स्कूटर बाहर रखकर, आक़िल मियां बरामदे में दाख़िल होते हैं। उनकी निगाह बरामदे में अपनी सीट पर बैठे दाऊद मियां और गैस के चूल्हे पर चाय का भगोना चढ़ाती हुई जैलदार चान्द बीबी पर गिरती है। अब आक़िल मियां, दाऊद मियां के नज़दीक आकर कहने लगते हैं।)

आक़िल मियां - (नज़दीक आकर) - असलाम वालेकम। दाऊद मियां, ख़ैरियत है?

दाऊद मियां - वालेकम सलाम। स्कूल में आते ही पहले दस्तख़त करने का काम किया करो, मियां। फिर जब चाहो तब, गुफ़्तगू का सिलसिला कर देना चालू। (हाज़री रजिस्टर थमाते हैं, आक़िल मियां अपने कोलम में दस्तख़त करके रजिस्टर वापस उन्हें थमाते हैं।)

आक़िल मियां - (पास रखी कुर्सी पर बैठकर) - जनाब, यह रूख़ापन कैसे? हवाइयां उड़ रही है, क्या बात है हुजूर? किनसे नाराज़ है, जनाब?

चान्द बीबी - (चाय बनाती हुई) - कह दीजिये, हुजूर। कोई मेडम यहां बैठी नहीं, जो आपकी बात सुनेगी ? बस, आप खुलकर बोल सकते हैं।

दाऊद मियां - अरे मियां, इस कमज़ात नेत का रोना है। जब से इस स्कूल में आया हूं, तब से किसी न किसी मेडम के घर में निकाह.. तो कभी किसी के नये मकान में दाख़िल होने की ख़ुशी के, इन्वीटेशन कार्ड मिलते रहते हैं।

आक़िल मियां - इसमें ग़म करने की क्या बात है, हुजूर? ख़ुशी के मौक़े हैं, जाकर दावत का मज़ा लीजिये।

दाऊद मियां - (गुस्से में) - दावत गयी, चूल्हे में। क्या मैं आपको उल्लू लगता हूं, क्या मैं गधा हूं? कहीं आप मुझे बिना पूंछ का बन्दर, समझते हैं, क्या?

आक़िल मियां - मुझे क्या मालुम, हुज़ूर? शायद मेरी नाक-भौं की कमानी के कांच, शायद साफ़ नहीं हो ? आप ख़ुद उठकर देख लीजिये ना, अपनी सूरत आइने में। फिर, क्या? दूध का दूध, और पानी का पानी।

चान्द बीबी - अरे हुज़ूर, हमें क्या करना...आप क्या हो? आप चाहे उल्लू बनो या उल्लू के पठ्ठे? मगर आप यह बता दीजिये, आप आख़िर कहना क्या चाहते थे?

दाऊद मियां - आप दोनों समझते कुछ नहीं, ख़ाली बकवास करते जा रहे हैं? यहां तो हर माह, इन कार्ड की वजह से जेबें ख़ाली हो जाती है। इस तरह जनाब, तनख़्वाह का एक बड़ा हिस्सा यहीं ख़त्म हो जाता है।

आक़िल मियां - मिलनसारिता बढ़ती है, हुज़ूर। जनाब मैं तो ज़रूर कहूंगा के, आपके जैसा मिलनसार इस स्कूल में कोई नहीं है। स्कूल को छोड़ो जनाब, यहां तो कई सरकारी दफ़्तरों के दफ़्तरे निगार और अफ़सर भेजते रहते हैं...इन्वीटेशन कार्ड आपको।

चान्द बीबी - वज़ा फ़रमाया, हुज़ूर। आप ख़ुश अख़्तर है, जनाब। इतने सारे दफ़्तरेनिगार और अफ़सर, आपको ख़ुशी के मौक़ों पर याद करते हैं। और यहां, हम दोनों को कोई नहीं करता याद?

दाऊद मियां - क्या कहूं, बीबी? यह मिलनसारिता अब नसीबे दुश्मना ज़ान जोख़म बन गयी है, आज़कल। सुनिये, हमारी बात। एक बार स्कूल से निकलकर, हम पनवाड़ी की दुकान के बिल्कूल पास से गुज़र रहे थे। सुर्ती चखने के लिये, वहां क्या रूके ख़ाला? वहां मिल गये, साबीर मियां।

आक़िल मियां - अच्छाऽऽ... फिर क्या हुआ, जनाब?

दाऊद मियां - जनाब ने शादी का कार्ड थमा दिया, कहने लगे 'मियां, छोटी बहन खालिदा का निकाह जुम्मेरात को है। निकाह में आप वकील हो, आपका आना बहुत ज़रूरी है। अब, भूलना मत।

आक़िल मियां - ख़ुशी की बात है, मुज़दा है। जनाब, घबराओ मत। ऐसी जिम्मेदारी, कम लोगों को ही नसीब होती है।

दाऊद मियां - मुज़दा को मारो गोली, नेत यानि रूपये लगाने की बात है। वकील बनाने का मफ़हूम है, नेत के पैसे वसूल करना। अरे यार, क्या कहूं? इस मिलनसारिता के कारण तनख़्वाह का एक हिस्सा, सगाई, निकाह वगैरा की नेत लगाने में ख़र्च हो जाता है।

चान्द बीबी - (चाय प्यालों में डालती हुई) - आपका दायरा तो जनाब, बहुत लम्बा..। इस तरह तो हुजूर, आपके घर में शादी वगैरा के वक़्त नेत के रूपये खूब इकठ्ठे हो जाते होंगे? ये ज़ान पहचान वाले, ज़रूर नेत की थेली भर देते होंगे?

दाऊद मियां - ख़ाक, कन्नी काट लेते हैं मर्दूद बहाने बनाकर। कहते हैं के, हम आते तो थे मगर क्या करें ? वालिद की तबीयत नासाज़ हो गयी, कोई कहता सरकारी टूर पर चला गया। क्या करूं, मियां? नौकरी का सवाल था, बड़े साहब को मना नहीं कर सका।

चान्द बीबी - मर्दूद भले कहीं जायें, आपको क्या ? मगर कम्बख़्त नेत के रूपये, तो डाल जाता।

आक़िल मियां - अभी चंद रोज़ पहले आपकी भतीजी का निकाह था, आपने शादी का कार्ड स्टॉफ को दिया उस वक़्त। हम सबने चन्दा इकठ्ठा करके, स्टॉफ सेक्रेट्री के पास जमा करवा दिया। हुजूर, आपको नेत के रूपये मिले या नहीं?

चान्द बीबी - (चाय के प्याले थमाती हुई) - हुजूर, सेक्रेट्री साहिबा ने हमसे भी चंदा मांगा था। हमने भी ख़ुशी-ख़ुशी नेत के रूपये जमा करवाये, उनके पास। चलिये अब आप चाय पिजिये, ना तो चाय ठण्डी हो जायेगी।

दाऊद मियां - बुरा ना मानना, चान्द बीबी। शायद आपका कहना सच हो? हो सकता है, मुमताज मेडम ने स्टॉफ सेक्रेट्री की हैसियत से चंदा ज़रूर इकठ्ठा किया हो? मगर नेत के रूपये पहुंचाना तो दूर, इस मोहतरमा ने कोई गिफ्ट भी ख़रीदकर लाकर नहीं दिया।

चान्द बीबी - (स्टूल पर बैठकर, चाय की चुस्कियां लेती हुई) - हुजूर सच कह रहे हैं, आप? वसूक नहीं हो रहा है, हमें।

दाऊद मियां - क्या कहूं, चान्द बीबी? इस बात को चंद रोज़ नहीं, छः माह बीत चुके हैं। कई बार इन सेक्रेट्री साहिबा को याद दिलाया, मगर बात वहीं की वहीं, बस ढाक के पत्ते वही तीन।

आक़िल मियां - (चाय की चुश्की लेते हुए) - जनाबे क़िबलिया, बहुत क़ाबिलियत भरी है आप में। अपनी क़ाबिलियत को काम में लीजिये, हुजूर। डेवलपमेण्ट कमेटी के मेम्बरान की कमज़ोर नस पकड़कर, आप कैसे काम को अन्जाम देते हैं? बस यही तरीका, अब आप इस्तेमाल कर लीजिये।

दाऊद मियां - (ख़ुश होकर) - बस उस्ताद, पूरा प्लान समझ में आ रहा है। अब सुनिये मेरी बात, मुमताज मेडम क्या करती है और क्या नहीं करती है..इस राज़ की ज़ानकारी रहती है, इमतियाज़ मेडम के पास। बोलो, क्यों?

आक़िल मियां - सीधी बात है, दोनों एक दूसरे की ज़ानी दुश्मन। एक बड़ी मेडम की ख़ास मर्जीदान, और दूसरी उनकी विरोधी।

दाऊद मियां - ठीक समझे मियां, अब इस इमतियाज़ का मुंह खुलवाना आसान है। बस थोड़ी सी तारीफ़ कर दीजिये इमतियाज़ की, और एक शोला छोड़ दीजिये मुमताज के मसाले का।

आक़िल मियां - फिर क्या होगा, मियां?

दाऊद मियां - फिर देखिये, हमारा कमाल। यह इमतियाज़ अनार के पटाके की तरह फूट पड़ेगी, और मुमताज की सारी सिक्रेट बातें... बिना कहे, दहकते अंगारों की तरह उगल देगी। फिर उस्ताद, हो गया किला फतेह।

आक़िल मियां - (बेग से ताज़े गुलाब के विदेशी फूल निकालकर, मेज़ पर रखते हैं) - लीजिये, ये है बारूद। इमतियाज़ को शौक है, गुलाब के ताज़े फूलों का। (उंगली से इशारा करते हुए) लीजिये, यह मोहतरमा यहीं आ रही है। बस थमा दीजिये इन्हें, कुछ मस्का लगाकर। अब हम जाते हैं, अपने कमरे में।

(आक़िल मियां के ज़ाने के बाद, इमतियाज़ मेडम आती है। दाऊद मियां के क़रीब ही मेज़ व कुर्सी रखे हैं, उस मेज़ पर इमतियाज़

अपना बेग रखती है। फिर पास रखी कुर्सी पर, वह बैठ जाती है। तभी मौक़ा पाकर, दाऊद मियां उनकी मेज़ पर गुलाब के विदेशी फूल रखते हैं। फिर, उनके पास कुर्सी खींचकर बैठ जाते हैं।)

दाऊद मियां - आपकी क़दमबोसी से, ये गुलाब के फूल खिल उठे। अब आप मेहरबानी करके, इस नाचीज़ के रखे तौहफ़े को कुबूल कीजिये। हमारे भतीजे ने तैयार किये हैं, अपने हाथों...इन गुलाब के पोधों को।

(विदेशी गुलाब के फूल पाकर, इमतियाज़ मेडम ख़ुश हो जाती है। उन फूलों को अपने बेग में रखकर, शुक्रिया अदा करती है।)

इमतियाज़ - शुक्रिया, भाईज़ान। (बेग से टिफिन निकालती हुई) मैं ठहरी, साफ़ दिल की। इस मुमताज की तरह, दिल में मैल रखती नहीं। बड़ी बी के सामने, उसे साफ़-साफ़ मुंह पर सुना दिया... के, 'अरे शर्म से डूब मरो, चूल्लू भर पानी में। पैसे नहीं दे सकी तो अब, गिफ्ट लाकर दे दो जाकर। काहे, स्कूल का नाम बदनाम कर रही हो?'

(टिफिन खोलती है, इमतियाज़। रोटी का निवाला तोड़कर, उसे मुंह में डालती है। निवाले को चबाते हुए वह, आगे कहती है।)

इमतियाज़ - सुनिये दाऊद मियां, ये बेदर्द मोहतरमा क्या बोली? (मुमताज की आवाज़ की, नकल उतारती हुई) दाऊद मियां की भतीजी के निकाह के वक़्त, जो नेत के रूपये इकठ्ठे हुए थे। वे सारे रूपये हमने, शमशाद बेग़म के बेटे की शादी में लगा दिये।

चान्द बीबी - ऐसे कैसे हो सकता है, बेग़म?

इमतियाज़ - उनका कहना था, के शमशाद बेग़म हमारी ख़िदमत करती रहती है, उनके बेटे की शादी में पैसे लग ज़ाने से दाऊद मियां नाराज़ नहीं होंगे...मगर, ख़ुश ज़रूर...

दाऊद मियां - (बात काटते हुए) - क्या ज़माना आया है, यह कोई तालिफ़े कुलूब है ? किसके पैसे, किसे लगा दिये? अपनी सक़्त (ग़लती) मानती नहीं, मुख़्ती होकर ख़ुद को बेगुनाह समझती है। अरे मेडम हमारे मुख़्बिरे सादिक ने ख़बर दी है के, इस मोहतरमा ने गिफ्ट लाने का टेक्सी का भाड़ा भी हिसाब में जोड़ लिया।

चांद बीबी - ख़ुदा रहम। यह ऐसी मोहतरमा ठहरी, जो अपनी स्कूटी पर बैठकर गिफ्ट लायी... और हिसाब में जोड़ लिया इसने, टेक्सी का भाड़ा? कमाल है, मेडम। हाय अल्लाह, ऐसा काम तो कोई सवाली भी नहीं करता। वे बेचारे दो रोटी मिलने पर, ख़ुद को सइद समझते आये हैं।

इमतियाज़ - अजी मारो गोली, अब गिफ्ट आने से रहा। मियां, बस आप ऐसा काम करो के सेक्रेट्री साहिबा को नसीहत मिल जाये...और, हमारा दिल ख़ुश।

दाऊद मियां - क्यों मायूस होती हैं, आप? आप नहीं ज़ानती के, चुहिया ज़्यादा छलांगे क्यों लगाती है? उपनिषद की कहानी में पण्डित विष्णुदत्त ने क्या कहा था के, उस चुहिया के भण्डार पर कब्जा कर लो...बस, फिर वह लम्बी छलांगे लगाना भूल जायेगी।

इमतियाज़ - समझ गयी, भाईज़ान। स्टॉफ सेक्रेट्री की कुर्सी इससे छीन लो, यह स्टॉफ सेक्रेट्री की कुर्सी ही इस चुहिया का भण्डार है।

(इतना कहकर इमतियाज़, हंसने लगी। अब खाना ख़त्म हो गया, टिफिन को बंद करके इमतियाज़ उसे बेग में रखती है। तभी चांद बीबी आकर, उसे चाय का प्याला थमाती है। अब वह चाय की चुश्कियां लेती हुई, धीरे-धीरे चाय पीने लगती है। दाऊद मियां वापस अपनी बातों का, सिलसिला चालू कर देते हैं।)

दाऊद मियां - गनीमत है, इमतियाज़ बी...हमारे मिनिस्ट्रीयल स्टॉफ पर, किसी की बुरी नज़र लग गयी है। देखिये इस स्कूल में कई सालों से, पूल बजट के चपरासी साकिब मियां और मुमु बाई नौकरी कर रहे हैं। उन बेचारों का, तबादला क्या हुआ? उनको बिना पार्टी दिये, बड़ी बी ने तत्काल रिलीव कर दिया।

चांद बीबी - (जूठे प्याले उठाती हुई) - यह तो अच्छा हुआ, आक़िल मियां ने अपने पैसे ख़र्च करके उनको पार्टी दे दी। इससे स्कूल की इज़्ज़त बच गयी, जनाब। याद है, आपको?

दाऊद मियां - हां याद है, उस दिन शनिवार था। आक़िल मियां ने बड़ी बी से कई बार इल्तजा की....के, रिसेस के बाद बाल सभा रख लो और बच्चियों के सामने इन्हे विदाई दे दी जाय।

दाऊद मियां - मगर बड़ी बी ने साफ़ इनकार कर दिया, और आक़िल मियां के मंगवाये हुए ख़ुशबूदार गुलाब के फूलों के हार भी... उन लोगों को नहीं पहनाये, बेचारे मुंह उतारे दोनों मुलाज़िम ड्यूटी जोइन करने प्राइमरी स्कूल चले गये।

(चांद बीबी चाय के जूठे बरतन उठाकर, उन्हे धोने चली जाती है। आस्मां में बादलों के गड़गड़ाने की आवाज़ सुनायी देती है, बिजली कौंधती है और इधर दाऊद मियां हथेली पर मसले हुए जर्दे व चूने पर थप्पी लगाते हुए जर्दे की खंक उड़ाते जा रहे हैं। तेज़ बरसात होने की आशंका के कारण, बड़ी बी स्कूल की छुट्टी का ऐलान कर देती है। शमशाद बेग़म उठकर, छुट्टी की घण्टी बजाती है। बच्चियां बस्ते उठाये क्लासों से बाहर आ जाती है। सबके ज़ाने पर चान्द बीबी के पांव हमेशा की तरह, बड़ी बी के कमरे की तरफ़ बढ़ते हैं।

इस वक़्त उसके दिल में उतावली मची है के, कितनी जल्दी वह इमतियाज़ और दाऊद मियां के बीच हुई गुफ़्तगू का मसाला बड़ी बी के सामने रख दें? आसमान में छाये बादल, ज़ोरों से गड़गड़ाते हैं। बाहर बैठे दाऊद मियां के दिल में ऐसा डर समा जाता है, कहीं बड़ी बी अभी बाहर आकर बादलों की तरह गड़गड़ाना चालू नहीं कर दें? चारों ओर से बादल छा जाते हैं, मंच पर अन्धेरा छाने लगता है।)

(३)

(दूसरा दिन, मंच रोशन होता है। पहली पारी ख़त्म होने का वक़्त, हो गया है। आज़ स्कूल में, बहुत चहल-पहल है। ऐसा लगता है, आज़ कोई मिटिंग होने जा रही है। इसलिये अभी बरामदे में माईक लगाया जा रहा है, और माईक के क़रीब ही बड़ी बी व मेडमों को बैठने के लिये कुर्सियां व टेबलें रखी गयी है। बड़ी बी की टेबल पर कुछ पुष्पों के हार व स्कूल में फस्ट, सेकण्ड, और थर्ड आने वाली दुख़्तराओं को दिये ज़ाने वाले इनाम रखे गये हैं। माईक के दूसरी

तरफ़, दो स्टूल रखे हैं, जिन पर तबादला होने वाले मुलाज़िमों के बैठने की व्यवस्था की गयी है। अब लाइन बनाकर स्कूल की दुख़्तराएं, बरामदे में बैठने लगती है। मेडमें आकर कुर्सियों पर बैठ जाती है, और मुमु बाई और साबीर मियां बहुत आग्रह करने पर स्टूलों पर बैठ जाते हैं। अब बड़ी बी तशरीफ़ रखती है, और मिटिंग की कार्यवाही शुरू होती है। बड़ी बी उठती है, फिर माईक थामकर कहने लगती है।)

रेशमा बेग़म- (माईक थामकर) - नेक दुख़्तराओं। आज़ हमें गम भी है, और ख़ुशी भी। आज़ हम मुमु बाई व साकिब मियां को दुखी दिल से, विदाई दे रहे हैं। मगर ख़ुशी की बात यह है कि, हमारे स्कूल की दुख़्तराएं हमेशा की तरह बेस्ट एथेलिट रही है। हमारे एज्यूकेशन महकमें ने फस्ट, सेकण्ड और थर्ड स्तर पर हमारी स्कूल की दुख़्तराओं को सलेक्ट किया है। अब मैं चाहूंगी, बारी-बारी दुख़्तराएं यहां आयेगी और अपना इनाम लेती जायेगी।

(ग़ज़ल बी उठकर, बड़ी बी रेशमा बेग़म से इनाम की फ़ेहरिस्त लेती है। और रेशमा बेग़म दिये ज़ाने वाले इनाम उठाती है।)

ग़ज़ल बी - (माईक थामकर) - अब आप सभी, शान्त रहें। (फ़ेहरिस्त देखकर) चलिये, क्लास टेन्थ की गुलशन यहां तशरीफ़ रखें। गुलशन थर्ड आयी है।

(गुलशन आती है, उसके आने पर तालियों की गड़गड़ाहट होती है और वह अपना इनाम ले जाती है। अब ग़ज़ल बी दूसरा नाम बोलकर, उस दुख़्तरा बुलाती है।)

ग़ज़ल बी - अब कक्षा आठवी की शबनम, तशरीफ़ रखें।

(शबनम आती है, फिर आकर अपना इनाम बड़ी बी से लेकर चली जाती है।)

ग़ज़ल बी - अब दिल थामकर, सुनिये...

(बच्चियों के बीच फुसफुसाहट होती है, इधर स्टॉफ में चुहलबाजी बढ़ती है। कमरे के गेट के पास ही, तौफ़ीक़ मियां और जमाल मियां

खड़े-खड़े गुफ़्तगू कर रहे हैं। तौफ़ीक़ मियां, जमाल मियां को कोहनी मारकर कह रहे हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (कोहनी मारते हुए) - मियां, आफताब आ रहा है। दीदार कर लीजिये, हुजूर। यह वह स्कूले नूर है, जो अपनी खूबसूरती के साथ अपने काम में भी अव्वल रहता है। यह वही दुख़्तरा है, जनाब।

(बड़ी बी के पास आती हुई, उस खूबसूरत दख़्तरा को आंखें फाड़कर देखते है, जमाल मियां। तभी ग़ज़ल बी माईक थामकर, ज़ोर से कहने लगती है।)

ग़ज़ल बी - (माईक थामकर) - स्कूले नूर...रोशन आराऽऽ..

(तालियों की गड़गड़ाहट के आगे, ग़ज़ल बी की आवाज़ सुनाई नहीं देती है। रोशन आरा बड़ी बी के पास पहुंच जाती है, उसके आते ही ग़ज़ल बी कहने लगती है।)

ग़ज़ल बी - (माईक थामकर) - लो देखिये, स्कूले नूर को। क्लास नाइन्थ की रोशन आरा, फस्ट आई है।

(बड़ी बी के पांवों पर हाथ लगाकर, रोशन आरा उनकी दुआ लेती है। फिर सभी मेडमों को सलाम करती है, फिर इनाम लेकर अपनी सीट पर आकर बैठ जाती है।)

ग़ज़ल बी - अब मैं साकिब मियां और मुमु बाई से रिक्वेस्ट करती हूं, वे दोनों बड़ी बी के पास आकर पुष्पाहार व अपना गिफ्ट कुबूल कर लें।

(दोनों अपनी सीट से उठते हैं, जाकर बड़ी बी के पांवों को छूते हैं। बड़ी बी रशीदा बेग़म मुमु बाई को पुष्पों का हार पहनाती है, व साकिब मियां के हाथों में पुष्पाहार थमाती है। फिर दोनों अपना गिफ्ट बड़ी बी से लेकर, अपनी सीट पर आकर बैठ जाते हैं। उधर दाऊद मियां अपने पास बैठे लाइब्रेरियन शेर खान साहब को जुमले सुना बैठते हैं। न ज़ाने कैसे, बड़ी बी उनके जुमले को सुन लेती है? सुनकर, वह पीछे मुड़कर उन्हें जवाब देती है।)

दाऊद मियां - (शेर खान साहब से) - चलो अच्छा हुआ, दोनों मुलाज़िमों की दिल-ए-तमन्ना आख़िर पूरी हुई। बड़ी बी के हाथ से, बच्चियों के सामने विदाई पाकर ख़ुश हुए। मगर...

रेशमा बेग़म- (पीछे मुड़कर, दाऊद मियां से कहती है) - मगर क्या? आपको दुःख हो रहा है के, आक़िल मियां के पैसे बेकार ख़र्च हो गये? मियां एक बार दिमाग़ में यह बात बैठा लो, हम इस स्कूल के मुखिया है। हम किसी दूसरे की पार्टी में आकर, विदाई पाने वाले मुलाज़िम को माला नहीं पहनाते हैं।

(फिर क्या? मोहतरमा अपनी सफ़ाई पेश करने लगी, उनकी पेश की गयी तकरीर सुनकर दाऊद मियां आवाक रहकर सुनते रहे। कोई जवाब, उनसे देते नहीं बना।)

रेशमा बेग़म- (तकरीर पेश करती हुई) - आज़ की पार्टी, स्टॉफ के चंदे से हो रही है। इस पार्टी में हमारा हक़ बनता है, माला पहनाने का। आख़िर, हम इस स्कूल की हेडमिस्ट्रेस है। अब समझे, क्या कहा हमने?

(अब स्टॉफ का हर मेम्बर आकर, दोनों मुलाज़िमों को मालायें पहनाने लगे। जैसे ही मोहतरमाए माला पहनाकर दूर हुई, उधर दुख़्तराएं आकर दोनों मुलाज़िमों के ऊपर गुलाल अबीर उड़ाने लगी। कई दुख़्तराएं मुमु बाई के ज़ाने की ख़बर पाकर, बहुत दुखी हो गयी। वे रोती हुई मुमु बाई से लिपट पड़ी, और आंखों से तिफ़्लेअश्क गिराती हुई मुमु बाई से कातर सुर में कहने लगी 'मत जाओ, मुमु बाई। हम तुम्हारे बिना, कैसे रहेंगी?' तभी बड़ी बी रेशमा बेग़म की आवाज़ गूंजती है, उनकी तेज़ दहलाने वाली आवाज़ सुनकर दुख़्तराए डरकर अपनी क्लासों में चली जाती है।)

रेशमा बेग़म- (तेज़ आवाज़ में) - चांद बीबीऽऽ। जाओ, छुट्टी की घण्टी लगाओ।

(छुट्टी की घण्टी लगती है, दुख़्तराएं अपना बस्ता लेकर क्लासों से बाहर आ जाती है। उनके रूख़्सत होने के बाद, सेकण्ड पारी की दुख़्तराएं बस्ता लिये अपनी क्लासों में दाख़िल होती है। अब पूरा स्टॉफ बड़ी बी के कमरे में दाख़िल होता है, सभी कुर्सियों पर बैठ

जाते हैं। उनके बैठने के बाद तौफ़ीक़ मियां, चांद बीबी और शमशाद बेग़म मिठाई व नमकीन से भरी प्लेटें लेकर कमरे में दाख़िल होते हैं। उनके पीछे-पीछे मेमूना भाई तश्तरी में चाय लिये हुए आते हैं। चाय, नमकीन व मिठाई सर्व करने के बाद, सभी मज़कूरी बाहर आकर नाश्ते की प्लेटे उठाते हैं। और, मिठाई-नमकीन खाना चालू करते हैं। कमरे के अंदर रेशमा बेग़म अंगड़ाई लेकर, कहने लगती है।)

रेशमा बेग़म- (अंगड़ाई लेती हुई) - चलिये, आज़ हमने स्टॉफ सेक्रेट्री का रोल निभा ही लिया।

(रेशमा बेग़म की बात सुनकर, मुमताज बी घबरा जाती है। घबराकर आपनी कुर्सी के दोनों हत्थे मजबूती से पकड़ लेती है, और जांच भी कर लेती है के 'कहीं, उसकी कुर्सी हिल तो नहीं रही है?' उनकी यह दशा देखकर, दाऊद मियां मुज़हाक करते हुए कह बैठते हैं।)

दाऊद मियां - (मुज़हाक करते हुए) - क्यों घबराती हो, मुमताज बी? आपकी कुर्सी सलामत है, मगर आपकी नाकामी के कारण आज़ बड़ी बी को आपके ओहदे का काम करना पड़ा।

आक़िल मियां - क्या करें बड़ी बी, आज़कल ज़माना ख़राब आ गया। हमारे नसीब फूटे हुए हैं, ऐसा कमज़ोर सेक्रेट्री इस स्कूल के पल्ले पड़ा है, जिनके कारण आपको ज़हमत उठानी पड़ी...कलेक्शन करने की।

इमतियाज़ - स्टॉफ से चंदा वसूल करना, कोई मुज़हाक का मआमला नहीं हैं, बड़ी बी। कई लोगों के मुख़ालिफत का सामना करना पड़ता है।

दाऊद मियां - सदाकत से कहता हूं, बड़ी बी। आपके बराबर, स्टॉफ सेक्रेट्री का काम कोई इस स्कूल में कर नहीं सकता। अल्लाह के फ़ज़लो करम से, आज़ से ही आप स्टॉफ सेक्रेट्री का ओहदा सम्भालते रहें।

रेशमा बेग़म- (बालों के जूड़े को ठीक करती हुई, चहकती है) - आपने वज़ा फ़रमाया, मगर हम ठहरे इस इंसटिट्यूट के हेड। हम कैसे कर सकते हैं, यह काम? बस, हमने स्कूल की गारिमा बनाये रखने के लिये यह काम किया था। मगर मैं यह ज़रूर कहूंगी, यह ग़लती आप सब लोगों की है।

दाऊद मियां - वह कैसे, हुजूर?

रेशमा बेग़म- आप सबने, ऐसा कमज़ोर स्टॉफ सेक्रेट्री रखा ही क्यों? कीजिये ना 'स्टॉफ सेक्रेट्री का इलेक्शन'। आप लोग चुनाव नहीं करते हो, इसलिये सुविधा के लिये हमने मुमताज मेडम को स्टॉफ सेक्रेट्री मनोनित किया था।

दाऊद मियां - (ख़ुश होकर) - ठीक है, बड़ी बी। जल्द ही, आपके हुक्म की तामिल होगी। बस, अब कल से ही स्टॉफ सेक्रेट्री के इलेक्शन की तैयारी....

(अब, फिर क्या? मक़सद पूरा होते देख, इमतियाज़ के ठहाके गूंज़ने लगे। सुनकर मुमताज वापस अपनी कुर्सी को ज़ोर से थाम लेती है, अब तो मोहतरमा को पक्का शक हो जाता है..के, स्टॉफ सेक्रेट्री की कुर्सी अब ज़्यादा दिन उसके पास रहने वाली नहीं। कोई नामाकूल मोहतरमा आकर उसकी यह कुर्सी ज़रूर खींच सकती है। बस, अब जुगत लड़ानी है...कैसे ही, यह कुर्सी उसके पास ही रहे। उधर दाऊद मियां के दिमाग़ में शैतानी हलचलें सिर उठाने लगती है, अब वे झट पास बैठी इमतियाज़ बी के कानों में कुछ फुसफुसाते हुए दिखायी देते हैं।)

दाऊद मियां - (कान में फुसफुसाते हुए) - इमतियाज़ बी, अब हम सब आपके साथ है। अगला स्टॉफ सेक्रेट्री बस, आप ही हो। अल्लाह के फ़जलो करम से, आपकी ज़रूर जीत होगी। भतीजी की शादी के वक़्त, शादी की नेत ना मिलने का बदला अब आपकी जीत से ज़रूर ले लिया जायेगा।

(अब स्टॉफ में कानाफूसी होने लगती है, जिसका शोर बढ़ जाता है। मुमताज यह शोर सुनकर, कमरा छोड़कर बाहर निकल आती है। मंच पर अंधेरा, छा जाता है।)

(अजज़ा ४) इजलास कभी ना होगी   लेखक : दिनेश चन्द्र पुरोहित

(1)

(मंच रोशन होता है, मनु भाई की दुकान दिखायी देती है। उसके सामने लगी पत्थर की बैंच पर फन्ने खां साहब बैठे हैं, उनके पहलू में डवलपमेण्ट कमेटी के दूसरे मेम्बरान बैठे दिखायी देते हैं। इनके आगे-पीछे, इस मोहल्ले के कई आदमी खड़े हैं। इन सारे निक्कमें लोगों को टोह रहती है के, कब ख़बरनवीस यहां आकर कोई स्कूल की चटपटी ख़बर सुना कर चला जाय? तभी अल्लाह पाक इन निक्कमों की अरदास सुन लेता है, और स्कूल के मेन गेट के पास एक ओटो आकर रूकता है। हाथों में किताबें थामे, आयशा ओटो से उतरती है। ओटो ड्राइवर आयशा से भाड़ा लेकर, ओटो को स्टार्ट करता है, कुछ ही देर में, वह नज़रों से ओझल हो जाता है। आयशा

सीधी वहीं आ जाती है, और फन्ने खां साहब के क़रीब खड़ी हो जाती है। फिर, क्या? आयशा अपने मुंह बोले चाचा फन्ने खां साहब से, गुफ़्तगू करने लगती है।)

आयशा - चच्चाज़ान, देख लेना आप। अभी जाती हूं, अन्दर। बड़ी बी किस तरह बरसती है, मुझ पर? आप बराबर निगाह रखना, मुझ पर। अब आप ही देख लीजिये, बराबर सही टेम आयी हूं स्कूल। चाहे तो आप, घड़ी मिलान कर सकते हैं। फिर भी यह फातमा...

फन्ने खां - ना बेटा, ना। तुम तो बेटा, रोज़ राइट टाइम आती हो स्कूल। खूब मेहनत करती हो, जी लगाकर। मगर इस बार...

आयशा - तकल्लुफ ना करें, साफ़-साफ़ कहिये चच्चाज़ान।

फन्ने खां - इस बार कोई मसाला नहीं आया, तुम्हारी तरफ़ से?

आयशा - (मुस्कराती हुई) - हफ़्वात के मसाले की कहां कमी, चच्चाज़ान? शरे-ओ-अदब तसलीमात अर्ज़ करती हूं, आप दिल थामकर सुनिये।

(चटपटी ख़बरें सुनने का शौक, किसको नहीं? सभी आयशा के नज़दीक आकर सुनने लगते हैं, चटपटी ख़बरें। अब, आयशा बेग से पर्ची निकालकर कहती है।)

आयशा - आप देखिये, चच्चाज़ान। दाख़िले की तारीख़ निकल गयी है, एज्यूकेशन महकमें के क़ायदे के तहत अब स्कूल में बच्चियों का दाख़िला नहीं हो सकता। मगर बड़ी बी ने मनु भाई की दुख़्तरा को स्कूल मे दाख़िला देकर, सक़्त (ग़लत) काम किया है। अब अप सोचते रहना 'क्यों दिया दाख़िला, और क्यों की महकमें के क़ानून के साथ खिलवाड़?

फन्ने खां - हमें, क्या मालुम? तुम बताओगी बेटा, तब मालुम होगा।

आयशा - (रूमाल से, जब्हा (पेशानी) पर आये पसीने को पोंछती हुई) - चच्चाज़ान, रोकड़ पांच सौ रूपये लिये हैं बड़ी बी ने। हाय अल्लाह, अभी तक उन्होने रसीद काटकर नहीं दी है। हुजूरे

आलिया, इससे ज़्यादा बेहतरीन करप्शन का मआमला कहां मिलेगा आपको?

(फन्ने खां साहब ने अपने सभी साथियों के चेहरे पर अचरच के भाव पाकर, उठ जाते हैं। और अपने साथियों के साथ, मनु भाई से पूरा वाकया मालुम करने उनके पास चले जाते हैं। मनु भाई की दुकान पर और भी ग्राहक सौदा लेने खड़े हैं, अब इन निक्कमों को आते देखकर उनके चेहरे पर गुस्से के भाव आ जाते हैं। तभी, फन्ने खां साहब उनके सामने सवाल खड़ा कर देते हैं।)

फन्ने खां - (मनु भाई से) - वाह उस्ताद, बच्ची का दाख़िला चुप-चाप करवा लिया स्कूल में। हम दोस्तों से, कुछ कहा नहीं? छुपे रूस्तम निकले यार, चुप-चाप रोकड़ा पांच सौ रूपये बड़ी बी को थमाने की क्या ज़रूरत थी मेरे भाई? हमसे कह देते, हम करवा देते दाख़िला।

हिदायत तुल्ला - आख़िर फन्ने खां साहब डवलपमेण्ट कमेटी के ईमानदार मेम्बर है, और मोहल्ले आजम साबू भाई के साले।

हण्डरेड परसेण्ट आपका काम होता, आख़िर हम लोग इन्हें ‘सद्दाम साहब’ कहकर क्यों बुलाते हैं?

मनु भाई - (गुस्से में) - ग्राहक खड़े हैं, कभी तो यार कमाने दिया करो। दिन-भर यहां बैठकर, मेरी ग्राहकी तोड़ते जा रहे हो? यार हम ठहरे धंधे वाले, आप हो रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी। आप लोगों को तो वक़्त बिताना है, और हमें वक़्त को काम में लेना है।

साबू भाई - अरे यार, इनको काम करने दो। अब सुनो, इन्होने पैसे दिये या नहीं दिये...अगर दे दिये तो, किस लिये दिये? उस गोरी मेम आयशा से ही, पूछ लीजिये ना। क्यों बेचारे मनु भाई की ग्राहकी तोड़ने, यहां खड़े हो?

(आयशा से मालुम करने के लिये, जैसे ही पीछे मुड़ते हैं फन्ने खां। आयशा, अब वहां कहां? न मालुम, कब स्कूल में चली गयी? अब बेचारे फन्ने खां, बगले झांकने लगे। आख़िर, वे अपने निक्कमें दोस्तों को कहने लगे)

फन्ने खां - (दोस्तों से) - दोस्तों, स्कूल में आज़ जुहर के बारह बजे डवलपमेण्ट कमेटी की इजलास (मिटिंग) होगी। इस इजलास में डवलपमेण्ट फण्ड का बज़ट तैयार होगा। मेरी इल्तजा है आपसे, आप सब इस मिटिंग के कोरम को पूरा नहीं होने दें। अब तजवीज़ आख़िर, आपके हाथ में है.. भाईयों।

हाजी मुस्तफ़ा - (फन्ने ख्ाां से) - उस्ताद, आप कल चले गये पेंशन लेने। फिर...

फन्ने खां - नहीं जाऊं? अरे हाजी साहब, महीने का घर खर्च क्या आप चलायेंगे आकर मेरा? हम तो मियां, रिटायर सरकारी मुलाज़िम ठहरे। महीने की दस तरीख़ को चंद रूपये देखने को मिलते हैं, हमें। इन धंधे वालों की तरह..(मनु भाई की ओर देखकर) रोज़ चांदी नहीं कूटते हैं।

हाजी मुस्तफ़ा - अरे हुजूर, बहक रहे हैं। हम तो यह कह रहे थे, उस वक़्त हमने इसी पत्थर की बैंच पर पक्की हाज़री दी थी। हुजूर, कल

भी आयशा आयी थी। मसाला लायी के, स्कूल की कुछ मेडमों ने ज़ान-बूझ कर हमारे आला एहबाबों की बच्चियों को फेल किया है।

साबू भाई - ख़ुदा की पनाह, बड़ी बी ने मुंह सी लिया अपना। आफरानी में तरन्नुम, मियां सदाकत से कहूंगा अब मआमला गंजलक का है। मेरी बच्ची फेल नहीं हो सकती, खूब मेहनत की थी हुजूर।

फन्ने खां - ऐसी क्या मेहनत की, हुजूर? दिन-भर मुण्डेर पर खड़ी होकर, कनकौवा उड़ाती है।

साबू भाई - कनकौवे को छोड़िये, साले साहब। वह चाहे तो, आपको भी उड़ा सकती है। अब सुनिये, आप। इमतिहान के रोज़, उसने कारचोब वाला इमामजामीन पहना...स्कूल जाते वक़्त दही-मछली चखी, और मेहतरानी से सगुन लेकर गयी थी हुजूर।

हाजी मुस्तफ़ा - सब बेकार गया, बेचारी छः नम्बर से रह गयी इन कंजूस मोहतरमाओं की वाजह से।

साबू भाई - इनका क्या जाता, हुजूर? थोड़े हल्के हाथों से नम्बर दे देती तो, बेचारी सप्लीमेण्ट्री से पास हो जाती। ज़रा पूछ लीजिये, इन अक्लेकुल मनु भाई से...इस स्कूल के लिये हमने क्या नहीं किया?

(साबू भाई की बात सुनकर, दुकान पर ग्राहकों को निपटा रहे मनु भाई हंस पड़े, फिर वे कहने लगे।)

मनु भाई - साहब बहादुरों। हम तो जनाब, साबू भाई के फोकटिये पी.ए. बने हुए हैं। हमारे शरे-ओ-अदब के लिये, काला हर्फ भैंस बराबर। अब आ जाइये आप सभी, इधर। पोइंट टू पोइंट, सारी बात समझा दूंगा।

(सभी उनके नज़दीक चले आते हैं, अब उनके बीच गुफ़्तगू शुरू होती है। अब उनके ग्राहक आंखें फाड़े सौदा पटने के इंतजार में, निक्कमों की बैंच पर आकर बैठ जाते हैं। फिर, क्या? उन बेचारे मग़मूम ग्राहकों की बीबीयां घर पर बैठी, आटा-दाल, तेल, घी

वगैरा के लिये आंखें पसारे अपने शौहरों का इंतजार करने लगी। मंच पर अंधेरा, छा जाता है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, बरामदे में बैठी शमशाद बेग़म पहले दौर का लंच ले चुकी हैं। अब उठकर, अपना टिफिन बंद करके उसे थैली में रख देती है। फिर जाकर, नल से अपने हाथ धोने लगती है। तभी रिसेस होने का वक़्त हो जाता है, शमशाद बेग़म जाकर घण्टी लगाती है। क्लासों से बच्चियां बाहर निकलकर, ग्राउण्ड में चली आती है। सारी मोहतरमाएं लंच लेने के लिये, पोर्च में इकट्ठी हो जाती है। उन सबको कुर्सियों पर बैठाकर, शमशाद बेग़म पानी पिलाती है। सब काम निपटकर अब वह चाय बनाने के लिये, गैस के चूल्हे के पास चली आती है। अब मोहतरमाओं की महफिल, जमने लगती है। सट खोलकर, ग़ज़ल बी कहती है।)

ग़ज़ल बी - आज़ तो सभी बहने हाज़िर है, मगर वह ब्यूटी पार्लर कहां हैं?

(अपनी ख़ास सहेली आयशा की खिल्ली उड़ाना, इमतियाज़ को पसंद आया नहीं। फिर क्या? इमतियाज़ बिफरती हुई, दो के चार सुनाती है ग़ज़ल बी को।)

इमतियाज़ - (बिफ़रती हुई) - आपका क्या गया, आपा? पाउडर-क्रीम अपने पैसों से लाकर मलती है अपने गालों पर, आप ख़रीद कर देती है क्या? ख़ुदा ने इनायत की है, ब्यूटी। आप जैसी मोहतरमाओं को नहीं दी है ब्यूटी, जो क्या समझे श्रृंगार (तजईन) को?

ग़ज़ल बी - श्रंगार नहीं, तो क्या हो गया? हम शग़ाल (सियार) को ज़रूर पहचानती हैं। बाहर के मेम्बरान को, स्कूल की हर ज़ानकारी रहती है ऐसे शग़ालों से। बड़ी बी सारे दिन क्या करती है, मोहतरमाएं कब आती है व कब जाती है, कमरों की सफ़ाई चपरासी करते हैं या स्कूल की बच्चियां?

इमतियाज़ - (गुस्से में) - और कह दो, आपा। नहीं तो फिर, आपका पेट दर्द बढ़ गया तो मुझे दोष मत देना।

ग़ज़ल बी - कह रही हूं, मुझे किसका डर? अमुख-अमुख मेडमें क्लास में बैठकर, स्वेटर बुनती है। अमुख-अमुख मेडमों ने ज़ानबूझकर बच्चियों को फेल किया है, वगैरा-वगैरा ज़ानकारी आख़िर देता कौन है?

इमतियाज़ - आपा आप कहलाओ मत इस छोटे मुंह से, इमतिहान का चार्ज लेकर नगर ढंढ़ोरा बज़ाने का काम करता कौन है? क्या कहती हो? (ग़ज़ल बी के आवाज़ की नक़ल करती हुई) 'हाय अल्लाह, बहुत मेहनत करती हूं....कई घण्टे बैठकर इमतिहान का काम पूरा करती हूं।'

(कहते-कहते इमतियाज़ को खांसी होने लगती है, मेज़ पर रखे पीतल के लोटे से पानी पीकर आगे कहती है।)

इमतियाज़ - (पानी पीकर, आगे कहती है) - वर्कर होगी या नहीं, वह अल्लाह ज़ाने। ख़ुद अपनी तारीफ़ करके, मियां मिठू मत बनो आपा। आपकी तारीफ कोई दूसरा करे, तो वह तारीफ़-ए-क़ाबिल

है। देख लो, बाहर के मेम्बरान कहते थकते नहीं के 'आयशा बहुत लिट्रेट है, बच्चियों को खूब मेहनत करके पढ़ाती है।

(कहते-कहते इमतियाज़ थक जाती है, सांस लेकर, फिर आगे कहने लगती है।)

इमतियाज़ - कहती हूं, वह एक पिरीयड मिस नहीं करती। और एक आप है, जिसे हर बच्ची का पेरेण्ट ज़ानता है। आप कितना पढ़ाती हैं क्लास में, और कितनी हफ़्वात करती जाती है... और..और...

ग़ज़ल बी - और, और...क्या? आगे, बोला जा नहीं रहा है? (निवाला गिटती है)

इमतियाज़ - (लम्बी सांस लेती है) - कहती हूं, आपा। थोड़ा ठहरो। आप ख़ुद का अपना वक़्त ख़राब करती हैं, और आस-पास की क्लासों में पढ़ा रही दूसरी मेडमों को भी अपने पास हफ़्वात करने के लिये बुला देती हो।

ग़ज़ल बी - आपकी सहेली, कोई दूध धुली नहीं हैं। अजी 'आफरनी में तरन्नुम' को क्या समझी, आप...असलियत मत छुपाओ...जो सभी ज़ानते हैं के, वह हेडमिस्ट्रेस के इमतिहान की तैयारी करती है क्लास में बैठकर। वह बच्चियों को पढ़ाती नहीं, ख़ुद पढ़ती है इस इमतिहान की किताबें।

इमतियाज़ - (गुस्से में) - और कुछ कहना, आपकों? मेरा सर-दर्द बढ़ा दिया आपने, फुजूल बकवास करके।

ग़ज़ल बी - कहूंगी कैसे नहीं, सुनो सच क्या है आख़िर? वह काम करती नहीं, जिसके कारण उसके हिस्से के कोपियों के बण्डल हम लोग जांचते हैं।

(ग़ज़ल बी ने खाना खा लिया है, अब वह सट को बंद करके हाथ धोती है। फिर आकर बैठ जाती है, उधर इमतियाज़ सर पर अपना हाथ रखे बैठी दिखायी देती है। तभी, शमशाद बेग़म आती है। सभी मोहतरमाओं को चाय के प्याले थमाती है, अब सभी

मोहतरमाएं चाय की चुश्कियां लेने लगती है। चाय के दो घूण्ट पीते ही, इमतियाज़ को बोलने की ताकत वापस लौट आती है।)

इमतियाज़ - हमें क्या करना, इस पोलीटिक्स से? आपा, अपको ही यह पोलीटिक्स मुबारक। हमें तो पढ़ाने से ही, फुरसत नहीं मिलती। निक्कमें लोगों को चाहिये, वक़्त गुज़ारने का मसाला। ये निक्कमें मनु भाई की दुकान के पास बैठकर, करते रहते हैं चुहुलबाजी। कहते हैं....

नसीम बी - क्या कहते है, इमतियाज़?

इमतियाज़ - कहते हैं के, बड़ी बी डवलपमेण्ट फण्ड पर नागिन बनकर बैठी हुई है। मैं कहती हूं के, सारा फण्ड डवलपमेण्ट में लगा दो। ना तो रहेगा फण्ड, ना होगी हरकत। कम्बख़्त इस फण्ड के कारण ही इस स्कूल के चारों ओर, मण्डराते रहते हैं। (इमतियाज़ जाती है)

मुमताज - (इमतियाज़ के ज़ाने के बाद) - वाह आपा, आप इतना नहीं समझती के आयशा इसकी ख़ास सहेली है...वह कैसे इसके

खिलाफ़, सुनेगी? अब आपकी ख़ैर नहीं, आयशा ज़रूर मेम्बरान को आपके खिलाफ़ कान भरेगी। यह इमतियाज़ हर ख़बर, इसके पास पहुंचाती है।

ग़ज़ल बी - देख मुमताज, सदाकत से कहती हूं...मैं हिस़्ट्री ज़रूर पढ़ाती हूं, मगर हिस़्ट्री शीटर नहीं हूं इसकी तरह। इसकी तरह खेल नहीं करती, स्कूल में। तखरीब में मीरजाफ़र ने मुल्क की लुटिया डूबा दी, और इस स्कूल की लुटिया डूबा देगी यह हमारी आयशा मीरजाफ़र। अब समझ गयी, तू?

मुमताज -ज़ानती हूं, आपा। यह आयशा टेलीफ़ोन करने के बहाने, साबू भाई की दुकान पर जाती है। टेलीफ़ोन पर बातें तो कम करती है, मगर वहां बैठकर मेम्बरान को भड़काने का काम ज़्यादा करती है। इस कारण ही, ये मेम्बरान सारे दिन पत्थर की बैंच पर बैठे....

नसीम बी - हम लोगों की मुज़हाक उड़ाते दिखायी देते हैं, ये कमज़ात मुज़हाका मेम्बरान। ये कम्बख़्त, मुआफी के क़ाबिल नहीं।

ग़ज़ल बी - (नसीम की ओर ध्यान न देती हुई) - देख मुमताज, बड़ी बी के वालिद का इंतकाल हो गया। कुछ दिन वह स्कूल में नहीं आयेगी, तब तक स्कूल सम्भालने का सारा बोझ मेरे सर पर आ गया है। देखें, अब आगे इस आयशा को....

(ग़ज़ल बी की आवाज़ धीमे हो जाती है, धीरे-धीरे यह आवाज़ बंद हो जाती है। मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।)

(३)

(मंच रोशन होता है, मेन गेट के बाहर ओटो रूकता है। अब आयशा ओटो से उतरती है, उतरकर हाथ घड़ी देखती है। घड़ी में बारह बजे हैं, वह ओटो का भाड़ा चुकाती है। जेब में रूपये रखते हुए, ओटो ड्राइवर कहने लगता है आयशा को।)

ओटो ड्राइवर - (सलाम करता हुआ, कहता है) - मादाम सलाम। कल कब आऊं, मादाम?

आयशा - कल की बात क्यों करते हो, भाई? आज़ तीन बजे ही आ जाओ, बड़ी बी छुट्टी पर है...अब रोकने वाला, कौन है?

ओटो ड्राइवर - आदाब...अब रूख़सत होने की इजाज़त चाहता हूं।

(ओटो को स्टार्ट करता है, थोड़ी देर में ही वह ओटो नज़रों से ओझल हो जाता है। अब आयशा मनु भाई की दुकान के पास आती है, वहां पत्थर की बैंच पर फन्ने खां, साबू भाई, हाजी मुस्तफ़ा वगैरा मेम्बरान बैठे हैं। दुकान पर बैठे-बैठे मनु भाई, अपने ग्राहकों को सामान तौलकर दे रहे हैं। आयशा को देखते ही, फन्ने खां साहब उससे कहते हैं।)

फन्ने खां - आज़ इतनी जल्दी....स्कूल में, तशरीफ़ कैसे लायी ?

आयशा - (लबों पर मुस्कान लाकर) - चच्चाज़ान, क्या करूं? आपके दीदार, आज़कल होते नहीं? आप तो कभी डी.ई.ओ. ओफिस चले जाते हैं, तो कभी पेंशन लाने। इसलिये आज़ आयी हूं, जल्दी। क्या कहूं, आपको? इन बेरहम मोहतरमाओं की काली नज़र से बचना भी, ज़रूरी है।

फन्ने खां - वल्लाह, हमारी बहादुर बेटी होकर तुम इन मोहतरमाओं से डरती हो?

आयशा - क्या करूं, चच्चा? ये मोहतरमाए कहती है, मैं आपको स्कूल की हर ख़बर देकर मीरजाफ़र का रोल अदा करती हूं। आप ही सोचिये, क्या चच्चा और भतीजी, आपस में अपने सुख-दुखः की बातें नहीं कर सकते?

फन्ने खां - (थोड़ा नज़दीक आकर) - बेटा फ़िक्र मत करो, शुक्रमंद रहो ख़ुदा के...अल्लाह पाक के मेहर से, हम तुम्हारा ख़्याल रखने वाले यहां बैठे हैं। एक बात बताओ, बेटा। आज़ कोई चटपट ख़बर लायी हो, क्या? हमारा दिल तो कब से बेताब हो रहा है, सुनने के लिये।

आयशा - उतावली मत करो, चच्चा। अभी पहले टेलीफ़ोन कर लेती हूं, ना तो ये शैतान की ख़ाला अपने वाइसस्कोप से न ज़ाने क्या-क्या देख रही होगी? ना बाबा ना, ख़ुदा ज़ाने क्या-क्या आरोप लगा बैठेगी हम पर? अगर नहीं लगाया तो हफ़्वात करती हुई ज़रूर कहेगी, के...

फन्ने खां - क्या कहेगी, बेटा? कुछ तो बयान करो।

आयशा - रहम जतलाती हुई कहेगी, हाय अल्लाह इस बेचारी का शौहर यहां है नहीं। एम.एससी. की पढ़ाई करने, किसी दूसरे शहर गया हुआ है। अब तो यह छोरी, पूरी आज़ाद हो गयी है।

(साबू भाई के दुकान की दलहीज़ चढ़कर, दुकान में दाख़िल होती है। अन्दर जाकर वह चोगा क्रेडिल से उठाती है, और नम्बर डायल करती है। कुछ देर किसी से गुफ़्तगू करके, चोगा क्रेडिल पर रख देती है। फिर वापस, फन्ने खां साहब के पास चली आती है।)

आयशा - चच्चा एक बात कहती है, मेरा नाम कहीं उछलना नहीं चाहिये। समझा देना, इन मेम्बरान को। क्योंकि, इनके पेट में कोई बात पचती नहीं। इन मेम्बरान में कोई ऐसा है, जो ग़ज़ल बी के पास मोती पिरोकर लौट आता है।

फन्ने खां - (अपने दोस्त मेम्बरानों की तरफ़ देखते हुए) - देखा आपने? क्या कहा, आयशा ने? कैसे बेवफा हैं, आप? ये बेचारी कितनी तकलीफ़ें सहती हुई, तुम्हारे लिये चटपटी ख़बरें लाती

है...और, आप चला देते हो अपनी दुनाली...(फटकारने के लहज़े से) सुन लिया, आपने? आगे से ऐसा नहीं होना चाहिये, समझे आप?

सभी मेम्बरान साथी - (एक साथ) - आगे फरमाइये, मोहतरमा। आगे से, ऐसी ख़ता नहीं होगी।

फन्ने खां - बेटा, अब जल्दी बयान करो। झट मसाला रख, बेटा...हम सुनने के लिये बेकरार है।

(फिर क्या? गुफ़्तगू होने लगती है, उधर मनु भाई से सामान ले रहे सभी ग्राहक, सामान लेकर अपने घर चले जाते हैं। अब मनु भाई आराम से अंगड़ाई लेकर, चैन की सांस लेते हैं। अब वक़्त बिताने के लिये, दुकान में लगा ट्रांजीस्टर स्टार्ट करके उसकी वोइस तेज़ कर देते हैं। जिस पर यह फिल्मी नग़मा सुनायी देता है 'बेकरार दिल तू गाये जा, खुशियों के भरे तराने..'। इसकी तेज़ आवाज़, फन्ने खां साहब की गुफ़्तगू को बाधा डालने लगती है। गुस्से से काफूर होकर, वे मनु भाई की ओर देखते हैं। तभी मनु भाई, हंसते हुए कहते हैं।)

मनु भाई - (हंसते हुए) - जनाब, आप भी बेकरार हैं और हम भी बेकरार हैं। ना ज़ाने वह वक़्त कब आयेगा, जब आप रूख़्सत होंगे और हमारा धंधा वापस चालू होगा? जनाब, इसी बेकरारी के बोल ही इस नग़में में है।

फन्ने खां - देख लूंगा, मनु भाई आपको। अभी यह छोरी खड़ी है, (मनु भाई की ओर देखते हुए, आंख मारकर इशारा करते हैं) थोड़ी इज़्ज़त रख यार...कुछ तो हमारी इज़्ज़त होगी। (आयशा से) हां, बोल बेटा। अब क्या किया जाये? अभी आज़ ही, बोल दें धावा?

आयशा - (घबराते हुए) - ना चच्चा, ना। यह क्या कर रहे हो, चच्चाज़ान? बेमौत, मारोगे क्या? मैं इसी पारी की हूं, सारा इल्जाम आ ़ जायेगा मेरे सर।

फन्ने खां - (तमतमाते हुए) - फिर क्या, मूंगफली तलूं या भुजिया...यहां बैठकर? ऐसा मौक़ा बार-बार मिलता है, क्या? इतना बढ़िया मसाला हाथ आया, और तू हमारे हाथ से छीन रही है?

आयशा - ज़रा अक़्ल होशियारी से काम करो, चच्चा। सांप मरे, और लाठी ना टूटे। आज़ पक्की तैयार कर लें, कल सुबह पहली पारी में धावा बोल देना। उस पारी में टीचर भी कम हैं, पढ़ाई होने का सवाल नहीं। आप सरे-आम, उन पर बैठंतजामी का आरोप लगा सकते हैं।

(पास बैठे सारे मेम्बरान दोस्त, ख़ुश होकर अपनी मंजूरी दे देते हैं। फिर क्या? उन सबकी आवाज़, एक सुर में गूंज उठती है। जिसे सुनकर, फन्ने खां साहब की छाती और चोड़ी हो जाती है।)

सभी एक साथ - फन्ने खां आगे चलो, हम तुम्हारे साथ हैं।

फन्ने खां - (ख़ुश होकर, मनु भाई से कहते हैं) - अजी, ओ मनु भाई। क्या घमण्ड में, मरे जा रहे हो? आ जाओ, हमारी फौज़ में। कल छुट्टी रख लेना, दुकान की। कभी तो दोस्तों का साथ दिया करो, यार। तहज़ीब-वहज़ीब तो भूल गये, दुकान पर आये दोस्तों के साथ कैसे सलूक किया जाय?

मनु भाई - (तमतमाए हुए) - तहज़ीब को मारो गोली, धंधा और हथाई साथ-साथ नहीं चलती जनाबे आली। धंधा-मज़दूरी करते हैं, मेरे दोस्त। आपकी तरह घर बैठे, पेंशन नहीं उठाते हैं। न तो हम किसी के मआमले में अपनी टांग फंसाते हैं, और न किसी को फंसाने देते हैं।

सभी एक साथ - ख़ुदा रहम...ख़ुदा रहम। हमें सरे-आम बैठज़्ज़त कर दिया, हाय अल्लाह तूने इस ख़िलक़त में कैसे-कैसे लोग भर डाले?

(सभी जाते हैं, उनके ज़ाने की पदचाप सुनायी देती है। मंच पर, अंधेरा छा जाता है।)

(४)

(मंच रोशन होता है, सुबह के सात बजे हैं। ग्राउंड में प्रार्थना हो चुकी है। दुख़्तराए अपने क्लास में लौट रही है, अब मेमूना भाई पानी का पाईप उठाकर बगीचे में जा चुके हैं, और वहां पौधों को पानी पिला रहे हैं। पानी देते वक़्त उनकी निगाह मेन गेट पर जा

गिरती है, वहां गेट खोलकर पहली पारी की इंचार्ज अनारो मेडम आती हुई दिखती है। उनके दीदार पाते ही, मेमूना भाई वहीं से चिल्लाकर कह बैठते हैं।)

मेमूना - ओ अनारो मेडम। जल्द तशरीफ़ रखें, आज़ मेम्बरान धावा बोलने आ रहे हैं।

(अनारो मेडम अपनी रफ़्तार बढ़ाती है, और उनके साथ लेट आने वाली मेडमें फाटक खोलकर घुस पड़ती है स्कूल में। तभी फन्ने खां, हाजी मुस्तफ़ा, हिदायत तुल्ला, साबू भाई और दूसरे मेम्बरान स्कूल-गेट के पर सवार होकर आ रहे मेम्बर भंवरू खां पर टिकती है, जो जनाब साइकल पर अख़बारों के बण्डल लादे स्कूल में अख़बार देने आ ही रह हैं। ये जनाब भंवरू खां, अख़बार बांटने का धंधा करते हैं। गेट के पास, आपने साथियों को पाकर, वे ज़ोर से आवाज़ देकर कहते हैं।)

भंवरू खां - (ज़ोर से आवाज़ देकर) - अरे ओ, साहब बहादुरों। पहले मुझे स्कूल में अख़बार देने दो, फिर गेट बंद कर देना।

फन्ने खां - (ज़ोर से आवाज़ देते हुए) - जल्दी आ जाओ, मियां। और अख़बार देकर, वापस जल्दी लौट ज़ाना। न तो तुम अनारकली की तरह, जेल में बंद हो जाओगे।

(भंवरू खां साइकल लिये, स्कूल में जाते हैं। तभी साबू भाई को डर सताने लगता है, वह डरकर कह बैठते हैं।)

साबू भाई - (डरते हुए) - देखो मियां आप हमसे जो काम करा रहे हैं, वह ग़लत है। भय्या हम ठहरे व्यापारी, झगड़ों में फंसते नहीं।

फन्ने खां - वाह उस्ताद, आप ठहरे मोहल्ले के बुजुर्ग मुसाहिब। हम तो ख़ुद, आपके पीछे हैं। फिर, काहे डरते हो? (मूंछों पर ताव देते हुए) अपनी भी मूंछें ऊंची कर लो, बिरादर। आप ज़ानते नहीं, ख़ुद वजीरे आला ने हुक्म निकाला है के वार्ड मेम्बर और मोहल्ले के मुअज़्ज़म मुख़्तार है, वे ख़ुद स्कूल का इंसपेक्शन कर सकते हैं।

साबू भाई - मगर, आपने इस वार्ड की मेम्बर मुन्नी तेलन को तो बुलाया नहीं? फिर, यह काम कैसे होगा?

फन्ने खां - डरते क्यों हो, उसके घर जाकर हम इंसपेक्शन रिपोर्ट पर दस्तख़त ले लेंगे। आख़िर वह मोहल्ले की दुल्हन ठहरी, उसके दस्तख़त तो हाथ पकड़कर ले सकते हैं। (हाथ घड़ी देखते हुए) अरे साबू भाई, जल्दी ताला जड़ दीजिये...वक़्त हो गया है।

साबू भाई - अरे मियां, भंवरू खां साहब अन्दर ही है। वापस लौटकर आये नहीं, यह लीजिये अपना ताला...अब आप ज़ाने, और आपका काम ज़ाने...?

फन्ने खां - (ताला लेकर, साथियों से कहते हैं) - सभी मेम्बरान अन्दर दाख़िल हो जायें, मैं मेन गेट पर ताला जड़ रहा हूं। (हिदायत तुल्ला से) अरे भाई हिदायत तुल्ला साहब, आप अन्दर जाते ही हाज़री रजिस्टर कब्जे में ले लेना।

(सभी मेम्बरान स्कूल में दाख़िल होते हैं, और इधर फन्ने खां साहब मेन गेट पर ताला जड़ देते हैं। तभी एक लेट लतीफ़ मेडम रूकसाना आती है, यह मेडम लम्बे समय से इस स्कूल में डेपुटेशन पर चल रही है। महकमें के आला अफ़सरों के साथ अच्छे रसूख़ात

होने के कारण, इस मेडम की अक़्सर लेट आने की आदत बन गयी है। अब वह फाटक पकड़कर, रौब भरी आवाज़ में कह बैठती है।)

रूकसाना - (रौबदार आवाज़ में, फन्ने खां से कहती है) - अरे ओ साहब। यह क्या कर रहे हैं, आप? जनाब, यह सरकारी स्कूल है।

फन्ने खां - अपको अब अपनी नानी याद आयेगी, रोज़ आती हो लेट। ख़्याल नहीं है बच्चियों का, फिर सरकार से तनख़्वाह किस बात की लेती हो... कोर्स अधूरा रखने के लिये? कुछ तो मोहतरमा शर्म किया करो। ग़लती बड़ी बी की, तुम जैसे लटे-लतीफ़ को आठवी बोर्ड इमतिहान का इंचार्ज बनाया?

रूकसाना - आप कौन होते हैं, इस तरह पूछने वाले? किसके हुक्म से, आप हमें रोक रहे हैं?

फन्ने खां - वजीरे आला के हुक्म से, समझ गयी आप? क्या मोहतरमा आप, अख़बार पढ़ती नहीं....क्या छपा है, परसों के अख़बार में? अब आयेंगे एक्सप्लेशन लेटर आपके पास, तब समझ

में आयेगा आपको... के, आख़िर हम है कौन? याद रखना मेडम, के.....

रूकसाना - क्या समझ में आया, क्या बक रहे हो जनाब?

फन्ने खां - (तमतमाते हुए) - चक्कर काटोगी, कलेक्टर ऑफिस के...तब आयेगी तुम्हारी नानी याद...किससे पाला पड़ा है?

(तभी, हिदायत तुल्ला साहब की आवाज सुनाई देती है, ऐसा लगता है मानो किसी चीज़ के लिये उनके व मेडमों बीच छीना झपटी हो रही हो?)

हिदायत तुल्ला - (अन्दर से, फन्ने खां साहब को मदद की गुहार लगाते हुए) - ओ फन्ने खां साहब। हुजूर, जल्दी आईये....ये मेडम साहिबा हमें, हाज़री रजिस्टर नहीं सौंप रही है?

फन्ने खां - (वहीं से, ज़ोर से बोलते हैं) - आया, जनाब।

(बेचारी रूकसाना को अन्दर आने नहीं देते, फन्ने खां साहब...और, गेट पर ताला जड़ कर ख़ुद दीवार फांदकर अन्दर चले जाते है।

फिर अन्दर आकर अनारो मेडम से हाज़री रजिस्टर छीनकर, कहते हैं।)

फन्ने खां - (हाज़री रजिस्टर छीनकर) -ज़ानती हो, मेडम? हम लोग, अवाम के नुमायन्दें हैं। (हिदायत तुल्ला साहब की तरफ़ उंगली उठाकर) इनको पहचानती हैं, आप? ये मुअज़्ज़म, आपके वार्ड की इलेक्टेड मेम्बर मुन्नी तेलन के पी.ए. हैं। समझ गयी, आप?

अनारो मेडम - हम क्या करें, जनाब? ये किसी के पी.ए. हो, हमें इनसे क्या लेना-देना?

फन्ने खां - (पास रखी कुर्सी पर, बैठकर) - इनको पूरा हक़ है, आपकी स्कूल में इंसपेक्शन करने का। इंसपेक्शन का हक़ इन्हें, मेम्बर साहिबा ने दिया है। आप यह भी अपने दिमाग़ बैठा लीजिये, मेम्बर साहिबा को यह हक़ अपने स्टेट की वजीरे आला ने दिया है।

(हाज़री रजिस्टर छीनकर, फन्ने खां हाज़री रजिस्टर का मुआइना करते हैं। आज़ ग़ैर हाज़र रहने वाली मेडमों के कोलम में, लाल स्याही से क्रोस का निशान अंकित करते हैं।)

अनारो मेडम - जनाब आप बिना पूछ-ताछ किये, लाल लाइन क्यों खींच रहे हैं? पत्ता नहीं आपको, ये सारी मेडमें सेकण्ड पारी की है। इस तरह आप इनके दस्तख़त के कोलम में, इलीगल इंटरफ्रेंस नहीं कर सकते।

फन्ने खां - (तेज़ आवाज़ में) - मोहतरमा, इतनी दानिश होकर आप नहीं समझती...हमें पूरा-पूरा हक़ है, दख़ल देने का। समझ लेना, मेडम। इस तरह आप, सरकारी काम में दख़ल डाल रही हैं। जिसका नतीजा क्या होगा? आप सोच नहीं सकती।

(अब फन्ने खां साहब पहली पारी की उन मेडमों के कोलम देखने लग गये हैं, जो अक़्सर देरी से आती है। बदकिस्मत से, अभी तक वे मेडमें आयी नहीं है...? बस फिर, क्या? फन्ने खां साहब का लाल

पेन, लाइन खींचने के लिये उठता है...और उधर, अनारो मेडम उनका हाथ रोक कर कहती है ज़ोर से)

अनारो मेडम - (ज़ोर से) - अरे हुज़ूर, अब यह क्या? इन सबका हमारे पास फ़ोन आया है, बस जनाब दो मिनट रूक जाइये...वे आ ही रही हैं, स्कूल में।

फन्ने खां - (अनारो मेडम का हाथ हटाते हुए) - ये सब बातें आपको पहले कह देनी थी, मगर आप ज़ानबूझ कर बोली नहीं....यह सरासर ग़लती आपकी है, अवाम के नुमाइन्दों को नावाकिफ़ रखने का चार्ज, यह इंसपेक्शन कमेटी आप पर लगाती है।

हिदायत तुल्ला - आप पहले बोल देती, तो सेकण्ड पारी की मेडमों के कोलम ख़राब नहीं होते। मगर, आप तो अपनी ख़ास मेडमों को बचाने में लगी थी?

(फन्ने खां साहब ने लाल लाइने लगाने का काम पूरा कर लिया है, अब वे रजिस्टर साबू भाई को थमा कर कहते हैं।)

फन्ने खां - (रौब से) - साबू साहब, अब आप अनारो मेडम पर यह चार्ज लगाकर रिपोर्ट तैयार करो....के उन्होने, अवाम के नुमाइंदों को ज़ानकारियों से नावाकिफ़ रखकर इन्होंने आर.एस.आर. के रूल्स के खिलाफ़ जुर्म किया है। बस, आप झट रिपोर्ट तैयार कर दें।

हिदायत तुल्ला - एक मिसल ज़्यादा बना देना, वजीरे आला के हुक्म इजरा होने के तहत डी.ई.ओ. साहब के ओफ़िस में भी एक मिसल भेजनी है।

साबू भाई - (झुंझलाकर, हाज़री रजिस्टर मेज़ पर रखते हुए) - लीजिये आपका रजिस्टर, ख़ाक रिपार्ट बनाऊं? मेरे लिये तो काला हर्फ भैंस बराबर है, पढ़ा-लिखा होता तो मैं सरकारी ठेकों के कोटेशन आपसे क्यों भरवाता? इन बाईयों पर रौब गांठकर, कर लिया अपना शौक पूरा?

(फिर साबू खां दस अंगुलियां दिखाते हुए, आगे अपनी बात रखते हैं। मगर अंगुलियां दिखाते वक़्त भूल जाते हैं, वे छः अंगुलियों की जगह हथेली की दसों अंगुलियां दिखा रहे हैं।)

साबू भाई - (हथेली की दसों अंगुलियां दिखाते हुए) - मेरी छोरी को ख़ाली छः नम्बर से फेल किया है, इन बेरहम मेडमों ने।

फन्ने खां - (हंसते हुए) - साहबे आलम ये छः अंगुलियां नहीं है, दस है जनाब।

हाजी मुस्तफ़ा - ख़ैर कुछ नहीं, हमारे साहबे आलम भी शहनशाहे जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर की तरह अंगूठाछाप होते हुए भी ख़िताब रखते हैं मोहल्ला-ए-आज़म का। बिल्कूल उनके नवरत्नों की तरह, हम भी इनके नवरत्न का काम करते हैं....

फन्ने खां - इनके लिये काला हर्फ भैंस बराबर है, तब ही हम इनके क़ाबिल नवरत्न ठहरे। जो इनका हर काम, चुटकी बजाकर करते हैं।

साबू भाई - (मुस्कराते हुए) - जनाब, क्या आप ज़ानते हैं? शहनशाहे अकबर के मुअज़्ज़म साले साहब कौन थे? मैं बताता हूं जनाब, उनके साला साहब फन्ने खां साहब थे।

फन्ने खां - अजी, हमारे शरे-ओ-अदब...साहबे आलम। हम भी तो आपकी बेग़म साहिबा के मुंह बोले भाई हैं।

(साबू भाई उनका मुंह ताकते रह गये, बेचारे साबू भाई ने यह समझ लिया...के, कहीं उनके बोलने में कहीं ग़लती हो गयी होगी? तभी जनाब हाजी मुस्तफ़ा कह बैठे, के...)

हाजी मुस्तफ़ा - क़ाबिले एतराफ़ बात यह है के, सारी दुनिया एक तरफ़ और जोरू का भाई एक तरफ़। बस मैं तो यहीं कहूंगा, के 'यही कारण है के, मोहल्ले में चल रही फन्ने खां साहब की हकूमत के पीछे साबू भाई है। हम तो कहेंगे, हुजूर?'

साबू भाई - कह दीजिये, आप बाकी मत रहो कहने में। पहले एक बार सुन लीजिये, हमसे...बिहार की जनता के दिल में लालू भाई तब तक बसे रहेंगे, जब तक सब्जियों में आलू रहेगा। और जब तक हमाम में साबू रहेगा, तब तक हम यानि साबू भाई मोहल्ले की राजनीति करते रहेंगे।

हाजी मुस्तफ़ा - सुन ली हुजूर, आपकी शान में तारीफ़ के कसीदे। अब तो आपको ज़रूर, वार्ड मेम्बर के इलेक्शन में खड़ा रहने का मंसूबा बना लेना चाहिये। (हिदायत तुल्ला साहब की तरफ़ देखते

हुए) क्यों जी, आप हमारे मोहल्ले के शहनशाह साबू भाई को सपोर्ट देंगे या नहीं?

हिदायत तुल्ला - (हंसते हुए) - साहब बहादुरों, जिस पार्टी की तरफ़ से इलेक्शन लड़ते हैं...उस पार्टी में हमारे मोहल्ले के शहनशाह साबू भाई की हैसियत, होनी चाहिये। जैसे के....

हाजी मुस्तफ़ा - बात तो जनाब आपने हण्डरेड परसेण्ट सही कही है, आप कई कारख़ानों के मालिक ठहरे। ये सियासत वाले, आपके दिये चंदे से ही इलेक्शन लड़ते हैं। फिर, हमारे साबू भाई की हैसियत...? हाय अल्लाह, अब हमारे शहनशाह का क्या होगा?

साबू भाई - (चिढ़ते हुए) - क्या कह रहे हो, बरख़ुदार? कभी आपने देखा है, इन पार्टी वालों को वर्करस् कौन सप्लाई करता है? अरे जनाब, ये पार्टी वाले हमसे मश्वरा लेते हैं के किस आदमी से इलेक्शन लड़वाया जाय? (फिर, कुछ याद आने पर) अरे ... अरे...

फन्ने खां - क्या कहना बाकी रह गया, साहबे आलम?

साबू भाई - अरे जनाब, आख़िर हम यहां आये क्यों? मेरी छोरी को फेल करने का मामला, बाकी कैसे रख दिया आपने?

फन्ने खां - (हंसते हुए) - भाणजी को फेल करने वालों को अल्लाह पाक दोजख़ नसीब करे। आप फ़िक्र मत करो, आपकी नेक दुख़्तरा हमारी भाणजी है। जनाब, कुछ करेंगे। ईंट से ईंट बजा देंगे, जनाब।

साबू भाई - (बिगड़ते हुए) - अरे साले साहब, ईंट से ईंट मत बजाओ यार... कहीं हमारी दुकान की ईंटें तोड़कर, हमारा नुक्सान कराने का इरादा रखते हो क्या? अरे हुजूर, आज़कल ये ग्राहक एक-एक ईंट की जांच करते हैं... फिर, ख़ूारीदते हैं ईंटें।

फन्ने खां - आख़िर दुल्हे मियां, आप कुछ समझते ही नहीं हो? अरे हुज़ूर, यह नामाकूल माज़रा सेकण्ड पारी का ठहरा... और, यह ठहरी पहली पारी।

साबू भाई - (गुस्से में) - फिर हमें काहे घसीट लाये, यहां? हमारी दुकान का क्या होगा, किसके भरोसे पर हमारी दुकान....?

फन्ने खां - फ़िक्र ना करें, आलीमगीर, आपके शहज़ादे सलीम बैठे हैं दुकान पर। आप तो ठहरे बादशाह, आपको मोहल्ले की इस फौज़ के साथ रहना ज़रूरी...? इसलिये, खींचकर ले आये आपको यहां। (अनारो मेडम से) देख लीजिये मोहतरमा, आगे से स्कूल में बदइंतजामी नहीं होनी चाहिये।

हाजी मुस्तफ़ा - सभी मेडमों को पाबंद करना, सही वक़्त पर स्कूल आयें। आप लोग बीच में स्कूल को नहीं छोड़ें, बच्चियों को क्लासों से बाहर आने नहीं दें। जल्द ही टांकें की सफ़ाई करके, उसे कांच की तरह चमका दें।

हिदायत तुल्ला - और इस हिदायत पर ध्यान दिया जाय के, कोई बच्ची झाड़ू हाथ में नहीं लेवें... चपरासियों से ही, कचरा निकलवाया जाय।

फन्ने खां - हिदायत साहब, आपने हिदायतें खूब दे दी है। आख़िर जनाब आपका नाम ठहरा, हिदायत तुल्ला। (अनारो मेडम से) अब आपको कुछ कहना है, मेडम?

अनारो मेडम - हुजूर अब आपका मुआइना पूरा हो गया है, अब गेट का ताला खोल दीजिये ना।

हिदायत तुल्ला - गेट के ताले से, क्या ताल्लुकात? आप लोग बच्चियों को पढ़ाने का काम कीजिये ना, फ़ुजूल बेकार की बातों को छोड़ दीजिये।

फन्ने खां - इससे तो अच्छा है, आप क्लास में जाकर बच्चियों को पढ़ायें। बच्चियां आपको दुआ देगी, मोहतरमा अब जाइये क्लास में...वक़्त बहुत क़ीमती है, जाया ना करें।

(तभी फन्ने खां साहब की बुलंद निगाहें, ग्राउण्ड में साइकल चला रहे भंवरू खां पर गिरती है। उनको बेफिजूल चक्कर काटते देखकर, फन्ने खां साहब खिल-खिलाकर हंस पड़ते हैं और ज़ोर से उन्हें आवाज़ देते हुए कह बैठते हैं।)

फन्ने खां - (हंसते हुए) - अरे, ओ भंवरू खां साहब। अरे अमां यार, ख़बरनवीस होकर साइकल रेस में भाग लेने की तैयारी क्यों कर रहे हो जनाब?

भंवरू खां - (वहीं से साइकल दौड़ाते हुए, तेज़ आवाज़ में) - अरे साहब बहादुर, आपकी मेहरबानी से चक्कर लगा रहे हैं इस ग्राउण्ड का। अल्लाह ज़ाने, आपको कब फाटक खोलना याद आयेगा?

फन्ने खां - (तेज़ आवाज़ में) - सुनाई नहीं दिया, हुजूर। ज़रा इधर तशरीफ़ रखें, हुजूर।

(फिर क्या? बेचारे भंवरू खां साइकल को स्टेण्ड पर रखकर, बरामदे में बैठे फन्ने खां साहब के नज़दीक आते हैं। फिर, गेट खोलने की गुहार करते हैं।)

भंवरू खां - (नज़दीक आकर) - अरे जनाब, आपकी सियासत का काम पूरा हो गया हो तो चलकर स्कूल का गेट खोल दीजिये। बेचारे ग्राहक अख़बार की इंतजार में बैठे, हमें गालियां दे रहे होंगे। ख़ुदा ज़ाने, जनाब ने हमको किस आरोप में हमें यहां कैद कर रखा है?

हाजी मुस्तफ़ा - अजी भंवरू खां साहब, आप ज़ानते नहीं फन्ने खां साहब की आदतें? ये जनाब एक बार दरवाज़ा बंद कर देते हैं,

वापस खोलते नहीं। यही वजह है, इनके भेजे के अन्दर एक बार जो बात घुस जाती है...वह कभी निकलती नहीं, कई साल पुरानी बातें याद रखते हैं जनाब।

भंवरू खां - (मायूस होकर) - तब क्या, मैं कैदी की तरह पड़ा रहूं यहां?

हाजी मुस्तफ़ा - अरे साहब, ताला जड़ने के बाद खुद फन्ने खां साहब दीवार फांदकर स्कूल में आये हैं। आप भी ऐसा कोई रास्ता निकाल लीजिये। (मेमूना भाई को आते देखकर) अरे ओ मेमूना भाई, ज़रा भंवरू खां साहब की मदद करना।

मेमूना भाई - (वहीं से ज़ोर से बोलते हुए) - साहब, साइकल लेकर फाटक के पास आ जाइये। मैं वहीं जा रहा हूं, आपकी साइकल दीवार के बाहर डाल दूंगा।

(मेमूना भाई आगे चलते हैं, पीछे-पीछे भंवरू खां साइकल थामे जाते दिखायी देते हैं। और उनके पीछे, सभी मेम्बरान चलते हैं।)

भंवरू खां - (आगे चलते हुए) - फन्ने खां साहब, कभी-कभार तो हमारे बारे में सोच लिया करो।

फन्ने खां - (पीछे आते हुए, कहते हैं) - अजी सोचना, क्या? आपको और आपकी साइकल को दीवार के बाहर उछाल देंगे, और क्या?

भंवरू खां - (चमक कर कहते हैं) - अरे यह क्या, जनाब? हमें फेंक दिया तो, अख़बार कौन देगा? फिर आप क्या पढ़ोगे, मनु भाई की दुकान पर? हम तो जनाब यह कह रहे थे, आप स्कूल की बड़ी बी से झगड़ा मोल लेकर हमारा धंधा क्यों बिगाड़ रहे हो?

मेमूना भाई - (मेन गेट के क़रीब, पहुंचकर) - आईये, आईये। जल्दी आईये, अब हम आपकी साइकल को बाहर डालकर आपका धंधा चालू कर देंगे। फ़िक्र कीजिये, मत। हम ओरों की तरह धंधा बिगाड़ेंगे नहीं, बल्कि...

(भंवरू खां के आते ही, उतावली में मेमूना भाई उनकी साइकल दोनों हाथों से ऊपर उठाकर बिना देखे चारदीवारी के बाहर डाल

देते हैं। हाय अल्लाह, साइकल नीचे क्या गिरी? उसके साथ-साथ, रूकसाना मेडम की चीख अलग से सुनाई देती है।)

रूकसाना - (दर्द से चीखती हुई) - अरे मार डाला रे, कमज़ात। तूझे दोजख़ नसीब हो, ओ दोजख़ के कीड़े तूने मेरी कमर तोड़ डाली...हाय अल्लाह। (साइकल पर बंधे अख़बार के बण्डल देखकर) अरे पीर दुल्लेशाह, इस हरामी बूढ़े को ज़रा अक़्ल दें...मेरे मोला, यह बूढ़ा मिराकी (सनकी) निकला?

(उस बेचारी की चीख अब सुने, कौन? यहां तो सारे बूढ़े उतावली करते हुए, दीवार फांदने लगे। बेचारी रूकसाना की हालत बुरी हो गयी, वह जिधर बचाव के लिये खिसकती उधर ही कोई न कोई बूढ़ा उसके ऊपर गिर पड़ता। कभी बेचारी के पांव कुचल जाते, तो कभी उसके नाजुक कंधो पर किसी बूढ़े का साठ किलो का वजन आ गिरता। दीवार फांदने के बाद, सभी बूढ़े मनु भाई की दुकान पर उनके सामने अपनी डींग हांकने चले गये। मगर बेचारे भंवरू खां बिखरे हुए अख़बारों को उठाकर, साइकल पर रखत हैं। अख़बारों

का हुआ नुक्सान, बेचारे कैसे बर्दाश्त करते?अब वे गुस्से से, रूकसाना मेडम की तरफ़ देखते जाते हैं। उनके कानों में अभी तक, रूकसाना की बकी मुग़ल्लज़ गालियां गूंज़ती जा रही है। उनकी गुस्से से भरी आंखें देखते ही, रूकसाना मेडम डरकर साबू भाई की दुकान पर चली आती है। अब तक साबू भाई अपनी दुकान पर लौट आते हैं, उसे हाय तौबा मचाते देखकर उन्हें रहम आता है। फिर क्या? उसे मूव ट्यूब थमाकर, वे उसे दिलासा देते हैं। मंच पर, अंधेरा छा जाता है।)

(५)

(मंच रोशन होता है, स्कूल का बरामदा दिखायी देता है। आज़ दस रोज़ बाद यहां मेडमें चहक-चहक कर बातें करती हुई दिखायी दे रही है। सबको मालुम है, बड़ी बी छुट्टियां बिताकर अपने घर आ चुकी है। अभी रिसेस चल रही है, इसलिये पहली पारी की सब मेडमों ने बड़ी बी से मिलने का मंसूबा बना लिया है। स्कूल से कुछ क़दम दूर ही, बड़ी बी का मकान है। थोड़ी देर बाद सभी मेडमें

उनके मकान की दलहीज़ के पास आती है, तभी दूसरी पारी की मेडमें भी वहां पहुंच जाती है। फिर एक साथ सभी, मकान में दाख़िल होती है। बड़ी बी ने दीवान ख़ाने में अपने मरहूम वालिद साहब की बैठक रखी है, वहां पहले से मोहल्ले की औरतें बैठी दिखयी देती है। मेडमों के दाख़िल होते ही, वे औरतें सलाम करके रूख़्सत होती है। अब सभी मेडमें सलाम करके, बड़ी बी के पहलू में बैठती है। अब उनके बीच, गूफ़्तगू शुरू होती है।)

ग़ज़ल बी - सलाम। आपके वालिद साहब के इंतकाल की ख़बर सुनकर, बहुत रंज हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलय ह’-राज’ ऊन। अल्लाह-तआला मरहूम को जन्नतुल-फिरदौस में आलामुकाम अदा फरमायें, आमीन।

सभी मेडमें - आमीन। (आंख और छाती पर हाथ रखती है।)

रशीदा बेग़म- (निहायत रन्जोगम के साथ) - तशरीफ़ रखें। (पान की डिबिया उनके आगे रखती हुई) लीजिये।

(सभी मेडमें डिबिया खोलकर, पान की गिलोरियां अपने मुंह में ठूंसती है। पान ठूंसकर अनारो मेडम कहती है।)

अनारो मेडम - निहायत रंजोगम के साथ कहती हूं बड़ी बी, आपके वालिद साहब के इंतकाल की ख़बर सुनकर बहुत दुखः हुआ। हुजूर सदाकत से कहती हूं, हमें इन कानों से सुनकर वसूक नहीं हुआ। कुछ रोज़ पहले की बात है, नूरिया बन्ना सेलेरी बिल पर आपके दस्तख़त लेकर आया था...

ग़ज़ल बी - वह बता रहा था, आपके अब्बा हुज़ूर की तबीयत बराबर सुधर रही है।

रशीदा बेग़म- अजी इसे सुधरना मत कहो, बल्कि बिल्कूल ठीक हो गये कहो। अल्लाह पाक की क़रामत थी, वे पांच वक़्ती नमाज़ अदा करने लग गये थे। मगर, एक रोज़ तड़के उठे...घुसल किया, फिर पाक कुरआन-शरीफ की आयतें पढ़ी। फिर, मुझे बुलाकर कहने लगे....

ग़ज़ल बी - क्या कहा, हुज़ूर?

रशीदा बेग़म- कहा, अम्मीज़ान का ध्यान रखना...उसका दिल बहुत कमज़ोर है। उसे, अकेले मत छोड़ना। याद रखना, समझी? मैं अब्बा हुजूर को कुछ कहती, उसके पहले अब्बा हुजूर ने चुप रहने का इशारा कर दिया और कहने लगे...

अनारो मेडम - क्या कहा?

रशीदा बेग़म- यह कहते गये 'बेटा, इस ख़िलक़त से रूख़्सत हो रहा हूं.....अल्लाह हाफिज।' मैं आवाक होकर उनका चेहरा देखने लगी, उनके चेहरे पर नूर छाया हुआ था। उनकी आवाज़ मेरे कानों में गूंजने लगी, वे वजीफ़ा पढ़ रहे थे 'वस्म अल्लाह अल रहीम अल रहमान। बस, इतना...

ग़ज़ल बी - फिर क्या हुआ, बड़ी बी?

रशीदा बेग़म- इतना कहकर, उन्होने हमेशा के लिये अपनी आंखें मूंद ली। मैं घबरा गयी, आवाज़ देकर भाईज़ान को बुलाया। डाक्टर को बुलाया गया, डाक्टर ने जांच करके कहा 'इन्होंने हमेशा

के लिये आंखें मूंद ली है।' अम्मीज़ान की दशा देखकर, मेरे आसूं थम गये।

अनारो मेडम - फिर आपने, किस तरह अम्मीज़ान को सम्भाला होगा?

रशीदा बेग़म- अम्मीज़ान तो बिल्कूल अनज़ान थी, बेचारी तसल्ली देती हुई मुझे कह रही थी 'बेटा, फ़िक्र मत करो। तुम्हारे अब्बा हुज़ूर, क़लमा पढ़ रहे हैं... बस, अब तुम उनके पाक काम में ख़लल ना डालो।'

(कहते-कहते, बड़ी बी की आंखों से तिफ़्लेअश्क गिर पड़ते हैं। उनका गला, युसुबूत हो जाता है। फिर क्या? नौकरानी प्यारो को, आवाज़ देकर बुलाती है। प्यारो पानी से भरा गिलास लाकर, बड़ी बी को थमाती है। पानी पीकर, बड़ी बी अपने गले को तर करती है। फिर, रूमाल से गिर रहे आसूंओं को साफ़ करती है। ख़ाली गिलास लेकर, प्यारो चली जाती है। अब चारो तरफ़ सन्नाटा छा जाता है, इस सन्नाटा को तोड़ती हुई ग़ज़ल बी कहने लगती है।)

ग़्ाज़ल बी - ख़ुदा का शुक्र है, ऐसी मौत क़िस्मत वालों को नसीब होती है। ख़ुदा अपने ख़ास बंदों को, अपने पास बुला लेता है। अल्लाह के हुक्म के आगे, किसी की नहीं चलती।

रशीदा बेग़म- (सामान्य होती हुई) - ख़ैर छोड़िये, बीबी। अब आप ज़रा, स्कूल के हाल बताईये। याद है, आपको? स्कूल आपके भरोसे छोड़ कर, गयी थी। अमन-चैन क़ायम रखा, या बदइंतजामी का मंजर दिखलाओगी चलकर?

अनारो मेडम - इनको क्या तकलीफ़, बड़ी बी? इनकी पारी में आयशा मौजूद, इसलिये मोहल्ले वाले आते नहीं इनको परेशान करने। उनको तो हमारी पारी दिखती है, जब मर्जी आये आ जाते हैं खेल दिखाने?

ग़ज़ल बी - (होंठों में मुस्कराती हुई) - मानो पहली पारी की मोहतरमाएं मोहतरमाएं न होकर, नाचने वाली बन्दरिया हो? आ जाते हैं, नामाकूल मदारी बनकर।

अनारो मेडम - (चिढ़ती हुई) - क्यों आते हैं, हमारी पारी में? तुम्हारी पारी दिखती नहीं, इन सावन के अन्धों को...

ग़ज़ल बी - (चिढ़ाती हुई) - आयेंगे क्यों नहीं, ज़रूर आयेंगे। (आंखें तरेरती हुई) हमको तो आप एक्टिंग हेड मिस्ट्रेस मानती नहीं, ना कभी आपने इन मदारियों की शिकायत हमसे की है। यह तो हमारे पड़ोसी भंवरू खां का भला हो, उन्होने ख़बर दे दी हमें। न तो हम बेख़बर रहते।

अनारो मेडम - (झुंझलाती हुई) - और कुछ कहना है, आपको? कह दीजिये, सारे मोती पिरो दो अभी।

ग़्ाज़ल बी - क्यों नहीं कहूं? (बड़ी बी की ओर मुंह करके) बड़ी बी, इन्होने तो आपके वापस लौटने की ख़बर भी सिक्रेट रखी है। यह तो अच्छा हुआ, मस्तान बाबा के मज़ार पर आपकी पड़ोसन रजिया बीबी ने आपके आने की ख़बर हमें दे दी। और अब यहां आते, ये मिल गयी...

अनारो मेडम - आपके शऊर अच्छे नहीं लगते, क्या करती ख़बर देकर? हर छोटी-बड़ी बात का, आप तिल का पहाड़ बना देती हो।

ग़ज़ल बी - (गुस्से में) - क्या बकती हो, शऊर आपके बिगड़े हुए हैं? आपको कहां स्कूल की फ़िक्र? आप तो अपनी सहूलियत को तवज़्या देती हुई, रोज़ रेल गाड़ी से आना-ज़ाना करती हो।

अनारो मेडम - रोज़ आना-ज़ाना करती हूं, अपने पैसे से। आपसे कभी किराया मांगा नहीं।

ग़ज़ल बी -ज़ानबूझ कर देरी से आती हो, स्कूल। और इन मेम्बरान को, बोलने का मौक़ा देने वाली केवल आप हो। सोचिये, अगर पारी इंचार्ज देरी से आती है.. तो फिर टीचरस् तो..?

अनारो मेडम - और कुछ कहना है, आपको?

ग़ज़ल बी - (गुस्से का इज़हार करती हुई) - कहूंगी..कहूंगी, क्या तुम मेरा मुंह बंद करोगी? यह तो अच्छा है, मेमूना भाई जल्दी आकर प्रेयर का काम सम्भाल लेते हैं। इनसे तो अच्छी दुख़्तराए हैं, जो सही वक़्त पर स्कूल आ जाती है। और, इधर आप...?

अनारो मेडम - (बेनियाम होती हुई) - आप क्या सम्भालती है, इस स्कूल को? आपकी पारी की आयशा, कब स्कूल से गायब हो जाती है? मगर आप हमारी मुकर्रम ग़ज़ल बी कुछ भी देखना नहीं चाहती, चाहे माज़रा इस स्कूल का हो या आयशा बी का? ये मोहल्ले वाले जब...

ग़ज़ल बी - (बेनियाम होकर) - हाय अल्लाह, क्या ज़माना आ गया? यह मोहतरमा इतना नहीं समझती, हम इस मोहल्ले की बहू बेग़मबनकर आयी हैं....इनके लिये हम कोई ग़ैर नहीं, पर्दा करती है इन बड़े-बुजुर्गों से। हम ठहरी ख़ानदानी, अल्लाह वह दिन ना दिखाये..हम इनसे जुबां...

रशीदा बेग़म- (झुंझलाती हुई) - चुप रहिये। यह क्या, तू तू मैं मैं लगा रखी है? मैं स्कूल की हेडमिस्ट्रेस ठहरी, और मेरे सामने अपनी ज़बान लड़ा रही हो? ला हौल व ला कुव्वत, मेरे ज़ाने के बाद तुम कम्बख़्तों ने स्कूल की सारी इज़्ज़त धूल में मिला दी।

अनारो मेडम - (भोलेपन से) - अरे हुजूर, हमने कुछ नहीं मिलाया है। हम मिलावट करने वाले नहीं, ये ग़ज़ल बी ज़रूर मिलावट करती है। अरे हुजूर, कई मर्तबा इसने मिलावटी पकवान खिलाये हैं आपको।

(अनारो मेडम की बात सुनकर, बड़ी बी के लबों पर मुस्कान छा जाती है। इतने में प्यारो ट्रे में चाय लिये आती है, सबको चाय के प्याले थमाकर वापस लौट जाती है। सभी मोहतरमाएं चाय के प्याले उठाती है, अब चाय की चुश्कियां लेती हुई चाय पीती है। बड़ी बी चाय पीती हुई, कहती है।)

रशीदा बेग़म- (समझाती हुई) - आप लोगों की बदइंतजामी के कारण, अब हमें इन मेम्बरान का केस देखना होगा। आख़िर, क्या माज़रा रहा? अब आप, ज़ान गयी? यह हेडमिस्ट्रेस की कुर्सी, कांटों की कुर्सी है...जिस पर सहजता से, बैठा नहीं जा सकता।

(चाय पीकर, सभी मेडमें चाय के प्याले नीचे रखती है। अब वे, रूख़सत होने की इज़ाज़त लेती है।)

सभी मेडमें - (उठती है) - आदाब, अब हम रूख़्सत होने की इजाज़त चाहती है।

(सभी मेडमें रूख़्सत होती है, रास्ते में रिसेस ख़त्म होने की घण्टी सुनायी देती है। इतने में रास्ते का मोड़ आ जाता है, अब सेकण्ड पारी की मेडमें रास्ता बदलकर अपने घर चली जाती है। उनके ज़ाने के बाद, अनारो मेडम दूसरी मेडमों को कहती है।)

अनारो मेडम - (अपनी पारी की मेडमों को कहती है) - बड़ी आयी हेडमिस्ट्रेस बनकर यहां, कहती है 'यह कांटों की कुर्सी है।' फिर आगे क्यों नहीं कहती के 'यह कुर्सी सम्भाली नहीं जाती, अब...'

रूकसाना बी - क्या करे, बेचारी हेडमिस्ट्रेस? अजी मेडम, इनकी कुर्सी का एक पहिया करीब छःमाह से गायब है। अब तक वह पहिया चोर को ढूंढ़ ना सकी, तब उस मोहतरमा में कहां है क़ाबिलियत...हेडमिस्ट्रेस की कुर्सी पर बैठने की?

अनारो मेडम - अरे मेरी बहनों। आपको समझना चाहिये, यह कुर्सी डोनेशन से मिली है। डोनर की आबरू, रेज़ी नहीं की जाती।

आख़िर उसने इस स्कूल को दिया है, लिया कुछ नहीं। डोनेशन में दी गयी चीज़ की, खामियां निकाली नहीं जाती।

रूकसाना मेडम - तौबा तौबा। अनारो बी, मैं कुर्सी की खामियां नहीं निकाला करती। हम तो तारीफ़ करती हैं, उनकी कुर्सी की। जिसने लम्बे समय से, बड़ी बी के नब्बे किलो के वनज को सम्भाले रखा है।

अनारो मेडम - यह सारी ग़लती, दाऊद मियां की है। ज़रा, उनसे कहकर देखिये। वे ही लाये हैं, इस डोनर को। अरे हुजूर, यह नामाकूल तो ऐसा इंसान ठहरा...जो अटाले में पड़े माल को डोनेशन में देकर, सवाब लूट लिया करता है।

रूकसाना मेडम - हाय अल्लाह, यह क्या? अभी आपने कहा था, 'डोनर की आबरू रेज़ी नहीं करनी चाहिये' अब आप किस मुंह से ऐसा कह रही हैं..के, अटाले का सामान....?

अनारो बी - ख़ुदा माफ़ करें, मैने ऐसा कुछ नहीं कहा.. के, यह सक़त सरासर दाऊद मियां की है। बेचारे ठहरे, हुक्म के गुलाम। जैसा बड़ी बी हुक्म देगी, वैसा ही वे करेंगे।

रूकसाना मेडम - दाऊद मियां को गुलाम मत कहिये, मोहतमा। आपको उनका अहसानमन्द होना चाहिये, आपके कोपियों के बण्डल जांचने वाला आख़िर है कौन? वे मुअज़्ज़म दाऊद मियां ही है, जो आपका काम हल्का कर दिया करते हैं।

(चलते-चलते, स्कूल का गेट आ जाता है। मनु भाई की दुकान के पास लगी पत्थर की बैंच पर फन्ने ख्ािं, हिदायत तुल्ला, हाजी मुस्तफ़ा, दाऊद मियां और दूसरे कई मोहल्ले वाले बैठे हैं। मगर आज़ साबू भाई बैंच पर नहीं बैठकर, अपनी दुकान पर बैठे-बैठे ग्राहकों से कमटा-मेटिरीयल का सौदा पटाते जा रहे हैं। अब मेडमें दाऊद मियां को सलाम करके, स्कूल में चली जाती है। उनके ज़ाने के बाद, दाऊद मियां अख़बार पढ़ते हुए कहते हैं।)

दाऊद मियां - (अख़बार पढ़ते हुए) - जनाब, बम फट रहे हैं। बुश की फौज़ों ने इराक को घेर लिया है, अब तो मियां एटम बम चलेगा। देखना फिर, क्या होगा इस दुनिया का?

फन्ने खां - रहने दीजिये, हम तो रोज़ पढते हैं यह अख़बार। पढ़ते क्या हैं, जनाब ख़ास-ख़ास कतरने भी काट कर अपने पास रख लेते हैं। न मालुम, कब काम आ जाये वे कतरने? देख लीजिये,

मनु भाई - (दुकान पर बैठे-बैठे) - हाय अल्लाह। अब मालुम पड़ा, अख़बार बरबाद करने वाले आप मुअज़्ज़म बुजुर्ग हैं? फन्ने खां साहब, अख़बारों की रद्दी आपकी ख़बासत के कारण ही नहीं बिकती है। अब सारा मआमला समझ में आ गया, बस जनाब... इस नुक्सान का हर्जाना, आपको देना ही होगा।

फन्ने खां - अरे छोड़िये, कहां का हर्जाना? (दाऊद मियां की ओर रूख़ करते हुए) कहिये दाऊद मियां, जिस बिल्डिंग में प्राइमरी स्कूल चलती है...उस बिल्डिंग का मालिकाना हक़, किसका है?

दाऊद मियां - आगे यही पूछेंगे, आप... के उस बिल्डिंग का किराया कब तक चुकाया है, और कितना बाकी है?

फन्ने खां - हां, यही कहना था मुझे। मगर क्या मदद करें, आपके स्कूल की? आपकी बड़ी बी, ऐसे तो बड़ी-बड़ी बातें करती है। अगर हम, इस प्राइमरी स्कूल बिल्डिंग के बारे में कोई बात करें...तो यह मोहतरमा, बिल्ली की तरह आंखें मूंद कर चुप बैठ जाती है।

दाऊद मियां - छोड़िये इन बातों को, आप कुछ कह रहे थे...प्राइमरी स्कूल की बिल्डिंग में...? कहिये ना, क्या कह रहे थे आख़िर?

फन्ने खां - देखिये, साहब बहादुर। हम रखते हैं सारी रिपोर्ट, स्कूल की। और स्कूल के स्टॉफ की। अब, सुनिये। कई सालों पहले एज्यूकेशन महकमें ने यह बिल्डिंग महकमा-ए-कस्टम से तीस रूपये माह वारी किराये पर ली, पन्द्रह सालों से आपका महकमा किराया चुका नहीं रहा है।

दाऊद मियां - हां जी, आपकी बात तो सही है, आज़ की तारीख़ में इतने कम किराये पर कहां मिलती है...इतनी, बड़ी बिल्डिंग?

फन्ने खां - यही बात, आपकी मेडम के समझ में आती नहीं।

दाऊद मियां - मगर, हम किराया जमा क्यों करायें? किराया जमा कराने की जिम्मेवारी एलीमेण्ट्री ओफ़िस की है। वह ज़ाने और उसका काम ज़ाने, हमें क्या? एलीमेण्ट्री दफ़्तर ही देता है तनख़्वाह, प्राइमरी के पूल बज़ट को।

फन्ने खां - इस बिल्डिंग को काम कौन ले रहा है, जनाब? दिमाग़ पर, ज़ोर दीजिये। आप स्कूल की प्राइमरी क्लासेज,़ इसी बिल्डिंग में चला रहे हैं...और, बिल्डिंग के कई कमरे... ताला जड़कर, आपने रोक रखे हैं।

दाऊद मियां - साफ़-साफ़ कहिये, हुजूर।

फन्ने खां - मुझे यही कहना है, बरख़ुदार। के फ़ायदा आप ले रहे हैं, और किराया जमा कराने की जिम्मेवारी से मुंह मोड़ रहे हैं...ग़ैर जिम्मेवार कैसे बन सकते हो, मियां?

दाऊद मियां - अरे हुजूर, सच तो यह है... के, हमारी सेकेण्ड्री स्कूल से यह प्राइमरी हिस्सा अलग हो रहा है। और इस बिल्डिंग में बैठती है, प्राइमरी क्लासेज़...फिर काहे हम अपना बज़ट ख़राब करेंं?

फन्ने खां - (तेज़ सुर में) - ठीक है, जनाब। तब छोड़ दीजिये, इस बिल्डिंग पर अपने हक़्क़। और ख़ाली कर दीजिये, उन कमरों को...जिन कमरों को, आपने बंद कर रखा है। ले जाओ, अपना कबाड़ का सामान। हम मोहल्ले वाले मिलकर, बकाया किराया जमा करवा देंगे।

हिदायत तुल्ला - हमारी वार्ड मेम्बर मुन्नी तेलन के शौहर एलीमेण्ट्री महकमें में, ऊंचे ओहदे पर काम करते हैं, उनके रसूख़ात से सारा मआमला निपट जायेगा। हमने कोशिश नहीं की तो, हाय अल्लाह हमारे मोहल्ले की ग़रीब बच्चियां अनपढ़ रह जायेगी।

फन्ने खां - हम ज़ानते हैं, कोई धन्ना सेठ यहां आकर स्कूल की बिल्डिंग बनाने वाला नहीं।

(इन लोगों को गुफ़्तगू करते, काफ़ी वक़्त हो गया। अब घड़ी के दोनों कांटें बारह के अंक पर आकर ठहर जाते हैं। दूसरी पारी चालू होने का वक़्त होने जा रहा है, तभी गेट के पास एक ओटो आकर रूकता है। आयशा बी भारी-भारी किताबे लिये, ओटो से उतरती है। आयशा भाड़ा चुका कर स्कूल में दाख़िल होती है, किताबें भारी होने के कारण वह अच्छी तरह से सम्भाल नहीं पाती। कभी वह किताबें पकड़ती है, तो कंधे से उसका बेग खिसक कर नीचे गिरने लगता है। और बेग सम्भालती है, तो किताबें गिरने लगती है। उसकी ऐसी दशा देख कर फन्ने खां साहब, परेशान हो जाते हैं। आख़िर आयशा ठहरी, उनकी मुंह लगी भतीजी। उसको वे, कैसे तकलीफ़ में देख सकते हैं? फिर क्या? स्कूल में दाख़िल होने वाली एक दुख़्तरा को रोक कर, उसे आयशा की किताबें थामने का हुक्म देते हैं।)

फन्ने खां - (दुख़्तरा से) - अरी ओ, हाजी साहब की दुख़्तरा। ज़रा आयशा बी की मदद करना। जा बेटा, मेडम से किताबें लेकर अन्दर लेती जा।

आयशा - (फन्ने खां की ओर, मुस्कराकर देखती हुई) - शुक्रिया, चच्चाज़ान।

फन्ने खां - (नज़दीक आकर) - इतना सारा बोझा लिये घूमती हो, बेटा? इतनी सी ज़ान, और इतना सारा बोझ? ख़ुदा ना करे, कहीं तुम्हारी तबीयत नासाज़ हो गयी तो? मत लाया करो बेटा, इतना सारा बोझ। करना क्या? दो जून की दाल-रोटी मिल जाय, बहुत है।

आयशा - चच्चा ऐसी बात नहीं, इन किताबों को पढ़कर कभी हम भी इस स्कूल की बड़ी बी बन सकती है...आपकी दुआ से। बोलिये चच्चा, आपकी दुआ हमारे साथ है या नहीं?

फन्ने खां - ज़रूर, ज़रूर बेटा।

आयशा - (ख़ुश होकर) - आपकी दुआ हमारे साथ है, तब किससे डरना? चच्चाज़ान, बुजुर्गोंर् की सच्चे दिल से दी हुई दुआ कभी ख़ाली नहीं जाती।

फन्ने खां - सच कहा, बेटा। तुम एक दिन, इस स्कूल की हेडमिस्ट्रेस बनकर, बड़ी बी की तीन पहियों वाली कुर्सी पर बैठकर दिखाओगी।

आयशा - (रूअ◌ा◌ंसी होकर) - अरे चच्चा, ऐसा क्यों बोल रहे हो? मुझे तीन पहियों वाली कुर्सी पर बैठाकर, गिराओगे क्या? अरे शरे-ओ-अदब, आप ख़ुद नयी रिवाल्विंग चेयर ख़रीदकर लाओगे मेरे लिये।

फन्ने खां - (खिन्न होकर) - ये बेकार की बातें छोड़ो, अब जाओ स्कूल में। ना तो तुम्हारी हेडमिस्ट्रेस, उलाहने देगी। जो सुनना, हमें पसंद नहीं। हम तो ठहरे, रिटायर आदमी। जिनको तो ख़ाली वक़्त गुज़ारना है, चाहे घर पर गुज़ारे या इस बैंच पर बैठकर।

आयशा - जाती हूं चच्चा, फिर मिलेंगे। मगर, याद रखना चच्चा। यह आपकी भतीजी, आपसे ही रिवोल्विंग चेयर ज़रूर हासिल करेगी।

(आयशा स्कूल मे चली जाती है, अब फन्ने खां साहब आकर बैंच पर बैठ जाते हैं। फिर आयशा की तारीफ़ करते हुए, दाऊद मियां से कहते हैं।)

फन्ने खां - देखो मियां दाऊद, देखो इस बेचारी आयशा को। बेचारी कितनी सारी किताबों का बोझ लिये घूमती है, बहुत मेहनती है मियां। ज़रूर एक दिन यह आयशा, इस स्कूल की हेडमिस्ट्रेस बनेगी।

दाऊद मियां - (धीरे-धीरे, कहते हैं) - और बन जायेगी, बोझ स्कूल की। फिर आपका सर-दर्द, अलग से बढ़ा देगी।

फन्ने खां - (तेज़ आवाज़ में) - क्या कहा, मियां? ज़रा ज़ोर से बोलो, बरख़ुदार...सुना नहीं।

दाऊद मियां - कुछ नहीं जनाब, बस बिस्मिल्लाहि रहमान रहीम का क़लमा पढ़ रहा था...आप भी पढ़ लीजिये, हुजूर। बोलिये हुजूर, बिस्मिल्लाहि रहमान रहीम...

फन्ने खां - (आंखें तरेर कर) - फोकट में क्यों पढंू्ू, मियां? ख़ुदा रहम, सब ख़ैरियत है। यहां मिठाई-नमकीन लाकर रखते नहीं...और चले आये मियां, बिस्मिल्लाहि रहमान रहीम बोलने?

दाऊद मियां - मगर, हो गया क्या? बातों से ही पेट भर लीजिये, जनाब। आप जैसे रिटायर आदमियों का पेट, अक़सर बातों से ही भरा जाता है। अब बुला लीजिये, अपने यार दोस्तों को। चलिये मैं आवाज़ देकर सबको बुला देता हूं। (पुकारते हैं) अरे ओ, मियां हिदायत तुल्ला साहब ज़रा तशरीफ रखना।

हिदायत तुल्ला - अरे जनाब, इतने ज़ोर से मत चिल्लाओ बरख़ुदार। हम सब तो जनाब, आपके बगल में ही बैठे हैं। साबू भाई नहीं है, उनको आवाज़ दे देता हूं। (आवाज़ देते हुए) अरे ओ साबू भाई। आ जाइये, आ जाइये। दाऊद मियां चटपटी ख़बरें लाये हैं, आज़।

(सुनते ही, साबू भाई के दिल में, उतावली का तूफ़ान खड़ा हो जाता है। झट दुकान छोड़कर चले आते हैं, पीछे से ग्राहक उन्हें आवाज़ देता रह जाता है।)

ग्राहक - अरे साबू उस्ताद, कहां चल दिये? अरे यार, ईंटें तो गिनवा दीजिये, जनाब। कमटे पर मज़दूर, इंतजार कर रहे हैं...कब, ईंटें आयेगी?

साबू भाई - (बैंच पर बैठते हुए, ग्राहक से कहते है) - अरे यार, यहां तो अब ख़बरों का बम फूटेगा। हमें भी सुनने दो, यार। अभी तो सलीम मियां को बुलाकर, ईंटें गिनवा लीजिये। (दाऊद मियां से) हुज़ूर, बुलाने की क्या ज़रूरत? हम वैसे ही चले आ रहे थे, सुनाओ जल्दी जल्दी।

(इन निक्कमों बढ़ती भीड़ को देखकर, दुकान पर बैठे मनु भाई घबरा जाते हैं। फिर, क्या? अपने मुंह से अब, प्यार से भरे लबरेज़ अल्फ़ाज़ों की जगह अब शोले उगल देते हैं।)

मनु भाई - (गुस्से में) - आ गये निक्कमों, इस बैंच पे हथाई करने?

(बेचारे दाऊद मियां ने जैसे ही, उनके गुस्से के गुब्बार को शांत करने के लिये अपने लब बोलने के लिये खोलने चाहे...तभी उसी वक़्त मेमूना भाई, बड़ी बी का ख़त लिये वहां आ जाते हैं। और, कहते हैं।)

मेमूना - ओ मनु भाई, धंधा बाद में कर लेना.. आ जाइये, यहां। (सभी साथियों को निहारते हुए)े लीजिये साहब बहादुरों, बड़ी बी का ख़त। यह ख़त क्या है? पटाका है, हुज़ूर। आप में से जो दानिश हो, वह मुअज़्ज़म ख़त को पढकर सुना दें...अपने साथियों को।

फन्ने खां - (ख़त लेकर, साबू भाई को थमाते हुए) - आप पढ़कर बताए, साबू भाई। हमें तो डर लगता है, इन पटाकों से। आप ठहरे जंगजू मोहल्ला-ए-आज़म।

साबू भाई - (ख़त को उल्टा रखकर, पढ़ने की कोशिश करते हुए) - कितनी मर्तबा साले साहब आपसे कहूंगा, मेरे लिये काला हर्फ़ भैंस

बराबर है। मैं तो ठहरा, अंगूठा छाप। इसलिये अब कहूंगा, काला अल्फ़ाज गधा बराबर। अब यह मत पूछना, यह गधा कौन है?

दाऊद मियां - अरे हुजूर इस तुकमें को हमेशा के लिये, आपने अपने साले फन्ने खां साहब को तौहफ़े में दे दिया है...बड़े दिल-ए-अजीज ठहरे, आपके साले साहब। क्या कहूं, उन्हें? इतने बड़े हर्फ़ आशना होते हुए भी, ज़ाहिलों की तरह ख़त पढ़ने से घबराते हैं?

फन्ने खां - (साबू भाई से) - ओ दुल्हे भाई, दाऊद मियां तो जनाब ठहरे हर्राफ़। मगर, आप हमे गधे के ओहदे से नवाजा ना करें। ना तो हम अपनी दीदी से कह देंगे, दुल्हे भाई ने हमें गधा कहा है। फिर सवाल खड़ा कर दूंगा आपके सामने, के गधी से निकाह करने वाला...आख़िर, होता है कौन?

साबू भाई - हट साले, क्या बकवास करने लग गया है? ला हौल व ला कुव्वत....

फन्ने खां - लाहौल लाहौल ना बोला करें, दुल्हे भाई। हम लाहोर के रहने वाले थे, लाहौल के नहीं। चलिये, ख़त दीजिये। पढ़ लेते हैं,

आख़िर। आप भी यार, याद रखेंगे हमें। (ख़त लेकर पढ़ना चालू करते हैं, मगर अब ख़त का मजनून कुछ ऐसा आता है...बेचारे फन्ने खां साहब की ज़बान पर लग जाती है, लगाम।) य..य ह..ह, क्या लिखा है?

साबू भाई - क्या हुआ, ज़बान तालू पर कैसे चिपक गयी?

फन्ने खां - ख़ुदा रहम, आगे पढ़ा नहीं जाता। दुल्हे भाई, बीच में टोका मत करो। अब आप ख़ुद ही पढ़ लीजिये, बीच में टोक कर हमारे शगुन गारत कर दिये आपने।

साबू भाई - (तमतमाये हुए) - क्या बार-बार कहते जा रहे हो, पढ़ लो पढ़ लो। एक बार कह दिया हमने, हमें पढ़ना आता नहीं। अब आगे पढ रहे हो या आपको कुछ ग़ज़ल मुरस्सा सुनाऊं आपकी शान में? साले साहब, अब आप कुछ समझे या कानों में रूई डाल रखी है आपने ?

फन्ने खां - अब मूड नहीं है, पढ़ने का। सारा मूड ख़राब कर दिया, इस ख़त ने। इंसपेक्शन करके हमने सोचा, अब बड़ी बी करेगी

हमारी तारीफ़ और कहती रहेगी 'शाबास, मेरे मुअज़्ज़मों। हमारे ज़ाने के बाद, आप लोगों ने इस स्कूल का ध्यान रखा।' मगर, हाय री हमारी क़िस्मत।

दाऊद मियां - (उठते हुए) - इजाज़त चाहता हूं...

फन्ने खां - (दाऊद मियां का हाथ पकड़कर, वापस बैठाते हुए) - आप उठकर कहां चल दिये, साहब बहादुर? अभी तो बम-पटाके छूटे हैं, अब आपकी दिल-ए-तमन्ना से शोले भी भड़केंगे। फिर जनाब, भगते कहां हो? मंजर देखते जाइये, अब।

दाऊद मियां - शरे-ओ-अदब, इस वक़्त स्कूल में हम हाज़िर नहीं हैं और यहां बैठे हैं आपके साथ गुफ़्तगू करने? हाय अल्लाह, भड़कते शोलों का मंजर यहां नहीं वहां ज़रूर दिख जायेगा। फिर, क्या? आप जैसे बड़े-बुजुर्गोंर् को भड़काने का आरोप, सरासर हम पर लग जायेगा।

फन्ने खां - साफ़-साफ़ कहो, ना। क्यों पहेलिया उलझा रहे हो, मेरे दोस्त?

दाऊद मियां - अरे यार, कभी तो अक़्ल काम में लिया करो। आप यहां बैठे-बैठे शोले भड़काते रहना, मगर हमारी बेगुनाही किसी को दिखायी नहीं देगी। वहां स्कूल में बैठे हमारे दुश्मन, माचिस की तिल्ली लगाकर सालों से कमाये हमारे वसूक को भड़कते शोलों में झोंक देंगे। (उठते हैं)

फन्ने खां - (दाऊद मियां को रोकते हुए) - आराम से चले ज़ाना, मगर जाते-जाते पहले आप यह बताते जाइये के इस ख़त के पीछे इतनी अक़्ल ओर होशियरी किसकी है? किसकी लिखावट है, और यह अक़्ले सलीम कौन है?

हाजी मुस्तफ़ा - अरे, दाऊद मियां। यह भी बताते जाओ, के छूटने वाले बम-पटाकों की ख़बर आपको कैसे मालुम हुई?

दाऊद मियां - (फन्ने खां का हाथ छुड़ाते हुए) - छोड़िये, हमारा हाथ। कहीं आपने मुझे छोटा शकील समझ रखा है?

साबू भाई - (हंसते हुए, दाऊद मियां से कहते हैं) - जनाब, हमारे साले साहब ऐसी गुस्ताख़ी नहीं कर सकते। आप ठहरे, दाऊद

इब्राहीम। हम ज़ानते हैं, हम आपको छोटे शकील का ओहदा नवाज़ नहीं सकते। क्योंकि, वह ठहरा आपका शागिर्द।

हिदायत तुल्ला - उसको अंडरवल्ड की ए बी सी डी सीखाने वाले ठहरे, दाऊद इब्राहीम। अरे हुजूर, ऐसे तालीमयाफ़्ता शागीर्द पाकर आप कहां फ़िक्र करने बैठबैठ गये?

फन्ने खां - अरे हुजूर, काहे की फ़िक्र? आप तो वो हस्ती है, जो आये दिन बम फोड़ते आये हो, कभी बम्बई में तो कभी दिल्ली में। फिर इन छोटे-बड़े शोलों से, क्या डरते हो बिरादर?

दाऊद मियां - (हंसते हुए, वापस बैंच पर बैठ जाते हैं) - साहब बहादुरों, हम तो छोटे आदमी ठहरे। आप इतनी ऊंची हांक कर, हमें राई के पहाड़ पर मत चढ़ाओ यार। चलिये अब मैं आप लोगों को क्लू देकर चला जाता हूं, फिर बाद में आप सोचते रहना। सुन लीजिये, यह ख़त मैने नहीं लिखा। ना, ये मेरी लिखावट है।

फन्ने खां - हां...हां, ज़ानते हैं आपकी लिखावट तो ऐसी है जनाब...लिखे मूसा, पढ़े ख़ुदा। अब आप आगे बोलिये।

दाऊद मियां - अब आप, अपने दिमाग़ पर ज़रा ज़ोर लगाकर सोचें। इस स्कूल में तीन दफ़्तरे निगार है, एक तो मैं बरी हो गया और दूसरे ठहरे जमाल मियां...जिनके हर्फ ऐसे हैं, मानों हज़ारों चींटियां रेंग रही हो? और, बाकी कौन रहा अक़्लेकुल? अब चलता हूं, आप सोचते रहना।

(मेमूना भाई व दाऊद मियां रूख़्सत होते हैंं, उनके ज़ाने की पदचाप सुनाई देती है।)

हिदायत तुल्ला - अब मैं क्या कहूं, आपको? वार्ड मेम्बर साहिबा के ख़ास पी.ए. हम है, और हमने म्युनिसपल्टी में कई ठेके हासिल किये हैं। चाहे कचरा उठाने का हो, या मरे हुए ज़ानवरों को उठाने का। हमें पूरा तुजुर्बा है, गली के किस कोने में ज़ानवर मरा पड़ा है? सूंघकर बता देते हैं, हुजूर।

साबू भाई - आगे कहिये, ठेकेदार साहब। चुप रह गये, तो हम फ़ायदा उठा लेंगे।

हिदायत तुल्ला - अरे साहब, हम तो हैरान है। इस रहस्य को खोल देने वाली हमारी गंध को, ना मालुम क्या हो गया? हाय अल्लाह, इस ख़त की ज़ानकारी दाऊद मियां को कैसे लग गयी? और हमें नहीं, आख़िर क्यों?

फन्ने खां - गलियों में मरे कुत्तों को ही, सूंघते रहोगे? या कभी-कभी अपनी नातिका का रूख़, सरकारी तौर-तरीकों की तरफ़ कीजिये तो... माशाअल्लाह दिमाग़ की सारी खिड़कियां, खुल जायेगी।

हिदायत तुल्ला - अब आप ही तकल्लुफ़ करके बता दीजिये, जनाब। फिर हमें काहे तकलीफ़ करने की ज़रूरत?

फन्ने खां - देखिये मैं ठहरा रिटायर हो चुका सरकारी मुलाज़िम, मेरी नातिका सूंघकर कह रही है....जमाल मियां का डिस्पेच रजिस्टर, अक़सर दाऊद मियां के पास रहता है। बस, फिर क्या? ख़त डिस्पेच होते दौरान सारा मजनून उन्होंने भांप लिया।

साबू भाई - हिदायत तुल्ला साहब, अब अपने दिमाग़ से मरे ज़ानवरों की बदबू को निकाल फेंकिये। ना निकाल फेंकी तो, बोर्ड

की मिटिंग में बनने वाले प्रपोज़ल से हाथ धो बैठोगे। ठेका दूसरे आदमी के नाम, निकल जायेगा।

हिदायत तुल्ला - जनाब, स्कूल में होदे व पाख़ाने बनाकर... ऐसा कौनसा बड़ा ताज़महल, खड़ा कर दिया आपने? आज़ तक म्युनिसपल्टी से, भुगतान मिला नहीं आपको? काहे के आप, मोहल्ला-ए-आज़म? जो ठौड़-ठौड़ जाकर रोता है, 'ऐसा क्या गुनाह हुआ हमसे, जिसके कारण अभी तक पैसे मिले नहीं?'

मनु भाई - (दुकान पर बैठे हुए) - आला काम करने के पैसे मिलते हैं, जनाब। प्याऊ के पास ही पाख़ाने बना दिये, बदबू फैला दी पूरी स्कूल में। इस बदबू के कारण बेचारी नेक दुख़्तराए, क्लासों में ना बैठकर बगीचे में जाकर बैठती है बेचारी।

हिदायत तुल्ला - छोड़िये जनाब, इस बदबू को। हमें वहां जाकर, कहां सूंघनी है बदबू? (फन्ने खां साहब की ओर देखते हुए) फन्ने खां साहब कहिये, ख़त का मजनून क्या है? इसे पढ़कर, आपके होश क्यों उड़े? जल्दी कीजिये, अब भड़का दीजिये शोले।

फन्ने खां - (ख़ुश होकर) - अभी भड़काता हूं, शोले। पहले तसल्ली से सुन लीजिये, ख़त बड़ी बी ने भेजा है। लिखा है, 'यह सरकारी स्कूल है, यहां काम करने वाले सरकारी मुलाज़िम। आप लागों ने उनके काम में दख़ल डालकर, न्यूसेन्स पैदा किया है। जो एक, लीगल ओफेन्स है।'

साबू भाई - यह ओफेन्स क्या होता है, साले साहब? और जनाब, यह इलीगल क्या बला है?

फन्ने खां - ओफेन्स यानि अपराध, जुर्म...समझ में आया, दुल्हे भाई? जिसकी सज़ा, कम से कम छः माह की कैद है।

(फन्ने खां साहब की बात सुनकर साबू भाई घबरा जाते हैं, उनके कमज़ोर दिल की धड़कन बढ़ जाती है। हाथ-पांव धूजते हैं ऐसे, मानो बुख़ार आ गया हो उन्हें? अब बदन क़ाबू में नहीं, जिससे सर पर रखी पगड़ी ज़मीन पर आकर गिर पड़ती है।)

फन्ने खां - साहबे आलम, आपका ताज़ गिर पड़ा है। आपका शाही तख़्त, हिल रहा है?

साबू भाई - (झल्लाते हुए) - छोड़ो यार, अब कौन है साहबे आलम? हम तो ठहरे, मज़दूर आदमी। मेहनत की दो रोटी, प्याज के साथ खाते हैं। (दोनों हाथ सर पर रखते हुए) कहां फंसा दिया साले साहब, आपने? बना दिया मुझको सिराजुद्दोला, ओर ख़ुद बन गये मीरजाफ़र। हाय अल्लाह.....अब क्या होगा?

मनु भाई - (मुस्कराते हुए) - होगा क्या? सज़ा होगी, और क्या? ससुराल जायेंगे आप, साले साहब के साथ....वहां साला साहब आपके खूब पांव दबायेंगे, ख़िदमत करेंगे और बैठकर आपके साथ खेलेंगे शतरंज। तब इस बैंच से पीछा छूटेगा, तब हम भी दो पैसे बैठकर कमा लेंगे... अल्लाह के, फजलोकरम से।

साबू भाई - यह अच्छी बात नहीं है, मनुभाई। मेरे किरायेदार होकर, मुझे ही महबस भेजने की बात कह रहे हो? वाह माशाअल्लाह, क्या ज़माना आया है? मेरी बिल्ली, और मुझसे ही म्यांऊ?

मनु भाई - साहबे आलम, किस होश में हैं आप? किराया देकर दुकान चला रहे हैं, मेहनत की रोटी खाते हैं। सबसे रसूख़ात रखते हैं, किसी दूसरे के पचड़े में अपनी टांग नहीं फंसाते हैं। ना किसी की दुकान पर हथाई करके, उसका धंधा बरबाद करते हैं।

साबू भाई - (सर पकड़े हुए) - अरे मनु भाई, मेरे हमदर्द। अब क्या करना होगा, मुझे? मुझे तो पुलिस की मार से, बहुत डर लगता है।

फन्ने खां - (गुस्से में) - यह क्या? साहबे आलम होकर आपका ऐसा कहना, आपकी तहज़ीब में नहीं आता। फ़िक्र, काहे की? आख़िर, आप मोहल्ला-ए-शहनशाह हैं। माशाअल्लाह, आगे से ऐसी टुच्ची बात मत करना। आपकी शान के खिलाफ़ है।

साबू भाई - भाड़ में जाये, साहबे आलम और उसकी तहज़ीब। हम तो जैसे थे, वैसे ही ठीक हैं। (मनु भाई की मनुआर करते हुए) मनु भाई मेरे दोस्त, इधर आ मेरे यार। बड़ी बी के पास शिफ़ाअत लगा, के इस मआमले में तेरे इस मग़मूम दोस्त की कोई सक़्त नहीं।

मनु भाई - (हंसते हुए) - बिरादर, हमारी क्या औकात? आप तो हमारे आका हैं, और हम ठहरे आपकी बिल्ली। बेचारी बिल्ली म्यांऊऽऽ म्यांऊ के अलावा क्या कर सकती है, हुजूर?

साबू भाई - (हाथ जोड़ते हुए) - मान जाओ, मनु भाई। इस मामले में तुम तो पूरे न्यूट्रल रहे, बड़ी बी से मिलकर इस मआमले को यहीं रफ़ा दफ़ा करवा दे मेरे यार। रिफ़्क़ (शिष्टता) रखते हुए मआमला... अब तुम्हारे हाथ में है....

फन्ने खां - (तेवर खाते हुए) - ऐसा हो नहीं सकता, जनाब। आप मूंछें नीची नहीं कर सकते, साहबे आलम।

साबू भाई - (मूंछें नीची करते हुए) - क्यों नहीं कर सकता, जनाब? दुकानदार ठहरा, हिरफ़ा करता हूं... धंधे वाला, ठहरा। अरे भाई, धंधे में मूंछों का क्या काम? आख़िर, बणिये की मूंछ का क्या मोल? दिल चाहा ऊंची कर ली, दिल न चाहा तो वापस नीची कर ली।

(मेमूना भाई, वापस आते हैं। सभी मेम्बरान को, मिटिंग में बुलाने की बात करते हैं।)

मेमूना भाई - आप सभी मेम्बरान को इजलाल के साथ, बड़ी बी ने बुलाया है। उन्होंने, अभी इमर्जेन्सी इजलास (मिटिंग) रखी है।

साबू भाई - (ख़ुश होकर, हिदायत तुल्ला से कहते हैं) - चलिये, चलिये। अब राज़ीपा हो जायेगा, सब ठीक हो जायेगा। (मनु भाई से) उठिये ना, मनु भाई। ज़रा चलकर, मामला सुलझा दीजिये।

फन्ने खां - होश्यिर.....बाअदब। अभी वक़्त नहीं आया है, कोई अन्दर ज़ाने की जुरअत नहीं करेगा। (उंगली करते हैं, स्कूल की तरफ़) देखिये उधर, ज़रा ग़ौर करके...हाय अल्लाह, वहां होदे के पास मिरासन बुढ़िया व आक़िल मियां क्या मुआइना कर रहे हैं?

(पानी के होदे के पास, आक़िल मियां व मिरासी जाति की बुढ़िया ख़ाली ज़मीन के टुकड़े का मुआइना कर रहे हैं। पास खड़े तौफ़ीक़ मियां, उस ज़मीन के टुकड़े को फीते से नाप रहे हैं। तभी बड़ी बी वहां मुआइना करने, पहुंच जाती है। इस मंजर को देखकर, फन्ने खां

साहब का सर घूम जाता है। दिमाग़ में हलचल, होती है...? फिर, क्या? साबू भाई की दुकान पर बैठे, उनके नेक दख़्तर सलीम मियां को बुलाकर हुक्म दे डालते हैं।)

फन्ने खां - (सलीम मियां से) - अरे ओ सलीम मियां, ज़रा स्कूल के होदे के पास जाकर तहक़ीक़ात करना...आख़िर, ये लोग वहां क्यों इकट्ठे हुए हैं? आख़िर, माज़रा क्या है?

(दुकान से उठकर, सलीम मियां होदे की तरफ़ अपने क़दम बढ़ाते हैं। उनके ज़ाने से, पदचाप सुनाई देती है। मंच पर, अंधेरा छा जाता है।)

(६) ़

(कुछ देर बाद, मंच रोशन होता है। सलीम मियां, वापस लौटकर आते हैं। आते ही, जनाब फन्ने खां साहब से कहते हैं।)

सलीम - (फन्ने खां से) - मामूज़ान कोई ख़ास बात नहीं, आप फ़िक्र ना करें। वे लोग, आपके बनवाये गये होदे का मुआइना नहीं कर रहे हैं।

फन्ने खां - वाह मियां, यह कोई ख़बर है? वह होदे के पास वाली ज़मीन, कोई सैर-ओ-तफ़रीह करने की ठौड़ है?

सलीम - कैसी बहकी बातें कर रहे हैं, मामूज़ान? क्या यह वक़्त है, तफ़रीह करने का?

फन्ने खां - ज़रा उम्र ज़्यादा बढ़ गयी, और अब बर्दाश्त करने की ताकत बदन में रही नहीं। बेटा, बुरा मत मानो...तसल्ली से बयान करो। सलीम मियां आपको तहकीक़ात करने भेजा था, बटेर का शिकार करने नहीं।

सलीम - वही तो बयान कर रहा हूं, मामूज़ान। आप तो मुझे कुछ बोलने ही नहीं दे रहे हैं? आपकी ज़बान को....अल्लाह पाक ज़ाने, क्या हो गया। वह तो....

साबू भाई - (बात पूरी करते हुए) - रूकने का नाम ही नहीं लेती....यही बात है ना बेटा, डर मत। तसलीमात बयान कर।

सलीम - उस बुढ़िया को तो आप सभी मुसाहिब ज़ानते ही हैं, वह मोहल्ले की हर गली-गली में घूम-घूम कर गोली-विस्कुट बेचा करती थी। आप सबको याद आया...?

हाजी मुस्तफ़ा - अरे बरख़ुदार, यह तो वही बुढ़िया है.....जो अपनी भरी जवानी में, सियासती पार्टी की लीडर बनी घूमा करती थी। क्या कहें, आपको? मुल्क के मरहूम वजीरे आजम से परसनल रिलेशन थे, इस कम्बख़्त मिरासन के।

साबू भाई - होते भी क्यों नहीं, जवानी की डगर पर यह बुढ़िया कमाल की खूबसूरत रही है। याद करो, दोस्तों। इमर्ज़ेंसी के वक़्त, यह मिरासन नौजवानों के मोर्चे की ख़ास पसंदीदा वर्कर बन बैठी थी... अपनी ख़ूबसूरती के, बल पर।

फन्ने खां -अब यह मिरासन बूढ़ी हो गयी है, साहबे आलम। और जनाब, आप भी बूढ़े हो चुके हैं। अब काम की बात पर आ जाइये, (सलीम से) बोल बेटा, आगे क्या हुआ?

सलीम - बयान करने तो देते नहीं, बोलता हूं तो....

फन्ने खां - अब चुप रहेंगे, बेटा। तुम बयान करो, आगे क्या हुआ?

सलीम - यह बुढ़िया अल्लाह पाक के घर ज़ाने के पहले एक प्याऊ बनवायेगी, ख़ुद वहां बैठकर अपने हाथों से दुख़्तराओं को ताज़ा पानी पिलाना चाहती है।

हिदायत तुल्ला - वाह, भाई वाह। एक मिरासन होकर, ऊंची जात की छोरियों को पानी पिलायेगी?

सलीम - क्या बात है, चाचाजी? वहां आप बैठकर, पानी पिलाना चाहते हैं, क्या?

हिदायत तुल्ला - पहले तू अपनी बात पूरी कर, मियां।

सलीम - सुनिये, हुजूर। उसका कहना है, इस नेक काम करने के बाद अल्लाहताआला उसे जन्नत में आला मुकाम अदा करेगा। अब सुनो, पहले बड़ी बी व आक़िल मियां ने....

फन्ने खां - ऐसा-वैसा कुछ कह दिया, क्या? ऐसी बात है तो प्यारे, आज़ ही चलकर लोहा लेते हैं।

सलीम - मामू रहने दो, बुढ़ापे में अपने हाथ-पांव तुड़ा बैठोगे। सुनिये अब....उसे ले जाकर पहले, भंवरू खां साहब की बनाई प्याऊ व पाख़ाने के बीच वाली ज़मीन दिखलायी। हाय अल्लाह, उस नासपीटी ने अपना नाक बंद करके कह दिया 'यहां कभी नहीं बनवाऊंगी, प्याऊ। यहां किस कम्बख़्त उल्लू की औलाद ने, पाख़ाने बनाकर बदबू फैला रखी है।'

(यह बात सुनकर, साबू भाई का क्या बुरा हाल हुआ होगा? वह ख़ुदा ज़ाने। मगर अब, सलीम मियां की बात सुनकर हिदायत तुल्ला साहब चहकने लगे।)

हिदायत तुल्ला - (चहकते हुए) - वाह सलीम मियां, क्या बात कह दी, आपने? अब अपने अब्बा हुजूर को कह दो, अब ठेकेदारी से मुंह मोड़ लें। ऐसे काम करना उल्लूओं के लिये, अच्छा नहीं। बस, यह काम हमारे लिये छोड़ दें।

साबू भाई - वजा फ़रमाया, हिदायत मियां। अब आप पाख़ाने बनाते रहना, और वहीं बैठकर पैख़ाना की ख़ूशबू लेते रहना।

फन्ने खां - छोड़िये साहबे आलम, यह बदबू अब और कहीं फैलाते रहना। (सलीम से) सलीम मियां, बार-बार रूकते क्यों हो? बयान करो, आगे क्या हुआ?

सलीम - क्या बयान करूं, मामू? मुझे बोलने कोई देता नहीं, बार-बार बीच मे हर कोई खड़ा होकर अपनी पूंगी बजा देता है। सुनो, उस बुढ़िया ने आख़िर धमकी दे डाली ‘अगर सही ज़मीन नहीं दिखलायी तो, वह दूसरी स्कूल में जाकर अपने पैसे से प्याऊ बना देगी।

फन्ने खां - फिर क्या हुआ, बेटा?

सलीम - आख़िर होना क्या? हेड पम्प व होदे के बीच की जम़ीन दिखलाकर, बड़ी बी ने उस खूसट बुढ़िया की रजामंदी ले ली। अब कल से वहां कमठा शुरू हो जायेगा, जिसके ठेकेदर रहेंगे नूर मियां...जो पड़ोस के मोहल्ले में ही रहते हैं।

हिदायत तुल्ला - वाह साहबे आलम, आपका तख़्त हिल चुका है। दूसरे मोहल्ले के ठेकेदार यहां आकर, आपको मिलने वाले ठेके आपसे छीनकर ले जाते हैं।

साबू भाई - आप भी तो इसी मोहल्ले में रहते हैं, आप से भी बड़ी बी काम करवा सकती थी। मगर, हाय अल्लाह। उन्होंने मरे ज़ानवरों की लोथ उठाने वाले आप जैसे ठेकेदार को, कमठे का काम देना वाजिब नहीं समझा?

फन्ने खां - भाईयों, हमारे मोहल्ले के साथ ज़्यास्ती हुई है। म्युनिसपल्टी से लाखों के ठेके हासिल करने वाले आप दोनों ठेकेदार यहां मौजूद है, अब दूसरे मोहल्ले से ठेकेदार यहां आकर प्याऊ बनाकर चला जाय..? आबरू रेज़ी कर दी भाईयों, इस बुढ़िया ने इस मोहल्ले में आकर।

साबू भाई - आबरू रेज़ी हो गयी हमारी, अब तो चुल्लू भर पानी में डूबकर मर ज़ाना चाहिये हम ठेकेदारों को। क्यों, हिदायत तुल्ला

साहब? सैय्यद, पठान जैसे ऊंचे ख़ानदान के मुअज़्ज़म हम बैठे है यहां, और यह मिरासी ख़ानदान की बुढ़िया....

हिदायत तुल्ला - किसी दूसरे से प्याऊ बनवाकर, हमें आइना दिखाती हुई चली जाय?

साबू भाई - (फन्ने खां से) - अरे ओ साले साहब, जंगाह में......

(तभी फन्ने खां साहब को, सामने साइकल पर सवार होकर आ रहे भंवरू खां के दीदार हो जाते हैं। बेचारे भंवरू खां को क्या पत्ता, यहां मोहल्ले के निक्कमों की गैंग मनु भाई की बैंच पर बैठी उनका इंतजार कर रही है? वे तो बेचारे निकले थे, अपने ग्राहकों से उगाही करने। अब फन्ने खां साहब की आवाज़ उनके कानों में क्या गिरी? उन्होने इसे अच्छा शगुन समझते हुए, साइकल का रूख़ उनकी तरफ कर डाला। सोचने लगे, शायद कहीं फन्ने खां साहब अख़बार के बकाया बिलों का भुगतान तो नहीं कर रहे हैं?)

फन्ने खां - (आवाज़ देते हुए) - अरे, ओ भंवरू सेठ साहब। जनाब, इधर तशरीफ़ रखें।

भंवरू खां - (साइकल, स्टेण्ड पर रखते हुए) - असलाम वालेकम। कैसे याद किया, जनाब?

फन्ने खां - वालेकम सलाम, मियां। ख़ैरियत है?

भंवरू खां - (बैंच पर बैठते हुए) - आप जैसे मुकर्रम की दुआ से ख़ैरियत है, हुजूर। जनाब, आप छः माह से अख़बार के पैसे नहीं दे रहे हैं? आज़ तो रूपये मिल जायेंगे, ना? सुना है, आप पेंशन लेकर आ गये हैं।

फन्ने खां - (मायूसी से) - पेंशन लाने कैसे जायें, जनाब? यहां मोहल्ले की हुर्ज मुर्ज से कहां निपट पाते हैं, हुजूर? एक ख़त्म हुई, तो दूसरी हुर्ज मुर्ज तैयार। आज़कल ख़ानदानी लोगों को जीने का हक़ नहीं, जब तक वजीरे आला हमारे हक़ों को मनसूख नहीं कर दें।

भंवरू खां - (बातों में, रूचि लेते हुए) - ऐसा कौनसा वाकया हो गया, हुजूर?

फन्ने खां - देखिये हुजूर, याद है आपको...आपने अपनी अम्मीज़ान के हुक्म से, इस स्कूल में एक प्याऊ बनवायी? अब आपको घ्यान रहना चाहिये, एक भी जैलदार इस प्याऊ की सफ़ाई नहीं करता और ना ये लोग टंकियों को साफ़ करके उसमें आबेजुलाल (साफ़ ताज़ा पानी) भरते हैं।

साबू भाई - और जनाब ये जैलदार, इन मासूम बच्चियों को, कीड़े वाला पानी पीने को मज़बूर करते हैं। प्याऊ के दरवाज़े के पास, काई जमी रहती है। काई के पास ही आक़िल मियां ने, एक पांच पत्ती की बेल अलग से लगा रखी है। फिर वहां मधुमक्खियों ने.....

भंवरू खां - मधुमक्खियो ने क्या किया, जनाब? कहीं आप उनका शहद चुराकर, चट करके आ गये क्या?

साबू भाई - शहद की बात छोड़िये, हुजूर। इस बेल की कई डालियों पर, फानूस की तरह छत्त्ते लटका रखे हैं इन कम्बख़्त मधुमक्खियों ने। ख़ुदा रहम, कहीं ये मधुमक्खियां किसी नेक दुख़्तरा को काट ना जायें?

हाजी मुस्तफ़ा - वज़ा फ़रमाया, हुजूर। एक बार हमारी छोरी के चेहरे पर मधुमक्खी ने डंक मार दिया, बेचारी का मुंह मतीरे की तरह फूल गया। भला हो, हमारे किरायेदार रहीम साहब का...उन्होंने उसी वक़्त छोरी को दवा देकर, सारे जहर को बेअसर किया। ना तो छोरी....

फन्ने खां - आपकी प्याऊ का अब कोई क़दरदाँ रहा नहीं। अरे क्या करें उस्तसद, इन नामाकूल जैलदारों ने सारा कबाड़ का सामान इस प्याऊ में ठूंस-ठूंस कर भर दिया। आपको क्या कहूं, जनाब? पास बने पाख़ाने की बदबू के कारण इस प्याऊ के पास दो मिनट खड़े नहीं रह सकते। उल्टियां होने लगती है, जनाब।

भंवरू खां - अब मुझे क्या देखना? प्याऊ बनवाकर स्कूल को दे दी, अब बड़ी बी ज़ाने....इसको, कैसे काम में लें?

फन्ने खां - जनाब, आप समझे नहीं। बड़ी बी को मर्ज़ लग चुका है, के किसी तरह आपकी प्याऊ को कबाड़ ख़ाना बना दिया जाये।

फिर नया डोनर लाकर, उससे कहीं दूसरी जगह नयी प्याऊ बनवा दें।

हाजी मुस्तफ़ा - अरे हुज़ूर, बुलवाना कहां ? उधर देखो, (होदे के पास खड़ी बुढ़िया दिखाते हुए) वह मिरासन बुढ़िया डोनर बनकर यहां इस स्कूल में तशरीफ़ ला चुकी है।

फन्ने खां - अब आप यह बतायें, नयी प्याऊ तैयार होने के बाद आपकी प्याऊ को.. पूछेगा, कौन?

भंवरू खां - (जेब से तम्बाकू की डिबिया निकालकर, तम्बाकू सूंघते हैं) - हूं...हूं, फिर आपने क्या सोचा?

हिदायत तुल्ला - अब, सोचना-वोचना आपको है हुज़ूर। अब कल से ही, यह मिरासन बुढ़िया कमठा चालू करवा देगी। और हम लोग, यहां बैठे आपकी बनवायी गयी प्याऊ की बरबादगी का मंजर देखते रहेंगे। (कोहनी से फन्ने खां साहब को टिल्ला मारते हुए) कुछ बोलो ना, सद्दाम साहब।

(भंवरू खां साहब के जब्हा पर, फ़िक्र की रेखाएं दिखने लगती है। वह मायूस होकर, फन्ने खां साहब को देखते जाते हैं।)

फन्ने खां - (भंवरू खां से) - अब सोचना बेकार है, सारी प्लानिंग तैयार है... बस आपके हुक्म की इंतजार में, हम लोग यहां बैठे है। हमारा दोस्त एडवोकेट दिलावर आले दर्जे का सिवील लॉयर है, बस अब उससे मिल लेते हैं। फिर, क्या? कल ही अदालत में दावा दायर करके, कमठा रोकने का स्टे ओर्डर जारी करवा देते हैं।

भंवरू खां - आप अदालत के क़ायदे, रूल्स रेगयुलेशन सभी ज़रूरी बातें ज़ानते हैं या नहीं? आज़ के ज़माने में क़ानून की ज़ानकारी होना, कितना ज़रूरी है बिरादर? ना तो कहीं हमने ख़िलाफ़े शरह क़दम उठा लिया, तो अदालत-ए-जंग में नुक्सान हमें ही उठाना होगा।

फन्ने खां -ज़ानते हैं, हुजूर। देखिये आपको एक क्लू देता हूं, आप सोचकर जवाब देना। डवलपमेण्ट कमेटी के रूल्स और रेगयूलेशन

के तहत, डवलपमेण्ट कमेटी की रजाबंदी के बिना इस स्कूल में कोई कंस्ट्रक्शन वर्क नहीं करवाया जा सकता।

हिदायत तुल्ला - हमारी इज़ाजत लेना, सख्त ज़रूरी है। जनाब, हम सभी मेम्बरान यहां बैठे हैं और उधर स्कूल में वह मिरासन बुढ़िया और बड़ी बी मिलकर कल से प्याऊ ़बनवाने का काम शुरू कर रही है...बिना, हमारी इजाज़त के। हम सभी मेम्बरान की आबरू रेज़ी की जा रही है, जनाब।

(तभी भंवरू खां को छींकें आती है, अब वे अपनी नाक उधर ले जाते हैं जिधर हमारे सलीम मियां खड़े हैं। बेचारे सलीम मियां घबराकर झट एक ओर, खड़े हो जाते हैं। उनको हण्डरेड परसेण्ट शक हो गया, अब ज़रूर ये तहज़ीब वाले भंवरू खां साहब अपनी नाक सिनक कर उनके कपड़े गंदे कर देंगे? आख़िर, भंवरू खां साहब अपना नाक सिनक कर, रूमाल से नाक व हाथ साफ़ करते हैं। फिर, वे इन मुसाहिबों को कहते हैं।)

भंवरू खां - (रूमाल को जेब में रखते हुए) - साहब बहादुरों बोलिये, मेरे लिये क्या हुक्म है?

फन्ने खां - (ख़ुश होकर) - फ़हवुल मुराद। अब दावा तैयार करना है, और क्या? दावे में आप ख़ास मुस्तदई आप होंगे। बाकी हम सब, आपके साथ हैं।

भंवरू खां - (होंठों में ही) - प्लानिंग उम्दा है, इस आक़िल मियां को नसीहत देने का मौक़ा हाथ आ गया है। यह कम्बख़्त आक़िल कहीं भी मिले, बस एक ही बात करता है 'साहब, भूलिये मत। स्कूल को अलमारी देने वादा किया था, मगर अभी तक आपने अलमारी स्कूल को दी नहीं। हुजूर कब दे रहे हैं, अलमारी?' (भूलकर बड़बड़ाते हैं) ख़ुदा रहम, यह आक़िल तो अलमारी ऐसे मांगता है, मानों मैं उसका कर्जदार हूं?

फन्ने खां - हुजूर, आप तो भामाशाह ठहरे...आप आक़िल मियां के कर्जदार कैसे बन गये?

सबू भाई - अरे वाह, भंवरू मियां। आप दिखते क्या हो, और असल में हो क्या ? आज़ ज़ान गये हुजूर, आप एक सेठ होकर एक मुलाज़िम के कर्जदार बन गये...लानत है, आपको।

भंवरू खां - लानत है, मुझे। एक बार अलमारी देने का वादा क्या कर डाला मैने, जनाब आज़कल ऐसे याद दिलाते हैं.....मानों मैं उनका कर्जदार बन गया हूं? (मुद्दे पर आते हैं) चलिये, छोड़िये इन मोहमल बातों को। अब जैसा आप चाहते हैं, वैसा करो।

हाजी मुस्तफ़ा - आख़िर, जीत हमारी ही होगी। आप सबको याद रहे, दावा मुस्तरद नहीं होना चाहिये।

फन्ने खां - ठीक है, अब इजलास में ज़ाने की क्या ज़रूरत? अब हम सभी मिलकर, अदालते जंग लड़ेंगे। (साबू भाई से) ओ, प्यारे दुल्हे भाई। अब आप वापस बन जाओ, वापस साहबे आलम। कर लो, अपनी मूंछें ऊंची।

(फन्ने खां साहब की बात सुनकर, साबू भाई ख़ुश होकर कहकहे गूंज़ा देते हैं। अब वे मेमूना भाई की ओर देखते हुए, अपनी मूंछों

पर ताव देते जाते हैं। उन्हें क्या पत्ता? बेचारे मेमूना भाई, इन साहब बहादुरों के जवाब की इंतजार में कब से खड़े हैं ? इधर उनके पांवों में, दर्द उठने लगता है। परेशान होकर, बेचारे मेमूना भाई यह कहने के लिये मज़बूर हो जाते हैं।)

मेमूना भाई - (पांवों का दर्द सहन करते हुए) - साहब बहादुरों। बड़ी बी चाहती है, आप सभी अभी इजलास में तशरीफ़ रखें। कमठे के बारे में राय मश्वरा देते हुए, प्याऊ बनवाने के काम में अपनी मंजूरी देवें। कहिये जनाब, आप सभी मुअज़्ज़म कब पधार रहे हैं, स्कूल में?

फन्ने खां - (हंसी के ठहाके लगाते हुए) - हाऽऽऽ हाऽऽऽ हाऽऽऽ ...। अमां यार, अब क्या आना-ज़ाना? कह देना बड़ी बी को, इजलास कभी ना होगी ....।

(सभी रूख़्सत होते हैं, उनके पैरों की आवाज़ सुनाई देती है। और साथ में फन्ने खां साहब के ठहाको की गूंज़। मंच पर, अंधेरा छा जाता है।)

(अजज़ा ५)तबादला-ए-परवाज़े तख़य्युल लेखक -०: दिनेश चन्द्र पुरोहित(१)

(मंच रोशन होता है, स्कूल के बड़े होल में आज़ डवलपमेण्ट कमेटी की इजलास (मिटिंग) चल रही है। इस इजलास (मिटिंग) के मेम्बरान अधिकतर मोहल्ले के निवासी ही है, जिनमें फन्ने खां साहब, हाजी मुस्तफ़ा, साबू भाई व मनु भाई रोज़ इजलास में हाज़र रहने वाले आज़ भी आये हैं। इनके अलावा स्कूल की सारी मेडमें औऱ लाइब्ररियन शेरखान साहब भी अपनी हाज़री दे रहे हैं। शेरखान साहब इस स्कूल में नये-नये आये हैं, पहले वाली लाइब्रेरियन जीनत बी का तबादला पड़ोस की सेकेण्ड्री स्कूल में हो गया। इस कारण अब फन्ने खां साहब को पहले वाली लाइब्रेरियन जीनत बी के दीदार नहीं हो पाये, इसलिये वे अपनी नाराज़गी शेरखान साहब के सामने जाहिर करते हुए कहते हैं।)

फन्ने खां - (नाराज़गी जाहिर करते हुए) - हाय अल्लाह। सरकार ने इस जीनत बी का तबादला करके, इस लड़कियों की स्कूल मे इस

दाढ़ी वाले मर्द को क्यों भेजा? इस जीनत बेग़म ने कया बिगाड़ा, मियां रसूल का...?

(फिर क्या? मियां फन्ने खां को मोहतरमा जीनत का ख़ूबसूरत चेहरा, उनकी आंखों के सामने छा जाता है। वे बरबस, अपने होंठों में ही कह बैठते हैं)

फन्ने खां -(होंठों में ही) - हायऽऽ कैसा खूबसूरत चेहरा दिखता था उस मोहतरमा का, जिसके दीदार पाते ही हम बूढ़े मेम्बरानों के रगो में जवानी का ज़ोश उमड़ पड़ता? अजी ऐसा लगता, जैसे ख़ुदा के फज़लोकरम से हम लोगों को झण्डू केसरी जीवन मुफ़्त में सप्लाई हो गया हो।

(मगर उनका बड़बड़ाना, पास बैठी मेडमों को सुनाई दे गया। फन्ने खां की ऐसी बात सुनकर, सारी मोहतरमाए एक दूसरे का मुंह ताकने लगी। इनको ऐसी आशा नहीं थी, इन मेम्बरान में भी कोई जीनत बी को चाहने वाला हो सकता है? जहां आये दिन बड़ी बी व जीनत के बीच, झगड़े होते रहते... इन झगड़ों से निज़ात पाने के

लिये आख़िर, जीनत ने अपना तबादला पड़ोस की सेकेण्ड्री में करवा कर सुकून की सांस ली। अब सारी मोहतरमाएं, फन्ने खां साहब का मुंह ताकने लगी। मगर, फन्ने खां साहब को झिझक महसूस नहीं हुई। वे तो चहकते हुए, कहने लगे।)

फन्ने खां - (चहकते हुए, बड़ी बी से कहने लगते हैं) - अरे हुज़ूर, क्या कहें? (शेरखान साहब को देखते हुए) क्यों जहमत उठायी, यहां आकर? जनाब यह ठहरा लड़कियों का स्कूल, यहां आपका क्या काम?

शेरखान - (अपनी रीश सहलाते हुए) - मियां रसूल की मेहरबानी से यहां आये हैं, आपका दीदार करने। ज़नाब आपके खूब चर्चे सुन रखे थे, हुज़ूर को अब देखकर हमें तसल्ली हुई। जैसा सुना, वैसा ही पाया। वाकयी, ख़ुदा ने अच्छा गढ़ा है नमूना।

(सुनकर फन्ने खां साहब को छोड़कर, सभी मेम्बरान और मोहतरमाओं के बीच हंसी के फव्वारे छूटने लगे। फिर क्या? शर्म के मारे, फन्ने खां साहब बगले झांकने लगे। अब झेंप मिटाते हुए,

फन्ने खां साहब इजलास के शरअी (क़ानूनी) शरायत बताने बैठ जाते हैं।)

फन्ने खां - (रशीदा बेग़म से) - प्रेसिडेण्ट साहिबा, आप पांच-छः मेम्बरान को इकट्ठे करके आप इजलास के कोरम को पूरा नहीं कर सकती।

शेरखान - क्यों बिरादर, यह कैसा आपका मुख़ालफ़त? बच्चियों का भला होगा जनाब, प्रोपोज़ल का सपोर्ट करके सवाब लीजिये।

फन्ने खां - (तमतमाये हुए) -नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। इस तरह आपका लिया गया तजवीज़ आख़िर, शरअी नहीं हो सकता। शरअी शरायत के तहत, बच्चियों के तमाम वालेदान हाज़िर होने चाहिये इजलास में।

शेरखान - (हंसते हुए) - इतनी भीड़ इकट्ठी करके, आपको बाबा मस्तान का उर्स भरवाना है क्या?

(शेरखान साहब की बात सुनकर, फन्ने खां साहब को छोड़कर सभी हंसने लगे। बेचारे फन्ने खां साहब, अब क्या करते? अपनी नादानी

पर झेंपते हुए मुंह नीचे करके, बैठ गये। अब वे झेंप मिटाते हुए, पास बैठे मनु भाई से पूछ बैठते हैं।)

फन्ने खां - (धीरे से, मनु भाई को पूछते है) - अरे बिरादर, यह रीश (दाढ़ी) वाला आख़िर है कौन? यह ख़न्नास, आख़िर आया कहां से? कम्बख़्त आबे बाराँ के अबलक मेंढ़क की तरह, टर्र टर्र करता जा रहा है?

मनु भाई - (धीरे से) - सद्दाम साहब, आप दानिशों की तरह चुप बैठना सीखिये। ख़ुद अपनी आबरू रेज़ी करवाते हो, और अपने साथियों को करते हैं आब आब। अब ज़ान लीजिये, ये शेरखान साहब है। जीनत और शेरखान साहब दोनों लाइब्रेरियन का ओहदा रखते हैं, इनका परस्पर तबादला कोई ख़िलाफ़े शरअ नहीं है।

साबू भाई - आज़कल, लाइब्रेरी में काम कहां है हुजूर? इसलिये बेचारे शेरखान साहब मज़बूरी से अपना वक़्त जाया करते हैं, इन इजलासो मे। अब तो दाऊद मियां और शेरखान साहब, दोनों की जोड़ी बन गयी है। आख़िर दोनों ठहरे, एक नम्बर के निक्कमें इंसान।

फन्ने खां - वज़ा फ़रमाया, हुजूर। इस रीश वाले ने अपने सर पर इतना काम का बोझा लाद लिया है के, बेचारे की भरी जवानी में सर के बाल जाते रहे।

साबू भाई - क्या कहें, बिरादर? इनके हमउम्र के दोस्त इन्हे, चच्चाज़ान काकहते हैं आज़कल।

(साबू भाई की बात ही कुछ ऐसी थी, सुनकर सभी हंसने लगे। मिटिंग का माहौल अब ऐसा लग रहा था के, अब प्रोपोज़ल बनने का सवाल ही नहीं रहा। खुराफ़ती और हंसोड़ लोगों के कारण, माहौल बिगड़ चुका था। आख़िर, बड़ी बी को इजलास (मिटिंग) पोस्टपोण्ड करनी पड़ती है। अब वह इजलास की अगली तारीख देकर, उठ जाती है। सभी ज़ाने लगते हैं, जाते-जाते फन्ने खां साहब को पीछे से हंसी के ठहाके सुनाई देते है। अब उन्हे इमतियाज़ बी की बुलन्द आवाज़, साफ़-साफ़ कानों में सुनाई देती है।)

इमतियाज़ - चलो बहुत अच्छा हुआ, अभी तो बड़ी बी की मुसीबत टली। अब तो फन्ने खां साहब को अच्छा सबक मिल गया, आगे से

वे ज़रूर इन इजलासों से किनारा करने लगेंगे। इनके दिल में ख़ौफ पैदा हो गया है, कहीं इन्हें शेरखान साहब के दीदार ना हो जाय?

नसीम बी - (हंसती हुई) - जहां जीनत के दीदार पाकर इनकी बूढ़ी रगो में लहू दौड़ पड़ता था, अब उसकी जगह शेरखान साहब का दीदार पाकर इनका लहू बर्फ के माफ़िक में जम जायेगा।

ग़ज़ल बी - बस... ख़ुदा जो करता है, वह अच्छा करता है। अब इजलास में परेशानी का सबब बनने के लिये, फन्ने खां साहब अब कभी नहीं आयेंगे।

(सब जाते हैं, उन सब की ज़ाने की पदचाप सुनाई देती है। मंच पर, अंधेरा छा जाता है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, स्कूल का बरामदा दिखायी देता है। जहां कुर्सियों पर बैठी मोहतरमाए, गुफ़्तगू करती जा रही है, इनका मुख्य मुद्दा डवलपमेण्ट कमेटी के मेम्बरान की नीयत को लेकर है। जिनका काम स्कूल का डवलपमेण्ट करना नहीं, ख़ाली इजलास में

आकर दख़ल डालना है। अब चेहरे पर छा रहे बालों को हटाती हुई ग़ज़ल बी, दूसरी मेडमों को कह रही है।)

ग़ज़ल बी - (चेहरे पर आ रहे, बालों को हटाती हुई) - बड़ी बी ने आख़िर, इन बाहरी मेम्बरान को इतनी लिफ्ट क्यों दे रखी है? कम्बख़्त इस फण्ड के कारण, इस स्कूल के चारों ओर मण्डराते रहते हैं।

नसीम बी - क्या ये लोग, ख़ुदा है? इनके कहने पर, इजलास स्थगित कर दी जाय? बड़े आये, बेतुका सवाल करने वाले? यह कोई सवाल है, कोरम पूरा नहीं हुआ...इसलिये, इजलास स्थगित कर दी जाय?

इमतियाज़ - अरी ओ नसीम बी, इतनी नादान मत बनो। जानती नहीं, तुम? ये लोग इजलास में शराकत करने नहीं आते, बल्कि ये इजलास में हंगामा मचाने आते हैं या मटरगश्ती करने?

ग़ज़ल बी - वज़ा फ़रमाया, इमतियाज़। तेरी सहेली आयशा, कुछ कम नहीं है। स्कूल के सारे वाकयों का मसाला, ज़ानबूझकर परोस

देती है इन बाहर वाले मेम्बरान के सामने। फिर इन बेचारे मेम्बरानों की क्या ग़लती, बेचारे सूंघते-सूंघते आ जाते है स्कूल में... यहां, तहकीकात करने...?

नसीम बी - साथ में बेचारे यहां आकर, खूबसूरत मोहतरमाओं के दीदार भी कर लेते हैं।

इमतियाज़ - अरी, नसीम। तू काहे डरती है, ख़ुबसूरत की जगह तू तो बीबी फातमा बन बैठी है। तेरे दीदार पाकर, वे सौ क़दम दूर भगेंगे। ़अरी, मेरी हमशीरा। हम सब ज़ानती हैं, तेरे दीदार पाकर तेरा खाविन्द थर-थर काम्पता है।

ग़ज़ल बी - तेरी सहेली है ना, वो आयशा। ख़ूबसूरत है, उसे देखने आते हैं यहां। कम्बख़्त आज़कल इन लोगों की दुकान पर जाकर, गुफ़्तगू करने का मसाला देना भूल जाती होगी? तभी आते हैं, यहां...ये ख़न्नास।

इमतियाज़ - (ग़ज़ल बी से) - एक बार कह देती हूँ, आपा। आप बेचारी मासूम आयशा पर, झूठा इल्जाम नहीं लगा सकती। वह

बेचारी अपने शौहर को फ़ोन करने जाती है, साबू भाई की दुकान पर।

ग़ज़ल बी - फ़ोन एक बार लगा दें, या दो बार लगा दें...मगर यह क्या? यह मोहतरमा दस दफे जाती हैं वहां, और चिपक जाती है फ़ोन से।

इमतियाज़ - बात यह है, उसका शौहर ठहरा शक्की नम्बर एक। उस नामाकूल को, हर छोटे बड़े सवाल का जवाब देने ज़ाना पड़ता है। ताकि, उसके शौहर को...तसल्ली हो जाय।

नसीम बी - आप सच कह रही है, इमतियाज़। बड़े शक्की मिजाज़ के हैं, इसके शौहर। बेचारी का जीना हराम कर दिया, क्या कहूं आपको? आज़ की बात है, रास्ते में आयी रेलवे फाटक के पास रोक दिया मुझे।

इमतियाज़ - क्या कहा, आपको रोक कर?

नसीम बी - अजी उसके मियां तो पुलिसये की तरह, तहीकात करने लगे। ढेरों सवाल खड़े कर दिये, मेरे सामने। कल छुट्टी कितने बजे

हुई, आयशा एक घण्टे कहां थी? उनको समझा-समझा कर थक गयी, के 'मियां कल डवलपमेण्ट कमेटी की इजलास थी। मगर...?

इमतियाज़ - बेचारी आयशा इतनी परेशान रहती है, नसीम बी...तुम पूछो, मत। एक तरफ़ शक्की शौहर, और दूसरी तरफ़ हमारी बड़ी बी।

नसीम बी - यहां बीच में, बेचारी बड़ी बी कहां से आ गयी?

इमतियाज़ - अरी, नसीम। रिश्ते में चाहे तू बड़ी बी की मामी सास लगती होगी, फिर भी कहूंगी तूझे।

नसीम बी - कह दे, कह दे। मैं डरती नहीं हूं।

इमतियाज़ - ले सुन। बार-बार जाकर उसकी क्लास के बाहर आकर खड़े हो ज़ाना, और ताक-झांक करना.. के, मोहतरमा बच्चियों को पढ़ा रही है या ख़ुद पढ़ रही है... हेडमिस्ट्रेस के, इमतिहान की तैयारी करने...? फिर यह क्या है, नसीम बी?

नसीम बी - चलिये यह बात मान लेती हूं, मैं। और आयशा की तारीफ़ करूंगी, बेचारी एक पिरीयड मिस नहीं करती...औरों की तरह क्लास में बैठकर स्वेटर नहीं बुनती।

इमतियाज़ - नसीम बी, यह भी याद रखो। मेम्बरान उसकी तारीफ़ करते हैं, कहते हैं के 'देखो बेचारी कितनी मेहनती है? रोज़ भारी-भारी किताबें लाती है, पढ़ने व पढ़ाने के लिये...बहुत इल्म है छोरी में, पढ़ाने का।

ग़ज़ल बी - (तुनक कर) - काहे का? अरी इमतियाज़ उसको पढ़ाने का नहीं, झगड़े कराने का इल्म हासिल है। तू तो भोली ठहरी, तेरी आस्तीन का सांप है यह मर्दूद। इसी ने बहकाया है, मेम्बरान को। के, इमतियाज़ जल्लाद है...ज़ानबूझ कर, तुम्हारी बच्चियों को दो-चार नम्बर से फेल किया है इसने...

इमतियाज़ - (नाक भौं सिकोड़ती हुई) - आगे क्या कहा, उस कम्बख़्त ने?

ग़ज़ल बी - आगे कहा, थोड़ा हाथ ढीला रखती तो बेचारी बच्चियां सप्लीमेण्ट्री से पास हो जाती।

इमतियाज़ - हाय अल्लाह, आयशा ने ऐसा कहा? वसूक नहीं होता, ख़ुदा रहम। अब किसका भरोसा करूं, मेरे मोला?

ग़ज़ल बी - अरी इमतियाज़, तू उसे इतनी भोली मत समझ। अरी यह खातून तो फातमा आहिर ठहरी, हम टीचरों का स्कूल आने-ज़ाने का पूरा ब्यौरा उन नामाकूल मेम्बरान के कानों में डालती रहती है। अरे तूझे वसूक नहीं है तो पूछ ले सितारा मेडम को, क्या बकवास कर रही थी मेम्बरान से?

सितारा बी - छोड़ो...छोड़ो। काहे ज़बान खुलवा रही हो, अरे अल्लाह पाक की बन्दियों...इस पीर दुल्लेशाह की मुरीद को, इस मामले से मुझे दूर ही रखो। इससे तो अच्छा है, मैं वजीफ़ा पढ़ लूं..अल्लाह पाक, मेरी ख़ता माफ़ करेगा।

इमतियाज़ - नहीं आपा, आपको बताना ही होगा। ना बताया, तो आगे से समझ लेना। हम नहीं खायेंगी, आपकी चढ़ायी बाबा की शिरनी। आपको, पीर दुल्लेशाह की कसम।

सितारा बी - हम तो ठहरे कोदन, कहां फुजूल की बातों पर ध्यान देने वाले? हमें, कहां मालुम...? यह आयशा किस मआमले को लेकर, गुफ़्तगू कर रही है, फन्ने खां साहब से....कुछ माह, पहले? मगर...

इमतियाज़ - मगर, क्या? आगे जल्दी कहो, आपा। कहीं बड़ी बी, यहां आ नहीं जाय?

सितारा बी - हमारे वो यानि तुम्हारे जीजा है ना, उन्होंने पूरी गुफ़्तगू सुन ली। कल रात उन्होंने सारी दास्तान मुझे बतायी, कह रहे थे...

इमतियाज़ - जल्दी कहो, आपा। कहीं यह बड़ी बी यहां आ नहीं जाये, आ गयी तो सारे मसले का गुड़ गोबर बना देगी?

सितारा बी - (थक ज़ाने का अहसास कराती हुई, लम्बी-लम्बी सांसें लेती है) - आप सभी ज़ानती है, छुट्टी होने के कुछ देर पहले मेरे शौहर मनु भाई की दुकान के पास मोटर साइकल रखकर खड़े हो जाते हैं...ताकि, छुट्टी हाने के बाद मुझे ले जा सके। परसों, छुट्टी की घण्टी बजने में ख़ाली पांच मिनट बाकी थे। तभी वहां आयशा आयी, फन्ने खां साहब को कहने लगी के...

इमतियाज़ - (उतावलेपन में) - क्या कहा, अरे जल्दी कहो....कहीं बड़ी बी यहां आ नहीं जाये?

(सितारा बी सारी दास्तान बयान करने लगी, सभी मोहतरमाएं ख़ामोशी से उनकी बात सुनने लगी। दास्तान पूरी सुनने के बाद, इमतियाज़ अचूम्भे से कहने लगी।)

इमतियाज़ - (अचरच करती हुई) - अच्छाऽऽ...। आयशा ने यह कहा, फिर आगे क्या कहा?

सितारा बी - फिर क्या? फन्ने खां साहब चहक उठे, अपने साथियों से कहने लगे के 'साथियों, अब जम्हूरियत की सियासत का बिगुल

बजायेंगे। बस कल सुबह ही मोहल्ले वालों को लेकर, स्कूल आयेंगे। स्कूल का इन्सपेक्शन, हमारे हाथों से होगा।

इमतियाज़ - हाय अल्लाह, यह कैसा इंसपेक्शन...? याद आया, आख़िर उन्होने किया था... पहली पारी का, इंसपेक्शन।

सितारा बी - वे कह रहे थे, 'सुबह प्रेयर के वक़्त आकर मेन गेट का ताला लगाकर यहीं खड़े हो जायेंगे, और देरी से आने वाली मोहतरमाअोंं को रोक कर बक़ायदा फ़ेहरिस्त बनायेंगे...के, कौन-कौनसी मोहतरमाएं कितने बजे देरी से आ रही है?' समझ गयी, बहनों?

इमतियाज़ बी - क्या कहा?

सितारा बी - सब-कुछ, लिख कर डवलपमेण्ट कमेटी के इजलास में शिकायत रखी जायेगी।

इमतियाज़ - अब तो ये नामाकूल, यहां आकर हमारे ख़िलाफ़ रोजनमांचा तैयार करने वाले थे? अच्छा हुआ, मिटिंग आगे चली नहीं।

सितारा बी - फिर आगे कहा, रिसेस ख़त्म होते ही बाहर आकर खड़े हो जायेंगे। और पूरी तफ़्तीश करेंगे के, ऐसी कितनी मोहतरमाए है जो रिसेस में घर जाकर वापस देरी से स्कूल लौटती है।

ग़ज़ल बी - हाय अल्लाह। आज़कल ये अली बाबा और चालीस चोर हमारे पीछे लग गये हैं, डण्डा लेकर? ख़ुदा रहम, हमारा घर नज़दीक है....हमारे सिवाय, घर ज़ाने वाला है कौन?

इमतियाज़ - (मुस्कराती हुई) - आपा, कल से आप टी क्लब की मेम्बर बन जाईये। फिर, क्या? घर ज़ाने की इल्लत दूर, फिर आप चैन की बंशी बजाती रहना।

सितारा बी - सुनो बहनों, इस तरह हमारे फन्ने खां साहब ने आगे फ़रमाया के 'इस कार्यवाही से बड़ी बी ख़ुश हो जायेगी के, उनके स्कूल में न रहने पर हमने स्कूल की मोहतरमाओं के बीच डिसीप्लेन क़ायम रखा है। इस प्रकार, हम जम्हूरियत की सियासत कर पायेंगे।'

(चांद बीबी आती है, सभी मोहतरमाओं को चाय के प्याले थमाती है। सभी मोहतरमाए, चाय की चुश्कियां लेने लगती है। अब चाय सेवन करती हुई, सितारा बी आगे कहती है।)

सितारा बी - बाकी बाद में, क्या हुआ? आप सभी बहने ज़ानती हैं, कहने की कोई ज़रूरत नहीं। बड़ी बी के आपस लौटने पर, क्या हुआ? आप सभी ज़ानती है।

इमतियाज़ बी - आपा, कुछ तो बयान करें...अभी, चाय ख़त्म नहीं हुई है।

सितारा बी - (चाय की चुश्की लेकर) - लो सुनो, कुछ रोज़ बाद मनु भाई की दुकान पर खड़े होकर ये नामाकूल अपनी-अपनी डींग हांकने लगे। तभी मेमूना भाई ने आकर, बड़ी बी का ख़त थमा दिया उन्हें। फिर मनु भाई ख़त पढ़ा, और कहने लगे ....

ग़ज़ल बी - शुक्रिया का ख़त भेजा होगा, बड़ी बी ने?

सितारा बी - अरे नहीं, यह बात नहीं। मनु भाई कह रहे थे के 'भाई लोगों, आपके किये गये काम की तारीफ़ के कसीदे निकाले गये हैं।

बड़ी बी ने हिदायत दी है...इस तरह की ईलिगल हरकत, आप भविष्य में नहीं करेंगे।'

इमतियाज़ बी - (ख़ुश होकर) - अरे, वाह। यह तो ऐसा हुआ, बस.. सर मुण्डाते हुए ओले पड़े हों।

(इमतियाज़ की बात सुनकर, सभी मोहतरमाएं हंसने लगी। अब चांद बीबी चाय के सारे बरतन उठाती है, और उन्हे धोने के लिये नल के नीचे रखती है। तभी चांद बीबी की निगाह, दीवार घड़ी पर गिर पड़ती है। सूंई के कांटों को देखकर, वह जाकर घण्टी लगाती है। सारी मोहतरमाएं उठती है, और अपनी क्लासों में चली जाती है। उनके पांवों की पदचाप, दूर तक सुनायी देती है। मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(३)

(मंच रोशन होता है, बड़ी बी अपने कमरे में बैठी दिखायी दे रही है। उनके आस-पास पहलू में, दूसरी पारी की मोहतरमाएं कुर्सियों

पर बैठी दिखायी देती है। अब ये सारी मोहतरमाएं, गुफ़्तगू करती नज़र आ रही है।)

ग़ज़ल बी - बड़ी बी, हमें तो यह बरसात का मौसम अच्छा नहीं लगता। क्या कहूं, आपको? ऐसा भय छाया रहता है, कहीं बरसात न हो जाये? आपको, क्या पत्ता? कोलोनी का सारा पानी ओवर-फ्लो होकर, हमारे घर के आंगन में चला आता है।

सितारा बी - सावन का महीना है, ना मालुम कब बादल मण्डराकर आस्मां में छा जाते हैं। ना मालुम कब बरसात करके, कहर बरफ़ा कर चले जाते हैं।

रशीदा बेग़म- इन बादलों की क्या परवाह करती हो, सितारा बी? आने वाले, तबादलों के बादलों को देखिये। हाय अल्लाह, कहीं यह तबादलों पर लगा बेन खुल ना जाय? बस, इसी की फ़िक्र सताती है।

नसीम बी - बड़ी बी, आपने वज़ा फ़रमाया। कल यह मर्दूद फन्ने खां मूंछों पर ताव देता हुआ, मोहल्ले वालों को सुना रहा था के......

रशीदा बेग़म-क्या कहा? कहीं, तबादलों की फ़ेहरिस्त निकल तो नहीं रही है?

नसीम बी - निकली नहीं, बाद में निकल सकती है। तब तक, यह मर्दूद फन्नेखां आपका नाम फ़ेहरिस्त में जुड़वा देगा। इसने ऐलान किया है, मोहल्ले वालों के सामने। कहता था के, 'इस बड़ी बी ने सोये हिज़ब्र (शेर) को ख़त देकर ललकारा है, अब यह हिज़ब्र इसका तबादला करवा कर ही दम लेगा।'

नसीम बी - अरे हुजूर , हमने तो यह भी सुना है.. के, इस मर्दूद के अपने एम.एल.ए. साहब से अच्छे-ख़ासे रब्त है। उनको भड़काकर...

ग़ज़ल बी - गरज़ने वाले बादल, बरसते नहीं। मेडम, आप फ़िक्र ना कीजिये। मैं आज़ ही अपने शौहर-ए-नामदार को कह दूंगी, वे ज़रूर ध्यान रखेंगे आपका।

नसीम बी - इनका नहीं, आपका ध्यान रखेंगे आपा। आख़िर आप, उनकी ख़ातूने ख़ान है।

रशीदा बेग़म- छोड़िये, इन मोहमल बातों को। (ग़ज़ल बी की तरफ़ मुंह करते हुए) आप क्या कहेंगी, उन्हें? वे तो केवल शिक्षक संघ के अध्यक्ष है, मिनिस्टर नहीं...जो तबादला रूकवा सके?

ग़ज़ल बी - बड़ी बी, आप ज़ानती नहीं। वे ख़ाली लीडर ही नहीं, शिक्षा मन्त्री के ख़ास दोस्त है। जब भी ये मन्त्रीजी इस शहर में आते हैं, इनसे मिले बिना वे वापस जाते नहीं।

मुमताज बी - बड़ी बी, आप काहे की फ़िक्र करती हैं? पहली फ़ेहरिस्त जो निकलेगी, वह थर्ड ग्रेड टीचरस् की होगी। फिर...(इमतियाज़ बी की ओर देखती हुई) सेकण्ड ग्रेड टीचरस् की, मैने ख़ुद ने इन कानों से सुना है...गांवो में, सेकण्ड ग्रेड इंगलिश टीचर की सख़्त ज़रूरत है।

(तभी आस्मां में बादलों की तेज़ गड़गड़ाहट होती है, पूरे आसमान में काले-काले बादल छा जाते हैं। अब तेज़ आंधी चलती है, कमरे के पर्दे हिलते हैं। ऐसा लगता है, कहीं भूचाल आ गया हो? मगर ख़ुदा के रहम से भूचाल नहीं आया, मगर ये जमाल मियां ज़रूर अन्दर

दाख़िल हो जाते हैं...जो ख़ुद किसी भूचाल से कम नहीं। उन्होने अपने हाथ में, डिमाण्ड लेटर पकड़ रखा है।)

जमाल मियां - (डिमाण्ड लेटर मेज़ पर रखते हुए) - देखिये बड़ी बी, हमें बीस फाईल कवर, व्हाइट पेपर एक रीम, एक ख़ाकदान, क़लम, टेबल-ग्लास, अलमारी वगैरा वगैरा सब चाहिये। ना तो बड़ी बी, हमारा काम आज़ से बंद।

रशीदा बेग़म- (नाराज़गी के साथ) - मियां तुम्हे यहां डिमाण्ड की लगी है, और इधर हमारा कलेज़ा हलक में आ चुका है। ज़ानते नहीं, तबादलों के बादलों की गड़गड़ाहट साफ़-साफ़ सुनाई दे रही है। बेफुजूल सर ख़पाने, हमारे कमरे में आया मत करो।

जमाल मियां - (चहकते हुए) - तबादलों के बादल...? गड़गड़ाहट क्या हुजूर, ये बादल तो बरसने भी लग गये हैं। कल रात को डी.ई.ओ. दफ़्तर वालों ने हमको बुलाया...

इमतियाज़ - तब तो मियां, तुम्हें तबादलों की पूरी ज़ानकारी होगी.?

जमाल मियां - हुज़ूर, हमने वहां रात के दो बजे तक बैठकर टाइप का काम किया है। किन-किन मोहतरमाओं का, तबादला हो रहा है? उनके नाम, हमारे लबों पर है। सुना है...

इमतियाज़ - (घबराकर) - क्या सुना? किन-किन टीचरों की फ़ेहरिस्त निकल रही है, मियां?

जमाल मियां - सुना है, सेकण्ड ग्रेड टीचरस्.... अंग्रेजी सब्जेक्ट की

इमतियाज़ - हाय अल्लाह, मियां तुमने ऐसा क्या कह दिया? मेरी तो ज़ान निकल गयी। (बड़ी बी से) बड़ी बी, ज़रा डी.ई.ओ. दफ़्तर फ़ोन लगाकर तबादले के बारे में कनफर्म कर लूं क्या?

(इमतियाज़ टेबल रखे फ़ोन से चोगा उठाकर नम्बर मिलाती है, घण्टी की आवाज़ सुनायी देती है। और उधर जमाल मियां, उसके चेहरे पर उड़ी हवाइयों को पाकर अपनी हंसी दबा नहीं सके। फिर, क्या? झट कमरे के बाहर आकर, खिल खिलाकर हंसने लगे। उनकी हंसी सुनकर, इमतियाज़ जल-भुन जाती है। तभी चोगे में, दफ़्तर के पी.ए. की आवाज़ सुनायी देती है।)

पी.ए. - (फ़ोन से आज़ आती है) - हेलो, डी.ई.ओ. ऑफिस से बोल रहे हैं, फ़रमाइये आपका काम?

इमतियाज़ - (फ़ोन पर) - जनाब, हमें तबादलों की ख़बर चाहिये। हम लेबर बस्ती की सेकेण्ड्री स्कूल से, इंगलीश सब्जेकट सेकण्ड ग्रेड टीचर बोल रही हैं......कोई तबादले की....?

पी.ए. - (फ़ोन पर) - पहले आप यह बताइये, आप कौन बोल रही हैं मेडम? अपना नाम बताइये, ज़रा? आप कितने सालों से, इसी स्कूल में काम कर रही हैं? ज़रा, जल्दी बताइये। फिर हम आपको, तबादलों की फ़ेहरिस्त के बारे में, कुछ बता सकते हैं।

इमतियाज़ - (घबराती हुई) - हजूर, हम इमतियाज़...सेकण्ड ग्रेड इंगलीश टीचर, करीब दस साल से यहीं हैं।

पी.ए. - (फ़ोन से) - ठीक है मेडम, आगे से याद रखना...ऐसी ख़बरें फ़ोन पर बतायी नहीं जाती। आप दफ़्तर आकर, सम्बन्धित शाखा लिपिक से मालुम कर लें।

(इसके बाद, चोगा रखने की आवाज़ सुनायी देती है। अब इमतियाज़ चोगा क्रेडिल पर रखकर, उदास होकर बैठ जाती है। दूसरी मेडमें ढाढ़स बन्धाती है, मंच की रोशनी लुप्त होती है।)

(४)

(मंच रोशन होता है। बड़ी बी अपने कमरे में, सर पर हाथ रखे बैठी है। स्कूल के स्टॉफ में इमतियाज़ बी, अपना काफ़ी असर रखती है। कई मोहतरमाएं उनके सपोर्ट में है, यही फ़िक्र बड़ी बी को सता रही है। क्योंकि, इमतियाज़ बी आज़ाद ख़्यालात की है। वह किसी के दबाव में नहीं आती, कई बार वह ग़लत नीतियों का तख़ालुफ़ (विरोध) कर चुकी है। उसकी एक ख़ासियत है, वह मुमताज की तरह बड़ी बी की मस्कागिरी करने में कभी अपना वक़्त जाया नहीं करती। अब स्कूल का स्टॉफ सेक्रेट्री का इलेक्शन होगा, कहीं यह इमतियाज़ स्टॉफ सेक्रेट्री ना बन जाये....यही फ़िक्र, बड़ी बी को सताने लगी। गमज़दा होकर, अपने होंठों में ही बड़बड़ाती जाती है।)

बड़ी बी - (होंठों में ही) - हाय अल्लाह, यह कोई स्कूल है या नाती का बाड़ा? इस मुमताज पर अहसान करके, इसे स्टॉफ सेक्रेट्री बनाया। मगर यह मर्दूद, निकली कामचोर। स्टॉफ के चन्दे को कहां लगाना, किसे गिफ्ट लाकर देना है? कोई काम सही तरीके से नहीं करती, कम्बख़्त। मज़बूर होकर, मुझे चंदा वसूल करने का काम करना पड़ा।

(सोचते-सोचते बड़ी बी, की आंखों के आगे बीते वाकया का मंजर सामने आने लगा। उन्हे कमरे में, झाड़ू हाथ में लिये शमशाद बेग़म दिखायी देती है। मंच पर, रोशनी लुप्त होती है। थोड़ी देर बाद, मंच रोशन होता है, बडी बी अपने कमरे में बैठी दिखायी दे रही है। कमरे में शमशाद बेग़मदाख़िल होती है, उसके हाथ में झाड़ू है। उसने इस झाड़ू को, कंधे पर इस तरह रखा है, मानो वह झाड़ू नहीं होकर एक बन्दूक हो।)

शमशाद बेग़म- हुकम कीजिये, हुजूर। बन्दी हाज़िर है।

रशीदा बेग़म- यह क्या? यह झाड़ू पकड़ रखा है, या बन्दूक ? यह कोई सलीका है, झाड़ू पकड़ने का? जाओ, स्टॉफ सेक्रेट्री को बुला लाओ। कम्बख़्त को, कोई काम सलीके से करना नहीं आता।

(शमशाद बेग़म जाती है, कुछ देर बाद कमरे का पर्दा हिलता है और मुमताज आती है।)

मुमताज - (कुर्सी पर बैठती हुई) - हाय, मदीना के पीर। रहम कर, इस बांदी पर। क्या करूं, मेरे मोला? इन सारी मोहतरमाओं के आगे हाथ जोड़े, पांव जोड़े मगर एक पैसा नहीं दिया उन्होंने.....अब पार्टी ख़ाक होगी, मेरे मोला?

रशीदा बेग़म- परवरदीगार को क्यों सुना रही हो, मेरी अम्मा? सुनने के लिये, हम बैठें हैं ना? कहिये, उन ख़ातूनों ने क्या कहा?

मुमताज - पहले तो हुजूर, उन्होंने पिछले चंदे का हिसाब मांगा...

रशीदा बेग़म- दिखाने में, कौनसा उज्र? आप ईमानदारी से करती हो, काम। फिर, देखना क्या? देखा देती, सारा हिसाब।

मुमताज - हुजूर दिखाया हमने, मगर ये मोहतरमाएं कहने लगी 'गिफ्ट लाने का टेक्सी-किराया क्यों जोड़ा, जबकि आप अपनी स्कूटी पर बैठकर गयी थी गिफ्ट लाने।' ख़ुदा रहम, इन मोहतरमाओं ने तो मुझ पर गबन का आरोप लगा दिया। अल्लाह कसम, अब आगे से....

रेशमा बेग़म- आ़खिर, कहना क्या चाहती हो? स्कूटी पर बैठकर गयी, तो उन्हें काहे का ऐतराज ? गधे पर बैठकर, तो नहीं गयी आप...फिर काहे का, डर ?

मुमताज - (नाराज़गी से) - आप भी हमारा मुज़हाक उड़ा रही हैं, बड़ी बी ? फिर मुझे यहां रूक कर, क्या करना? हम तो अब रूख़्सत होते है, मेडम। सम्भालो इस केश को, अब आप ज़ानो और आपका स्टॉफ ज़ाने। किसके सौ सर है, जो एक-एक मोहतरमा से अपना सर ख़्रपाये?(रोकड़ राशि रखती है, मेज़ पर)

रेशमा बेग़म- अल्लाह पाक पर भरोसा रखो, बेग़म। तैश ना खाओ, ख़ुदा कोई रास्ता दिखला देगा। काम से, क्या डरना? कौनसा अपने

घर का काम, कर रही हो? अब उठाओ, इस केश को... अब, मुझको ही कुछ करना होगा।

(मुताज मेज़ पर रखा केश उठाती है, रशीदा बेग़म टेबल पर रखी घण्टी बजाती है। दराज़ से पेपर निकालकर, बड़ी बी साकिब मियां व मुमु बाई के तबादले का ब्यौरा देकर पार्टी का चन्दा भेजने का हुक्म लिखती है। फिर तैयार तहरीर के नीचे, अपने दस्तख़त करती है। तभी शमशाद बेग़म कमरे में दाख़िल होती है, बड़ी बी उसे पेपर थमाकर कहने लगती है।)

रशीदा बेग़म- (पेपर थमाती हुई) - जाओ, इस पेपर पर स्टॉफ के दस्तख़त ले लेना। और साथ में, उनसे पार्टी का चंदा लेती आना।

(मंच रोशन होता है, रशीदा बेग़म अपने कमरे में बैठी है। आंखें बंद की हुई, वह बड़बड़ाती जा रही है।)

रशीदा बेग़म- (बड़बड़ाती हुई) - जाओ, इस पेपर पर स्टॉफ के दस्तख़त ले लेना। और साथ में, उनसे पार्टी का चंदा लेती आना।

(तभी फ़ोन की घण्टी बजती है, फ़ोन के पास खड़ी शमशाद बेग़म चोगा उठाती है। फ़ोन करने वाले की ज़ानकारी हासल करके, फिर फ़ोन का चोगा उठाये हुए... बड़ी बी को, ज़ोर से बोलती हुई कहती है।)

शमशाद बेग़म- (चोगा थमाती हुई) - बड़ी बी, आप 'पार्टी का चंदा लेती आना' बार-बार क्यों कह रही है? हुजूर, चंदा भी आ गया और पार्टी भी हो गयी है। अब तो आप इस चोगे को थामिये, डी.ई.ओ. साहब का फ़ोन आया है.. उनसे गुफ़्तगू कीजिये। जाती हूं, अभी मुझे दूध लाना है।

(शमशाद बेग़म की आवाज़ सुनकर, रशीदा बेग़म चौंकती है और फिर, वर्तमान में लौट आती है। सामने, चोगा थामे शमशाद बेग़म दिखायी देती हे। शमशाद बेग़म से चोगा लेकर, अब वह डी.ई.ओ. साहब से गुफ़्तगू करने में व्यस्त हो जाती है। इधर शमशाद बेग़म, रूख़्सत होती हुई दिखायी देती है।)

रशीदा बेग़म- (फ़ोन पर) - आदाब, हुजूर। हुक्म दीजिये।

डी.ई.ओ. - (फ़ोन से) - मेडम, आपको कई बार कहा के, आपको अधिक ठहराव पर रहने वाले मुलाज़िमों की फ़ेहरिस्त तैयार करके इस दफ़्तर में भेजनी है। मगर, अभी तक आपने नहीं भेजी?

रशीदा बेग़म- हुजूर, आज़ ही रवाना करती हूं। मुझे मालुम है, तबादले की फ़ेहरिस्त निकल रही है।

डी.ई.ओ. - (नाराज़गी से) - एक और बात आपको याद दिला दूं, अपनी स्कूल के कर्मचारियों को हिदायत दे दीजिये...एक बार। आगे से कोई भी मुलाज़िम इस दफ़्तर में बार-बार फ़ोन लगाकर, तबादलों की ज़ानकारी लेने के बहाने... दफ़्तरेनिगारो को, परेशान नहीं करेगा।

(फ़ोन रखने की आवाज़ आती है, रशीदा बेग़म चोगा क्रेडिल पर रख देती है। फिर, चहकती हुई कहती है।)

रशीदा बेग़म- (चहकती हुई) - अब तो इस इमतियाज़ की बच्ची को, लेसन देना बहुत ज़रूरी हो गया है। कम्बख़्त स्टॉफ को खूब भड़काती रहती है, अब इसने ख़ुद दफ़्तर में फ़ोन लगाकर अपने

पांव पर कुल्हाड़ी मारी है। इस वाकया की, अब ऐसी ख़बर बनाती हूं... के, यह मोहतरमा...

(मंच पर, अंधेरा छा जाता है।)

(५)

(मंच रोशन होता है, बरामदे में बड़ी बी के कमरे की एक खिड़की खुलती है। वहीं दाऊद मियां की सीट लगी है, इस समय सीट पर बैठे दाऊद मियां झपकी ले रहे हैं। उनके पहलू की कुर्सी पर बैठे शेरखान साहब भी, खर्राटों की दुनिया में खोये हुए है। कुछ दूर ही अपनी सीट पर बैठे जमाल मियां, फाईल में दबी मेग्जीन को आराम से पढ़ रहे हैं। पढ़ क्या रहे हैं? वे तो फिल्म तारिकाओं के अर्धनग्न पोज़ देखते हुए, ख़ाली पन्नें उलटते जा रहे हैं। अब उनके सामने केबरा डांसर हेलन के पोज़ आते हैं, ऐसे अश्लील पोज़ देखते ही मियां के मुंह से सिसकारी निकल पड़ती है।)

जमाल मियां - (हेलन का पोज़ देखते हुए) - आहाऽऽ क्या हुस्न है, मेरी ज़ान?

(पानी का लोटा लिये, इधर शमशाद बेग़म आ रही है। ख़ुदा की पनाह..यह क्या ? एक पीरजाल मोहतरमा के कानों को जहां कुरआन की आयते सुनने की आदतें हैं, वहां उन बदनसीब कानों को यह वहशी जुमला व सिसकारी सुनाई दे जाती है। फिर, क्या ? ख़ाला का आंखें तरेर कर बोलना, उसकी मजबूरी बन जाती है।)

शमशाद बेग़म- (आंखें तरेरती हुई) - क्या....?

जमाल मियां - (शमशाद बेग़म के चेहरे की, झुर्रियां पर नज़र डालकर) कहां है ऐसी खूबसूरत हूर, इस स्कूल में? ख़ाली सूखी खेती है, बस।

(इतना सुनते ही, शमशाद बेग़म मुंह बिगाड़कर आक़िल मियां के पास चली जाती है। अब दरवाज़े की ओट में खड़े, तौफ़ीक़ मियां... इस जुमले को सुन लेते हैं। ख़ाला को वहां न पाकर, झट दरवाज़े की ओट से बाहर निकल आ जाते हैं। बाहर आकर, कहने लगते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - क़िब्ला क्या अर्ज़ किया है, आपने? मगर सुनकर हमारी तबीयत ख़ुश नहीं हुई, जनाब...यह क्या? लहराती खेती को आप, सूखी खेती कह रहे हैं? ला हौल व ला कुव्वत, ख़ना (मिथ्या) बातें ना कीजिये जनाब। अभी तक आपने देखी क्या है, हूर...

जमाल मियां - (अचरच से) - क्या कहा, हूर की परी? जो, आंखों में दुख़्तरेरज लिये खड़ी हो।

तौफ़ीक़ मियां - (इधर-उधर देखकर, तसल्ली करके) - वही...वहीऽऽ हुस्नआरा गुलशने स्कूल.... रोशन आरा, क्लास नाइन्थ की दुख़्तरा।

जमाल मियां - (ख़ुश होकर) - चुप मत रहो, भाईज़ान। बताइये...बताइये, कहां रहती है? कैसी है, वह? कहीं वो तो नहीं है, जिसने अभी स्कूल की बेस्ट एथेलिट का ख़िताब जीता है।

(तौफ़ीक मियां उनके कान में फुसफुसाकर कहते हैं, तभी आक़िल मियां के कमरे से बाहर आती हुई शमशाद बेग़म यह मंजर देख

लेती है। फिर क्या? दाऊद मियां के पास जाती है, और उन्हें झंझोड़कर कहती है।

शमशाद बेग़म- (दाऊद मियां को झंझोड़कर, कहती है) - उठिये ना हेड साहब, आप यहां बैठे हैं और यह ज़ाहिल छोरा क्या...क्या (जबान अटक जाती है) और ये अंसारी तौफ़ीक़ मियां, बहदवास होकर ज़ोलीदःबयानी करते जा रहे हैं...हमने तो इनको....

दाऊद मियां - (आंखें खोलकर, कहते हैं) - रोज़हदीन मोमीन समझा....हां, वे है ही ऐसे। ख़ाला आप मुझे सोया हुआ ना समझा करें। मैं जगा हुआ हूं, आंखें मूंदकर। आप बेनियाम मत हो, आप ज़ानती नहीं तौफ़ीक़ मियां को? वे हमारे मुख़्बिरे सादिक हैं, आप फ़िक्र ना किया करें।

शमशाद बेग़म- (नज़दीक आकर) -ज़ानती हूं, वे आपके मुख़्बिरे सादिक है। मगर यह सोचा करो, मियां। आपकी आंखों के सामने ही, यह लम्पट छोरा.. ना ज़ाने, कब क्या करेगा? स्कूल की सारी इमेज ख़राब कर देगा, हुजूर।

दाऊद मियां - ख़ाला, आप समझा करो। कहीं आपकी ऐसी नादानी, इस जमालिये के दिल में संदेह के बीज ना बो दे? कहीं, ये तौफ़ीक़ मियां हमारे मुख़्बिरे सादिक हैं? आप, ज़रा साचिये। फिर इस लम्पट के ख़िलाफ़ वे साबूत कैसे बटोरेंगे, समझ गयी अब आप तौफ़ीक़ मियां को?

(उधर काफ़ी देर तक तो जमाल मियां, तौफ़ीक़ मियां से गूफ़्तगू करते हैं। मगर अचानक, वे तौफ़ीक़ मियां को पानी लाने का हुक्म दे डालते हैं।)

जमाल मियां - भाईज़ान, आप तो छुपे रूस्तम निकले? अचरच होता है, भाईज़ान। छोरियों के मआमले में, इतनी ढेर सारी ज़ानकारी आपके पास आ गयी कैसे....? अरे जनाब, आपने तो हमारा दिल जीत लिया...

तौफ़ीक़ मियां - हम कहां तालिफ़े कुलूब रखते हैं? अलहम्दालिल्लाह..।

जमाल मियां - ख़ुश कर दिया, जनाब। आपसे रोमांस की बातें सुनते-सुनते, हमारा गला युसुबत हो गया। अब ज़रा आबे जुलाल (शुद्ध जल) लेते लाइये, भाईज़ान।

(तौफ़ीक़ मियां जाते हैं, उनके ज़ाने के बाद जमाल मियां दाऊद मियां की तरफ़ देखते हुए कहते हैं।)

जमाल मियां - (दाऊद मियां से) - हेड साहब, हमें तो यह स्कूल 'स्कूल' नहीं लगता...पूरा बूचड़ख़ाना लगता है, मियां। देखिये ज़रा, बड़ी बी ने अपुन दोनों को घसियारा समझ रखा है। बैठा दिया, बरामदे में...यह कोई, दफ़्तरेनिगारों के बैठने की जगह है?

शमशाद बेग़म- (स्टूल पर बैठती हुई) - नहीं हुजूर, यह तो हुस्ने नज़ारा पाने की ठौड़ है। क्या कहें, हुजूर? यहां तो हुस्न की मलिकाओं के दीदार, बिना कोसिस किये हो जाते हैं।

जमाल मियां - (झेंपते हुए) - क्यों हमारी आबरू रेज़ी कर रही है, आप? हम नूरिया-जमालिया चवन्नी क्लास नहीं है, हम निहाल

अली साहब के नेक दख़्तर हैं। ख़ानदानी नवाब हैं, ख़ाला। क्या समझी, आप?

दाऊद मियां - आपको ज़ानते हैं, पहचानते हैं। जनाब नवाबी शान-शौकत के आदी है, कभी तो चाहिये आपको अलग कमरा तो कभी चाहिये नवाब सहब को बैठने के लिये रिवोल्विंग चेयर।

शमशाद बेग़म- गुफ़्तगू करने के लिये, पास रखा हो टेलीफ़ोन। और क्या चाहिये, साहबजादे? जनाब, पहले बैठकर इस सेलेरी बिल की टोटले तो चेक कर लीजिये। (दाऊद मियां की टेबल पर रखे, सेलेरी बिल उठाकर जमाल मियां को देती हुई) बेचारे हेड साहब कब से, सर... ?

जमाल मियां - (दाऊद मियां की ओर देखते हुए) - देखिये हेड साहब, सबको अपना-अपना काम करना चाहिये। आक़िल मियां ने, बिल बनाया है। तो जनाब, आप इसको चैक कर लीजिये। फिर क्या? मैं इसे डिस्पेच करके, ट्रेजरी भेज दूंगा।

दाऊद मियां - ठीक है, जैसे आपकी मर्जी। आप डिसपेच करके, बिल दे दीजिये...मैं चैक कर लूंगा। (शमशाद बेग़म से) ख़ाला, ज़रा.. जमाल मियां से डिसपेच करने के बाद, इस सेलेरी बिल को इधर लेते आना।

(कुछ देर बाद, बिल वापस लौटता है दाऊद मियां के पास। अब दाऊद मियां केलकुलेटर हाथ में लेकर, जोड़े (जरब) मिलान करने बैठ जाते हैं। मगर, क्रोस मिलता नहीं। तब वे आवाज देकर, शेरखान साहब को बुलाते हैं। थोड़ी देर में, शेरखान साहब बिल व केलकुलेटर लेकर बैठ जाते हैं।

शेरखान साहब - (जरब मिलाते हुए) - हुजूर, अगर जरब मिला दी तो आपको प्लोटों की ज़ानकारी मुझको देनी होगी। कौनसा प्लोट ख़रीदूं, जिसकी कीमत जल्द बढ़ जाये।

दाऊद मियां - आप काम कीजिये, हुजूर। क़िब्ला, आपसे उज्र कैसा? आपके एहबाबों से हम...

(शेरखान साहब जरब मिलाने की कोशिश करते हैं, मगर काफ़ी माथा-पच्ची करने के बाद भी क्रोस नहीं मिलता है। तब वे हेड साहब की तरफ़ देखते हुए, कहते है।)

शेरखान - अरे, जनाब। पहले आप यह बताएं, के आपके सिवा यह बिल.. किन-किन लोगों के हाथों से, गुज़रा है?

शमशाद बेग़म- (बीच में बोलती है) - और किसके पास जाये, हुजूर? जमाल मियां ने डिस्पेच करने के लिये लिया था, इस शैतान के ख़ालू ने दस-पन्द्रह मिनट ख़राब कर दिये हमारे ख़ाली डिस्पेच करने में। इसके पास क्या खड़ी रहूं, मर्दूद बार-बार काम के लिये बाहर भेजता रहा मुझे।

शेरखान - (मुस्कराते हुए) - अब तो पूरी तसल्ली से देखूंगा, बिल। क़ाबिल एतराज है.. (बिल के हर इन्द्राज की, लिखावट देखते हैं... फिर, स्याही का मिलान करते हैं। अचानक वे ज़ोर से बोलते हैं) पकड़ लिया...पकड़ लिया।

दाऊद मियां - क्या पकड़ा? कहीं आपने अपनी रीश तो ना पकड़ ली ?

(बरामदे में चल रही रशीदा बेग़म ने सुन लिया, उनके पांव थम जाते हैं। वे क़रीब आकर, ख़ुशी से कहती है।)

रशीदा बेग़म- (चहकती हुई) - क्या पकड़ लिया, मियां? आख़िर पकड़ लिया, क्या? उस शैतान चूहे को...? काफ़ी परेशान हो चुकी हूं, मैं। कम्बख़्त मेरे खाने का टिफिन खोलकर, रोज़ मेरा खाना बरबाद कर देता है।

(तभी पास के क्लास रूम के बाहर खड़ी इमतियाज़, चिल्ला उठती है।)

इमतियाज़ - अरे दाऊद मियां पकड़े रखना, इस चूहे को। मेरा पर्स काट डाला, इस मर्दूद ने। आकर, सज़ा देती हूं उसे।

दाऊद मियां - (हंसी के ठहाके लगाकर, ज़ोर से कहते हैं) - चूहा नहीं, मेडम। शरारत पकड़ ली, देखो किसकी? आईये..आईये। देख लीजिये, यह जमाल मियां की शरारत थी।

(फिर क्या? गुस्से से काफ़ूर होकर, इमतियाज़ वहां आकर जमाल मियां का गला पकड़कर कहने लगती है।)

इमतियाज़ - (जमाल मियां का गला पकड़कर) - कम्बख़्त तूने मेरा पर्स काट डाला, अब पैसे कौन भरेगा...तेरा बाप ?

रशीदा बेग़म- अरे इमतियाज़ बी, इस इस शैतान के ख़ालू को छोड़ना मत। इसने बरबाद कर दिया, मेरा खाना।

दाऊद मियां - (बिल देखते हुए) - छोड़ना मत मेडम, इस नामाकूल ने सेलेरी बिल का सत्यानाश कर डाला।

शेरखान - इस बिल को तैयार करने में, अल्लाह ज़ाने कितनी मेहनत की होगी आक़िल मियां ने ? काली सुर्ख स्याही से क्या तैयार किया है बिल, हुजूर ? वाकयी, क्या ख़ुबसूरत तहरीर थी ? मगर इस कमज़ात ने डिस्पेच करने के बहाने, बिल का सत्यानाश कर डाला।

रशीदा बेग़म- (चौंकती हुई) - ऐसा क्या कर डाला, मियां ?

शेरखान - क्या नहीं किया मेडम, इसने ख़ाली इन्द्राज पर पच्चास रूपये आसमानी स्याही से लिखकर बिल का कबाड़ा कर दिया।

दाऊद मियां - फिर क्या ? जरब का क्रोस, आख़िर मिले कैसे ? मेडम, हर जांच के बाद पच्चास रूपये का अन्तर आने लगा। आख़िर, शेरखान साहब ने तहरीर व स्याही का अन्तर पाकर इस कुबदी की शरारत पकड़ ली।

(तभी कमरे से निकलकर, आक़िल मियां बाहर आते हैं। बाहर आकर, वे बड़ी बी से कहते हैं।)

आक़िल मियां - बड़ी बी, आपने यह आरोप कैसे जड़ दिया हमारे ऊपर? बीस दिन पहले हमने अधिक ठहराव दर्शाने वाली फ़ेहरिस्त तैयार की, और उसी दिन उस फ़ेहरिस्त पर आपके दस्तख़त लेकर जमाल मियां को दफ़्तर भेजने के लिये सुपर्द कर दी।

शमशाद बेग़म- ठहरिये जनाब, अभी-अभी हमें कुछ याद आया। कल ही जमाल मियां की दराज़ों की सफ़ाई की, इनकी दराज़ में

अधिक ठहराव वाली डाक पड़ी देखी थी। जब यहां डाक पड़ी होगी, तब ख़ाक जायेगी डी.ई.ओ. ओफिस?

रशीदा बेग़म- कम्बख़्त चूहा नहीं, यह तो छछूंदर निकला। जाओ ख़ाला, उस छछूंदर की दराज़ से अधिक ठहराव वाली डाक निकाल कर लेती आओ।

(शमशाद बेग़म जमाल मियां की दराज़ से, अघिक ठहराव वाली डाक निकाल लाती है। उधर दाऊद मियां टोटले सही करके, सेलेरी बिल बड़ी बी को थमाते हैं। बड़ी बी सेलेरी बिल व अधिक ठहराव वाली डाक पर अपनी निगाहें डालती है। दोनों दस्तावेज का मुआयना करने के बाद, खिन्नता से आक़िल मियां को दोनों दस्तावेज लौटाकर कहती है।)

रशीदा बेग़म- आक़िल मियां, यह कम्बख़्त ना तो चूहा है और ना है छदूंदर। यह तो फ़न फैलाये बैठा, कोबरा नाग निकला। बस इसे छेड़ो मत, ना तो काट खायेगा। देख लो...

आक़िल मियां - क्या देखूं, हुजूर ?

रशीदा मेडम - सेलेरी बिल पर बीसों कटिंग एटेस्टेशन, और अधिक ठहराव वाली डाक पर.. गोंद व स्याही डालकर, बरबाद कर दी पूरी डाक।

आक़िल मियां - (उदासी से) - लाईये मेडम, बिल और डाक। आख़िर इस कोबरा नाग ने सबको छोड़कर, मुझे ही डसा है। सच तो यह है...

शमशाद बेग़म- फिर, सच क्या है?

आक़िल मियां - ना तो इसने इमतियाज़ मेडम का पर्स कुतरा, और ना इसने बड़ी बी का टिफिन खोलकर खाना बरबाद किया...बस अब हमें ही भुगतना है इसके जहर को, सेलेरी बिल और अधिक ठहराव वाली डाक वापस तैयार करके।

रशीदा बेग़म- ऐसे जहरीले नाग को खुला छोड़ना, ख़तरे से ख़ाली नहीं। जाओ ख़ाला, उस जमाल मियां को लेकर आओ हमारे कमरे में। अब हम, कमरे में जाकर इसके खिलाफ़ स्पष्टीकरण लेटर तैयार करते हैं।

शमशाद बेग़म- कहां से पकड़कर लायें, उसे? हुजूर, वह तो डी.ई.ओ. ओफिस जा चुका है... तबादले की लिस्टें, टाईप करने।

(अब आक़िल मियां को, सेलेरी बिल और अधिक ठहराव वाली डाक तैयार जो करनी है। इसलिये, वे अपने कमरे की तरफ़ क़दम बढ़ाते हैं। उनके ज़ाने के बाद, बीती बातें याद करके दाऊद मियां का दिल जलने लगा। गुस्से में, वे कहने लगे।)

दाऊद मियां - (गुस्से में) - गारत कर दिया बिल, इस बदतमीज़ ने। कम्बख़्त जमालिये ने बाइसेरश्क से वाहियात हरकत करके, हमें गर्दिशज़द बना दिया...ख़ुदा रहम..। हाय अल्लाह, अब हमें एक बार और इस बिल को चैक करना होगा।

(फिर क्या? दाऊद मियां का मायूस चेहरा देखकर, रशीदा बेग़म और इमतियाज़ उनके क़रीब आकर उनके पहलू में रखी कुर्सियों पर बैठते हैं। फिर, क्या ? अब इमतियाज़ बी, जमाल मियां की शिकायत करने बैठ जाती है।)

इमतियाज़ - बड़ी बी, इस चमान जमाले में दुनिया जहान के एब भरे पड़े हैं। मेडऽऽम..। इसकी फ़ितरत कुछ ऐसी है, यह कभी सदाकत से बात नहीं करता। इस नामाकूल के शऊर, अब कुछ ऐसे हो चुके हैं... के, सरे बाज़ार इस पर मखमली जूतियां चलाऊं।

रशीदा बेग़म- आपको क्या हो गया, इमतियाज़ बी? ख़ैरियत तो है?

इमतियाज़ - (तमतमाती हुई) - ख़ैरियत? काहे की, ख़ैरियत? जब तक यह उल्लू इस स्कूल की हर डाल पर बैठा दिखायी देगा, तब तक पूरा स्टॉफ बेकैफ़ रहेगा।

दाऊद मियां - मैं बताता हूं, बड़ी बी। हुआ यूं, इस लंगूर ने अफ़वाह फैला दी... के, इमतियाज़ मेडम का तबादला कहीं हो गया है। फिर, क्या? बेचारी इमतियाज़ मेडम, डी.ई.ओ. ओफिस का चक्कर लगा-लगा कर हो गयी परेशान।

शेरखान - इनको परेशान देखकर, दाऊद मियां ओफिस का चक्कर काट आये। अजी पत्ता क्या लगाया, पूरा वाकया....यह तो तरन्नुम

में आफ़रानी थी, मेडम। के तबादलों पर लगा है, बेन... और, ओफिस ने ऐसे तबादलों की फ़ेहरिस्त कभी बनायी ही नहीं.....

दाऊद मियां - और बड़ी बी....यह बेचारी इमतियाज़ बी...इन नामाकूल दफ़तरे निगारों की नज़रों में आ गयी, के 'इमतियाज़ का लोंग स्टे है, दस साल से यहीं बैठी है...'

इमतियाज़ - (रूंआसी होकर) - हां मेडम, जो बात इतने सालों से दफ़्तर वालों को मालुम नहीं थी...वह बात, इस ख़बती के रज़ील काम करने से सबके सामने आ गयी। हाय अल्लाह, अब क्या होगा?

रशीदा बेग़म- अरी इमतियाज़ बी, यह जमालिया तो जाहिल ख़ुराफ़ती निकला। अब तुम ही बताओ मेडम, इस नामाकूल को कहां बैठाऊं? जहां बैठाऊं, वहां शरारत करने लग जाता है।

शमशाद बेग़म- यह शैतान, क्या बाज़ आये? अभी भी मेरी आंखों के आगे हरकत करता हुआ, नौ दो इग्यारह हो गया। देखिये, अब कहां है बरामदे में?

इमतियाज़ - (जाली से बाहर, बगीचे में देखती हुई) - शायद बगीचे में बैठकर, यहां की बातें छुपकर सुन रहा हो?

शमशाद बेग़म- इमतियाज़ बी वसूक रखो हम पर, कह रहीं हूं वह डी.ई.ओ. ओफिस चला गया है टाईप करने। वापस आकर, कल फिर अफवाह का बाज़ार गर्म करेगा... अमुख-अमुख मोहतरमाओं के, तबादले हो रहे हैं।

(मगर जमाल ठहरे, एक नम्बर के खुराफ़ती। डी.ई.ओ. ओफिस ज़ाने वाले कहां? वे तो, बगीचे में ही मौज़ूद। उनकी फ़ितरत, कुछ ऐसी.. बस वे तो तमतमायी मेडमों के चेहरे देखकर, खिल खिला कर हंसने का काम किया करते हैं। अब इमतियाज़ बी की निगाहें केली के पौधों पर गिरती है, वहां पौधों बीच छुपे हुए जमाल मियां इन लोगों की गुफ़्तगू सुनते दिखायी देते हैं। उनकी निगाह जैसे ही इमतियाज़ बी पर गिरती है, तुरंत उन्हे चिढ़ाने के लिये तुक्कड़ नग़मा गा बैठते हैं।)

जमाल मियां - (तुक्कड़ नग़मा गाते हुए) - 'दूर दूर रहो आपा, तो काम करोगी। देण करोगी आपा, तो जाल में फंसोगी। बल्ले बल्ले होय आपा, मज़े करोगी। मुझको छोड़ आपा, देखो अपने काम को। जिदर जाये सींग मेरे, उदर ही जाणे दो। पायी ऐसी क़िस्मत मैने, काम नहीं करते हैं। दूर दूर रहना आपा, ऐश ही करेंगे। दूर रहोगी आपा, तो काम करोगी।

इमतियाज़ - (जाली पकड़कर, गुस्से मे कहती है) - इधर आ चमान, तूझे ऐश कराती हूं।

जमाल मियां - (चिढ़ाते हुए, तुक्कड़ नग़मा वापस गाते हैं) - काम ना बताओ मुझको, जवाब क्या देणा हो? पड़े रहते जेब में, चाहे जब काम लो।

दाऊद मियां - (चिढ़कर कहते हैं) - कम्बख़्त अन्दर आ, ये डाकें तैयार कर आकर। स्ेलेरी बिल भी, ट्रेजरी भेजना है।

जमाल मियां - (हंसते हुए, तुक्कड़ नग़मा आगे गाते हैं) - जब बैठेंगे चेयर पे, सुट्ठो सब कुछ चाहिये। ढेरों सारी फाईलें, पड़ी रहती मेज़

पे। फाईलों के बीच में, मेग्जीन छुपी रहती प्रेम से। मेग्जीन को पढ़ते पढ़ते, घड़ी को देखे है, चार कब बजेंगे।

शमशाद बेग़म- अरे मियां। चार बजने का नाम लेकर, कहीं ज़ाना मत। चाय बना रही हूं, पीकर ज़ाना।

जमाल मियां - (तुक्कड़ नग़मा गाते हुए) - घण्टा भर पहले पहले, अलमारी को बंद करे हैं। इदर उदर पहले पहले हफ़्वात मारे हैं, साथे साथे बैठे बैठे टांग ऊंची रखे हैं। चाय वाय बना दें पहले, बस स्टेण्ड ज़ाना है। बीबी को रिसीव करने, जल्दी मुझे ज़ाना हैं। जल्दी चाय बना दो ख़ाला, ख़ुश ख़ुश रहोगी। देण करोगी ख़ाला, तो जाल में फंसोगी।

इमतियाज़ - अरे, ख़बीस के बच्चे। तबादले की सच्ची ख़बर रखता नहीं, और उल्लू की दुम चला है अफ़वाह का बाज़ार गर्म करने?

जमाल मियां - (चिढ़ाते हुए, नग़मा गाते हैं) - किन किन के तबादले, हण्डरेड परसेण्ट स्योर है। डी.ई.ओ. ओफिस जाकर हमने, टंकण काम किया है। कौन ज़ाने कितनी रातें, काली हमने की है।

इमतियाज़ - (बेनियाम होकर) - इधर आ, उल्लू। रातें काली की तूने, अब आ इधर तू.. (जहां इमतियाज़ खड़ी है, वहां डब्बे में ब्लेक-बोर्ड पोतने तैयार मसाला रखा है। उसे उठाकर, वह कहती है।) अब तेरा मुंह काला करती हूं.....कालीख़ पोतकर। ठहर जा, चमान।

(इमतियाज़ को चिढ़ाने के लिये जमाल मियां जीभ निकालते हैं, फिर अंगुठा दिखाकर नग़मा वापस चालू करते हैं।)

जमाल मियां - (नग़मा गाते हुए) - ओफिस में जाओ मत, बदली तुम्हारी स्योर है। बार बार फ़ोन लगाकर, खर्चा मत बढ़ाओ तुम। दूर रहोगी हमसे, चैन से रहोगी। देण करोगी आपा, जाल में फंसोगी।

(अब तो इमतियाज़ बी, बर्दाश्त नहीं कर पाती। फिर, क्या? पांव की जूती निकालकर, जमाल मियां को पीटने के लिये उतारू हो जाती है। तभी उनके पीछे, कई मेडमें आकर खड़ी हो जाती है। अब दाऊद मियां के कहकहे गूंज़ उठते हैं, उनके कहकहों में सभी मेडमें

साथ देने लगती है। तभी, बड़ी बी की रौबीली आवाज़ सुनायी देती है।)

रशीदा बेग़म- (रौब से) - अरी, ओ इमतियाज़ बी। अब तिफ्लेअश्क गिराना बन्द करो। यह तो ठहरा, 'तबादला-ए-परवाज़े-तख़य्युल।' इस ख़बती ने, तुम्हारे साथ मुज़हाक की है।

(बड़ी बी के समझाने पर, अब इमतियाज़ अपने पांव में जूती पहन लेती है। फिर क्या? अपने-आपको सुपर समझने की सक़त कर बैठती है, और अपनी खिसयानी हंसी से पूरा बरामदा गूंजा देती है...जैसे, उसे कुछ हुआ ही नहीं। सभी जाते हैं, उनके पांवों की पदचाप सुनाई देती है। मंच पर, अंधेरा छा जाता है।)

(अजज़ा ६) साहब.....गुलाम बीबी के। लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

(१)

(मंच रोशन होता है, दीवार पर टंगी घड़ी शाम के छः बजे का समय बता रही है । शमशाद बेग़म उठकर छुट्टी होने की घण्टी लगाती है, मेडमों का झुण्ड गेट से निकल रही दुख़्तराओं को परे हटाकर, वह झुण्ड अेक-साथ बाहर निकल जाता है। बरामदे में खड़े दाऊद मियां इस मंजर को हैरत से देखने लगते है, फिर क्या? बरबस उनके मुंह से, कुछ व्यंगात्मक जुमले ज़रूर निकल पड़ते हैं।)

दाऊद मियां - वाह री दुनिया। क्या से क्या, हो गया? सबको पड़ी है, जल्दी घर लौटने की। बस, ख़ाली हमें छोड़कर।

(चहलक़दमी करते हुए जाफ़री की तरफ़ बढते हैं, वहां कुर्सी पर बैठे मियां शेरखान आराम से नींद लेते जा रहे हैं...फिर क्या? यह मंजर देखकर, दाऊद मियां बिना बोले रह नहीं पाते।)

दाऊद मियां - अब नींद लेना छोड़ो, मियां। छुट्टी हो गयी है, स्कूल की। कैसे बुरे दिन आ गये हमारे...ये कम्बख़्त जैलदार, रूकते नहीं छुट्टी के बाद? मर्दूद अपने आपको, अफ़सर समझने लगे हैं। अब कमरों के ताले, इनके वालिद आकर लगायेंगे?

शेरखान - (जम्हांई लेते हुए) - कम्बख़्त ना कहो, हेड साहब। 'फोर्थ क्लास अफ़सर' कहा करो इन्हें, बस, इसी में आपकी समझदारी है।

(कमरे का लॉक लगाकर, आक़िल मियां बरामदे में आते हैं।)

आक़िल मियां - वज़ा फ़रमाया, खान साहब। नही ंतो जनाब, लेने के देने पड़ जायेंगे। ज़रा सोचिये, अगर इस नूरिया बन्ना ने सुन लिया तो... बेचारा बदऔसान होकर, सामने की किसी भी दुकान में जाकर छुप जायेगा। आप बतौरे यहां बैठे, उसका इन्तज़ार करते रह जायेंगे....

दाऊद मियां - फिर क्या? आगे और कुछ, कहना है आपको ?

आक़िल मियां - अल्लाह रहम। इन बदअंदेशी मोहल्ले वालों का क्या कहना, फिर ? कहेंगे हुज़ूर, 'स्कूल में क्या गुल खिला रहे हैं, आप...? इतनी देर कैसे रूके, हुज़ूर?' मैं तो रूख़्सत होता हूं, जनाब।कोशिश

दाऊद मियां - काहे भगते हो, मियां? बाइसेशर्म नहीं, वे लोग बेख़बर रहे? हमें करना, क्या? हम कौनसा यहां बज़्मेरक़्स का प्रोग्राम रखते हैं, मियां? अजी गुल मत कहो....गुड़ कहो। गुड़ पड़ा है, घी और चून मंगाना है....बस। दस-दस रूपये निकालिये, अभी बनता है हलुआ...ख़ूब मज़ा आ जायेगा, मियां।

आक़िल मियां - अरे हेड साहब, ज़रूर मज़ा आ जायेगा। एक से दो फ़ायदे....वक़्त तो गुज़रेगा ही, मगर छुपा हुआ नूरिया बन्ना बाहर निकल पड़ेगा...इस हलुवे की महक पाकर। लीजिये, हमारे हिस्से के दस रूपये। (जेब से रूपये निकालते हैं)

(दाऊद मियां, आक़िल मियां व शेरखान से दस-दस रूपये लेते हैं। फिर बरनी व थैली लेकर, सामाने ख़ुरोनोश ख़रीदने बाबत बाहर निकल पड़ते हैं। जनाब के रूख़्सत होते ही, मियां शेरखान वापस ख़्यालों की दुनिया में खो जाते हैं। आक़िल मियां ख़ाली कुर्सी पर, बैठ जाते हैं। शेरखान साहब को नीमबाज़ पाकर, वे अपने बेग से काग़ज़-कलम निकालते हैं। फिर आराम से बैठकर, शेर लिखना

शुरू करते हैं। लिखने के बाद, मुराखतः कलाम पेश करते हुए शेरखान साहब को सुना बैठते हैं। अल्लाह की कसम,)

आक़िल मियां - बादःसाजी करना अब छोड़िये जनाब, मौजूदे नीमबाज़ जब बहे, बादे नसीम।

(न ज़ाने यह नूरिया बन्ना कहां से निकल आता है, और वहां प्रगट होता हुआ शेर की तारीफ़ में कुछ कह बैठता है।)

नूरिया - क्या हासिले तरह शेर पेश किया, हुज़ूर। आप तो कमाल के शायर निकले, हुजूर के मुंह से शेर सुनने का मौक़ा हमें कभी-कभी हासिल होता है। क्या करें, हुज़ूर? यह आसियत की ड्यूटी, जो ठहरी हमारी। हमारी इल्तिज़ा है हुज़ूर, आप बस सुनाते रहिये ये जाज़िबेनज़र शेर।

(नूरिया सब पर नीम निगाह डालकर, शेरखान साहब के पास चला आता है। उन्हे नीमतस्लीम करके, हुक्म लेने के लिये खड़ा हो जाता है।)

शेरखान - (जम्हाई लेते हुए) - ला रे नूरिया, पानी। इन आंखों पर छिड़कते हैं, यार। न ज़ाने, ये नींद इन आंखों से कब ओझल होगी?

(नूरिया लोटा भरकर, पानी लाता है। शेरखान साहब जाली के दरवाज़े के पास जाकर, अपनी आंखों पर पानी का छिड़काव करते हैं। छिड़काव करने के बाद, लोटा वापस उसे थमा देते हैं। फिर, कुर्सी पर बैठते हुए कहने लगते हैं।)

शेरखान - नूरिया यार, अभी हलुआ बना नहीं.....और, धमक गया साले। क्या, महक आ गयी क्या ?

नूरिया - (हाथ जोड़कर) - हुज़ूर। इस ख़िदमतगार की नीम निगाही से, कोई बच नहीं सकता। हुज़ूर, हमने हेड साहब को किराने की दुकान पर सामाने ख़ुरोनोश ख़रीदते देख हुए लिया था। उन्हे देखकर हमने अन्दाज लगा लिया, के अब कुछ खाना-पीना होगा। फिर, नीम दस्त जमेगी...फिर...

शेर खान - (रूमाल से मुंह पोंछते हुए) - आगे बोल, नूरिया। चुप क्यों हो गया?

नूरिया - फिर, हम बाकी कैसे रहे हुज़ूर? हम तो जनाब, ख़ुशअख़्तर ठहरे ख़ुदा के फ़जलो करम से। मनु भाई की दुकान पर, खड़े-खड़े बामज़ नमकीन खा रहे थे....और वहीं खड़े-खड़े, हमने हेड साहब को देख लिया।

(तभी सामने मेन गेट पार करके, आ रही शमशाद बेग़म के दीदार होते हैं।वह सामाने ख़ुरोनोश से भरा थैला उठाये आती है, और उनके पीछे-पीछे दाऊद मियां भी तशरीफ़ रखते हैं।)

शमशाद बेग़म- (पास आकर) - खा रहा था, बामज़ नमकीन ? नूरिया बन्ना, ज़रा नियाज़मन्द बनो। बेचारे हेड साहब इस सामान ख़ुरोनोश का थैला उठाये आ रहे थे, और तू वहां खड़ा-खड़ा इन्हें देख रहा था?

शेरखान - अरे नूरिया, उनका थैला नहीं उठा सकता था? क्या शर्म आती है, काम करने में...?

दाऊद मियां -ज़ाने दीजिये, ख़ाला। यह ठहरा कोदन, बेचारा क्या ज़ाने? हमें, कौनसी शिताबी है? अभी आये हैं...बनायेंगे, आराम से। तब, क्या लुत्फ़ आयेगा हलुआ खाने में ?

शमशाद बेग़म- यह नहीं हो सकता, हेड साहब। आप बनाये, और हम बैठे-बैठे खायें ? मैं सब पका दूंगी, हुज़ूर। बस आप इस नूरिये बन्ने को कह दें, बाद में बरतनों को मांज दें...बैठकर।

दाऊद मियां - सुन लिया रे, नूरिया ? अभी-अभी, ख़ाला ने क्या फ़रमाया ? वक़्त पर काम हो ज़ाना चाहिये, समझ गया?

(नूरिया अपनी पेण्ट की मोहरी को घुटनों तक ऊंची लाकर, पिण्डली खुज़ाने लगता है। फिर शायराना अन्दाज में कहने लगता है।)

नूरिया - (पिण्डली को खुजाते हुए) - यह साक़िब है, मेरे साक़ैन में चली आई। फिर कैसे कहूं मौला, सब काम हो जायेगा।

आक़िल मियां - अपना इलाज़ करवा, नूरिया। साक में ख़ारिश अच्छी नहीं....कर देगी डायबीटिज तूझे, फिर कहना नहीं।

दाऊद मियां - इलाज़...इलाज़, के अल्फ़ाज़ ना बोलो मियां। परेशान हूं नज़ले से। हलुआ बामज़ बनवाना है तो, आओ बैठो काम करो।

(अब दाऊद मियां आंगन पर दरी बिछा कर बैठ जाते हैं, फिर सामाने खुरानोश के थैले से मिर्च व आलू बाहर निकालकर रखते हैं। और ख़ुद मिर्ची काटने बैठते हैं, व नूरिये को आलू देते हैं काटने। चूल्हे के पास खड़ी शमशाद बेग़म कड़ाव में घी का छमका लगाती है। फिर चून डालकर चमच से हिलाती है, जिससे ख़ूशबू दाऊद मियां के नथुनों में चली जाती है। और, वे कहकहा बुलन्द करते हैं।)

दाऊद मियां - वाह ख़ाला, वाह। क्या कहना, तुम्हारी पाक कला का..?.हाय अल्लाह कुरबान हो जाऊं, क्या महक आ रही है ?

(अल्लाह रहम। न ज़ाने कहां से भिनभिनाती हुई मक्खियां, उनकी नाक पर आकर बैठ जाती है। उन्हे हटाने के लिये, उनका हाथ नाक

पर चला जाता है। हाय अल्लाह। नाक पर जलन होने लगती है, और साथ में लग जाती है...छींकों की झड़ी।)

दाऊद मियां - (छींकते हुए) - आक छींऽऽ आक छींऽऽ, हाय ख़ुदा मार डाला रे ऽऽ...।

(जेब से रूमाल निकालकर, नाक सिनकते हैं।)

शमशाद बेग़म- (पास आकर, दाऊद मियां से चाकू छीनती हुई) - आपको मना किया ना, काम मत करो। हम बैठे है ना, आपकी ख़िदमत करने। फिर काहे बैठे-बिठाये, अपने नाक को जला डाला ?

शेरखान - (नूरिये से) - बन्ना, ज़रा हाथ तेज़ चलाओ....अरे बेशर्म अगर मिर्च काट लेता तो, हेड साहब की नाक तो ना जलती ? (दाऊद मियां से) अब उठिये। ज़रा आराम कर लीजिये, हेड साहब।

(दाऊद मियां, उठते हैं। और, फिर हाथ-मुंह धोकर शेर खान साहब के पास रखी कुर्सी पर तशरीफ़ आवरी होते हैं।)

शेरखान - बाबो, भली करे।

दाऊद मियां - सच है बस, अब तो ऐसे ही चलेगा...देण नी करणी।

(स्कूल का मेन गेट खोलकर चुग्गा खां आते हुए दिखाई देते हैं, उनको आते देखकर, शेरखान खड़े हो जाते हैं। और आक़िल मियां चहलक़दमी करते हुए बरामदे के दूसरी तरफ़ चले जाते हैं, जहां जाली के पास ख़ुबसूरत फूलों के पौधे... गमलों में लगे हैं। अब शेरखान साहब, दाऊद मियां से कहते हैं)

शेरखान - लो हेड साहब, बाबो भली करे। (ज़ोर से) बा अदब होश्यिर....कबूतरे-आज़म चुग्गा खां तशरीफ़ ला रहे हैं।

नूरिया - (मिरची काटता हुआ) - हाय अल्लाह। थैली में पैसे कम, और आ गये फ़क़ीर ज्यादा। घटते थे, वो भी आ गये हुज़ूर। बामज़ हलुवे की महक़, अब दूर-दूर से लोगों को खींच लाई।

(चुग्गाखां शेरखान साब के पास आकर, नीमतस्लीम करते हैं।)

चुग्गाखां - (नीमतस्लीम करते हुए) - आदाब हुज़ूर। बाबो, भली करे।

(शेरखान साहब वापस आकर, कुर्सी पर बैठ जाते हैं।)

शेरखान - सलाम मियां। यह खातूने फ़लक, इस वक़्त कैसे ? आज़, बाबा याद कैसे आ गये ?

चुग्गा ख्ाा - क्या करूं, बाबजी ? परेशान हो गया, इन रिश्तेदारों से। चार रोज़ हुए जनाब, ख़ालाज़ान को गांव गये....और आज़ ख़ाज़नः तशरीफ़ लायी है। ख़ातून का कहना है, आपके ख़जिन आक़िल मियां रहमदिल इंसान ठहरे। उनसे, ज़ाइदअज़ उम्मीद की जा सकती है।

शेरखान - आप चाहते क्या है, आख़िर ? आक़िल मियां की, ज़ाइचः (जन्म पत्री) पढ़ना छोड़िये।

चुग्गा खां - बाबो भली करे, बाबजी। आप साथ देंगे तो, सब काम फतेह। बस आप आक़िल मियां को शिफ़ाअत कर दें के, इस

तिहीदस्त को कुछ रूपये उधार दे दें। आप तो हुज़ूर, तिफ़्लेअश्क को पोंछने वाले ठहरे।

शेरखान - जनाब, हम ठहरे फ़क़ीर। कोई, तामात नहीं मारते। ना किसी से लेना, और ना किसी से देना....तुम्हारी तसन्नो से, हम जैसे फ़क़ीरों को क्या लेना और क्या देना ? हम ठहरे अल्लाह पाक के बन्दे, बस अल्लाह की इबादत में....?

चुग्गाखां - तश्कीक में न डालो, हुज़ूर। हर क़दम बढ़ाया है हमने, आपकी तशावुर के बाद। एलकार के ओहदे की फ़ेहरिस्त जब बन रही थी, उस दौरान आप ही वो रहमदिल फरिश्ते निकले....जिन्होंने इस फ़ेहरिस्त में, हमारा नाम डलवाया। तश्क्कुर है, आपका....

शेरखान - (बात काटते हुए) - तुम्हारी बातें ज़रूर हमज़ाद है, चुग्गा भाई। मगर इस बाबा को भूल गये आप, क्या कहा था आपने? फ़ेहरिस्त में नाम जुड़ने पर सिरनी चढाऊंगा....भय्या, ये

अल्फ़ाज़ तुम्हारे है......बाबा सिरनी का भूखा नहीं, मोहब्बत का....

चुग्गा खां - (कान पकड़कर) - तौबा, तौबा.....हज़ूर, माफ़ करावे। बाबो भली करे, इस बार आप आक़िल मियां के पास हमारी शिफ़ाअत लगा दीजिये....सारी कसर पूरी कर दूंगा, हुज़ूर। इन आने वाले वेकेसन में, बाबा को सिरनी ज़रूर चढ़ेगी।

नूरिया - (ख़ुश होकर) - मान जाईये, बाबजी। चुग्गा खां के मुंह में, घी-फ़ानिज़। अगले हफ़्ते दाल, बाटा व चूरमे की पार्टी...तैयाऽऽर। वाह, फिर क्या कहना? (हाथ में आलू लेकर, डिस्को-डान्स की मुद्रा में आ जाता है) आई अेम ए डिस्को डांसरऽऽ, हा हा...

(मियां शेरखान उसका डान्स देखकर, खिल-खिला कर हंस पड़ते हैं।)

शेरखान - जोलिदःबयां है, कम्बख़्त। अब जा, एक बार आक़िल मियां को बुला ला।

(नूरिया उठता है, और आक़िल मियां को बुलाने जाता है। इधर चुग्गा खां उठते हैं, पानी लाने।)

चुग्गा खां - (पानी से भरा, लोटा थमाते हुए) - लीजिये हुज़ूर। युसुबत (सूखे) हलक़ को आबेजुलाल से तर कीजिये।

(शेरखान पानी पीकर, वापस लोटा थमाते हैं। तभी नूरिया के साथ, आक़िल मियां तशरीफ़ रखते हैं। आक़िल मियां कुर्सी पर, बैठते हैं। और इधर नूरिया बन्ना, वापस आलू-मिर्च काटने बैठ जाता है।)

चुग्गाखां - (आक़िल मियां के हाथ में, लोटा थमाते हुए) - हुज़ूर आप भी लीजिये आबेज़ुलाल। ज़रा, हलक़ को तर कीजिये।

(आक़िल मियां पानी पीकर, लोटा वापस थमाते हैं।)

आक़िल मियां - क्या अक़ूबत है, मियां? अक़ीक का प्रोग्राम है, अपने बच्चों का ? या, अक़ारिब गांव से आने वाले हैं? ऐसा सुना है, मिया। आपकी गली, कुछ आसेबज़दः लगती है? कहीं आप, आसीमः तो ना है? यही बात है, ना मियां?

चुग्गा खां - (जब्हा पर फ़िक्र की रेखाए उभर उठती है) - क्या करें, हुज़ूर? आप तो फ़हीम है, आपसे क्या छुपानी? अभी तसलीमात बयान करूंगा....पहले कमरे की चाबी दीजिये, कमरा खोल देता हूं। फिर आप क़िबला, अन्दर तशरीफ़ फ़र्माई कीजिये।

शेरखान - वज़ा फ़रमाया, चुग्गा खां ने। कमरे में बैठ कर, असूदगी के साथ आसेज़दः होने की कहानी सुनेंगे और साथ में हलुवे के लुत्फ़ का फ़इदः जो अलग रहेगा। ऐसे खुले में बैठने से मेहमानों की बढ़ोतरी होना भी वाज़िब है।

शमशाद बेग़म- (गैस के चूल्हे पर, पानी से भरा पतीला चढ़ाती हुई) - अन्दर बैठना फ़ाईज है, फ़हुवल मुराद है (पानी से भरे पतीले में, फ़ानीज़ व चाय की पत्ती डालती है) अभी, चाय बनाकर लाती हूं।

(आक़िल मियां से चाबी लेकर, चुग्गा खां आक़िल मियां का कमरा खोलते हैं। फिर लोटे को वापस मटकी के ढक्कन पर रखकर, वापस लौट आते हैं। अब दाऊद मियां को छोड़कर, आक़िल मियां व

शेरखान कमरे में आकर बैठ जाते हैं। चुग्गा खां उनके पहलू में रखे स्टूल पर आकर, बैठ जाते हैं। थोड़ी देर बाद, शमशाद बेग़म सबको चाय के प्याले लाकर थमाती है।)

चुग्गा खां - (किस्सा बयान करते हुए) - सितारे गर्दिश थे, हुज़ूर। गली में मकान ख़रीदने के दौरान, मोहल्ले वालों ने खूब समझाया, हुज़ूर....के मकान के पड़ोस में रहने वाली औरत आहिरः है, उससे रसूख़ात मत रखना।

आक़िल मियां - और भी, कुछ कहा होगा?

चुग्गा खां - कहा हुजूर, के... ऐसे लोगों से दूर का सलाम ही मुनासिब है, नज़दीक आने पर बैठज़्ज़त होने का ख़तरा मण्डराता रहेगा। अह वज्हेखुसूमत से, क्या कर गुजारें....? तब तो, अल्लाह पाक ही बचायेगा। मगर.....

आक़िल मियां - मगर, क्या? ...कोई वज्हेवरात ?

(वाकया को याद करते चुग्गा खां की जब्हा पर पसीना झलक उठता है, कन्धे पर रखे नेपकीन से पसीना पोंछकर वे आगे बयान करते हैं।)

चुग्गा खां -क्या कहूं, हुज़ूर। ख़ातून को बहोत समझाया के, उस आहिर औरत से दूर रहें। मगर क़िस्मत ख़राब थी, उसने तो हमारे दिल के ख़्याल को उस जाहिल औरत के सामने ज़ाहिर कर दिया।

आक़िल मियां - वाह, चुग्गा खां वाह। कमाल की बीबी है, आपकी?

चुग्गा खां - अरे, जनाब। वह तो ऊपर से हमको कोसते हुए, हमको ही कहने लगी "मियां। दिन भर स्कूल में बैठकर गुलछर्रें उड़ाते हो आप, हमारी हमकिरानी फातमा आपको बरदाश्त ना होती। बड़े वफ़ा दुश्मन ठहरे, आप?

(हलुवे व पकोड़े से भरी प्लेटें लेकर शमशाद बेग़म आती है, उनसे प्लेटें लेकर चुग्गा खां दस्तरख़्वान लगा देते हैं।)

चुग्गा खां - ख़ानदानी वज़ा के खिलाफ़ जा नहीं सकते है, हुज़ूर। ऊंची आवाज़ में बोलना, हमारी तहज़ीब के ख़िलाफ़ ठहरा। बस

चुप्पी साध ली, हुज़ूर। वैसे हमारे एहबाबो ने मरहूम के मुत्तालिक मशहूर कर रखा है, साहब।

शेरखान - (हंसते हुए) - ऐसा क्या कह दिया, उन्होंने?

चुग्गा खां - (रूंआसे होकर) - ठहरा दिया हमें, जोरू का गुलाम। ळम डरते हैं, अपनी जोरू से। मगर सच यह है कि, हम जोरू के गुलाम नहीं हैं। बस, ख़ाली ख़ानदानी रस्म से बन्धे हैं।

(कुछ देर, चुप्पी छा जाती है। सभी हलुवे व पकोड़ों का लुत्फ़, उठाते जा रहे हैं। आख़िर, चुप्पी तोड़ते हुए चुग्गा खां आगे बयान करते हैं।)

चुग्गा खां - ख़ुदा कसम, करते नहीं गफ़्फ़ारी हम कभी। ख़ुदा गवाह है, वह गफ़्फ़ूर है....रहमदिल है, उसने बख़्स दिया हमें ऐसा ख़ानदानी तख़रीब सलामती का काम, हुज़ूर इसी पेशे से हमारा ख़ानदान बड़े-बड़े नवाबों की ख़िदमात करता आ रहा है।

शेरखान - वाह चुग्गा भाई, वाह। कमाल के आदमी निकले, आप? आख़िर, ये नवाब आपको ही क्यों बुलाते हैं?

चुग्गा खां - इन नवाबों के ख़ानदान का तख़रीब, हमारे बही-खातों में दर्ज है। जब कभी उनके यहां, ख़ानदान-ए-चराग रोशन होता है.....तब हमें, इज़्ज़त से बुलाया जाता है। अरे, जनाब। इनके बुजुर्गोंर् ने तो कई एकड़ ज़मीन इनायत की है, हमारे ख़ानदान को।

आक़िल मियां - क्या कहने लग गये हो, चुग्गा मियां? वापस वहीं चले गये, अपने ख़ानदान की तख़रीब पढने? अजी इस ब्यौरे को हम, कई बार आपसे सुन चुके हैं। आख़िर, बात वही रही.....कबूतर को कुआ ही नज़र आता है। और इस वक़्त आपका कुआ ठहरा, ख़ानदान की तख़रीब।

चुग्गाखां - ऐसी बात नहीं है, हुज़ूर। गुस्ताख़ी माफ़ करें, हम ज़रा पुराने ख़्यालों में खो गये, चलिये अब तसलिमात अर्ज करता हूं सुनिये....हुज़ूर एक रोज़ मैं छत्त पर पर चढ़ा, वहां क्या देखा? पड़ोस के मकान में लगा बोर का झाड़ इतना फैल गया, हुज़ूर।

शेरखान - (हंसते हुए) - अच्छा हुआ, बोर की डालियां फैल गयी। अगर आप फैल जाते तो, मोहल्ले वाले थक जाते मगर आप नहीं हटते।

चुग्गा खां - हुज़ूर, मुज़हाक मत कीजिये। हम तो आपके, ख़िदमतगार हैं। अब सुनिये, उसकी कई डालियां हमारी आधी छत्त तक फैल गयी। क्या कहूं, हुज़ूर?

शेरखान - अच्छा हुआ जनाब, डालियां नज़दीक आ गयी। फिर क्या? छत्त पर बोर के फल बिखरते रहेंगे... और, आप बैठे-बैठे बोर के फल खाते रहना।

चुग्गा खां - फल को तो मारो गोली....वहां तो जनाब, कचरा इतना फैल गया उसे साफ़ करना आसान नहीं रहा। क्या कहूं, हुजूर ? जितना कचरा उठाओ, और दूसरे दिन उससे ज़्यादा कचरा वापस तैयार। ख़त्म होने का नाम ही नहीं, हुज़ूर।

आक़िल मियां - (हंसते हुए) - बदनसीब ठहरे, आप। आप बेचारे, क्या करते? वहां छत्त पर स्कूल की तरह, अलमारियां मौज़ूद नहीं

थी? जिनके पीछे आप स्कूल की तरह, कचरा इकट्ठा कर लेते। क्यों चुग्गा मियां, वाज़िब है ना?

शेर खान - अरे, कौनसा कचरा यार ? ग्वालों को बुला लाते, बकरियों के लिये यह चारा उठा जाते और पैसा भी दे जाते। आम के आम, और गुठलियों के दाम।

चुग्गा खां - हुजूर पहले हमारी बात सुन लीजिये, एक बार। फिर क्या? हमने उठाई कुल्हाड़ी और काट डाली वो डालियां, जो हमारी छत्त पर कचरा फैला रही थी। हाय अल्लाह, हमारी तो क़िस्मत ही ख़राब ठहरी। इस काम को अन्जाम देते वक़्त, यह आहिर औरत आ गयी छत्त पर....और बकने लगी, गन्दी-गन्दी मुग्गलज गालियां़।

शमशाद बेग़म- क्या कहा, मियां? ऐसी गालियां, एक औरत के मुंह से?

चुग्गा खां - सच कहा, ख़ाला। हुज़ूर हमने तो ऐसी गालियां, कभी सुनी नहीं....क्या करें, हुज़ूर? हम तो शर्म के मारे, उतर गये सीढियां। मगर, वह चुप नहीं हुई।

शमशाद बेग़म- वह काहे चुप रहे, करमज़ली? कम्बख़्त का मायका रहा होगा, तवायफ़ों की गली में?

चुग्गा खां - शायद, आपका कहना सच हो? वह बकती रही "नासपीटे तेरे ख़ानदान को चराग़ देने वाला कोई नहीं रहे...अरे ओ, घासमण्डी के कीड़े। मेरा पेड़ काटता है, मरूंगी तब भूतनी बनकर.....

(तभी ज़ोरों की आंधी चलती है, बगीचे के पेड़ की डालियां तेज़ी से हिलने लगी। अचानक परिन्दों का झुण्ड, दरख़्तों पर बनाये घोंसलों को छोड़कर.. तेज़ी से, आसमान में उड़ता है। कहते-कहते चुग्गा खां के बदन के, रौंगटे खड़े हो जाते हैं। इधर उनके हाथों में, ठण्डी सिहरन दौड़ने लगती है। उधर ध्यान लगाकर सुन रही शमशाद बेग़म का दिल, धक-धक करने लगा। तभी अचानक एक चुहिया,

बरामदे में बिल्ली की गंध पाकर... अलमारी के ऊपर, छलांगें लगा बैठती है। उस चुहिया का आभास पाकर, वह बिल्ली उछलकर चूहिया पर कूद पड़ती है। मगर, निशाना चूक जाता है। और, वह बिल्ली शमशाद बेग़म पर आकर गिर पड़ती है। अचानक उसके गिरने से, उसके मुंह से ज़ोरों की चीख़ निकल पड़ती है। उनकी चीख़ सुनकर, चुग्गा मियां घबरा जाते हैं। फिर, क्या? दर्दनाक चीख़ के साथ, वे डरकर कह बैठते हैं।)

चुग्गा खां - (डरकर, चिल्लाते हैं) - अरे मेरी अम्मा, मर गया। यहां भी आ गयी चुड़ैल। अरी ओ फातमा आहिर, छोड़ दे मुझे।

(उधर डर के मारे शमशाद बेग़म का पूरा बदन सिहिर उठता है, वह आहिर फातमा के आसेब से बचने के लिये थामी हुई पकड़ को फेंक देती है। जो सीधी जाकर सेबरजेट की तरह, चुग्गा मियां की टाट पर चांदमारी कर बैठती है। चुग्गा चिल्ला उठते हैं, दोनों हाथ ऊपर करके।)

चुग्गा खां - (दोनों हाथ ऊपर करके, चिल्लाते हुए) - अरे अब्बाज़ान... मार डाला, इस आहिर फातमा ने।

(उनके चिल्लाने से, सभी घबरा जाते हैं। सभी भगकर कमरे के बाहर आ जाते हैं, और जैसे ही वे लोग बड़ी बी के कमरे की खिड़की तक पहुंचते हैं...वहां उन्हें दाऊद मियां के दीदार हो जाते हैं, जो ज़ोरों के ठहाके लगाते हुए कमरे की तरफ़ आ रहे थे। वे हंसते हुए, कहते हैं।)

दाऊद मियां - (हंसते हुए) - अरे कम्बख़्तों, ज़रा मर्द बनो। भीगी बिल्ली की तरह क्यों भाग आये? वह कोई चुड़ैल नहीं, बेचारी बिल्ली आयी थी। कोई शेर नहीं आया, यहां? अब बैठ जाइये जाकर कमरे में, बेख़ौफ होकर। चलिये, हम भी आपके साथ चलते हैं।

आक़िल मियां - (माथे पर आया पसीना पोंछते हुए) - अरे हेड साहब, आपने यह क्या कह दिया...शेर आ गया? शेर कैसे आ

सकता था, जनाब? हमारे पहलू में शहरी जंगल के बादशाह शेर, पहले से बैठे थे।

शमशाद बेग़म- (शेरखान की ओर देखते हुए) - क्या समझे, हुज़ूर? कहीं आपके आबा-ओ-अजदाद, काग़ज़ी शेर के ख़ानदान से तो ताल्लुकात नहीं रखते ?

(शमशाद बेग़म की बात सुनकर, मियां शेर खान आब-आब हो जाते हैं। अब सभी वापस आकर, कमरे में बैठ जाते हैं। बैठने के बाद, आक़िल मियां चुग्गा खां से कहते हैं।)

आक़िल मियां - (चुग्गा खां से) - कहिये, चुग्गा खां। आगे क्या हुआ?

चुग्गा खां - वह आहिर कहने लगी 'अब तुझे चैन से जीने नहीं दूंगी। मरने के बाद, इसी पेड़ पर भूतनी बनकर बैठ जाऊंगी। आख़िर तूने समझा क्या है, मुझे?

शमशाद बेग़म- अरे, ओ फ़क़ीरे के अब्बा। बहोत बेशर्म बदतमीज़ औरत से, तुम्हारा पाला पड़ा। हाय अल्लाह। मर्दों के सामने ऐसे

ज़बान चलाती है, कतरनी की तरह? (चाय के प्याले, सबको थमाती हे।)

चुग्गाखां - (चाय की चुश्कियां लेते हुए) - आगे सुनो, ख़ालाज़ान। हमारी क़िस्मत ही, ख़राब निकली.....इस वाकया के बाद वह आहिर फातमा जब तक जीवित रही, तब तक हमारे कुनबे को परेशान करती रही। और मरी भी कम्बख़्त आख़िर, अमावस की काली रात को।

शमशाद बेग़म- (चाय की चुश्की लेकर) - यह काली रात ही ऐसी होती है, जब ये चुड़ैले काली रस्मों को अंजाम देती है। मैं तो यह ज़रूर कहूंगी, चुग्गा मियां। अमावस की रात को वह आहिर औरत, मरकर ज़रूर भ्ूतनी बनी होगी?

चुग्गा खां - आगे सुनो। एक रोज़ तेज आन्धी चली, हुज़ूर। छत्त पर सुखाये कपड़े, फर-फर उड़ने लगे। बेचारा फ़क़ीरा दौड़ा घर के बाहर, तो रमज़ान दौड़ा छत्त पर कपड़े लाने। सभी कपड़े आ गये हुज़ूर, मगर.....ख़ुदा रहम, बेग़म को न ज़ाने क्या सूझी?

शमशाद बेग़म- कपड़े कितने आये या नहीं आये, यह एक औरत ही ज़ानती है। सभी मर्द, बस बैठे-बैठे तमाशा देखते हैं।

चुग्गा खां - आप किस्सा सुनती रहे, ख़ाला। बीच में ना बोला करें, अब सुनो आगे। वह कपड़े गिनने बैठ गयी, वह कपड़े गिनकर क्या बोली हुज़ूर, इन प्यारे बच्चों को? के ‘‘हरामजादों बाप पर गये हो, आख़िर। कम्बख़्तों, मेरी सलवार लाना भूल गये? बोर की डाल पर टंगी सलवार दिखी नहीं, तुम्हें...हरामजादों?’

शेरखान - चुग्गा खां, सबकी ख़ातूने खान ऐसी ही होती है। कोई हाथ चलाती है, तो कोई अपनी ज़बान।

दाऊद मियां - (हंसते हुए) - ओ शेरखान साहब, ख़ुदा रहम। अच्छा हुआ, आपकी खातूने खान के पास ज़बान है, शमशीर नहीं... ना तो मोहल्ले के चार-मुसाहिबों को, ज़मीन पर ढेर कर देती, और इस जुर्म में आप अन्दर धर लिये जाते?

चुग्गा खां - हुज़ूर, इनकी खातूने खान की तारीफ़ बाद में करना। अभी हमारी बेग़म का जिक्र पूरा हुआ नहीं है। मुझे उनकी शान में, कसीदे पढ़ने दीजिये।

दाऊद मियां - सुनाइये, जनाब। अल्लाह कसम, आपको किसने रोका है?

चुग्गा खां - सुनिये जी.. वह आगे बोली, 'आंखें खोलकर, काम किया करो। हाय अल्लाह, क्या यही सलीका सीखाया तुम्हारे इस बुजदिल बाप ने?" इतना कहकर, उसने आव देखा ना ताव। बस, झट सीढियां चढ़कर पहुंच गयी छत्त पर। वहां जाकर कहने लगी, ज़ोर से.....

शमशाद बेग़म- (डरती हुई, गले पहने इमामजामीन को चूमती है) - अरे मियां, इस काली रात को आपने बीबी को कैसे छत्त पर भेज दिया? हाय अल्लाह, वहां चुड़ैलो का नाच हो रहा होगा...?

चुग्गा खां - अरे ख़ाला, बोलो मत। आपकी बात सुनकर, मेरे पांव काम्प रहे है...ख़ुदा रहम...ख़ुदा रहम।

आक़िल मियां - यह क्या? दूसरों को डराओ, मत। ख़ालाज़ान को अभी घर जाते वक़्त, सुनसान तालाब का रास्ता पार करना होगा। कुछ रोज़ पहले वहां, रामदीन टेक्सी ड्राइवर का मर्डर हुआ। ख़ुदा ख़ैर करे, कहीं वह ख़बीस बना हुआ तालाब के किनारे चक्कर नहीं काट रहा हो?

चुग्गा खां - (डरते हुए) - पहले किस्सा सुन लीजिये, हुज़ूर। मुझे भी वापस घर लौटना है। सुनिये... वास्तव में बोर की डाल पर, उसकी सलवार टंगी थी। बस हमने तो धड़ाम की आवाज़ के साथ, बेग़म की चीख़ सुनाई दी। चीख़ सुनकर, हमने ऊपर जाकर क्या देखा?

(अब सभी चाय पीकर, ख़ाली प्याले टेबल पर रख देते हैं।)

शमशाद बेग़म- (जूठे प्याले उठाती हुई) - अरे चुग्गा मियां, डराने का काम मत करो। हमें घर लौटते वक़्त, तालाब के किनारे-किनारे चलना है। कहीं ख़बीस बना रामदीन, हमारा रास्ता न रोक दे?

चुग्गा खां - सुनो, आगे। हाथ में सलवार पकड़े, वह बेहोश पड़ी थी। वह थी, अमावस की रात। तभी आस्मां से बिजली चमकने

लगी, डाली पर बैठे उल्लू कूकने लगे। फिर क्या? पड़ोसियों की मदद से बेग़म को उठाकर, नीचे लाये दालान में। वहां लाकर सुलाया ही था....

(इतना कहा ही था, चुग्गा खां ने.....? तभी तेज़ हवा का झौंका आता है, ज़ोर की आवाज़ करती हुई, कमरे की बंद खिड़कियां खुल जाती है। खिड़कियों के खुलते ही, कमरे की बत्ती गुल हो जाती है। खुली खिड़की के क़रीब एक सफ़ेद साया गुज़रता हुआ चारदीवारी फांद कर गायब हो जाता है। डर की एक लहर फैल जाती है, इस गहरे सन्नाटें में सबके रौंगटे खड़े हो जाते हैं। अब इस सन्नाटें को शराकत हुई, शमशाद बेग़म पानी भरा लोटा चुग्गा खां को थमाती है। बहदवासी की हालत में, चुग्गा खां अपने हाथ में बर्फ के समान ठण्डा लोटा थाम लेते हैं...बस, फिर क्या? इस ठण्डे अहसास को पाकर, चुग्गा खां घबरा जाते हैं। और उधर चारदीवारी के पास चल रहे सफ़ेद साये पर, उनकी निगाहें गिरती है। बस उसे देखते ही, वे ज़ोरों से चीख़ उठते हैं। बस, फिर क्या? डर के मारे हाथ में

थामा लोटा फेंक देते हैं, जो कमरे में दाख़िल हो रहे नूरिया बन्ना के सर पर आ गिरता है।)

चुग्गा खां - (चीख़ते हुए) - मर गया, अब्बा हुज़ूर। अरी ओ चुड़ैल अब तो पीछा छोड़, म़ेरा। अमावस की रात, आकर बांकले खा लेना।

नूरिया - (सर दबाते हुए) - बांकले नहीं, जनाब। अब तो आपसे चार बार दाल, बाटी व चूरमे की पार्टी वसूल करेंगे, समझ गये जनाब? ख़ुदा रहम। आपने तो तरबूज समझकर, मेरा सर फोड़ डाला?

चुग्गा खां - (चीख़ते हुए) - अरे, ख़बीस की औलाद। दाल, बाटी और चूरमे की पार्टी गयी, जहन्नुम में। तूझे खिलाये, मेरी जूती। मैं तो बांकले खिलाऊंगा, (चारदीवारी के पास खड़े, सफ़ेद साये की तरफ़ उंगली उठाकर) उस आसेब को।

(उनकी चीख़ सुनकर, चारदीवारी के पास खड़े सफ़ेद साये की आवाज़ अब हंसी के ठहाकों में बदल जाती है। ठहाकों के साथ, उस साये की आवाज़ गूंज़ उठती है।)

सफ़ेद साया - (हंसी के ठहाकों के साथ) - अरे ओ चुग्गा खां। बांकले कौन खायेगा, यार? हम तो खायेंगे, गुलाब हलुआ। (फिर क्या? हंसी के ठहाकों के साथ, वह साया चला जाता है।)

शमशाद बेग़म- अरे, ओ फ़क़ीरे के अब्बा। बेमाना ग़म में ग़मगीन क्यों बैठ गये हो? अरे लोगों की तख़रीब लिखने वाले मुअज़्ज़म, ज़रा अपनी तख़रीब भी लिख डालो।

चुग्गा खां - (घबराते हुए) - अब क्या लिखना बाकी रह गया, ख़ाला। यहां जो बीत रहा है वाकया, उसे देखकर तो सारा खून जमने लगा है?

शमशाद बेग़म- चुग्गा खां, अब मैं बेमहाबा अर्ज करती हूं। अब हमारी जोईदनी दूर करो, जल्द। डरो मत, वह साया भूत नहीं

था...कम्बख़्त, पानी की टंकी का चौकीदार था। अब हम, काम निपटकर घर जायें या नहीं......?

(नूरिया लोटे में पानी भरकर लाता है, फिर उस लोटे को टेबल पर रख देता है।)

चुग्गाखां - (हौसला रखते हुए) - क्या बेदिरेग बयान करें, ख़ाला? उस काली आमवस्या की रात का जिक्र है, कुछ ऐसी है बेदिली छा जाती है.....(पानी पीते हैं) आप मुज़्तर है, सुनने के लिये.....बेदिली अब, क्या काम की? खामोशी से सुनें, फिर क्या? बीबी हाथ-पांव फेंकने लगी। काबू नहीं आ रहा था, उसका जिस्म। बकती जा रही थी, मुगल्लज़ गालियां।

शमशाद बेग़म- हाय परवरदीगार। ऐसी-ऐसी, गालियां...? आपने अपने ख़ानदान में, कभी सुनी नहीं होगी? उस घड़ी को याद करके, अभी तुम्हारा दिल थम गया होगा? हाय अल्लाह। मुज़्तरिबुलहाल सब देखना पड़ा, आपको। यही कहना चाहते हो, चुग्गा मियां?

चुग्गा खां - जी हां, वह भी उन पड़ोसियों के साथ। उनमें से कोई कह रहा था "अजी यह तो आसेबजदः है। ज़रा याद करो, अभी तेज़ आसिफ़ चली, बोर के पेड़ पर आसेब है, बस आप तो मोमीनों की मस्जिद वाले मुल्लाजी को बुला लाओ। वे आसेब निकालने के, फ़ाज़िले अज़ल्ल हैं।

शेरखान - अरे चुग्गा मियां, आपका किस्सा सुनते-सुनते हमारी नींद उड़ गयी। आगे बोलो, मियां।

चुग्गा खां - इतना सुनते ही, बेग़म की आवाज़ बदल गयी....लगने लगा कहीं दूर से कर्कश गुर्राहट आ रही हो। उसने झट उस पड़ोसी का गला पकड़ लिया, और धमकाती हुई कहने लगी "साले ज़ेरेमश्क तेरी यह हिम्मत, जौफ़ेबाह का मरीज़। मेरे सामने बोलता है....जिन्दा थी, तब दूर भागता था। बोर के पेड़ का नाम लिया, तो ख़ैर नहीं तेरी।"

आक़िल मियां - फिर, क्या हुआ?

चुग्गा खां - इतना कहकर, उसने पड़ोसी का गला छोड़ दिया। और, बेग़म वापस बेहोश हो गयी। पड़ोस में रहने वाले कम्पाउण्डर साहब को आप ज़ानती है, ना ख़ाला?

शमशाद बेग़म- हां...हां ज़ानती हूं। तूर्रे वाली टोपी लगाने वाले मियां अल्ला नूर साहब को, कौन नहीं ज़ानता? उनकी एक नेक दुख़्तरा अपनी स्कूल में पढ़ती है, कक्षा सातवी में।

चुग्गाखां - बस, उन्होने आकर एक नशे का इन्जेक्शन लगाया, तब कहीं जाकर वह रात ख़ामोशी से निकली। उस दिन के बाद ख़ाला मैं इतना डर गया, अमावस की रात से.....रोम रोम खड़ा हो जाता है, याद करके। अब तो हर अमावस की रात, बेग़म को दौरा पड़ता है पागलपन का।

शमशाद बेग़म- सुना है, आपकी ख़ाजन आयी हुई है?

चुग्गा खां - ख़ालाज़ान वह चार रोज़ बाद ख़ाजन तो चली जायेगी, तब क्या होगा? सोचता हूं, अम्मीज़ान को गांव से बुला लूं। अब समझ गयी ना ख़ाला, क्यों मैं बार-बार घर जाता हूं? (रूअ०ा०ंसी

आवाज़ में) कबूतर हूं ना....कबूतर को कुआ ही दिखता है बार-बार।

(तेज़ हवा का झौंका आता है, खिड़कियां व दरवाजे हिल उठते हैं, फिर वापस छा जाती है खामोशी। सूरज अस्त हो चुका था, आकाश की लालिमा रफ़तह-रफ़तह अन्धकार में बदल गयी है। आसियत का गहन अंधकार, फैल चुका है। इस खामोशी में, अब शमशाद बेग़म के लबों से कही बात गूंज़ उठती है।)

शमशाद बेग़म- बड़ी दर्दनाक दास्तान है, मियां। (आक़िल मियां से) हुज़ूर, इनकी मदद ज़रूर करना। ये बेचारे, ज़रूरतमन्द ठहरे। एक तारीख़ को पैसे वापस लौटा देंगे, हुज़ूर। अम्मीज़ान को लाना भी ज़रूरी है, ना तो ये रात की ड्यूटी कैसे देंगे, यहां ?

(अब शमशाद बेग़म अपनी थैली उठाकर, चुग्गाखां से कहती है।)

शमशाद बेग़म- (चुग्गा खां से) - मियां, मैं रूख़्सत होती हूं....आसियत का अन्धेरा फैलता जा रहा है। क्या करूं? अकेली औरत हूं, तालाब के पास वाला सूना इलाका पार करके मुझे ज़ाना

होगा। बस मियां, आपको तो कोई जल्दी नहीं, बस आप बरतन धोकर ज़ाना।

चुग्गा खां - डरना मत, रामदीन के ख़बीस से। पूरे रास्ते, पीर दुल्हे शाह का वजीफ़ा पढ़ते ज़ाना। ख़ुदा करीम, सब ठीक करेगा।

(शमशाद बेग़म थैली में सट रखती है, फिर थैली उठाकर चल देती है। नूरिया की प्लेट ख़ाली हो जाती है, वह उसे वापस हलुवे से भरकर खाने लगता है। और बैठे लोगों को, सुनाने लगता है।)

नूरिया - हलुवा खाओऽऽ..., पेट भर। भूल जाओ, आसेब को।

(सुनकर सभी हंसने लगते हैं, नूरिया हलुआ खाकर मस्त हो जाता है। फिर क्या? चाबी घूमाता हुआ, वह मिथुन चक्रवती स्टाइल में डान्स करने लगता है। सभी तालियां पीटकर, उसे जोश दिलाते रहते हैं। मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, सुबह का वक़्त....चुग्गा खां स्कूल के बरामदे चहलक़दमी करते हुए, टी-क्लब की टेबल के पास आते हैं। वहां टेबल के पास रखे अनाज के डब्बे को खोलते हैं, डब्बे से एक कटोरा अनाज निकालकर ग्रउण्ड में आ जाते हैं। अनाज का कटोरा लिये, कबूतरो को आवाज़ लगाते जाते हैं। उन्हे कटोरा थामे देखकर, आसमान में उड़ रहे कबूतर के झुण्ड ग्राउण्ड के चारों ओर मण्डराने लगते हैं। उन्हें देखकर, वे जल्द ग्राउण्ड में दाने बिखेरते हैं। अनाज के दानों को देखकर सारे कबूतर आभा से एक साथ ज़मीन पर उतरते हैं, और ज़मीन पर बिखरे दानों को चुगने लगते हैं।)

चुग्गा खां - (आस्मां की ओर देखते हुए) - मुल्ला उमर की चादर छोटी थी, फिर भी पांव पसार दिये ज़्यादा। हाय अल्लाह। फिर तो, गज़ब हो गया। मियां बुस ने आव देखा, ना ताव....बस दाग दिये गोले बम के....अफ़गानी ज़मीन पर।

(बगीचे में पौधों को पानी दे रहे मियां मेमूना भाई, न ज़ाने क्यों इनके बोले गये जुमले पर अपने कान दे बैठते हैं? सुनते ही, वे ठहाका लगाकर हंस पड़ते हैं। फिर पाइप को दूब मे खुला छोड़कर, चुग्गाखां के नज़दीक आते हैं।)

मेमूना भाई - अमां यार। आस्मां से, नीचे उतर आओ.....बुश के आस्मॉंशिग़ाफ दनदनाते गोलों को छोड़ो, मियां। बड़ी बी ने भेजा है ख़त, तुम्हारे नाम। उसे पढ़ लो, पहले। पढ़ते ही, आपके हाथ के तोते उड़ जायेंगे।

(मेमूना भाई जेब से ख़त निकालकर, उनके हाथ में थमा देते हैं। उस ख़त को पढ़ते ही, चुग्गाखां का दिल काम्प जाता है।)

चुग्गाखां - (अपने आप) - किस नापाक दोज़ख के कीड़े ने, बड़ी बी को काट खाया....और इस आहनें जिगर मोहतरमा ने रद्द कर दी हमारी इज़ार। हाय अल्लाह, अब क्या करूं?

(बड़बड़ाते हुए, मियां ख़ाली कटोरा लिये बरामदे में आते हैं। अनाज के डब्बे में कटोरा रखकर, अब वे आपस बगीचे की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा देते हैं। और, चलते-चलते बड़बड़ाते जाते हैं।)

चुग्गा खां - (बड़बड़ाते हुए) - हाय अल्लाह, इस बेदर्द मोहतरमा ने अलग से लगा दी हमारी नाइट ड्यूटी... स्कूल में। अब यह बरसात आई है बिल्कूल सही वक़्त पर, ज़माना अच्छा होगा....कुओं में अभी पानी है। खेती कर दो....कोई फ़सल उगा दें, तो भय्या दो पैसा कमा लेंगे। मगर, बिजली आती है रात को।

(चुग्गा खां को बड़बड़ाते हुए, बगीचे में जाते हुए मेमूना भाई देख लेते हैं। फिर क्या? पाइप को ज़मीन में ख़ुला छोड़कर, झट उनके पीछे लग जाते हैं।)

चुग्गा खां - (बड़बड़ाते हुए) - और, रात को हम स्कूल में। कैसे पानी पिलायेंगे, हम? अब इस स्कूल की नाइट ड्यूटी ने, हमारी इंजाहेमराम हराम कर दी....बड़े जतन से लोगों का अहसान लेकर,

पैसों का इन्तज़ाम किया था। अब ये फ़सलें तैयार खड़ी है, मगर अब इन फसलों को पानी कैसे पिलायें?

(पीछा करते हुए, मेमूना भाई राह में पड़े पत्थर को देख नहीं पाते। बस, फिर क्या? धड़ाम से नीचे गिरते हैं, उठते वक़्त वहां पड़े केले के छिलके को देख नहीं पाते। हाय अल्लाह, बेचारे चारों खाना चित्त होकर फिर गिर पड़ते हैं। मगर यह क्या? जनाब चुग्गा खां तो बड़बड़ाते हुए आगे निकल जाते हैं, और आगे जाकर पत्थर की बैंच पर तशरीफ़ आवरी हो जाते है। अब उधर बगीचे में दाख़िल हो रही दुख़्तराएं मेमूना भाई को ज़मीन पर पड़े देखकर, खिलखिलाकर हंस पड़ती है। अब मेमूना भाई को ऐसा लगता है, अगर उनके बदन को काटे तो उसमे खून नहीं निकलेगा? बस, फिर क्या? बेचारे मेमूना भाई गुस्से को दबाते हुए, उस पत्थर की बैंच की तरफ़ बढ़ते हैं... जहां पहले से चुग्गा खां, आराम से तशरीफ़ फरमाई कर कर रहे हैं। और बैठे-बैठे, अलग से बड़बड़ाते जा रहे हैं।)

चुग्गा खां - (बड़बड़ाते हुए) - सारा मनसूबा, धरा रह गया। बिना पानी, सब सून। हाय, मदीना पीर। यह क्या हो गया, परवरदीगार? अजी पानी नहीं तो साख़ ख़त्म, फिर कौन करेगा इंसान पर भरोसा? यह तो हमारी साख़ ही है ऐसी, जिसने चला रखी है घर-गृहस्थी की गाडी। यहां तो, महीना ख़त्म होने के पहले राशन ख़त्म।

(उन्हें बड़बड़ाते हुए देखकर, मियां मेमूना भाई बेनियाम हो जाते हैं। मगर, चुग्गा खां को कहां परवाह? वे तो जनाब, अभी भी बराबर बड़बड़ाते जा रहे हैं।)

चुग्गा खां - (बड़बडाते हुए) - बस इस साख़ के कारण ही, आक़िल मियां से मिल जाते हैं... रूपये उधार। फिर क्या? एक तारीख को अदायगी, और फिर दस तारीख को वापस उनसे उधार ले लेना। इस अदा के कारण ही, लेखक की जमा-पू़ंंजी तो बच जाती है....मगर जनाब, इसके लिये कई बार पापड़ बेलने पड़ते हैं। आख़िर, इस साख को बचाने के लिये।

(अब मेमूना भाई से रहा नहीं जाता, जाकर चुग्गाखां के कन्धों को झंझोडते हैं। झंझोड़कर, मेमूना भाई उन्हे चेतन करते हैं। अब, चुग्गा खां वर्तमान में लौट आते हैं।)

मेमूना भाई - क़िस्मत की भैंस बैठ गयी, पानी में। क्या आप, इस शागीर्द से गुफ़्तगू करेंगे? (चुग्गाखां को चुप पाकर) वाह, हमें क्या पड़ी है? किसी के फटे में, अपना पांव फंसाये? चलतें है, भाई।

(मेमूना भाई चलते हैं, और जाकर वापस पाइप उठाकर बगीचे में पानी देना चालू कर देते हैं। अब चुग्गा खां अपने दोनों हाथ दुआ के लिये, ऊपर उठाते हैं।)

चुग्गाखां - (दोनों हाथ ऊपर उठाये हुए) - ए, मेरे मौला। इतनी ख़िदमत करता हूं तेरी, मगर तूझे रहम नहीं? तुम तो ज़ानते हो, इन भोले-भाले कबूतरों के लिये अनाज का बन्दोबस्त करना, आसान नहीं। ख़ुदा रहम, इस बेरहम मोहतरमाओं को सवाब के बारे में समझाते-समझाते ....मेरी ज़बान थक गयी.....।

(चुग्गा खां की आंखें आंसूओं से नम हो जाती है, जेब से रूमाल निकालकर आंखें पोंछते हैं। फिर वापस, दोनों हाथ उठाकर अल्लाह पाक से कहते हैं।)

चुग्गा खां - (दोनों हाथ उठाकर) - ए मेरे मौला। आख़िर, कितनी बार कहूं इनसे "अजगर करे ना चाकरी, पन्छी करे ना काम, बख़्से मियां रसूल जो दिल से करे ज़क़ात।" इतनी कोशिश करने के बाद, ख़ुदा रहम। यह डब्बा भरता है, अनाज से। इतनी इंजाज के खातिर इन दुश्मनों ने, मुझे एक नाम दे दिया "चुग्गा खां" ...

(बेचारे चुग्गाखां, आख़िर करे क्या? हताश होकर, साइकल उठाते हैं.....रास्ते में, बराबर अल्लाह पाक से इल्तजा करते जाते हैं।)

चुग्गा खां - (साइकल चलाते हुए) - तू अकबर है, करीम है। मेरी इंजाह पूरी कर, और बचा दे मुझे खातूनेख़ान के खौफ़ से.....अब तो ग़रीबख़ाना ज़ाना दुश्वर हो गया, मेरे परवरदीगार। ए मेरे मौला। वह तो नाइट ड्यूटी का नाम सुनकर, भड़क उठेगी।

(कुछ मिनट बाद, वे अपने ग़रीबख़ाने पहुंच जाते हैं। दरवाज़े के पास खड़ा फ़क़ीरा अब्बा को जल्दी आते देखकर उनके बदन से लिपट जाता है, प्यार से।)

फ़क़ीरा - आज़ अब्बा जल्दी आ गये...जल्दी आ गये...अब चलेंगे, मेले में। अब्बा, मुझे बन्दूक ज़रूर दिलाना।

चुग्गा खां - हट जा मेरे शहजादे, मेला शाम को होगा। मगर, प्यारे नेक दख़्तर। मुझे वापस शाम को ज़ाना है, स्कूल। क्या करूं, बेटे? मेरी तो लग गई है, नाइट ड्यूटी। तू बता बेटे, अब कैसे लेकर जाऊं तूझे मेले में? बन्दूक तो बेटे, बाद में ख़रीद लेंगे। मेरे बच्चे तू रोना मत, तू बहादुर बेटा है मेरा।

(उधर घर के अन्दर फ़क़ीरे की अम्मी तमतमाई हुई, कहती जा रही है।)

फ़क़ीरे की अम्मी - (गुस्से में) - ला दो बन्दूक, और चला दो दनादन मुझ ग़रीब पर। ज़ान-बूझकर लगवा दी, नाइट ड्यूटी। सब ज़ानती

हूं, क्या करते हो मियां तुम...? रात की चौकीदारी में, आहिरः औरतों के साथ वक़्त गुज़ारते हो....?

चुग्गाखां - (नज़दीक आकर, उसके लबों पर हाथ रखते हुए) -बेग़म, क्या करती हो? तुम्हारी आवाज़ सुनकर, मोहल्ले वाले क्या कहेंगे?

फ़क़ीरे की अम्मी - (भड़क कर हाथ हटाती है) - भाड़ में जाओ तुम, और तुम्हारे ये मोहल्ले वाले। ख़रीद कर लाई हुई कनीज़, नहीं हूं....जो रहूं चुप। इज़्ज़त की बात करते हो, और यहां मुझे रात को घर में अकेला छोड़कर चले जाते हो? यह कहां का है, इन्साफ़?

चुग्गा खां - (हाथ जोड़कर) - बस करो, बीबी। आवाज़ सुनकर, अभी पड़ोसी इकट्ठे हो जायेंगे।

फ़क़ीरे की अम्मी - (ज़ोर से, चिल्लाती हुई) - बसऽऽऽ... तुम्हें तो रोटियां तोड़ते वक़्त बीबी का ख़्याल आता है.....कह देती हूं, फ़क़ीरे के अब्बा। या तो छोड़ दो रात की चौकीदारी, या फिर कहना मत मरी फातमा का आसेब लग गया है मुझे।

(कहते-कहते ख़ातूने खान की आंखों से, तिफ़्लेअश्क गिर पड़ते हैं। यह मंजर देखकर, चुग्गा खां का दिल पसीज जाता है। अपनी मेहरारू का ग़म मिटाने के लिये, अब चुग्गाखां, बेग़म के आहूचश्म से निकले आंसू पोंछते हैं। फिर उसे बाहों में भरते हुए, वे कहते हैं।)

चुग्गाखां - (बाहों में भरते हुए) - नाराज़ मत हो, मेरी आहूचश्म मेहरारू। देख, तेरे पास फ़क़ीर और रमज़ान जैसे बहादुर बच्चे हैं.....अम्मीज़ान को ख़त भेजा है, वह भी जल्द आज़ जायेगी। फिर, काहे का डर? अल्लाह पाक के मेहर से, फातमा का आसेब कोसों दूर....समझी फ़क़ीरे की अम्मी?

(वक़्त बीतता जा रहा है, कुछ समय गुज़र ज़ाने के बाद सूरज पश्चिम दिशा की ओर अस्त होता दिखाई देता है। गांव से अम्मीज़ान आ चुकी है, दालान में बैठी-बैठी वह पान की गिलोरी मुंह में ठूंसती हुई दिखाई देती है। अब चुग्गाखां आले में रखी टोर्च उठाते है, फिर कोने में रखी लाठी हाथ में थामकर अम्मीज़ान से कहते हैं।)

चुग्गाखां - जाता हूं, अम्मीज़ान। आज़ से नाइट ड्यूटी चालू है, दुल्हन का ध्यान रखना। ख़ुदा हाफ़िज़।

(चुग्गाखां रूख़्सत होते हैं। थोड़ी देर बाद, स्कूल का मंजर दिखाई देता है। चुग्गा खां मेन गेट खोलकर, स्कूल में दा़खिल होते हैं। जाली का ताला खोलकर, बरामदे में आते हैं। फिर बिजली का स्वीच ऑन करके, बरामदे की सारी ट्यूबलाइट और बल्व जला देते हैं। फिर जाकर, ग्राउण्ड की ओर लगी ट्यूबलाइट का स्वीच भी ऑन कर देते हैं। वापस आकर, इनकमिंग टेलीफ़ोन के पास रखे स्टूल पर बैठ जाते हैं।)

चुग्गाखां - (अपने आप से) - जी का जन्जाल है, मेरे मौला। वक़्त गुज़ारने के लिये करनी पड़ती है मशक्क़त। ऐसा ही लिखा है, मेरी क़िस्मत में। अब काहे का डर, बेग़म को? अब घर पर, मज़बूत दिल वाली अम्माज़ान जो मौजूद है। सम्भाल लेगी सब, अब काहे की फ़िक्र करनी?

(वक़्त काफ़ी गुज़र जाता है, दीवार पर लगी घड़ी की दोनों सूंई बारह पर आकर टिकती है। और इधर दीवार घड़ी की "टन टन टन" आवाज़ गूंज़ती है, तभी आसिफ़ का ठण्डा झोंका बहकर चुग्गाखां के बदन में ठण्डी सिहरन पैदा कर बैठता है। यह ठण्डी सिहरन, उनके बदन के रोंगटे खड़े कर देती है। फातमा आहिर के आसेब का ख़्याल आते ही, इधर, बिजली गुल हो जाती है। बिजली के जाते ही, दरवाज़े के पास सोया कुत्ता सहसा उठ जाता है। ऐसा लगता है, मानो उसके पास ही कोई साया चल रहा हो? उसकी आहट पाकर वह कुत्ता, ऊंचा मुंह करके, कूकने लगता है। उसकी "कू ऊऽऽ ऊऽऽ" की आवाज़ हवा को चीरती हुई, चुग्गाखां के कानों में गिरती है। तभी टेलीफ़ोन की घण्टी, झन झना उठती है। इस ठण्डी रात में, इन गूंज़ती आवाज़ो सें चुग्गाखां का बदन थर-थर काम्पने लगता है। फिर क्या? दिल को थामते हुए, चुग्गाखां क्रेडिल से चोगा उठाते हैं। फिर अपने कान के पास ले जाते हुए, चुग्गाखां कहते हैं)

चुग्गा खां - (चोगे को, कान पर रखते हुए) - हल्लू, कौन साहब?

फ़ोन से आवाज़ आती है - अब्बा, मैं फ़क़ीरा बोल रिया हूं। अब्बा हुज़ूर। अम्मीज़ान पागलों की तरह, अपने हाथ-पांव मार रही है... और जनाब, उसके मुंह से झाग निकल रहे हैं। आप अभी घर आ जाओ, अब्बा। मुझे डर लग रहा है, न ज़ाने अब्बा अब अम्मी का क्या होगा?

चुग्गाखां - (फ़ोन पर) - अभी आता हूं, बेटा। तुम फ़ोन रखो।

(क्रेडिल पर चोगा रखकर, ज़ाफ़री की जाली पर निगाह डालते हैं। जहां फूलों से भरी हुई पांच पत्ती की बेल, जाली पर छायी हुई है। अचानक उस बेल के पत्ते ज़ोर से हिलने लगते है, और तभी एक काली परछाई उभर उठती है। उस परछाई के सींग व लम्बी दाढी साफ़-साफ़ नज़र आने लगती हैं, अब वह परछायी गुर्राहट के साथ हिलती है। उसे देखकर, चुग्गा खां के मुंह से डर के मारे चीख़ निकल पड़ती है। इधर पेड़ों के झुरमट से चमगादड़ों का झुण्ड, एक साथ फरणाटे की आवाज़ निकालता हुआ आसमान की ओर उड़ जाता है। तभी पेड़ों पर बैठे उल्लूओं की आवाज़ें, सुनायी देती है।

यह मंजर, देखते हुए चुग्गा खां घबरा जाते हैं। अब तो उन्हें पक्का वसूक हो जाता है, इस स्कूल में भूत व चुड़ैलों का करिश्मा चालू हो चुका है। सहमे हुए चुग्गा खां, बचने के लिये लाठी लाने के वास्ते उठते हैं.... और लोहे की घण्टी की तरफ़ बढ़ते हैं, जहां पास ही कोने में लाठी रखी है। मगर बदक़िस्मती से, वे अन्धेरे में उस टंगी पच्चास किलो की घण्टी को देख नहीं पाते। फिर क्या? उनका सर टकरा जाता है, उस घण्टी से। टकराते ही वो घण्टी नीचे गिर पड़ती है, और वे चीख़कर धड़ाम से गिर पड़ते हैं ज़मीन पर। उठते वक़्त, पास रखे स्टूल से टक्कर खा बैठते हैं। तभी उस पर रखा घण्टी का डण्डा, धड़ाम से आकर उनके पांव पर आकर गिर पड़ता है। उसके गिरने से "टऽऽन। टऽऽन।" की गगन भेदी आवाज़, गूंज़ उठती है। इस आवाज़ को सुनते ही, उस परछाई की गुर्राहट बढ़ जाती है। फिर क्या? हिम्मत रखकर चुग्गा खां टोर्च की रोशनी से लाठी ढूंढ लाते हैं, फिर टार्च की रोशनी उस परछाई पर फेंकते है, रोशनी पाकर वह परछाई बेहताशा भगने लगती है। फिर क्या? उसको भगते देखकर, चुग्गाखां के बदन में साहस का संचार हो जाता है।

अब, वे लाठी लिये हुए उसके पीछे दौड पड़ते हैं। आगे-आगे वह परछाई, और पीछे-पीछे चुग्गा मियां। अचानक वह परछाई मोड़ खाकर, आक़िल मियां के कमरे के पिछवाड़े की ओर बढ़ती है। मगर, चुग्गाखां हार मानने वाले कहां? वे तो बराबर, उसका पीछा करते जा रहे हैं...बेहताशा, दौड़ते हुए। अपना लगातार पीछा होते देखकर वह परछाई कुलांचे मारकर दीवार फांद जाती है, और इधर बेचारे चुग्गाखां के पांव, ज़मीन पर रखी ईंटों की कतार से टक्करा जाते हैं। इस बहदवासी हालत में बेचारे भूल गये थे, के पिछले माह ही रात की ड्यूटी के दौरान... साकिब मियां ने टेम्परेरी यूरीनल बनाने के लिये, ईंटें वहां जमायी थी। इन ईटों से आज़ बेचारे चुग्गा खां टक्कर खाकर, चारों खाना चित्त हो गये। चोट लगने से, बेचारे चुग्गा खां दर्द के मारे चीख़ते हैं। उनकी चीख़ सुनकर, पड़ोस के सरकारी क्वाटर में रहने वाले मियां रज्जब की नींद उड़ जाती है। फिर वे जलती लालटेन लिये, चारदीवारी के पास आकर खड़े हो जाते हैं। उनकी सफेद दाढ़ी, बुगले के पंख के समान सफेद कपड़े, और हाथ में जलती लालटेन लिये वे जिन्ने जिन्न

की तरह डरावने दिखाई देते हैं। सहसा उन्हें वहां पाकर, मियां चुग्गा खां के होश उड़ जाते हैं। ख़ुदा रहम, उन्हें तो अब वह रूहानी फिल्म "बीस साल बाद" का मंजर लगने लगा। बेचारे रज्जब मियां को, क्या पत्ता? वे तो ठहरे, पानी के महकमें के मुलाज़िम। सोने के पहले, रज्जब मियां अपने दाढ़ी वाले बकरे को... दीवार के पास ही, खूंटे से बांधकर आये थे। अब उसे वहां नहीं पाकर, ढूंढ़ते हुए बकरे को आवाज़ देने लगे।)

रज्जब मियां - (आवाज़ लगाते हुए) - दिलावरऽऽ। ओ, दिलावरऽऽ। दिलावर बहादुर बेटे कहां चल दिये? (अचानक उनकी निगाहें, बगीचे की घास पर गिरती है, जहां उनका बकरा आराम से घास चर रहा है) अच्छा बेटा। वाह बेटे, स्कूल के बगीचे की ताज़ी-ताज़ी घास चर रहे हो?

(अचानक उनकी नीमबाज़ निगाहें, ज़मीन पर पड़े चुग्गाखां पर गिरती है। जहां चारो ओर ठौड़-ठौड़ को ज़मीन पर पैख़ाना (मल)

बिखरा है, वहां चुग्गा खां पड़े पाकर, क़रीब आते हैं। क़रीब आकर, वे कहते हैं।ं)

रज्जब मियां - (पास आकर) - अरे मियां, यह क्या? हाय अल्लाह, यहां कैसे? क्या हो गया, आपको? पाख़ाने की नापाक जगा पर, आप चारों खाना चित्त? अरे हुज़ूर, आप यहां कैसे पड़े हो? कहीं, आसेब-वासेब का चक्कर तो नहीं....?

(उनकी बात सुनकर, चुग्गा खां का सर शर्म से झुक जाता है। रज्जब मियां को, उनसे क्या लेना-देना? वे वापस दीवार फांदकर, चले जाते है... अपने क्वाटर में। अब चुग्गा खां कराह कर, उठते हैं। फिर लंगड़ाते हुए, बरामदे की ओर क़दम बढ़ाते हैं।)

चुग्गाखां - (बड़बड़ाते हुए) - कम्बख़्त आसेब नहीं, निकला बकरईद का बकरा। आसेब की शक्ल बनाकर, आ गया डराने... कम्बख़्त।

(जाफ़री की ओर जा रहे चुग्गा मियां, जैसे ही वे दरवाज़े के पास आते हैं, "म्यांऊऽऽऊंऽऽ.. म्यांऊ" आवाज़ निकालती हुई एक काली बिल्ली चिहुंकती हुई उनकी छात्ती पर छलांग लगा बैठती है। मियां

के दिल की धड़कन बढ़ जाती है, बदन का रोम-रोम खड़ा हो जाता है। बेचारे डर के मारे ज़ोरों से चीख़ उठते हैं, दरवाज़े की तरफ़ बढ़ते क़दमों को क्या रोके? उसके पहले, बदकिस्मत से जाफ़री की सीढ़ियां उतरती हुई एक परछाई उनसे टक्कर खा बैठती है। बेचारे चुग्गाखां चीख़ते हुए, गिर पड़ते हैं। इधर इनका गिरना, और इधर इस कम्बख़्त लाइट का वापस आ ज़ाना, एक सयोग। सभी बत्तियां जल उठती है, उस रोशनी में सामने परछाई की जगा मनु भाई को पाकर उनके दिल की धड़कन सामान्य होने लगती है। इधर बेचारे मनु भाई की भी, यही दशा...जो चुग्गा खां की रही। बेचारे लोहे के डण्डे के गिरने की आवाज़, और उनकी चीख़ सुनकर उनकी मदद करने आये थे। मगर अन्धरे में इनसे टक्कर खाकर, ख़ौफ के गिरफ्त में आ गये। अब धड़कते दिल को थामते हुए, मनु भाई कुर्सी पर आकर बैठते हैं। फिर, क्या? धोकनी की तरह चल रही सांसों को वे सामान्य कर नहीं पाते, और डर को काबू में करते हुए मटकी से लोटा भरकर पानी ले आते हैं.... और ज़मीन पर गिरे चुग्गाखां को होश में लाने के लिये, उनके चेहरे पर छिड़काव करने लगते हैं।)

चुग्गाखां - (कराहते हुए, उठते हैं) - ख़ुदा रहम। आज़ बच गया, बाल-बाल।

मन्नु भाई - (हाथ का सहारा देते हुए) - बच गये, या उलझ गये मियां? आसेब के जाल में फंसकर। प्यार,े ध्यान रखा करो.....आज़ तो बाबा गोस ने, बचा दिया तुमको...(सहारा देकर, उन्हे बरामदे में रखे स्टूल पर बिठाते हैं।) समझदारी रखा करो, मियां....बचाव के लिये, कारचोब वाला इमामजामीन अपने साथ रखा करो।

चुग्गाखां - ऐसी क्या बात है, हुजूर?

मनु भाई - इस जगा की, तख़रीब बताता हूं सुनो....इस स्कूल के बनने के पहले अनगिनत खड्डे दिखाई देते थे। यहां लोग, जापे में मरे बच्चों को दफ़नाते थे.....अरे भाईज़ान, इसे क़बरिस्तान ही समझो। आसेब, चुड़ैलों ख़बीस, व जिन्न वगैरा का आना-ज़ाना लगा रहता था, इस ज़मीन पर।

चुग्गा खां - हाय अल्लाह। अब समझ में आया, हमें। कभी-कभी रात को बारह बजे, घुंघरू बजने की आवाज़ सुनाई क्यों देती है।

मनु भाई - बस यही बात है, मैं आपको आगाह करना चाहता था। रात ़के बारह बजे के बाद, कभी आप बाहर ना निकला करें। हाय अल्लाह। आज़ इधर आपका चिल्लाना सुना...

चुग्गा खां - फिर, क्या हुआ जनाब?

मनु भाई - और उधर हम, दुकान पर लगा रहे थे ताला। बस जनाब, दौड़े-दौड़े आये मदद को.....रास्ते में बदशिगुनी बिल्ली ने रास्ता काट लिया, और इधर आपको पाया बेहोश।

चुग्गाखां - शुक्रिया जनाब। हमारी बहदवासी में तशरीफ़ रख कर, आपने हौसला अफ़जाई की। आपके एहबाब से, दब गया हुज़ूर। इस नाइट ड्यूटी में, बस आपका ही सहारा है.. जनाब। नूर मियां का दिया इमामजामीन, कल ज़रूर पहन लूंगा।

मनु भाई - ज़रूर पहन लेना, भाई। आज़ की रात, अमावस की रात है। इस रात को, अक़्सर ये चुड़ैलें बिल्ली के रूप में आती है और

अपने शिकार ढूंढ लेती है। ख़ुदा रहम, आपकी छात्ती पर चढ़ने वाली बिल्ली ज़रूर चुड़ैल या डायन होगी। अल्लाह ने, आपको बचा दिया।

चुग्गा खां - सच कहा, आपने। अरे वह परछाई क्या थी, जनाब? हमने तो समझ लिया, फातमा आहिरः का आसेब आ गया....हमसे बदला लेने। ख़ैर वह कम्बख़्त तो, रज्जब मियां का बकरा दिलावर निकला....आया था, बगीचे की घास चरने। आज़कल मेरे सितारे गर्दिश है, मनु भाई।

मनु भाई - अरे चुग्गा खां, गफ़लत में ना रहें। वह बकरा असल में बकरा नहीं था, वह तो ख़बीस होगा। उसने बकरे का रूप ले लिया था, अगर वह असल में बकरा होता तो, आप कैसे गिरते? ख़बीसों की आदत ही कुछ ऐसी है, ये आदमी को पहले नीचे गिरा देते हैं। फिर, उसका खून पीते हैं।

चुग्गा खां - (डरते हुए) - ए अल्लाह, तूझे बहुत शुक्रिया। मेरी ज़ान बच गयी, नहीं तो मार देता यह ख़बीस। (मायूसी से) गर्दिशजदः

चोट खाकर उठा हूं....पांव में चोट लगी है, अल्लाह ज़ाने कब ढंग से चल-फिर पाऊंगा?

मनु भाई - कुछ तकलीफ हो तो, मुझे फ़ोन कर देना।

चुग्गा खां - याद आया, मनु भाई। ख़ातून की तबीयत नासाज़ है, अभी फ़ोन आया था, हुज़ूर। तकलीफ़ दूंगा, मैं ज़रा ग़रीबख़ाने जा आऊं। तब तक आप यहीं रहें, मेरे आने तक रूख़्सत मत होना। अभी आता हूं, हुज़ूर।

मनु भाई - (होंठों में ही) - ख़ुदा रहम। आया था मस्जिद में नमाज़ अदा करने, मगर रोज़े गले पड़ गये। यह क्या फ़ितरत है, इंसानों की? ए मदीना पीर, इस इंसान को इसकी बीबी के ख़ौफ से बचा रहा हूं...मगर ए ख़ुदा मुझे बचा देना अपनी बीबी के खौफ़ से, बस इसको वापस जल्द लौटा देना स्कूल में...ताकि, मैं घर जल्द जा सकूं?

(अब मनु भाई के जवाब का, चुग्गा खां क्यों इंतजार करें? उनकी क़िस्मत में, बिल्ली ने छींका तोड़ दिया। बस अब चुग्गा खां पीछे

नहीं रहते हैं, मलाई खाने? झट साइकल पर सवार होकर, चल देते हैं अपने घर की ओर। अब घर में दाख़िल होकर क्या देखते हैं, चुगा खां? दालान में कुर्सी पर बैठकर, उनकी बीबी आराम से चाय पी रही है। चाय की चुश्कियों के साथ, पकोड़ों का लुत्फ़ उठा रही है। अचानक अपने शौहर को सामने पाकर, वह झुंझला जाती है। फिर क्या? ताने मारती हुई, मोहतरमा कहती है।)

फ़क़ीरे की अम्मी - (ताने मारती हुई) - क़ायदे आज़म, इस वक़्त घर कैसे? चाय-काफी की तलब हुई या पेट की आग सताने लगी? कम्बख़्त यह भूख, दिन देखे ना रात? ले आती है आपको, मक्की की रोटी और सरसो का साग खाने?

(इतना कहकर, वह किचन में चली जाती है। उनके पीछे-पीछे चुग्गा खां भी चले आते हैं, किचन में। उधर जीने के पास बैठी अपनी सास को सुनाती हुई, ज़ोर से कहने लगती है।)

फ़क़ीरे की अम्मी - (सास को सुनाती हुई, ज़ोर से कहती है) - ए मदीना पीर, यह फ़ाजिर मर्द तो मुझे क़ब्र से बाहर निकालकर मुझे

कहेंगा कि 'चल रसोई में, मक्की की रोटी और सरसों का साग बना दे। मुझे, ज़ोरों की भूख लगी है।' मेरा मरने में ही, सबका फ़ाइदा है।

चुग्गा खां - (चौंकते हुए) - यह कहती हो, बेग़म? मैं माज़रे से फ़हमीद हूं, फ़क़ीरे का फ़ोन आया था। वह कह रहा था, जल्द आ जाओ (डरते हुए) अम्मी की तबीयत.....नासाज़ है।

फ़क़ीरे की अम्मी - (बेनियाम होकर, बेलन उठाती है) - क्या कहा, शौहर-ए-नामदार? क्या मैं अक़्लेकुल हूं, जो ऐसा कहकर आपको बुलाऊंगी? आपको इस वक़्त घर बुलाकर, मुझे अपना भेजा चटवाना है क्या? एक तो यहां लाकर बैठा दी, मेरी नकचढ़ी सास को?

चुग्गा खां - आंचे मती बोलो, बेग़म। अम्मी सुन लेगी, तो बेफ़िज़ूल मेरा सर-दर्द बढ़ जायेगा।

फ़क़ीरे की अम्मी - (रूखे सुर में) - क्यों नहीं बोलूंगी, मियां? यह नकचढ़ी बार-बार चाय मांगती है, आख़िर कितनी बार चाय पिलाऊं इसे? कम्बख़्त का चाय पीते, गला जल जाये मेरी बला से।

तुमसे मुझे कोई ज़ाइद अज़ उम्मीद नहीं, तुममें कहां काबिलियत मेरे तिफ़्ले अश्क पोंछने की?

चुग्गा खां - नाराज़ मत हो, मेरी मेहरारू।

फ़क़ीरे की अम्मी - (चिढ़ती हुई) -ज़ानते नहीं? मुक़तजाए उम्र का तकाजा है, कमज़ोर हो गयी हूं...अब इतना काम नहीं कर सकती। अगर तुम घर के काम में मदद नहीं कर सकते, तो मेरे काम को बढ़ाओ मत। (रोती हुई) मेरा जीना हराम कर दिया है, आपने.....

चुग्गा खां - परेशान मत हो, बीबी। ख़ुदा पर भरोसा रखो, सब ठीक होगा।

फ़क़ीरे की अम्मी - (रोती हुई) - हाय अल्लाह, अब्बा हुज़ूर हमारा निकाह आगरा वाले ठेकेदार झमकू मियां से कर देते तो आज़, शाही ज़िन्दगी बसर कर रहे होते? अब तो हमारे क़िस्मत में यह बावर्ची ख़ाना लिख दिया अल्लाह पाक ने, अब क्या करें इस पेटू शौहर का?

(बेग़म की ये बातें सुनकर, चुग्गा खां को रंज होने लगा। बेचारे, बुझे दिल से उठते हैं... और, रूख़्सत होने की बात करते हैं। मगर, भले मानुष को ज़ाने कौन देता? यहां तो उनकी बीबी, उनका रास्ता रोक कर बीच में खड़ी हो जाती है।)

चुग्गा खां - (बुझे दिल से) -बेग़म, अब तो रही-सही भूख ख़त्म हो गयी...तुम्हारा इतना बड़ा भाषण सुनकर। अब चलते हैं, स्कूल। बेचारे मनु भाई, हमारा इंतजार कर रहे होंगे।?

फ़क़ीरे की अम्मी - (अपन लबों पर मुस्कान लाकर) - अब इतनी रात बीते, कहां जा रहे हो? कोई मर्द अपनी खातूने खानः को इस तरह तन्हाई में छोड़कर जाता है, क्या? (फ़क़ीरे को आवाज़ देती है, थोड़ी देर मे फ़क़ीरा आता है। फिर, उससे कहती है) फ़क़ीरा, ज़रा अपने अब्बू के लिये चाय बनाकर बेड रूम में लेते आना। बेचारे थके हुए आये हैं, घर।

(फ़क़ीरा चाय बनाने बैठ जाता है, अब फ़क़ीरे की अम्मी चुग्गा खां का हाथ पकड़कर कहती है।)

फ़क़ीरे की अम्मी - (हाथ थामती हुई) - अब चलिये, ना। क्यों देरी कर रहे हैं, आप?

चुग्गा खां - (हैरानी के साथ, मन में बड़बड़ाते है) - यह कोई जीना है, चित्त भी बेग़म की और पुट भी बेग़म की? बस इस बेग़म ने तो हमको बना दिया, साहब....बीबी के गुलाम। सच कहते हैं, लोग 'कबूतर को दिखता है, कुआ।' आख़िर, कुए में उसका घोंसला होता है। जो ज़ान से प्यारा होता है, बस हमें भी यही पसंद है। बीबी हमारे बिना नहीं रह सकती, और हम बीबी के बिना नहीं रह सकते।

(तभी उन्हें बेचारे मनु भाई की याद आ जाती हैं, अब वह ख़ुद को कोसते है 'हाय अल्लाह। बेचारे भोले मोमीन को गिरवी बैठाकर, यहां चला आया...बीबी से मिलने?' बस, फिर क्या? झट फ़क़ीरे को कह बैठते हैं।)

चुग्गा खां - (फ़क़ीरे से) - अरे ओ फ़क़ीर्या। ज़रा पहले रहमत मियां के घर जाकर फ़ोन लगाकर, मनु भाई को कहकर आ के 'मैं अब

रात को वापस लौटूंगा नहीं, स्कूल के ताले लगाकर उसकी चाबी साबू भाई के घर रख देवें।'

फ़क़ीरा - (चूल्हे पर चाय तैयार करता हुआ) - दुकान का नम्बर लगाऊं या स्कूल का?

चुग्गा खां - स्कूल का लगा रेऽऽ..। उनको आदाब करना, मत भूलियो।

(इतना कहकर, चुग्गा खां अपनी बेग़म को साथ लिये बेड रूम में चले जाते हैं। पीछे से फ़क़ीरा, गैस के चूल्हे का स्वीच बंद करता है। भगोने पर ढक्कन रखकर, फ़ोन करने चला जाता है। धीरे-धीरे मंच पर, रोशनी गुल हो जाती है।)

(३)

(मंच रोशन होता है, चुग्गा खां के मोहल्ले के कई मोमीन अपने घरों की छत्तों पर खड़े होकर, आसमान की ओर देख रहे हैं। तभी आसमान में चांद के दीदार होते है, चांद के दीदार पाकर सारे मोमीन ख़ुशी से चहक उठते हैं। तभी बंदूक के दागने की आवाज़

सुनायी देती है, और इधर मस्जिद से मुल्ले की अज़ान लगाने की आवाज़ सुनायी देती है। अज़ान सुनकर, सभी मोमीन ख़ुदा को शुक्रिया अदा कते हुए सीढ़ियां उतरते हैं और नमाज़ अदा करने के लिये मस्जिद की ओर क़दम बढ़ाते हैं।)

मोमीन - (दानों हथेलियां सामने लाते हुए) - आमीन। शुक्रिया मेरे मौला, बड़ी मशक्क़त के बाद आज़ का रोज़ह ख़त्म हुआ।

(आसियत का अंधेरा धीरे-धीरे बढ़ता है, चुग्गा खां लाठी और टोर्च लेकर घर से बाहर निकल आते हैं। फिर, साइकल पर सवार होकर स्कूल पंहुच जाते हैं। स्कूल का दरवाज़ा खोलकर वे अंदर दाख़िल होते हैं। बत्तियां जलाकर, अब वे फ़ोन के पास रखे स्टूल पर तशरीफ़ आवरी होते हैं। बेचारे चुग्गा खां बैठे-बैठे, बीते वाकयो को याद करते हुए गमगीन हो जाते हैं। आंखों के आगे, ये सारे वाकये तस्वीर की तरह सामने घूमने लगते हैं। बीबी का बुलावा आना, उनका घर लौटना, बीबी का मिलीटन जैसा बर्ताव और फिर मोहब्बत से उन्हें बेड रूम में ले ज़ाना वगैरा मंजर कई दफ़े दिखायी

देते हैं। बेचारे अपने दिमाग़ की हलचल को कंट्रोल नहीं कर पाते, बरबस बड़बड़ाने लग जाते हैं।)

चुग्गा खां - (बड़बड़ाते हुए) - हाय परवरदीगार, अब क्या करूं? (सोचने के अंदाज से) यों करते हैं, मियां। रात के बारह बजे तक स्कूल में रहना, फिर यहां कोई राऊंड में आने वाला नहीं। बस, फिर घर जाकर तसल्ली से सोने चले ज़ाना। दूसरे दिन तड़के चार बजे उठकर स्कूल चले आना, और फिर स्कूल की बाउंड्री के अंदर दिशा मैदान ज़ाने वाले मोहल्ले के लोगों को मुग़ल्लज़ गालियां बकते हुए उन्हें हटाना...इस तरह रोज़ के काम जैसे पानी भरना, कमरों की सफ़ाई करना, वगैरा से फारिग़ हो ज़ाना। तब तक, सुबह के सात बज जायेंगे। सात बजते ही, स्कूल शुरू होने की पहली घण्टी लगा देना। तब तक पहली पारी के मुलाज़िम आ जायेंगे, उनके आने पर उन्हें स्कूल का चार्ज देकर वापस घर लौट आना। इस तरह स्कूल का काम भी पूरा, और बीबी भी ख़ुश।

(दिन बीतते जाते है, इस तरह का रूटीन बनाकर चुग्गा खां अमन-चैन से नाइट ड्यूटी को अंजाम देते रहे। मगर कुछ दिन बाद, दाऊद मियां रोज़ नाइट डयूटी चैक करने की ग़लत आदत बना लेते हैं। अब बेचारे चुग्गा खां की शामत आती है, ना तो दाऊद मियां की आदतों में सुधार आता दिखायी दिया और ना कोई दूसरा मुलाज़िम नाइट डयूटी लेने को तैयार हुआ? दाऊद मियां को अपने बच्चों की लापरवाही और अपव्यय करने की आदत मंजूर नहीं, और इधर उनकी खातूने खानः हर बात में बच्चों का सपोर्ट लेते रहने की आदत...जो, उन्हें गवारा नहीं। बस अब रोज़ के झगड़ों से दूर रहने के ख़ातिर, वे आधी रात के बाद घर आने लगे। इस तरह उनका रात के बारह बजे तक का वक़्त, मनु भाई की दुकान पर बीत जाता है। इस दौरान वहां से, वे स्कूल की ओर कई बार देखते रहते। और इस तरह, वे बेचारे चुग्गा खां पर नज़र रखने लगे। इसी तरह हमेशा की तरह अभी वे, रात के इग्यारह बजे मनु भाई की दुकान पर अपना वक़्त बीताने बैठे हैं। स्कूल की बिल्डिंग व ग्राउंड

में रोशनी पाकर, वे तसल्ली कर लेते हैं। फिर चुग्गा खां की तारीफ़ करते हुए उनकी शान में कसीदे निकालते हुए दिखायी दे रहे हैं।)

दाऊद मियां - (मनु भाई से) - मनु भाई, चुग्गा खां स्कूल के बहुत वफ़ादार हैं। जनाब अभी भी वे जगकर, अपनी ड्यूटी कर रहे हैं।

(मनु भाई को देर रात तक इनका दुकान पर बैठे रहना, अच्छा नहीं लगा। एक तो जनाब बातें करते हुए, उन्हें दुकान का बही खाता लिखने का काम करने नहीं देते। ऊपर से उनके हर झूठ को, सच में बदलने के लिये उनकी हां में हां मिलाते रहो...? सच्चा मोमीन कभी ऐसा काम कर नहीं सकता, क्योंकि ख़ना (मिथ्या) बोलना पाप है। यहां तो मनु भाई चुग्गा खां के बारे में ज़ानते हैं, वे इस समय स्कूल में न होकर अपनी बीबी के पास हैं। अब उनके लिये दाऊद मियां की हां में हां मिलाना, कितना कठिन होगा? यह तो उनका अल्लाह मियां, ख़ुद ज़ान सकते हैं। आख़िर, वे दाऊद मियां को सुनाने लग जाते हैं।)

मनु भाई - दाऊद मियां आप ज़रूर स्कूल के सादिक़ ठहरे, मगर हम तो वफ़ादार है अपनी खातूने खानः के। देखिये आप, दिन भर कड़ी मेहनत करके अब रात के इग्यारह बजे हम दुकान डोडी करके अपनी खातूने खानः के पास जायेंगे।

दाऊद मियां - जाइये.... जाइये। हमने कब रोका है, आपको?

मनु भाई - मुआफी चाहता हूं, अब आपको यहां से रूख़्सत होने की जहमत उठानी होगी।

दाऊद मियां - (उठते हुए) - चलिये मनु भाई, हम भी चलते हैं...मगर ज़ाने के पहले, एक बार स्कूल का राउण्ड काट लेना अच्छा होगा।

(दाऊद मियां स्कूल के मेनगेट की तरफ़ बढ़ते है, उन्हें ग्राउण्ड और बरामदे की बत्तियां जली हुई दिखती है। बरामदे में जहां फ़ोन रखा है, उसके क़रीब ही चार बड़ी टेबलें एक साथ जमा दी गयी है। जिस पर चुग्गा खां का बिस्तर लगा है। कम्बल ओर तकिये ऐसे रखे गये हैं, मानो वहां कोई इंसान कम्बल ओढ़कर सो रहा हो? चक्कर

काटते-काटते दाऊद मियां, बरामदे के गेट की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा लेते हैं। यहां लोहे की जाली के दरवाज़े लगा है, जिस पर एक हरीसन ताला जड़ा देखकर मियां का सर चकरा जाता है। कहां तो वे ज़नाब चुग्गा खां की तारीफ़ करते उन्हें वफ़ादार (सादिक़) कह रहे थे, और अब उनकी असलियत सामने आने पर मियां का सर चकरा क्या जाता है...? जनाब एकदम हो जाते हैं, बेनियाम। बरबस उनके लबों से, ये अल्फ़ाज़ फूट पड़ते हैं।)

दाऊद मियां - (बेनियाम होकर) - जनाबे आली ने, यह क्या तमाशा खड़ा कर दिया? आदमी अन्दर, और गेट पर ताला? माशाअल्लाह, मियां ने आख़िर अपनी करामत दिखला दी। यह कम्बख़्त, वफ़ादार कहां? यह तो ड्यूटी चोर निकला, अब मौक़ा आने पर इस कबूतर को कुए से बाहर निकालकर ही दम लूंगा।

(दाऊद मियां जिस वसूक को लिये, उनको वर्कर समझ रहे थे...वह टूट गया। इस रंज को लिये दाऊद मियां, अपने घर की ओर क़दम

बढ़ाने लगे। धीरे-धीरे उनके पांवों की आवाज़ दूर तक सुनाई देती है, मंच पर अंधेरा छा जाता है।)

(४)

(मंच रोशन होता है, इस वाकया को बीते कुछ दिन गुज़र जाते हैं। मगर, दाऊद मियां अभी तक तक इस वाकये को भूले नहीं है। हमेशा की तरह चुग्गा खां, अपनी नाइट ड्यूटी अपनी बनाये प्लान के तहत दे रहे हैं। अब आसियत का अंधेरा बढ़ता जा रहा है। स्कूल की बिल्डिंग का मंजर दिखायी देता है, जहां बरामदे व ग्राउण्ड की बत्तियां जली हुई है। बरामदे की दीवार पर टंगी घड़ी को देखकर, ऐसा लगता है के अभी रात के नौ बजे हैं। तभी फ़ोन की घण्टी बजती है, पहलू में बैठे चुग्गा खां क्रेडिल से चोगा उठाते हैं।)

चुग्गा खां - (चोगा उठाकर) - हल्लू। कौन साहब बोल रिया है?

फ़ोन से आवाज़ आती है - (रूदन करती हुई आवाज़) - भाईज़ान, आपका छोटा भाई रसूल बोल रिया हूं, अब्बा हुज़ूर की तबीयत नासाज़ है। उन्हें हार्ट एटेक हुआ है, भाईज़ान। (रसूल के रोने की

आवाज़, सुनाई देती है) आप जल्दी से जल्दी, गांव आ जायें। ना मालुम, कब अल्लाह पाक उन्हें बुला ले?

चुग्गा खां - फ़िक्र ना करो, रसूल। हम अभी गाड़ी पकड़कर, आ ही रहे हैं। तुम अब्बाहुज़ूर और अम्मीज़ान का ख़्याल रखना, बस हम आ ही रहे हैं।

(चुग्गा खां ने कह तो दिया के, वे आ रहे हैं जल्द। मगर, ऐसे वक़्त जायें कैसे? जब स्कूल में, सेकेण्ड्री बोर्ड इमतिहान के पेपर रखे हो? इस वक़्त चोबीस घण्टे, पेपर की हिफ़ाजत बाबत चौकीदार का रहना बहुत ज़रूरी है। अगर ऐसे वक़्त, गांव न गया तो, ख़ुदा ना ख़्वास्तः अब्बाहुज़ूर इस ख़िलक़त से रूख़्सत हो गये तो उनका मुंह देख नहीं पाने का पछतावा ज़िन्दगी-भर सताते रहेगा। तभी बिजली गुल हो जाती है, चारों ओर अंधकार फैल जाता है। सांय-सांय करती हवा बहने लगती है, तभी तेज़ आसिफ़ (आंधी) चलती है। पेड़ों के पत्तों को छोड़ो, उनकी डालियां भी तेज़ी से हिलने लगी। अचानक मेन गेट खुलने की आवाज़ सुनाई देती है, चुग्गा खां

जाली के पास जाकर मेन गेट पर नज़र डालते हैं। मेन गेट का फाटक खोलकर, एक सफ़ेद साया आता हुआ दिखायी देता है। उन्हें सफ़ेद कपड़े पहनी हुई, एक बला दिखायी देती है। हवा में लहराते हुए उस बला के लम्बे-लम्बे केश, किसी क़िब्रस्तान की चुड़ैल से कम नहीं। उसके एक हाथ में जलती लालटेन, और दूसरे हाथ में सफ़ेद बाल्टी। उस बाल्टी पर लगे लाल सुर्ख छींटों को देखकर ऐसा लगता है, मानो वह बाल्टी न होकर किसी इबलीस का खून भरा खप्पर हो? धीरे-धीरे, वह बला अपने क़दम हेड पम्प की तरफ़ बढ़ाती है। तभी मनु भाई की दुकान पर रखा रेडियो बिजली आने से अचानक स्टार्ट हो जाता है। उस पर फिल्म 'बीस साल बाद' का यह नग़मा 'गुमनाम है, कोई...बदनाम है, कोई।' गूंज़ उठता है। अब चुग्गा खां से रहा नहीं जाता, उन्हें ऐसा लगता है...मानो, उस बला का फैलाये हुआ जाल कुछ ऐसा कुव्वते जाज़बा पैदा कर लिया है....जिसके खींचाव को चुग्गा खां महसूस करते हुए, स्वतः अपने धूजते पांवों को हेडपम्प की तरफ़ बढ़ा देते हैं। ज्यूं-ज्यूं वे उसके क़रीब जाते, उस बला का चेहरा धुंधला सा नज़र आने लगता है।

उन्हे वह चेहरा, उस आहिर पड़ोसन के चेहरे से मिलता-जुलता लगता है। उस आसेब की शक्ल, अब उनके दिमाग़ में छा जाती है। अब तो मियां की हालत, कुछ पूछो मत। उनके बदन के सारे रोम खड़े खड़े हो जाते हैं, अब वे डर के मारे चीख़ उठते हैं। चीखते हुए, वे ज़ोर से कहते हैं।)

चुग्गा ख़ां - (डरकर, ज़ोर से कहते हैं) - अरी ओ फातमा, मरने के बाद भी चैन से जीने नहीं देती? क्यों आयी तू, यहां? चली जा दोजख़ में, मेरा पीछा छोड़।

(ऐसा सुनकर, बला जल-भुन जाती है। बाल्टी हेड पम्प के पास रखकर, वह मुग़ल्लज़ गालियां की बोछार चालू कर देती है।)

बला - (मुग़ल्लज़ गालियां बकती हुई) - अरे ए रण्डी की दस मर्दों की औलाद, तू है कौन मुझे रोकने वाला? खून पी जाऊंगी, तेरी छात्ती पे चढ़ के। यह मोहल्ला मेरा, यह स्कूल मेरी। तू कौन होता है रे, मुझे मना करने वाला? अबकी बक, तेरे मूण्डे में दहकते खीरे डाल दूंगी..।

(तभी बत्तियां जल उठती है, ट्यूब लाइट की झीनी-झानी रोशनी में उस बला का चेहरा साफ़-साफ़ नज़र आने लगा। उसका चेहरा देखकर, बेचारे चुग्गा खां शर्मसार हो जाते हैं। अब वे उस आतिश रूख़ मोहतरमा को पहचान जाते हैं, वह मोहतरमा और कोई नहीं..वह तो गुस्सेल जैलदार मुमु बाई निकली। वह तो ऐसी शैतान की ख़ाला है, जो चुप रहने का नाम नहीं ले रही। उसका चेहरा देखकर, बेचारे चुग्गा खां की ऐसी रोने जैसी हालत हो जाती है... जैसे वे अब रोए..कब रोए?)

मुमु बाई - (अंगार उगलती हुई) - अरे ए हिंजड़े की औलाद, अब चुप क्यूं हो गिया रे? पाख़ाने के कीड़े, मुझसे सवाल करता है..क्यों आई? स्कूल का पानी लेने आई हूं, तेरे जैसे कुंजड़े के मूण्डे पे पैख़ाना करने नहीं आयी?

(ऐसा सुनते ही, चुग्गा खां घबरा जाते हैं। सर्दी का मौसम होते हुए भी, फ़िक्र के मारे चुग्गा खां की जब्हा से पसीने की बूंदें टपकती

जाती है। मगर यहां वह बेरहम मोहतरमा, काहे चुप रहे? उसकी जोलिंदः बयानी जारी रहती है।)

मुमु बाई - क्या चुप-चाप बैठग्या रे, मूण्डे कीं जबान काटकर चील-कोओं को चुगाकर आइग्या रे तू?

(रोती हुई, दोनो हाथ ऊपर ले जाती हुई अल्लाह पाक से कहती है।)

मुमु बाई - (रोती हुई, दोनो हाथ ऊपर ले जाती हुई) - हाय अल्लाह, तूने मेरे शौहर को अपने घर क्यों बुला लिया? एक बेवा की ज़िंदगी क्या होती है? नौकरी करें, या अपने बच्चों को सम्भाले?

(इतना कहकर, उस ठण्डी रात में उसी हेड पम्प के पास आकर बैठ जाती है। और फिर, जार-जार रोने लगती है। ऐसी हालत में अब बेचारे चुग्गा खां, अपने अब्बू के बारे में क्या सोच सकते हैं? यहां तो मुमु बाई ने नयी आफत्त खड़ी कर दी, उनके लिये। उनको सौ फीसदी शक हो गया, अगर उसके रोने की आवाज़ इन बेरहम मोहल्ले वालों ने सुन ली...तो ये कम्बख़्त ज़रूर, बेचारे चुग्गा खां

की आबरू रेज़ी कर देंगे? बेचारे, अब करें क्या? चुप-चाप मुमु बाई की बात सुनते रहे, वह रोती हुई ज़ोर-ज़ोर से कहने लगी।)

मुमु बाई - (रोती हुई) - तूझे क्या पड़ी है, तेरी घरवाली है धर पर काम करने वाली। मगर मुझे कमाना भी पड़ता है, और इन बच्चों को खाना बनाकर भी खिलाना पड़ता है। इतनी रात बीते, अब आरीफ़ आया है। अब उसे चाहिये, घुसल ज़ाने के लिये गुनगुना पानी।

चुग्गा खां - तो क्या हो गया, हेड पम्प का पानी गुनगुना है...ले जाओ, किसने मना किया मुमु बाई?

मुमु बाई - यह हेडपम्प, तुम्हारे बाप का है...जो पानी ले ज़ाने की परमीशन तुम ऐसे दे रहे हो, मानो यह हेडपम्प तुम्हारे बाप ने पैसे ख़र्च करके यहां लगवाया हो?

चुग्गाखां - (घबराकर) - ऐसा मैने कब कहा, मुमु बाई? इतनी काहे गर्म हो रही हो, मुमु बाई?

मुमु बाई - तुम क्या समझते हो, इन बेवा औरतों को? रोटी पका कर फारिग़ हुई, सोचा कुछ देर लेटकर आराम कर लूं...जितने में इस छोरे ने हुकम दे डाला, हेड पम्प का पानी फ़ातिर है। लेकर आ जाओ, अम्मी। अब इतनी रात बीते यहां आयी, मोहल्ले वाले क्या सोचते होंगे?

(दिल में लगी आग के गुब्बार, निकल जाते हैं। अब, मुमु बाई शांत हो जाती है। खड़ी होकर, हेड पम्प के नीचे बाल्टी रखती है। फिर, चुग्गा खां के हाल-चाल पूछने लगती है।)

मुमु बाई - (चुग्गा खां के जब्हा पर, निगाह डालती हुई) - तुम्हारी जब्हा पर, ये फ़स्ले खिजाँ कैसे? जनाब, कहीं भाभी वापस आसेबजदः हो गयी क्या?

(सहानुभूति के दो शब्द सुनकर, चुग्गा खां अपनी जब्हा से टपकते पसीने को पोंछकर कहते हैं।)

चुग्गा खां - (पसीना पोंछकर) - आपने दुनिया देखी है, मुमु बाई। भरी जवानी में आपका सुहाग उजड़ गया, फिर काबिना को पालने

के लिये आपने कितने पापड़ बेले होंगे? उस दौरान, आपने किसी पर वसूक किया?

मुमु बाई - बिना वसूक किये, इस दुनिया का काम चलता नहीं। ज़ानते नहीं आप? आदमी, हमेशा आदमी के काम आता है। मगर, तुम कहना क्या चाहते हो...आख़िर?

चुग्गा खां - अब कैसे कहूं, मुमु बाई...बोला नहीं जा रहा है (दुखः के मारे आंखें नम हो जाती है) अब, कहते कहते....

मुमु बाई - कलेज़ा मज़बूत रखो, मियां। तकलीफं़े दुनियादारी में आती रहती है, इंसान को हौसला नहीं खोना चाहिये।

चुग्गा खां - घबरा नहीं रहा हूं, मुमु बाई। बात दूसरी है, अभी छोटे भाई का फ़ोन आया। वह कह रहा था के, 'अब्बा हुज़ूर अजलगिरफ्त है।' इस कारण, मुझे अभी गांव ज़ाना है...मगर, क्या करूं?

मुमु बाई - मगर, क्या? किसने रोका है, आपको? जाइये... जाइये। ख़ुशी से जाइये।

चुग्गा खां -क्या करूं, ख़ास समस्या है सेकेण्ड्री बोर्ड इमतिहान के पेपर की। जो रखे हैं, इस स्कूल में। चोबीस घण्टे इसकी हिफ़ाजत के लिये, स्कूल में चौकीदार का रहना सख़्त ज़रूरी है। अब इतनी रात, किसको बुलाकर यहां बैठाऊं? समझ में नहीं आता, मुमु बाई करूं क्या?

मुमु बाई - जाओ मियां, जाओ तुम। बाप तो मरने जा रहा है, और तुमको स्कूल के काम की लगी है? तुम नहीं, तो क्या? कोई ओर आकर हिफ़ाजत के लिये तैनात हो जायेगा। बस तुम जाते वक़्त, स्कूल की चाबियां मेरे घर पर रख ज़ाना। दाऊद मियां को कह दूंगी...

(तभी मुमु बाई की नज़र, बाल्टी पर गिरती है...जो अभी तक ख़ाली है। उसे देखकर, मुमु बाई की फ़िक्र बढ़ जाती है.... अभी तक, उसने बाल्टी क्यों नहीं भरी? बेचारा आरीफ़, गुनगुने पानी का इंतजार कर रहा होगा? फिर क्या? झट मुमु बाई, पम्प चलाती हुई पानी भरना शुरू करती है...ओर साथ में, कहती जाती है।)

मुमु बाई - (हेड पम्प से पानी भरती हुई) - हाय अल्लाह। कहां बैठ गयी, फिजूल की गूफ़्तगू करने? बेचारा आरीफ़ घर पर भूखा बैठा होगा, और में यहां बैठी क्या कर रही हूं?

(इतना कहकर, मुमु बाई बाल्टी में पानी भर लेती है। फिर बड़बड़ाती हुई, अपने घर चली जाती है। अब चुग्गा खां बरामदे की बत्तियों को जली हुई छोड़कर, दरवाज़े पर ताला जड़ देते हैं। फिर मुमु बाई के घर की ओर चल देते हैं, घर की दलहीज के पास आकर मुमु बाई को आवाज़ लगाते हैं।)

चुग्गा खां - (आवाज़ लगाते हुए) - ओ मुमु बाई। स्कूल की चाबियां, दरवाज़े के पास वाले आले में रख रहा हूं।

(मुमु बाई के जवाब का इंतजार किये बिना, चुग्गा खां दरवाज़े को धकेलकर खोल देते हैं। फिर, आले में चाबियां रखकर चले जाते हैं। उनके ज़ाने के बाद, मुमु बाई बरतन मांजने बैठती है। पास के बेड रूम में सो रहे आरीफ़ मियां के खर्राटे, तेज़ी से सुनाई देते हैं और उधर गली के कुत्ते गश्त लगाने वाले चौकीदार को देखकर, भौंकने

लगते हैं। खर्राटों व कुत्तों के भौंकने की आवाज़, दोनो मिलकर अपना अच्छा ताल-मेल बना लेती है। अब ठक-ठक की आवाज़ सुनाई देती है, लाठी को बजाता हुआ चौकीदार आगे बढ़ता है। उसकी लाठी की मार के डर से, कुत्ते दुबक कर भग जाते हैं। चौकीदार गली वालों को सावधान करता हुआ, आगे बढ़ता है।)

चौकीदार - (आवाज़ लगाता हुआ) - जागते रहो...जागते रहो। (लाठी बजाता है)

मुमु बाई - (बरतन मांजती हुई, ज़ोर से कहती है) - हम जागेंगे, हरामख़ोर। तू क्या करेगा रे, करमज़ले?

(मुमु बाई की आवाज़ सुनकर, बेचारे चौकीदार का पूरा बदन मुमु बाई के आतंक से काम्पने लगता है। अल्लाह कसम, अभी कुछ कह दिया इस फातमा को, तो ख़ुदा रहम...यह जंगजू दो-दो हाथ लिये लड़ने ज़रूर आ जायेगी, और फिर अपनी इज़्ज़त बचाना हो जायेगा मुश्किल। ये विचार दिल में आते ही, वह सर पर पांव

रखकर भग जाता है। मंच की रोशनी, धीरे-धीरे लुप्त हो जाती है।)

(५)

(मंच रोशन होता है, मुमु बाई के घर का मंजर दिखायी देता है। अब मुमु बाई बरतन मांजकर उठती है, वाश बेसीन के पास जाकर वह अपने हाथ धोती है। अब उसकी निगाह दीवार घड़ी पर गिरती है, जो रात के इग्यारह बजने का संकेत दे रही है। चुग्गा खां का चाबी रखकर चले ज़ाने से, पेपर की हिफ़ाजत का जुम्मा ख़ुद के सर पर आने से वह घबरा जाती है। दाऊद मियां को अभी इतला करूं, या ना करूं? इसी उधेड़बुन में वह बार-बार फ़ोन का चोगा उठाती है, फिर रख देती है। आख़िर कोई फ़ैसला नहीं कर पाती है, कि करना क्या है? उस कारण वह इसी रंज से, दुखी होकर बड़बड़ाने लग जाती है।)

मुमु बाई - (बड़बड़ाती हुई) - हाय अल्लाह। यह कैसी मुसीबत ले ली मैने मोल? क्यों चाबियां रखवायी मैने, घर पर? ज़माना ख़राब है, जागते इंसान की आंखों से कोई इबलीस चोर सुरमा चुरा

लेता है। यह बस्ती ठहरी, मज़दूरों की। यहां के लोग आये दिन दारू पीकर उत्पात मचाते रहते हैं। फिर इन लोगों के बच्चे, कौनसे शरीफ़ हैं?

(आंगन पर चौकी बिछाकर बैठती है, पास रखे चान्दी के पानदान से पान की गिलोरी निकालकर अपने मुंह में ठूंसती है। तभी दरवाज़े पर दस्तक होती है, उठकर दरवाज़ा खोलती है। सामने, उसकी बूढ़ी अम्मी मरियम बी खड़ी दिखायी देती है। वह अंदर दाख़िल होकर, स्टूल पर बैठ जाती है। फिर हड़बड़ाहट में कहती है।)

मरियम बी - (हड़बड़ाहट में) - अरी छोरी, मैं क्या सुनकर आ रही हूं? तूने स्कूल की चाबियां, अपने घर में रखवा ली?

मुमु बाई - अम्मा क्या कहूं, तुमको? इन स्कूल वालों को मुझ पर इतना ताइद (एतबार) है, वे स्कूल की सारी चाबियां मेरे घर पर ही पड़ी रखते हैं। चाबियां आज़ पहली बार नहीं रखी है, ये लोग तो रोज़ रखते आये हैं।

मरियम बीबी - (फटकारती हुई) - ज़ाहिल कहीं की, समझती नहीं? चोरी कौन करता है, और पकड़ा कौन जाता है? आज़ के ही दिन नेकबख़्त फतेह अली साहब के घर पर, पुलिस ने चोरी का माल जब्त किया है। उनके नेक दख़्तर मंसूरे को, पकड़कर पुलिस ले गयी है।

मुमु बाई - (चौंकती हुई) - क्या कहा? मंसूरा...? हाय अल्लाह, वह तो अल्लाह मियां की गाय सरीख़ा लगता था। क्या ज़माना आया, अम्मी? अब किस पर वसूक रखें, और किस पर वसूक ना रखें?

मरियम बी - (समझाती हुई) - देख बेटी, इमतिहान के पेपर रखे हैं स्कूल में। तू ज़ानती नहीं, कल तेरा भतीजा अल्लानूरिया क्या बक रिया था...प्राइमरी स्कूल बिल्डिंग के स्टोर से इमतिहान की कोपियां की चोरी करके, कोलोनी के छोरों ने रद्दी में बेच दी।

मुमु बाई - हाय अल्लाह। क्या यह सच है?

मरियम बी - हां बेटी, वे नामाकूल अब सेकेण्ड्री स्कूल में चोरी करने की सोच रहे हैं। बोर्ड इमतिहान के पेपरस् की चोरी करके, वे

एक-एक पेपर को पांच-पांच सौ रूपये में बेचेंगे। तू तो ठहरी, कोदन...समझती नहीं।

(मुमु बाई की जब्हा पर फ़िक्र की रेखाएं दिखने लगती है, आख़िर परेशान होकर वह अपने सर पर हाथ रखकर बैठ जाती है। हिदायत देकर, अब मरियम बी उठती है। जाते-जाते, वह कहती है।)

मरियम बी - (जाते-जाते, कहती है) - मैने आगाह कर दिया है, तूझे। अब तू छोटी बच्ची नहीं रही, जिसे बार-बार समझाती रहूं? दो-दो बच्चे जने हैं, तूने...अब, अक़्ल से काम लेना। जाती हूं, छोरी। अल्लाह, तूझे सलामत रखें।

(मरियम बी रूख़्सत होती है, अब मुमु बाई क्रेडिल से चोगा उठाकर दाऊद मियां के नम्बर डायल करती है। अब फ़ोन पर घण्टी सुनाई देती है, थोड़ी देर में दाऊद मियां की आवाज़ सुनाई देती है।)

दाऊद मियां - (फ़ोन पर) - हल्लो, कौन साहब?

मुमु बाई - (फ़ोन से) - में मुमु बाई बोल रही हूं, हेड साहब।

दाऊद मियां - फ़रमाइये मोहतरमा, कैसे जहमत दी?

मुमु बाई - अरे हुज़ूर, चुगा खां अभी ड्यूटी पर नहीं हैं। वे अपने काबिने के साथ में, गांव चले गगये हैं। स्कूल की चाबियां, मेरे घर पर रखकर गये हैं। मैने आपको इतला दे दी है, अब आप ज़ाने और आपका काम ज़ाने। जल्द घर आकर, चाबियां ले लीजिये।

(इतना कहकर, मुमु बाई चोगा क्रेडिल पर रख देती है। फिर लम्बी-लम्बी सांसें लेती हुई, दीवार घड़ी पर वक़्त देखती है। घड़ी में रात के, बारह बजे हैं। इधर काली रात होने के कारण छत्त पर बिल्लियों की गुर्राहट की आवाज़ें बढ़ने लगी, ओर उधर गली के कुत्ते एक सुर में कूकने लगे। मुमु बाई को इन शगुन-बदशगुन का क्या लेना-देना? वह तो इंतजार करने लगी, दाऊद मियां का....कब दाऊद मियां आयें, और वह खूंटी तानकर सोये? थोड़ी देर बाद, दरवाज़े पर दस्तक होती है। बड़बड़ाती हुई, वह दरवाज़ा खोलने जाती है।)

मुमु बाई - (बड़बड़ाती हुई) - अब, आ गया करमजला। रात के बारह बजे है, यह कोई आने का वक़्त है?

(मुमु बाई दरवाज़ा खोलती है, सामने दाऊद मियां के दीदार होते हैं। फिर क्या? आले में पर रखी चाबियां लाकर, थमा देती है उन्हें। फिर, भड़ाक से दरवाज़ा बंद कर देती है।)

मुमु बाई - (चाबियां थमाती हुई) - सम्भाल लीजिये अपनी चाबियां, अब मेरी जिम्मेवारी ख़त्म हो गयी। अब आप ज़ानो, और आपका काम ज़ाने। अब जाइये, जनाब। ख़ुदा हाफ़िज। (दरवाज़ा बंद कर देती है)

दाऊद मियां - (बाहर खड़े-खड़े, बड़बड़ाते हुए) - यह क्या? यह मोहतरमा तो इतनी बदतमीज़ निकली, के मुझसे कुछ पूछा नहीं 'अब स्कूल में कौन रूकेगा? अगर आप रूकते हो तो, मैं आपको ओढ़ने-बिछाने के लिये कोई चादर दे दूं... क्या?

(हताश होकर, दाऊद मियां स्कूल की ओर अपने क़दम बढ़ाते हैं। थोड़ी देर बाद, वे स्कूल पहुंच जाते हैं। दरवाज़े पर लगा ताला

खोलकर अंदर दाख़िल होते हैं। अंदर आकर, वापस दरवाज़ा बंद करके लम्बे संदूक पर लेटकर सो जाते हैं। मगर बेचारे दाऊद मियां को, नींद नसीब होने का सवाल नहीं? पूरी रात, वहां कानों के पास मच्छर भनभनाते रहे। भनभनाते हुए, अपना संगीत सुनाते रहे। सुबह करीब पांच बजे, मच्छरों का हमला कम होने पर उनको नींद लगी होगी? बेचारे दाऊद मियां करीब घण्टे भर ही सोये होगें, और सुबह के छः बजते ही मेमूना भाई आकर दरवाज़े पर दस्तक देने लगे। आंखें मसलते हुए, दाऊद मियां उठते हैं। फिर जाकर, दरवाज़ा खोलते हैं।)

मेमना भाई - हेड साहब, आदाब। आज़ यहां, कैसे? कहीं मेम साहब, खफ़ा तो नहीं है? लगता है, रात को दरवाज़ा खोला नहीं होगा? (संदूक पर निगाह डालते हुए) यह क्या, हेड साहब? कोई चादर-तकिया लिया नहीं, आपने। कहीं मलेरिया की बीमारी मोल लेनी है, क्या?

दाऊद मियां - (गुस्से में) - कहां से लाता, चादर-तकिया? चुग्गा खां बिना कहे, चल दिये अपने गांव। आख़िर बोर्ड के पेपरस् की हिफ़ाजत करनी थी, इसलिये अचानक यहां आना पड़ा यहां। मुझे कोई शौक नहीं, मच्छरों का संगीत सुनने का ....

मेमूना भाई - हुज़ूर आप ठहरे हेड साहब, मच्छरों का संगीत हम जैसे जैलदारों के ही नसीब में ही है। हुज़ूरे आला, को कहां ऐसे ...

(मेमूना भाई से नाराज़ होकर, दाऊद मियां कोई जवाब नहीं देते हैं। और पांव पटकते हुए, हेड पम्प की ओर चले जाते हैं....हाथ-मुंह धोने। मंच पर, अंधेरा छा जाता है।)

(६)

(मंच रोशन होता है, स्कूल के बरामदे का मंजर दिखायी देता है। दीवार पर टंगी दीवार घड़ी, सुबह के इग्यारह बजने का वक़्त दिखा रही है। रूख़्सत विला इतला रहने का वाकया, को बीते करीब बीस रोज़ हो गये हैं। अभी मेमूना भाई बगीचे में, पौधों को पाईप से पानी दे रहे हैं। तभी मायूस चेहरा लिये, चुग्गा खां

तशरीफ़ लाते हैं। उनके आते ही, मेमूना भाई पाईप को पौधों की क्यारियों में छोड़ देते हैं। फिर चुग्गा खां को पत्थर की बैंच पर बैठाकर, ख़ुद भी उनके पास बैठ जाते हैं। अब उनके बीच में, गूफ़्तगू शुरू होती है।)

चुग्गा खां - (मायूसी से) - क्या करूं, मियां? हेड साहब भी कमाल के ठहरे, मुझसे पूछा ना ताछा...बाइसेरश्क, चल दिये बड़ी बी के कान भरने। फिर क्या? बड़ी भी ठहरी कान की कच्ची, उन्होंने बिना सोचे-समझे मुझे वापस नाइट ड्यूटी पर लगा दिया।

मेमूना भाई - ज़माना ख़राब है, मियां। अब तो किसी पर वसूक नहीं रहा, आप ख़ुद देख लीजिये...इस मुमु बाई को सारा वाकया बताकर ही, आप रूख़्सत हुए थे। मगर, उसने दाऊद मियां को कुछ नहीं बताया। फिर बड़ी बी ने आपकी छुट्टियां रद्द करके, आपको वापस बुला लिया।

चुग्गा खां - (गमगीन होकर) - आख़िर, हुआ क्या? हुक्म की तामिल करने, वापस आया ड्यूटी पर। और, उधर अब्बा हुज़ूर का

इंतकाल हो गया। उनके इंतकाल के बाद, छुट्टियां मंजूर करके मुझे गांव भेजा गया...वह कोई अहसान नहीं किया, मुझ पर?

मेमूना भाई - हाय अल्लाह, दुनिया से जाते हुए आप अब्बा हुज़ूर का चेहरा देख नहीं पाये।

मेमूना भाई - (दिलासा देते हुए) - हिम्मत रखो, मियां। यह सब ख़ुदा के हाथ में है।

चुग्गा खां - (रोते हुए) - इस बेरहम बड़ी बी को देखो ज़रा, आते ही मुझे वापस दे दी मुझे नाइट ड्यूटी। इधर बेग़म ने धमकी दे डाली, इस बार अगर मैने नाइट ड्यूटी हाथ में ली तो वह ज़रूर अपने पीहर चली जायेगी। उधर खेत में खड़ी फसल....हाय अल्लाह, अब क्या करूं?

मेमूना भाई - यार, तू मेरा दोस्त ठहरा। मेरे लायक कोई काम हो तो, कहना।

चुग्गा खां - (ख़ुश होकर) - ऐसा करो मेमूना भाई, आप मेरी जगह नाइट ड्यूटी कर लीजिये। इस बार आपको कोई तकलीफ़ नहीं, होगी। क्योंकि, अभी इमतिहान भी नहीं चल रहे हैं।

मेमूना भाई - (समझाते हुए) - देखो भाई, तुम फ़िक्र काहे करते हो? राइड़े की फसल तैयार होगी, उससे तुम निकलवाओगे तेल। फिर वो बेचोगे तुम मार्केट में, चार पैसे आयेंगे तुम्हारे घर में। मगर यह बताओ, मुझे क्या फ़ायदा मिलेगा? मैं क्यों दूं, रात की ड्यूटी?

(अब चुग्गा खां को, सारा माज़रा समझ में आ जाता है। इस ख़िलक़त में प्रेम व मोहब्बत से कोई काम नहीं करता है, सभी लोग पैसे की भाषा समझते हैं। आपसी सम्बंध तो ख़ाली, कहने व कहलाने की औपचारिकता है। बस फिर, क्या? अब इन दोस्तों के बीच में सौदा तय हो जाता है कि, 'अब आज़ से चुग्गा खां की जगह मेमूना भाई नाइट ड्यूटी देंगे। फसल कटने के बाद, चुग्गा खां इस एवज में दो पीपा तेल उनके घर पहुंचा देंगे। वो भी, बिना दाम लिये।' इस तरह सौदा पट ज़ाने पर, चुग्गा खां की बांछें खिल

जाती है...और वे ख़ुश होकर घर ज़ाने के लिये रूख़सत होते हैं। वहां दरवाज़ा खोलकर, वे अंदर दाख़िल होते हैं। अंदर दाख़िल होने के बाद, वे क्या देखते हैं? उनकी बेग़म अपनी पड़ोसन से गूफ़्तगू करती जा रही है, और साथ-साथ में दोनों मोहतरमाए हंसी के ठहाके भी लगाती जा रही है। उनकी गूफ़्तगू में बाधा डालते हुए, चुग्गा खां मुज़दा सुना बैठते हैं।)

चुग्गा खां - (ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए) - मुज़दा है, बेग़म...मुज़दा। मुज़दा सुनकर तुम, ख़ुशी से बाग-बाग हो जाओगी। नाइट ड्यूटी रद्द हो गयी है, गांव ज़ाने के लिये सामान बांध लो।

(ख़ातूने ख़ान, आख़िर चाहती क्या..? 'बस यही, के 'नाइट.ड्यूटी किसी तरह हो जाय रदद।' फिर क्या..? घर बैठे मिल गये लड्ड्ड्ड्ड्ड्ड्ड्डू,.. फिर तो मोहतरमा का चहकना वाज़िब ठहरा।)

फ़क़ीरे की अम्मी - (चहकती हुई) - जल्दी करो, मियां। नहाकर आ जाओ, चूल्हे पर चाय चढ़ा रही हूं। बहुत अच्छा हुआ, अब ख़ुदा के

मेहर से मियां अब रोज़ खेत पर आऊंगी खाना लेकर। (ख़ुशी से फिल्मी गीत गाती है) 'बीते रे दिन अब आयो रे....'

(कपड़े लेकर, चुग्गा खां घुसलख़ाने में जाते हैं। नहाते हुए उन्हें, बाहर बेग़म और पड़ोसन के बीच हो रही गूफ़्तगू सुनायी देती है।)

पड़ोसन - फ़क़ीरे की अम्मी, अब तेरी तबीयत तो बिल्कूल ठीक है।

फ़क़ीरे की अम्मी - (मुस्कराती हुई) - ठीक है तो ठीक ही रहेगी, ख़राब हुई कब? शन्नो बी, ये तो बीबी के अजमाये गये तरीके है....के, कैसे शौहर को काबू में लिया जाय? ख़ुद को फातमा आहिरः का आसेब ज़दः नहीं दिखलाती तो, मियां कब अपनी नाइट ड्यूटी केन्सल करवाते?

(अब दोनों मोहतरमाए, ठहाके लगाकर हंसने लगी। उधर चुग्गा खां के कानों में सुनाई देने लगी, यही हंसी अब दहकते अंगारो की तरह मियां का दिल को जलाने लगी। अपनी बीबी का यह रवैया देखकर, चुग्गा खां हैरान रह गये? इस वक़्त शकिस्ता दिल को लिये, चुग्गा खां के मुंह से बरबस यही जुमला निकल उठता है।)

चुग्गा खां - (गमजदा होकर) - हाय अल्लाह। यह क्या, सुन रहा हूं? इस बीबी ने आख़िर हमको बना कर रख दिया 'साहब.... गुलाम बीबी के' ?

(चुग्गा खां को लगा के, 'अब इन दोनों के ठहाको को, वे बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे।' फिर क्या? बाथ रूम का नल फुल स्पीड से शुरू करके, वे नहाने लगते हैं। नहाते-नहाते चुग्गा खां फिल्म एक्टर गोविन्दा की तरह गीत ज़ोर-ज़ोर से गाते हैं 'मै तो जोरू का गुलाम....' धीरे-धीरे मंच पर, अंधेरा छा जाता है।')

(अजज़ा ७) हुस्न की मलिका लेखक - दिनेश चन्द्र पुरोहित

(1)

(अब इस स्कूल के, दबिस्तान-ए-सियासत में काफ़ी बदलाव आ गया है। छः माह पहले आयशा का तबादला सर्व शिक्षा महकमें में हो ज़ाने से, वह इस स्कूल से रिलीव होकर जा चुकी थी। अब, रशीदा बेग़म का परमोशन हो गया है। और वह दूसरे शहर की सीनियर हायर सेकेण्ड्री स्कूल में, प्रिंसीपल के ओहदे पर ड्यूटी

जोइन कर चुकी है। इस तरह लेबर बस्ती की सेकेड्री स्कूल में, यह 'हेड मिस्ट्रेस' की पोस्ट वेकेण्ट चल रही है। तभी आर.पी.एस.सी. के कोम्पीटेटिव इमतिहान का रिजल्ट आ जाता है...और, आयशा का सलेक्शन सेकेण्ड्री स्कूल हेड मिस्ट्रेस की पोस्ट पर परमोशन हो जाता है। मौक़ा देखकर अब वह येन-केन कोशिश करके, इस मज़दूर बस्ती की सेकेण्ड्री स्कूल में अपनी पोस्टिंग करवा लेती है। फिर क्या? बिना वक़्त ख़राब किये, वह इस स्कूल में ड्यूटी जोइन कर लेती है। उनके ड्यूटी जोइन करने के कुछ माह बाद ही, यह सेकेण्ड्री स्कूल क्रमोन्नत होकर सीनियर हायर सेकेण्ड्री बन जाती है। मगर, महकमें द्वारा लेक्चरार की पोस्टें एलोट नहीं होने से, क्लास इग्यारवी की बच्चियों की पढ़ाई सुचारू रूप से चालू नहीं हो पाती। और दूसरी तरफ़, कभी भी नये प्रिंसीपल आने का ख़तरा भी, आयशा के लिये फ़िक्र का मुद्दा बन जाता है। इधर चुग्गा खां का नाम परमोशन की फ़ेहरिस्त में जुड़ जाता है, कुछ दिन बाद वे भी रिलीव हो जाते हैं। इसके बाद, दूसरी स्कूल में छोटे दफ़्तरे निगार के ओहदे पर ड्यूटी जोइन कर लेते हैं। तभी, तबादलों पर

बेन लग जाता है। दूसरे मुलाज़िम का तबादला, अब इस स्कूल में हो पाना कठिन हो जाता है। इस कारण, बहुत कोशिश के बाद दिलावर खां इस स्कूल में डेपुटेशन पर लगाये जाते हैं। अब मंच रोशन होता है, आयशा अपने कमरे में, कुर्सी पर तशरीफ़ आवरी है। शमशाद बेग़म को बुलाने के लिये, वह टेबल पर रखी घण्टी बजाती है। पानी से भरा लोटा लिये, शमशाद बेग़महाज़िर होती है। उनसे लोटा लेकर, युसुबूत गले को तर करती है। तभी, फ़ोन की घण्टी झनाझना उठती है। लोटा वापस शमशाद बेग़म को थमाकर, वह क्रेडिल से चोगा उठाती है।)

आयशा - (फ़ोन पर, बतियाती हुई) - कौन बोल रहे हैं, जनाब?

फ़ोन से आवाज़ आती है - (रौब भरी आवाज़ में) - हम डी.इ.ओ. केतन बोला बोल रही हैं।

(सुनकर आयशा खड़ी हो जाती है, और पास खड़ी शमशाद बेग़म को चुप रहने का इशारा करती है।)

आयशा - (फ़ोन पर) - आदाब, हुजूर। मेडम, ख़ैरियत है?

केतन बाला - (फ़ोन से) - ख़ैरियत होती तो क्या, हम आपको फ़ोन करते? जीनत मेडम को तुरन्त रिलीव करके, शीघ्र हुक्म तामिल होने की ख़बर फ़ोन पर दीजिये। उनके सीनियर डिप्टी के फ़ोन, कई बार आ चुके हैं मेरे पास।

आयशा - (फ़ोन पर) - मगर हमारी बच्चियों की पढ़ाई का क्या होगा, जनाब? आप तो ज़ानती है मेडम, हमारी स्कूल भले सीनियर हायर सेकेण्ड्री बन गयी है...मगर, सरकार ने लेक्चरार की पोस्टें मंजूर नहीं की है। और इधर आपने भी, पोस्टें लाने का कोई इंतजाम नहीं किया।

केतन बाला - (फ़ोन में, तेज़ लहज़े से बोलती है) - पोस्टें लाना हमारे हाथ में है, क्या? अब आपको देखना है, करना क्या है? मगर याद रखना, रिजल्ट ख़राब नहीं होना चाहिये।

आयशा - (फ़ोन पर) - हुजूर, जीनत मेडम को यहीं काम करने दीजिये ना? जिससे, रिजल्ट ख़राब नहीं होगा।

केतन बाला - (फ़ोन से) - हमने एक बार कह दिया, उन्हे रोके रखना हमारे हक़ में नहीं है। वह मेडम एलीमेण्ट्री एज्यूकेशन महकमें की है, हम उनको लम्बे समय तक डेपूटेशन पर नहीं रख सकते। बस, आप तुरन्त उनको रिलीव कीजिये।

आयशा - (फ़ोन पर) - कुछ दिन और चला लेते, हुजूर? इधर आपने मेरे इन कमज़ोर कंधों पर डिस्ट्रिक्ट टूर्नामेण्ट का बोझ डाल रखा है, हुजूर?

केतन बाला - (फ़ोन से) - अच्छा याद दिलाया, टूर्नामेण्ट.. अब आप याद रखना, टूर्नामेण्ट को जिम्मेवारी से सम्भालना है आपको...किसी तरह की शिकायत, मेरे पास आनी नहीं चाहिये। और सुनों...

आयशा - (फ़ोन पर) - फ़रमाइये, हुजूर। क्या हुक्म है?

केतन बाला - तीन दिन बाद, स्टेट टूर्नामेण्ट बाबत ट्रेनिंग लेने वाली बच्चियां आपके स्कूल में रूकेगी...बस, उनके ठहरने का माकूल इंतजाम होना चाहिये। शबा ख़ैर।

(फ़ोन रखने की आवाज़ सुनायी देती है, अब आयशा चोगा क्रेडिल पर रख देती है। फिर फ़िक्र के मारे वह, सर पर दोनों हाथ रखकर बैठ जाती है।)

आयशा - (फिक्र करती हुई) - हाय अल्लाह। अब क्या होगा? (जब्हा पर आया पसीना, रूमाल से पोंछती है)

शमशाद बेग़म- क्या बात है, ख़ैरियत है?

आयशा - क्या करें, ख़ाला? स्कूल चलाना कोई आसान काम नहीं, बड़ी मुश्किल से जीनत मेडम को यहां पढ़ाने लिये लगाया था डेपुटेशन पर...मगर, यह नामाकूल सीनियर डिप्टी बन गया तीतर का बाल। कम्बख़्त ने डी.इ.ओ. मेडम को बार-बार को फ़ोन लगाकर, उनके कान पका दिये।

शमशाद बेग़म- आप यूं कीजिये, ज़रा सीनियर डिप्टी को फ़ोन लगाकर उनसे रिक्वेस्ट कर दीजिये...शायद, उन्हें रहम आ जाये इस स्कूल की बच्चियों पर? और वह, जीनत मेडम को यहां रूकने की परमीशन दे दें....

आयशा - चलिये ख़ाला, एक बार आपका मश्वरा भी मान लेते हैं। अभी फ़ोन लगाती हूं, उन्हें।

(क्रेडिल से चोगा उठाकर, नम्बर डायल करती है। थोड़ी देर बाद, फ़ोन में चोगा उठाने की आवाज़ सुनाई देती है। अब आयशा, फ़ोन पर सीनियर डिप्टी से रिक्वेस्ट करती है।)

आयशा - (फ़ोन पर) - हुजूर, मैं आयशा अंसारी बोल रही हूं। जनाब, आपसे रिक्वेस्ट है...कुछ दिन के लिये जीनत मेडम को यहीं रूकने दें, तो इग्यारवी का कोर्स पूरा हो जायेगा।

फ़ोन मे आवाज़ सुनाई देती है - मोहतरमा, मुझे कोई बहाना नहीं चाहिये। बस, आप झट जीनत मेडम को रिलीव करके उनको जल्द स्कूल में भेजें। क्योंकि, उनकी स्कूल में टूर्नामेण्ट शुरू होने वाले हैं। (चोगा क्रेडिल पर रखने की आवाज़, सुनाई देती है)

आयशा - (क्रेडिल पर चोगा, रखती हुई) - क्या करें ख़ाला, सीनियर डिप्टी साहब मानते ही नहीं....हाय अल्लाह, अब क्या करूं? अब बच्चियों की पढ़ाई का क्या होगा, ख़ाला ज़रा सोचो एक

बार? (कुछ सोचकर) अब अपने शौहर को कह दूंगी, शायद वे कोई कोशिश करें?

शमशाद बेग़म- इस मसयले का क्या हल निकालेंगे, हुजूर? आख़िर वे ख़ुद सेकण्ड ग्रेड टीचर ठहरे।

आयशा - (हंसती हुई) - भोली रह गयी मोहतरमा, हमारे शौहर-ए-नामदार ठहरे टीचरस् यूनियन के लीडर। कुछ तो जुगाड़ बैठा सकते हैं, ख़ाला।

(मेन गेट के बाहर, कार का होर्न बजता है। तौफ़ीक़ मियां जाकर मेन गेट खोलते हैं, कार अन्दर दाख़िल होती है। कार से उतरकर एक सफ़ेदपोश, अपने क़दम बड़ी बी आयशा के कमरे की ओर बढ़ाते हैं। उनको कमरे में आया देखकर, आयशा के लबों पर मुस्कराहट छा जाती है।)

सफ़ेदपोश - (कुर्सी पर तशरीफ़ आवरी होते हुए) - किस बात की नाराज़गी है, मोहतरमा? आपको फ़ोन लगाते-लगाते, हमारी अंगुलियों में दर्द होने लगा है। घण्टी सुनते-सुनते, हमारे कान पक

गये। मगर आपकी सुरीली आवाज़ सुनने का भाग्य, कहां हैं हमारा?

(आयशा का रिदा खिसक कर नीचे गिर जाता है, सहसा दोनों उरोज दिखने लगते हैं। उनका दीदार पाकर, सफ़ेदपोश की आंखों में चमक आ जाती है। वह बेहताशा उन उरोजों को देखते रहते हैं, उन्हें इस तरह नज़र गढ़ाये देखकर आयशा का मुख लज्जा से सुर्ख हो जाता है। फिर, क्या? खिसके हुए रिदा को उठाकर, उरोजों को ढ़ाम्पती हुई अपना सर ढकती है। फिर, उस सफ़ेदपोश से कहती है)

आयशा - (रिदा से सर ढकती हुईर्इ) - वाह मज़ीद मियां, आदाब-सलाम करना तो दूर। आते ही जनाब, रेलगाड़ी के माफ़िक सीटी बजाते जा रहे हैं? तसल्ली से बैठिये, पहले। फिर....

मज़ीद मियां - (कुर्सी नज़दीक लाकर) - क्या तसल्ली से बैठें, मोहतरमा? आपकी इस बेदिली से, दिल भर गया हमारा। सुनिये, किसी शाइर ने अर्ज़ किया है 'कुछ दिन बसो मेरी आंखें में, एक

ख़्वाब अगर खो जाये तो क्या? कोई रंग तो दो इस चेहरे को, फिर महकाये तो क्या? अब गुलशन में खिले....

(अचानक उनकी निगाहें, पास खड़ी शमशाद बेग़म पर गिरती है। उसे यहां दाल-भात में मूसलचन्द की तरह हाज़िर पाकर वे सकपका जाते हैं। आयशा से उनकी नज़र मिलते ही, आयशा शमशाद बेग़म को बाहर भेजने का मनसूबा बना लेती है।)

आयशा - (शमशाद बेग़म को कुछ रूपये थमाती हुई) - ख़ाला, ज़रा दूध लाकर कॉफ़ी बना दें....आपका भला होगा। प्लीज़..., तौफ़ीक़ मियां को बाज़ार भेजकर, कुछ मिठाई-नमकीन भी मंगवा देना। (लबों पर मुस्कान लाती है)

(शमशाद बेग़म रूख़्सत हाकती है, उसके जाते ही मज़ीद मियां को राहत मिलती है। फिर क्या? जनाब, वापस चहकने लगते हैं।)

मज़ीद मियां - आगे सुनिये हुस्न की मलिका, शाइर ने कहा है? अर्ज़ किया है 'एक आइना था, वह टूट गया। फिर, ख़ुद शरमाओ तो क्या? कुछ दिन.....

आयशा - (हंसती हुई) - वज़ा फ़रमाया, हुजूर। आगे आप यही कहना चाहते है, ना? के 'कुछ दिन बसो मेरी आंखों में।' मगर मुअज़्ज़म वे दिन लद गये हमारे, सच कहा आपने 'आइना तो टूट गया.....अब यह हुस्न दिखायें, तो किसे?

मज़ीद मियां - (ख़ुश होकर) - आगे कहिये, कहिये...अब रूको मत।

आयशा - क्या दिन थे, जनाब? बहोत मौज़-मस्ती छनती थी, सर्व शिक्षा के दफ़्तर में....क्या वो दिन थे, जनाब?

मज़ीद मियां - बस वहां तो आपके दीदार से ही, हमारी थकावट मिट जाया करती थी। मगर, अब वे दिन कहां? अब तो इन मिटिंगों ने, थका दिया बदन को...ख़ुदा रहम, कभी ज़ाना पड़ता है कलेक्टर साहब के दफ़्तर तो कभी नेहरू युवा केन्द्र।

(आयशा उनके उतरे मुंह को ताकती हुई कहती है, व्यंग में)

आयशा - बड़ा पैचीदा मामला ठहरा आपका, ऐसे कौन दर पै आ गये.?.पै दर पै तुम्हारा पैख़ाना ज़ाना बन्द करा दिया, इन नामाकूलों ने?

(अब आयशा, उनका चेहरा व उनके पहने हुए कपड़ों को देखती है। मज़ीद मियां के तुर्रे की तरह खड़े बाल, सफ़ेद बुगले के समान उजला सफ़ेद सफ़ारी सूट और गले में कसी हुई लाल टाई, अब आयशा को पड़ोसी मुर्गा याद आ जाता है। ऐसा लगता है, मानो उनके बाल और गले में कसी लाल टाई उनकी न होकर वो उस मुर्गे की कलंगी हो। इस तरह मज़ीद मियां अब, आयशा को बिल्कूल मुर्गे की तरह लगने लगे। अजी साहब, यह मुर्गा भी ऐसा ठहरा जो बेवक़्त बांग देने का आदी बन चुका है। मज़ीद मियां को मुर्गे की तरह पाकर, आयशा की हंसी नहीं रूक पाती। आयशा को इस तरह हंसते देखकर, मज़ीद मियां खफ़ा हो जाते हैं। फिर क्या? जनाब खिन्न होकर, नाराज़गी से कहने लगते हैं।)

मज़ीद मियां - (नाराज़गी से) - पीर ज़ाल की तरह मत देखो, मुझे। मेरे कान पक गये, इन लोगों के हुक्म सुनकर। कभी कहते यह करो कभी कहते वह करो, बस वहां बैठे-बैठे बेदिली से गरदन हिलाते रहो। मानो यह हमारी गरदन ना होकर, मुर्गे की गरदन हो?

(इनका जुमले सुनकर आयशा, हंसी के ठहाके लगाये बिना नहीं सकी। उसे इस तरह बेबाक हंसते देखकर, मियां की नाराज़गी बढ़ जाती है। अब वे खिन्न होकर, कहते हैं।)

मज़ीद मियां - (खिन्न होकर) - हंस क्यों रही है, क्या हम मुर्गे लगते हैं आपको? कहीं आप हमें हलाल करने का, मनसूबा तो नहीं बना रही हैं?

आयशा - (अपनी हंसी रोकती हुई) - आपसे तो मुर्गा ही अच्छा, वो पकाने के काम आता है। वाह क्या लज़ीज़ स्वाद होता है, उस पके हुए मुर्गे का? मगर, आप किस काम के? सफ़ेद सफ़ारी पहनकर काहे तकलीफ़ करते हैं, आप? आपके दीदार पाकर, कोई कौआ भी बींट नहीं करता आप पर।

(फिर क्या? आयशा के ठहाके गूंज़ उठते हैं, मज़ीद मियां के खिसयाने चेहरे पर निगाहें डालती हुई, आयशा कहती है।)

आयशा - शरे-ओ-अदब। गुस्सा करना तंदरूस्ती के लिये अच्छा नहीं, अब आप कुछ समझो और लगाओ दिमाग़ पर ज़ोर। आपने

क्या कहा? फ़ोन पर घण्टी आती रही, और आपकी अंगुलियां डायल करते-करते...

मज़ीद मियां - (उछलते हुए) - हां, हां। मैं यही कह रहा था....महसूस

आयशा - अब एक बार सुन लीजिये, बीच में टोको मत। आज़ हमारा मोबाइल, हमारे साथ नहीं है। घर पर रह गया, तन्हाई में...अब समझे, जनाब? जब आप नम्बर डायल करेंगे, तो घण्टी ही सुनोगे...और क्या?

मज़ीद मियां - (घबराये हुए) - कहीं रशीद मियां, घर पर तो नहीं हैं?

(जब्हा पर, फ़िक्र की रेखाऐं दिखायी देती है। उनकी पेशानी पर छायी घबराहट पाकर, आयशा खिल खिला कर हंस पड़ती है। फिर, कहती है।)

आयशा - (हंसती हुई) - होते तो, जनाब....आपका मुंह थाप खा जाता? ओ मजीद इंसान डरो मत, मेरे शौहर सुबह बजे घर से

निकले थे...स्कूल ज़ाने के लिये। अगर वे घर पर होते तो जनाब, उस मोबाइल को अपनी जेब में डाले घूमते रहते...जैसे वो मोबाइल ना होकर, मेरा दिल हो?

मज़ीद मियां - (जब्हा पर आये पसीने को पोंछते हुए) - अल्लाह का शुक्र है, यह तो अच्छा हुआ, रशीद मियां घर पर नहीं थे। ख़ुदा रहम, हम कहीं तन्हाई में रहते हुए ख़ुदा ज़ाने तपाक से क्या...क्या, बोल जाते?

आयशा - (सामने से तौफ़ीक़ मियां को आते देखकर) - अरे मियां तौबा, तौबा। अब चुप हो जाइये, मियां तौफ़ीक़ आ रहे हैं...जल-पान लिये। (तौफ़ीक़ मियां को सुनाते हुए ज़ोर से कहते हैं) हमारे तौफ़ीक़ मियां ठहरे, तहजीब वाले। क्या बुगले के पर की तरह क्रीज किये हुए सफ़ेद सफ़ारी पहने रहते हैं, उनको देखकर कोई बंदा नहीं कह सकता के....

मज़ीद मियां - आगे फ़रमाइये, मोहतरमा। चुप मत रहिये, आगे कहिये।

आयशा - कौन कह सकता है, यह अल्लाह का बंदा मज़कूरी (चपरासी) है? अरे जनाब, ये अल्लाह के बंदे कमरे की सफ़ाई ऐसे करता है....एक भी धूल का कण, इनके सफ़ेद कपड़ों को अबलक़ नहीं बनाता।

(तौफ़ीक़ मियां मिठाई व नमकीन लिये आते हैं, और करीने से दस्तरख़्वान सजा देते हैं, फिर पानी लाकर दोनों को पिलाते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (पानी पिलाकर) - आदाब हुजूर, दस्तरख़्वान लगा दिया है। अब बिसमिल्लाह कीजिये, जनाब।

मज़ीद मियां - (पानी पीकर, गिलास मेज़ पर रखते हैं) - मोहतरमा, कहावत है गुदड़ी में लाल छुपे रहते है, बस इन्हें देखकर ऐसा ही लगता है के ये तौफ़ीक़ मियां वास्तव में गुदड़ी के लाल ही है। अब आप ही देखिये, आज़कल ऐसे सलीकेदार जैलदार कहां मिलते हैं सरकारी स्कूलों में?

तौफ़ीक़ मियां - (लबों पर मुस्कान लाकर) - शुक्रिया, जनाब। आपकी रहमत है, इस बंदे पर। अब आप गूफ़्तगू कीजिये, कॉफ़ी तैयार होते ही लेकर हाज़िर हो जाऊंगा आपकी ख़िदमत में।

(तौफ़ीक़ मियां दरवाज़े के पास जाकर खड़े हो जाते हैं, फिर मुस्कराकर उन दोनों पर निगाहें डालते हुए होंठों में ही कहते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (होंठों ही में) - अरे जनाब यह बंदा उल्लू का पठ्ठा नहीं, जिसमें कोई अक़्ल नहीं...हम ज़ानते हैं के, आप लोग हमें बाहर भेजना क्यों चाहते हैं? अजी साहब, हम वो परवाने हैं जो शमा का दम भरते हैं....खामोश रहकर, स्कूल के जर्रे-जर्रे की ख़बर रखते हैं।

(तौफ़ीक़ मियां जाते हैं, उनके बाहर जाते ही आयशा अपने पर्स से आइना व लिपस्टिक निकालती है। आइना में अपना चेहरा देखती हुई, लबों पर लिपस्टिक लगाती है।)

आयशा - (लिपस्टिक लगाती हुई) - हाय करें, क्या? इस स्कूल के मुलाज़िमों ने ग़लत आदत डाल दी, दूसरों के मआमलों में अपनी

टांग फंसाने की। देखिये जनाब, कोई हमारे कमरे की खिड़की के बाहर तो... कोई यहां खड़ा रहकर, हमारी गुफ़्तगू सुनता रहता है।

मज़ीद मियां - इन कलमुंहो का, कोई इलाज....?

आयशा - करें, क्या? बिना वजह उनकी तारीफ़ करनी, और उनको कमरे से बाहर भगाना...। जैसे अभी तौफ़ीक़ मियां को बाहर...

मज़ीद मियां - (अधूरा जुमले पूरा करते हैं) - बाहर भेजना पड़ा। आप झूठी तारीफ़ करती होगी, मोहतरमा। मगर ख़ुदा कसम, हम आपकी ख़ूबसूरती की झूठी तारीफ़ कभी नहीं करेंगे... बस, सच्ची बात ही कहेंगे।

आयशा - यही कहेंगे, ना? के, वाकयी आप हूर की परी हैं...जनाब, इस चांद को कहां ज़रूरत रूख़सारों पर लाली मलने की? ख़ुदा ने इनायत किये है ऐसे लब, जिन पर मुस्कान हमेशा छाती रहे।

मज़ीद मियां - अरे जनाब, आपने ने हमारे मुंह की बात छीन ली। बस हम, यही कहना चाहते थे।

आयशा - (शर्माती है, जिससे रूख़सार लाल सुर्ख हो जाते हैं) - शुक्रिया, जनाब शुक्रिया। मगर हम कहां है, इतने ख़ूबसूरत?

मज़ीद मियां - (मुस्कराते हुए) - क्या कहूं, जनाब? कस्तूरी मृग को कहां मालुम, उस कस्तूरी की सुगंध का? वह नासमझ वन-वन घूमता रहता है, उस सुगंध को ढूंढने। अजी मोहतरमा, आपसे क्या कहूं? सर्व शिक्षा के दफ़्तर के सारे मुलाज़िम आपको, नूरजहां कहा करते थे।

आयशा - (सर्व शिक्षा दफ़्तर में बीते पलों को, याद करते हुए) - वो भी क्या दिन थे, मियां? उस दफ़्तर की मौज-मस्ती, इस स्कूल में कहां? यहां तो सभी, दकियानूसी लोग भरे पड़े हैं। थोड़ी सी मुस्कराहट के साथ किसी से बात कर ली, बस ये मूर्ख बात का बतंगड़ बना देते हैं।

मज़ीद मियां - अरे जनाब, आपसे क्या कहूं? कार से उतरते वक़्त, इन दुकानों पर बैठे मेम्बरानों की जहर से भरी निगाहें हम पर टिकी हुई थी।

आयशा - यही बात आपको समझा रही हूं, इन मेम्बरान को तो एक बार शक का बुख़ार चढ़ जाता है....तो वो, हफ़्तों नहीं उतरता। (पर्स में लिपस्टिक व आइना रखती हुई) हमने बड़ी भूल की, जो वापस इस स्कूल में आये। कहां तो था वो सर्व शिक्षा दफ़्तर, कहां है यह स्कूल?

मज़ीद मियां - अरे हुजूर, वहां तो पैसों की बरसात...और यहां क्या पड़ा है? यहां तो लोग, आपकी जेबें ख़ाली कर देते होंगे? वहां आज़ भी आता है, विलायत का इतना पैसा...ख़त्म होने का नाम नहीं।

आयशा - उस पैसों को चाहे जितना ख़र्च करो, कोई पूछने वाला नहीं। ऊपर से इन बड़े लोगों से बढ़ते रसूख़ात, आगे क्या कहूं आपको? ये वजीर-ए-आज़म, वजीर-ए-आला वगैरा, हमारे दीवानखाने पर अपनी तशरीफ़ रखा करते। अरे हुजूरे आला, और क्या बयान करूं आपसे....?

मज़ीद मियां - (उदासी के साथ) - बस, अब तो ख़ाली यादें रह गयी मृग मरीचिका बनी हुई। उस दफ़्तर को याद करती हुई, अब आप हिरणी की तरह......?

आयशा - (दुखः भरे अन्दाज से) - और क्या कहूं, मेरे एहबाब? क्या सोचा था? यहां घर, मेरी स्कूल के नज़दीक होगा? हम यहां बैठे-बैठे, स्टॉफ और कोलोनी के लोगों पर राज़ करेंगे। राज़ करना तो दूर रहा, इस कम्बख़्त एज्यूकेशन मिनीस्टर ने झटका लिये हमसे...इग्यारह हज़ार रूपये, पार्टी के चन्दे के नाम। ख़ाली ऊपर से दिखता था, सूफी फ़क़ीर।

मज़ीद मियां - हाय अल्लाह, यह क्या? तबादला क्या किया, हुज़ूर? यह मुकर्रर तो जोंक निकला, आप जैसी ख़ूबसूरत मोहतरमा को भी नहीं छोड़ा? ख़ुदा कसम, इसे हमारी बददुआ लगेगी...दोजख़ नसीब हो, इस नामाकूल को।

आयशा - अरे, यह मिनीस्टर तो ठहरा रंगा सियार। हमसे कहने लगा, हम अपने लिये पैसा लेकर भ्रष्टाचार नहीं फैला रहे हैं। बस,

हम तो आपके मेहर से पार्टी का चंदा इकट्ठा कर रहें है। अजी साहब हमने यहां आकर एक मुसीबत गले में डाल दी, और..

मज़ीद मियां - और क्या? कहीं शीश महल खड़ा कर दिया क्या, आपके शौहर ने?

आयशा - मेरे नाम से, शौहर-ए-आज़म ने अमीरों की कोलोनी में मकान बनाने के लिये प्लोट ख़रीदने का सौदा कर लिया। अब कहते हैं, वहां मकान बनवाकर कोचिंग सेन्टर खोलेंगे। मगर, हम पैसा लाये कहां से? इधर यहां ख़ाज़िन बना बैठा है, आक़िल मियां।

मज़ीद मियां - इस मसयले में, बेचारे आक़िल मियां की क्या ख़ता?

आयशा - (हर्फों पर ज़ोर देती हुई) - 'ख़ता?' अरे मियां, ख़ता क्या कसूर कहो। बड़े नासमझ ठहरे, समझते नहीं या समझना नहीं चाहते के हम क्या चाहते हैं? ये तो हमारे मुंह से ही उगलवाना चाहते हैं, सच क्या है? हमारे एहबाब इधर बोलते हैं, आप इनसे खुलकर बात करो।

(तनाव को भूलने के लिये, वह छत की तरफ़ देखने लगती है। जहां एक मकड़ी, ज़ाला बुनती हुई दिखायी देती है। फिर, मज़ीद मियां पर निगाह डालती हुई कहती है।)

आयशा - बताइये आप, क्या खुलकर बात करूं उनसे? ये नामाकूल बड़े फहीम निकले, हमारा एक लफ़्ज़ उनके दिमाग़ में नहीं घुस रहा है? ये तो अपने आपको ऐसा पाक मोमीन समझ रहे हैं, मानो...

मज़ीद मियां - आगे कहिये, मोहतरमा। रूको मत, यहां सुनने वाला कोई नहीं।

आयशा - (लम्बी सांस लेकर) - मानो... अभी-अभी, वे काबा शरीफ़ का हज करके आये हो? बार-बार इनका एक ही लफ़्ज़ 'कानूनी रूप से ये वाउचरस्, भुगतान के क़ाबिल नहीं है।' सुनकर मेरे कान पक गये है, मियां... अब करूं, क्या?

मज़ीद मियां - यह कैसे कह दिया, आपको? मोहतरमा, वसूक नहीं होता मुझे। एक ड्राइंग ओफिसर की आबरू रेज़ी कर दी, खुले आम? और आप अपनी यह हालत, देखते रहे?

आयशा - जनाब कहते हैं, कमीशन वाले वाउचर निकालकर मुझे अल्लाह पाक के सामने आब आब नहीं होना है। अब आप यह बताइये, अब हम रूपये लायें कहां से? लोन लेकर प्लोट ख़रीद लिया, मगर मकान बनाने के लिये अब रूपये लाऊं कहां से? प्लोट की किश्त निकल ज़ाने के बाद अब, सेलेरी रही कितनी?

मज़ीद मियां - हम से ले लिजीये, मोहतरमा। (मेज़ थपथपाते हुए) यह इजतहाद से भरा है आज़ का ख़िलक़त, हिम्मत रखिये मगर दिल-ए-इजबार (दबाव) को बढ़ने न दें। हमसे ले लिजीये रूपये पैसे, मगर आपके ख़ूबसूरत चेहरे को आबदार रहने दें।

आयशा - (लज्जा से) - जनाब आपकी बहुत मेहरबानी है, हम पर। अब तक आप बहुत कर्जा लाद चुके हैं, हम पर। अब कर्जे का बोझ,

उठा नहीं सकते हम। अब छोड़िये आप इन मोहमल बातों को, सुनिये ज़रा कल ही आपा का फ़ोन आया था...कह रही थी, के...

मज़ीद मियां - (मुस्कराते हुए) - आपा आपकी ठहरी, मगर उनका हुक्म रहा हमारे सर-आंखों पर। हम भूले नहीं है, आपकी आपा का एरियर बिल जो बनाना है। आपने दे रखा है उनका जी.ए-५५, बिल बनाने के लिये। याद है, मुझे।

आयशा - बना दिया, या हाथ में लिये घूम रहे हो? बिल नहीं बनाया तो..., हाय अल्लाह, यह आपा शैतान की ख़ाला बनकर हमारा सर खा जायेगी। बीसों फ़ोन आ चुके हैं, उनके।

मज़ीद मियां - (हताश होकर) - क्या करूं, मोहतरमा? यहां खाना खाने की फुरसत नहीं हमें, हाय अल्लाह...वल्लाह कब ज़ान छूटेगी, इन मिटिंगों से? क़िब्ला हुस्ने इतिफ़ाक़ से, हमने कई बड़े-बड़े एरियर बिल बनाकर उन्हे ट्रेजरी से पास करवाये हैं...

आयशा - (हंसी उड़ाते हुए) -हां जी, आपने पूरा लौहा मनवा लिया इन दफ़्तर-ए-सर्व शिक्षा के मुलाज़िमों से। हम भी ज़ानते हैं, के

आप क्या कहते हैं और करते क्या हैं? बेचारे ये कोदन मुलाज़िम क्या ज़ाने, जनाब ट्रेजरी जाया करते हैं या मुफ़्त की दावतें उड़ाने?

मज़ीद मियां - हमें आब आब मत कीजिये, हुजूर। हमारी ग़लती बताइये, ऐसा हमने क्या कर डाला?

आयशा - कहती हूं जी, ठण्ड रखिये जनाब। हमारे मज़ीद मियां तो आज़कल इतने व्यस्त हो गये हैं, मिटिंगों में के... अब उनको वक़्त नहीं मिलता, आपा का बिल बनाने के लिये। अब ये चाहते है, अगर आक़िल मियां चार लाइन खींच दे तो....

मज़ीद मियां - (खिसयानी हंसी हंसते हुए) - हें...हें अजी यह बात नहीं, मकबूले आम हमारे शुऊर कुछ बिगड़ गये हैं। जब से सर्व शिक्षा में आये हैं, तब से.....

आयशा - इन मिटिंगों ने बेहाल कर दिया, गालिबन यही तसलीमात अर्ज़ है आपका? ज़ानती हूं, दफ़्तर-ए-सर्व शिक्षा में वक़्त की कमी है। मगर फिर भी आप, दावतों में ज़ाना नहीं भूलते।

(आयशा टेबल पर रखी घण्टी बजाती है, घण्टी सुनकर तौफ़ीक़ मियां तश्तरी लिये कमरे में दाख़िल होते हैं। अन्दर आकर, मेज़ पर कॉफ़ी, मिठाई, मिर्ची बड़े और नमकीन बिस्कुट की प्लेटें रखते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - बिसमिल्लाह कीजिये, हुजूर। कहीं, कॉफ़ी ठण्डी न हो जाय?

आयशा - (मुस्कराती हुई) - शुक्रिया, तौफ़ीक़ मियां ज़रा आपको जहमत दे रही हूं। आप आक़िल मियां को कहते आइये के, बड़ी बी ने आपको बुलाया है।

(हुक्म पाकर, तौफ़ीक़ मियां आक़िल मियां को बुलाने जाते हैं। उनके ज़ाने के बाद, अब दोनों की गुफ़्तगू वापस शुरू होती है।)

आयशा - बाइसेरश्क होता है, आपकी नौकरी देखकर। आपका काम ही, क्या? दिन-भर घूमते रहो, और बड़े-बड़े ओहदेदारों से मुलाकाते करते रहो। मगर यहां हमारे किस्मत में लिखी है, दुनिया ज़हान की तकलीफ़ें। जब से यह कुर्सी सम्भाली है, तब से तकलीफ़ें ख़त्म होने का नाम नहीं लेती।

मज़ीद मियां - आपकी तकलीफें ख़त्म हो या ना हो, मगर आप ख़त्म मत होना...बस आप, मुस्कराती हुई अपने दीदार देती रहना।

आयशा - तकलीफें ख़त्म होती नहीं, आपसे। आप से, क्या आशा की जाय? जो ख़ुद काम न करके दूसरों को अपने काम दे देते हैं करने के लिये? अब बोलिये, आपसे क्या बात करूं? इधर ये डवलपमेण्ट के मेम्बरान हाय तौबा मचाते हैं तो कभी ये जैलदार....आख़िर,

मज़ीद मियां - (हंसते हुए) - इन सबको सम्भालते-सम्भालते मोहतरमा बेनियाम हो जाती है, आख़िर इस कुर्सी के लिये कितने बेलन बेलती होंगी आप?

आयशा - (नाराज़गी के साथ) - आप क्या ज़ानते हैं, जनाब? ख़ाली हंसना ही आता है, आपको। ला हौल व ला कुव्वत...इधर आ जाता है, डी.इ.ओ. मेडम का फ़ोन। कहती है, आपको बनाया है टूर्नामेण्ट का ़निज़ाम। जल्दी बताइये, टूर्नामेण्ट की प्रोग्रेस रिपोर्ट। क्या किया है, अब तक?

(आयशा सर पकड़कर बैठ जाती है, मज़ीद मियां उन्हे दिलासा देते हुए कहते हैं।)

मज़ीद मियां - घबराओ मत, मोहतरमा। बताइये, आपको क्या तकलीफ़ है? हम बैठे है ना, आपके एहबाब। उठा लेंगे...

आयशा - जहमत उठा लेना, मगर मुझे उठा ना देना। अब सुनो मियां, बिना रूपये-पैसे कैसे इंतजाम करें टूर्नामेण्ट का? बोयज़-फण्ड से पैसे निकाल नहीं सकती, निकाल लिये तो ये नामाकूल ऑडिट वाले मेरा पसीना निकाल देंगे। चार्ज लगा देंगे के, आपने ग़लत काम किया है।

मज़ीद मियां - ऐसे क्या डर रही हो, मोहतरमा? आप इन धन्ना सेठों से चन्दा लेकर, टूर्नामेण्ट करवा देना। और, क्या? हम तो सर्व शिक्षा महकमें में आये दिन, चंदा लेकर ऐसे ही अपने कई काम निकाल लेते हैं।

आयशा - डोनेशन...और वह भी इस इलाके में। मियां घायल की कैसी दशा होती है, वह तो एक घायल ही बता सकता है। आप

क्या ज़ानो, इस इलाके के हाल? आपकी तो इस इलाके में, किसी से ज़ान-पहचान न के बराबर। और इधर, इस इस हेडमिस्ट्रेस की कुर्सी पर बैठने का एक नया तुजुर्बा?

(दोनों मिठाई व नमकीन पर, अपना हाथ साफ़ करते हैं। कॉफ़ी की चुश्कियां लेती हुई, आयशा आगे कहने लगती है।)

आयशा - (काफ़ी की चुश्कियां लेती हुई) - अरे जनाब, यह हेडमिस्ट्रेस की कुर्सी कांटों की बनी है। हम तो ठहरे, प्रोबेशन वाले। काम करना और काम दिखाना दोनों ज़रूरी है, हमारे लिये। ना तो कोई उच्च अधिकारी उम्दा ए.सी.आर., भरने वाला नहीं।

(अब कॉफ़ी पीकर दोनों ख़ाली प्याले, टेबल पर रखते हैं। अब आयशा आगे कहती है।)

आयशा - (पेपर वेट घूमाती हुई) - आपको कहां शर्म आती है, चंदा मांगने में? आख़िर, आप ठहरे मर्द। आप किसी से और कहीं भी, मुलाकात कर सकते हैं। मगर हम...

मज़ीद मियां - आगे कहिये, मोहतरमा।

आयशा - इस इलाके के दुकानदारों या फेक्टरी मालिकों के पास चन्दा मांगने चले गयी तो, जनाब ये डवलपमेण्ट कमेटी के मेम्बरान हमारे बारे में क्या-क्या अनाप-शनाप बकते फिरेंगे... ऐसी बातें आपने कभी, किसी औरत के लिये सुनी न होगी?

मज़ीद मियां - (ठहाके लगाते हुए) - वाह। बात यहां तक बढ़ गयी, अब हुस्न की मलिका सैर-ओ-तफ़रीह करने के लिये... स्कूल के बाहर बाहर, क़दमबोसी करना चाहती है?

आयशा - (नाराज़गी से) - मज़हाक़ नहीं, यह मज़हाक़ करने का वक़्त नहीं। काम की बात करो, मियां। ़

मज़ीद मियां - (मुस्कराते हुए) - हम क्यों मज़हाक़ बनाये, आपका? आपके हुस्ने समाअत से हम आपके लिये, चंदा लाने का जुम्मा अपने हाथ में ले लेंगे। अब तो मोहतरमा, एक बार हंसकर दिखा दीजिये। (सामने, आक़िल मियां को आते देखकर) लो देखो, ये आ गये आक़िल मियां।

(आक़िल मियां आते हैं। आयशा अपने लबों पर मुस्कराहट लाती हुई, उनसे कहती है।)

आयशा - (लबों पर मुस्कराहट लाती हुई) - आक़िल मियां, ये हमारे एहबाब मज़ीद मियां आपकी बहुत तारीफ़ करते हैं। कह रहे हैं के, आपको एरियर बिल बनाने का अच्छा-ख़ासा इल्म हासिल है। (मज़ीद मियां से जी.ए.-५५ लेकर, आक़िल मियां को थमाते हैं) लीजिये, यह एरियर बिल बना दीजिये ना।

आक़िल मियां - (जी.ए.-५५ थामते हुए) - जो हुक्म, बड़ी बी। अब चलता हूं।

(आक़िल मियां रूख़्सत होते हैं, उनके ज़ाने के बाद आयशा व मज़ीद मियां ठहाके लगाकर हंसने लगते हैं। धीरे-धीरे अब मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(अजज़ा ८) टप....टप वाला फ़ोन।लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

(1)

(मंच रोशन होता है, आयशा बी अपने कमरे में बैठी दिखाई देती है। तभी मेज पर रखे फ़ोन पर घण्टी आती है। आयशा क्रेडिल से चोगा उठाकर, अपने कान के पास ले जाती है।)

आयशा - (चोगा कान के पास ले जा कर) - हल्लो, कौन सहब?

चोगे से झल्लाई हुई आवाज़ आती है - कौन क्या? तुम्हारा शौहर...रशीद, और कौन हो सकता है? (तेज अवाज में) क्या कर रही हो?

आयशा - (चौंकती हुई फ़ोन पर बोलती है) -अच्छाऽऽ..आप? (मुंह बिगाड़कर) बहोत काम है, जी। आप चले ज़ाना, मैं टेक्सी से आ जा आंऊगी घर।....काम होने के बाद, समझ गये, या नहीं?

रशीद मियां - (फ़ोन पर) - फिर कहना मत बेग़म। के, मैं लेने नहीं आया। (खिसयानी आवाज़ में) वैसे भी कौनसा शौहर होगा, जो बीबी के दफ़्तर में आकर.....अपनी इज़्ज़त की बखिया उधेड़ना चाहेगा?

(चोगा रखने की आवाज़ आती है । आयशा चोगा क्रेडिल पर रखती है, फिर टेबल पर रखी घण्टी बजाती है। शमशाद बेग़म पानी का लोटा लिये, हाजिर होती है। बेवक़्त अपने शौहर-ए-आज़म रशीद मियां का फ़ोन आने से, आयशा उकता जाती है। ज़ब्हा पर छाये पसीने को रूमाल से साफ़ करती हुई, शमशाद बेग़म से कहती है।)

आयशा - (रूमाल से पसीना साफ़ करती हुई) - हायऽऽ अल्लाह। कितनी गर्मी। इधर यह कम्बख्त बिजली भी चली गई....हायऽऽ कितना पसीना (पर्स से रूमाल निकालती है, फिर मुंह साफ़ करके वापस उसे पर्स में रखती है)

शमशाद बेग़म- (पानी का लोटा थमाकर) - पानी पी लिजीये हुज़ूर, राहत मिलेगी...(अपनी ज़ब्हा पर छाये पसीने को, पल्लू से साफ़ करती हुई) बाहर बरामदे में बैठ जाईये, ठण्डी हवा चल रही है। हुज़ूर, बदन को ताज़गी मिल जायेगी।

आयशा - (पानी पीकर वापस लोटा थमाती है) - वल्लाह। क्या ताज़ी हवा का लुत्फ़ उठाये? ज़ानती नहीं ख़ाला, कितने फ़ोन आते रहते है? आपको लगता है, यहां हम, आराम से बैठे हैं?

शमशाद बेग़म- (सर पर हाथ रखकर) - क्या फ़रमाया है, हुजूर? (हाथ झटक कर) अजी, फ़ोन को मारो गोली। फ़ोन आते ही चोगा ला दूंगी आपकी ख़िदमात में।

आयशा - क्या कहा, मारो गोली? अरे ख़ाला, तुम तो बहुत भोली रह गयी? मगर मैं ज़ानती हूं, तुम भोली नहीं हो। गजब की गोली हो...अब ऐसा बोलकर किसी को देना मत गोली। इतना भी नहीं समझती, आप? यह फ़ोन, हमारे पीछे नहीं....हम, फ़ोन के पीछे लगे है।

शमशाद बेग़म- समझ मे नहीं आया, मेडम? आपके आगे-पीछे, बड़े-बड़े ओहदेदार घूमते रहते हैं। और आप यहां, इस नाचीज़ फ़ोन के पीछे...

आयशा - इसके बिना, हमारा काम नहीं चलता। (भोली बनती हुई) देख लें....कब, क्या ख़बर आ जाये? कोई ख़बर, सीरियस हो या सिक्रेट ? क्या करें, ख़ाला? हमने तो यह, आफ़त पाल रखी है...इस फ़ोन की। और इसे, किसी के पास रख नहीं सकते।

(फ़ोन पर घण्टी आती है, क्रेडिल से चोगा उठाकर अपने कान के पास ले जाती है।)

आयशा - (कान के पास चोगा ले जाकर) - अजी। (चहकती है) कबसे ये अािंखें आपके दीदार पाने को तरस रही है। (फिर शमशाद बेग़म को घूरती हुई कहती है) आपको कोई काम नहीं है, क्या?

मज़ीद मियां - (फ़ोन पर) - मोहतरमा हमारे पास तो ढेरों काम है। (खिसयानी आवाज़ में) सुबह से शाम तक, सर ऊंचा नहीं उठता। आपको क्या पत्ता, हुज़ूरे आलिया? कभी दफ़्तरे सर्व शिक्षा में बैठकर देखा है, कितने काम होते है? अजी हम तो ऐसे आदमी हैं,

जो आपके हर फ़ोन का जवाब देते हैं। आप भी ज़ानती हैं, यहां किसे फुरसत पड़ी है? जो दूसरे के फटे में, अपने पांव फंसाये?

(शमशाद बेग़म को खड़ी पाकर, झल्ला कर कहती है)

आयशा - (गुस्से में शमशाद बेग़म को देखती हुई) -जाओ, अपना काम देखो। यहां कोई लड्डू मिल रहे है?

मज़ीद मियां - (फ़ोन पर) - मैं क्यों जांऊ, अपनी सीट छोड़कर? (नाराज़ होकर) सुन लीजिये, मोहतरमा। हम कोई मंगते-फ़क़ीर नहीं है, जो लड्डू लेने आयें आपके पास?

(शमशाद बेग़म लोटा लिये, चली जाती है)

आयशा - (फ़ोन पर ज़राफ़त से कहती है) - नाराज़ मत होना, मज़ीद मियां। हमने आपको कुछ नहीं कहा, बस हम तो ज़रा अपनी जैलदार पर गरज़ रहे थे। न ज़ाने क्यों, यहां खड़ी-खड़ी अपनी आपस की बातें सुनने में दिलचस्पी दिखा रही थी?

मज़ीद मियां - (फ़ोन पर) - अच्छा किया, मोहतरमा। अल्लाह ज़ाने कहीं रशीद मियां उसके भोलेपन का फ़ायदा उठाकर, उस जैलदार से पूछ-ताछ करने ना बैठ जाये?

आयशा - (फ़ोन पर बात करती हुई) - अरे छोड़िये, इस जैलदार को। कहां आ गये, इस ग़लत मुद्दे पर? हम तो कह रहे थे, के बात कुछ ऐसी ही है... आपसे अकेले में, गूफ़्तगू हो जाती तो....

(तभी ठहाकों की आवाज़ गूंज उठती है, खिड़की के बाहर दाऊद मियां ठहाके लगाते हुऐ दिखाई देते हैं। शमशाद बेग़म आती है उनके पास, फिर रफ़तहे-रफ़तहे कहती है)

शमशाद बेग़म- (पास आकर) - क्या कर रहे हो, हेड साहब?

दाऊद मियां - (धीमी आवाज़ में) - अरे ख़ाला। आप भी सुराख से झांक लीजिये, ज़रा। और कान सटाकर, चुप-चाप सुनती रहें...क्या गूफ़्तगू हो रही है, फ़ोन पर?

शमशाद बेग़म- रहने दीजिये, मैं तो वहीं खड़ी थी। मुझे सब ख़बर है।

(फिर दोनों, खिड़की से सटकर खड़े हैं। और सुराख से, बारी-बारी से अन्दर झांकते है, उन्हे आयशा अभी भी फ़ोन पर बात करती हुई दिखाई देती है।)

आयशा - (फ़ोन पर बात करती हुई) - जनाब। हम तो हण्डरेड परसेण्ट फ्री है......आ जाइये, आ जाइये। मगर, गाड़ी लाना नहीं भूलना मत।

मज़ीद मियां - (फ़ोन पर) - आपको ज़ानकर यह ख़ुशी होगी, अब हमने छोटे-छोटे फियेट जैसे घोड़े पालने बन्द कर दिये है.......बस आप जैसी ख़ूबसूरत मोहतरमा की ख़िद्मात के लिये, मारूति कार ख़रीद ली है। मेरा मफ़हूम है हाथी पाल लिया है...

(मज़ीद मियां की बात सुनकर, दाऊद मियां अपनी हंसी तो दबा लेते हैं। मगर जनाब, अपना मुख खोलकर कह बैठते हैं।)

दाऊद मियां - (हंसी को दबाते हुए) - वाह, अल्लाह का शुक्र है। एक हथनी के लिये, एक हाथी का इन्तज़ाम हो गया।

(अब शमशाद बेग़म, चुप रहने का इशारा करके कहती है।)

शमशाद बेग़म- (चुप रहने का इशारा करती हुई) - अरे हेड साहब, चुप रहिये। कहीं, बड़ी बी को मालुम न हो जाय.. आप यहां खड़े-खड़े, उनकी गुफ़्तगू सुन रहे हैं?

(शमशाद बेग़म की सलाह मानकर, दाऊद मियां चुप-चाप रहकर सुराख से अन्दर का हाल देखने लगे। अभी भी, मज़ीद मियां से गुफ़्तगू चल रही है। मज़ीद मियां की आवाज़, अभी फ़ोन पर सुनाई दे रही है।) .

मज़ीद मियां - (फ़ोन पर) - अजी मोहतरमा, कहीं से शोर-गुल सुनायी दे रहा है। उसको छोड़िये, आप हमारी बात सुनिये, हम कह रहे थे.... के, आपकी ख़िदमात मे मारूति कार हाज़िर है। बस, आप ऐसा ही समझ लो......चलोगी ना, आज़ घूमने? आपका, हुक्म हो तो......

आयशा - (खिन्नता से, फ़ोन पर) - क्या, घूमने चलना? मियां, फिर घर बैठा वह लंगूर चिल्लायेगा तो? क्या, जवाब दूंगी?

मज़ीद मियां - (फ़ोन पर) - वाह, शेर-ए-दिल मोहतरमा। उनके ख़ौफ से आप, इतना डरती हैं? बस आप तो उस लंगूर मियां को खिला देना, केला। दिन भर केला चबाते रहेगा, और आप अपना काम करती रहना। और क्या? पहले भेजे गये केले, खत्म हो गये क्या? और भिजवा दूं, केले?

आयशा - (फ़ोन पर) - रहने दीजिये, ऐसे तो हम बहाने गढ़ने में माहिर हो गये हैं। आपको केले भेजने की, कोई ज़रूरत नहीं। (हंसती है) आ जाइये, दिल-ए-आज़म। बेकरारी से कर रही हूं, आपका इन्तज़ार। अब चोगा रखती हूं, न ज़ाने कौन नामाकूल हमारी गूफ़्तगू सुन रहा हो?

(चोगा क्रेडिल पर रखकर उठती है, फिर जाकर खिड़की खोलती है, खिड़की के बाहर दाऊद मियां व शमशाद बेग़म खड़े हैं। जो खिल खिलाकर हंसते जा रहे हैं। उनको देखकर, आयशा का दिल जल-भुन जाता है। फिर क्या? खून का घूंट पीकर, वह खिड़की को वापस बन्द कर देती है। तभी, कार के होर्न की आवाज़ सुनाई देती

है। आवाज़ सुनकर, वह ख़ुश हो जाती है। वापस अपनी सीट पर बैठकर, पर्स से लिपस्टिक व आईना निकालती है। और अपना मेक-अप सही करने बैठ जाती है। मंच की रोशनी, लुप्त हो जाती है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, बड़ी बी आयशा के कमरे में मज़ीद मियां तशरीफ़ रखते हैं। ख़ाली कुर्सी पर, धम्म से बैठ जाते हैं। उनके वज़न से कुर्सी एक बार चरमरा जाती है। अब वे अपनी कुर्सी को, आयशा के नजदीक खिसकाते हैं। फिर, आयशा की मद-भरी अ◌ा◌ंखों में झांकते हुए कहते हैं।)

मज़ीद मियां - (आयशा की मद-भरी अ◌ा◌ंखों में, झांकते हुए) - आदाब। ख़ैरियत है?

आयशा - (लबों पर, मुस्कान बिखेरते हुए) - यह आपका, हुस्ने समाअत है.....ज़रा आपको ज़हमत दी, क़िब्ला ज़ानती हूं आप मेरे किसी बात की ताईद नहीं करेंगे। वैसे आप अक्लेकुल ठहरे....हम

तो ठहरे कोदन। ले लिया, सर पर टूर्नामेण्ट का भार। मतला यह है जबीं है.......फाइनेन्स कौन करायेगा, अब?

मज़ीद मियां - (हंसकर) - अफ़सोसनाक ज़हालत ना करे........फाइनेन्स लाने की कुव्वत कोई परवाज़े तख़य्यूल नहीं, वसूक करो ज़रा। आपके हुस्ने रसूक हुस्न को देख बाइसेरश्क है हमें....काश हम भी ऐसे ख़ूबसूरत होते....?

आयशा - (हंसती है) - वल्लाह, क्या कहना है आपका? कलाग़ चला, हंस के पर लगाने। क्या कीजियेगा, ख़ूबसूरती पाकर? पास होनी चाहिये....बस (हाथ के अंगूठे व उंगली का इस्तेमाल कर के चुटकी बजाती है) पैसा, दौलत। बाकी तो, सब बाज़ार में....

मज़ीद मियां - मगर ऐसी बात नहीं, हम तो यह ताल ठोक कर कहेंगे के हुजूरे आला तसलीमात चन्दे के लिये किसी से अर्ज़ कर दें, तो हुजूर मुसाहिबों की भीड़ लग जायेगी आपके दर पर। फिर झोली क्या, किश्तियां भी भर जायेगी रूपयों से।

आयशा - गालीबन आपको याद होगा, दफ़्तरे सर्व शिक्षा के प्रोग्रामों में हमारी हासिले तरह तकरीरों को सुनने कैसे अवाम उमड़ पड़ती थी.......क़िब्ला, क्या तकरीर मुरस्सा होती थी?

मज़ीद मियां - (हाथ में कार की चाबी को घुमाते हुए) - इसलिये अर्ज़ करता हूं, मोहतरमा आप बेकैफ़ न हो.....आप जहां भी जायेगी, मुसाहिब आपके कुदूम से अपनी पलके बिछा देंगें। अब, चलें? सामने उम्दा खीर बिरयानी है, बस आप तो बिसमिल्लाह कीजिये।

(आयशा हंसने लगती है, तभी जमाल मियां कमरे में दाख़िल होते है। उन्हे दखते ही, वह रूमाल से अपना मुंह ढांप लेती है। मगर, फिर भी हंसी रूकती नहीं।)

जमाल मियां - (रूख़ेपन से) - आप चली जाती है, मेडम। फसाना छोड़ जाती है। हमने ढेर सारे ख़त इस टूर्नामेण्ट में मदद बाबत लिख रखे है, बस आप इन पर दस्तख़त कर लीजिये। आप तो इन मुसाहिबों से मिलने से रही, फिर टूर्नामेण्ट में मदद देगा कौन?

आयशा - अंदाजे बयान कुछ गंजलक है, मियां। बिना देखे मैं दस्तख़त नहीं करूंगी। आप बेकैफ़ न होना, अल्लाह का शुक्र मनाओ। हम अच्छे काम के लिये निकल रहे हैं। जाते वक़्त, आपका इस तरह टोकना मुनासिब नहीं।

जमाल मियां - फिर भी बता दीजिये मेडम, आप कहां तशरीफ़ रख रही है? कोई पूछें तो, क्या जवाब दूंगा?

आयशा -गारत न करो, काम को। शरे ओ अदब, कह देना मोहतरमा टूर्नामेण्ट का चन्दा लेने गयी है। (धीमी आवाज़ में) चलिये, इस कोदन इंसान ने फिर, शौहर ए नामदार की याद दिलाकर सारा मूड ख़राब कर दिया। अब हमसे यहां, एक पल ठहरा नहीं जाता। (मज़ीद मियां से) चलिये...चलिये।

(आयशा पर्स उठाकर, कमरे से निकलकर बाहर आ जाती है। फिर क्या ? मज़ीद मियां भी, आयशा के साथ बाहर निकल पड़ते हैं। बाहर खड़ी शमशाद बेग़म को देखकर, वह कहने लगती है।)

आयशा - आप स्कूल का, पूरा ध्यान रखना। आपको एक बार और कह देती हूं, किसी से यह मत कहना के 'मेडम वापस नहीं लौटेगीं स्कूल। बस ख़ाला आपको यह ध्यान रखना है, काम खत्म होते ही हमें सीधे घर ज़ाना है।' आप समझ गयी, ना? क्या एक बार, और कहूं आपसे?

(सुनकर, शमजाद बेग़म के चेहरे पर कुटिल मुस्कान छा जाती है। उन दोनों को मेन गेट की तरफ़ बढ़ते देखकर, शमशाद बेग़म बड़बड़ाने लगती है।)

शमशाद बेग़म- (बड़बड़ाती है) - 'सैर-ओ-तफ़रीह' में जाओ, चाहो किसी के साथ जाओ...हमें क्या करना, मेडम। ऐसे काम करके, लोगों को मुंह खोलने के लिये मज़बूर करती हो? फिर ये मेम्बरान कुछ कहते हैं...तो, आप नाराज़ हो जाती है?

दाऊद मियां - (हंसते हुए) - नाराज़ होना? हाऽऽ हाऽऽ (उनकी हंसी बरामदे गूंज़ती है) साबू भाई तो ज़रूर कहेंगे, 'यह जा रही है, मोहतरमा...फिर वापस आयेगी, रूख़सार लाल करके ....

(आयशा व मज़ीद मियां कार में बैठकर, वहां से चले जाते है। बरामदे में दाऊद मियां को खिल-खिलाते हंसते देखकर, उनके पास रखी कुर्सी को खींचकर शेरखान साब तशरीफ़ आवरी होते है। जाली पर छायी ख़म्स (पांच) पत्तियों वाली बेल को छूकर आ रही ठण्डी हवा, दाऊद मियां व शेरखान साहब को नींद के आग़ोश में डाल जाती है। अब दोनों के खर्राटे, बरामदे में गूंजने लगते हैं। मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(३)

(मंच रोशन होता है, बरामदे का मंजर सामने आता है। स्कूल के बरामदे में दाऊद मियां व शेरखान साहब आराम से कुर्सी पर बैठे-बैठे, खर्राटे ले रहे हैं। आस-पास की क्लासों में बैठी बच्चियों का शोर, कौलाहल में बदल जाता है। मगर, इन दोनों मुअज़्ज़मों के जगने का कोई सवाल नहीं। ये आराम से, खर्राटे लेते जा रहे हैं। स्टूल पर बैठी शमशाद बेग़मअपनी थैली से, जर्दे व चूने की पुड़िया निकालती है। फिर अपनी हथेली पर थोड़ा जर्दा रखकर, उसे चूने

के साथ मिलाती है। फिर दोनों को अच्छी तरह मिलाकर, इस मिश्रण को ऐसे मसलती है.. जैसे वह जर्दा-चूना नहीं होकर, मोहतरमा आयशा का सर हो। वह भूल नहीं पाती, आयशा ने ऐसा कड़वा जुमला कैसे सुना दिया उसे "जाओ, अपना काम करो। यहां कोई लड्डू मिल रहे हैं?" इस जुमले का एक-एक हर्फ, में कितना जहर भरा है? वो भी, सुनना पड़ा जब आयशा रसिक मज़ीद मियां को फ़ोन बात कर रही थी। क्या पत्ता, मज़ीद मियां ने सुन लिया हो? अब यह मिश्रण अच्छी तरह से मसला जा चुका है, फिर वह दूसरे हाथ से फटकारा लगाती है। अब जर्दे की खंक उड़ती है, और उन दोनों मुअज़्ज़मों के नासा छिद्रों में जाकर छींकों की झड़ी लगा देती है। बच्चियों का कौलाहल उन्हे उठा नहीं पाया, मगर इन कोदन छींकों ने कमाल कर डाला। बेचारे भोले इंसान अ◌ा◌ंखें मसलते हुए, ख्यालों की दुनिया से बाहर निकल पड़ते हैं। अब तैयार सुर्ती हथेली पर रखकर, शमशाद बेग़म शेरखान साब के सामने हथेली ले जाती है।)

शमशाद बेग़म- (सुर्ती की मनवार करती हुई) - नोश फ़रमाये बाबा, अब आप उठ जाइये समाधी से। और इस जन्नती जर्दे को चखकर, तरो-ताज़ा हो जायें।

(शेरखान साब सुर्ती उठाकर, अपने होंठों के नीचे दबाते हैं। और बची हुई सुर्ती, ख़ुद शमशाद बेग़म अपने होंठों के नीचे रख देती है। शेरखान साहब पागल बाबा के मुजाविर है, एक तरह से वे हारूने फ़न है। यही कारण है, सभी जैलदार इन्हे बाबा या बाबजी कहकर इन्हें पुकारते हैं। इधर दाऊद मियां को सुर्ती नहीं मिलती है। न मिलने से, उनकी तलब और बढ़ जाती है। बेचारे मियां ने यह कभी सोचा नहीं, शमशाद बेग़म जैसी सादिक़ जैलदार दफ़्तरे निगारों के हेड यानि दाऊद मियां को जर्दा चखाना भूल सकती है? फिर, क्या? ये साहब बहादुर आख़िर, शमशाद बेग़म को उलाहना देने का पक्का इरादा कर लेते हैं।)

दाऊद मियां - वल्लाह। सुर्ती बनाई, हमारे लिये। गोया, कोई ओर ले गया?

शमशाद बेग़म- लाहौल बिला कूवत। ख़्वाहमख़्वाह यह हमने क्या कर डाला? हायऽऽ अल्लाह। ख़ता माफ़ करना, मैं ठहरी ज़ाहिल। क्या ज़ानू? जहमत दी...शरे ओ अदब। माफ़ करें......अब भी, कुछ नहीं बिगड़ा? अभी बनाती हूं, सुर्ती.. आपकी ख़िदमत में।

(शमशाद बेग़म वापस सुर्ती बनाती है, तभी फ़ोन पर घण्टी आती है। वह दाऊद मियां को सुर्ती थमाकर, चोगा उठाने जाती है।)

शमशाद बेग़म- (फ़ोन पर) - हल्लू, कौण बोल रिया है?

फ़ोन पर आवाज़ आती है - मैं रशीद बोल रिया हूं, जी। तुम्हारी बड़ी बी से बात कराओ... जी।

शमशाद बेग़म- साहब। बड़ी बी बाहर चली गयी है।

रशीद मियां - (फ़ोन पर, झुंझलाकर) - कब? किनके साथ?

शमशाद बेग़म- (अपने आप) - हायऽऽ अल्लाह। अब क्या कहूं, इनसे? सदाकत से बात करूं या बन जांऊ म्हैं भी उनकी तरह, खर्रास? हफ़्वात ना कर सकती। अब, क्या कहूं...? इतनी देर कैंची

की तरह चल रही नातिका, कम्बख़्त अब हो गयी पूरी बन्द। कम्बख़्त इस बड़ी बी में तो, दुनिया ज़हान के एब भरे पड़े हैं। अब झूठ बोलने से तो अच्छा है, मैं ख़ुदा का नाम ले लूं। (वह बिना बोले, चोगे को क्रेडिल पर रख देती है।)

शेरखान - (शमशाद बेग़म को आते देख कर) - तख़रीब ही बुनियाद है, तख़रीब ही तामीर। समझी, खाला? आपने फ़ोन रखकर बहोत अच्छा काम किया। हम तो कहते है, कुत्ता ज़ाने चमड़ा ज़ाने। बस हम तो ख़ुश है, खाला आपने लफ़्ज़ी इख़्तिलाफ़ को बढ़ने न दिया।

(संतोष की सांस लेकर शमशाद बेग़म टेबल के पास बैठ जाती है। और थैली से टिफिन निकालकर टेबल पर रखती है। फिर दस्तरख़्वान सजाकर कहती है)

शमशाद बेग़म- (रोटी का अेक कोर ख़ीर में डूबाती है) - कहने को मियां, बहोत कुछ है। (कोर को मुंह में रखती है) क़िब्ला, कौन ख़ुदा की दी गयी शीरी ज़बान को गन्दी करें ? इससे तो अच्छा है, ख़ुदा का पाक कलाम पढ़ा जाय।

दाऊद मियां - खाला। इंसानी फ़ितरत कुछ ऐसी है, इससे अल्लाह मियां को उज्र कैसा? वल्लाह नेकबख़्त के इश्क को उसके लक्खन से क्या जोड़ना?

शमशाद बेग़म- (ख़ीर पीकर सट को आपस टेबल पर रख्ती है) मैं बदहवास में तकरीर नहीं करती, जनाब तसलीमात अर्ज़ करती हूं.......मुझे ख़ुदा पर पूरा वसूक है। (आम के अचार से रोटी खाती हुई)

शेरखान - नूर साहब का इमामजामिन, चौबीस घण्टे आप अपनी आस्तीन पर बान्धे रखती है....एक बार कह देता हूं, इस शीरी ज़बान पर ख़ुदा का नाम हो। वाहियात गुन्हागारों का नाम आने से, दोजख़ मिलता है। अच्छा है ख़ाला, आप पाक क़लाम पढ़ा करती हैं।

(अब शमशाद बेग़म सट से नमक-मिर्च के परामठें निकालकर खाने लगती है। सब्जी में एक-एक कोर डूबा-डूबा कर खाती हुई कहने लगती है)

शमशाद बेग़म- आप सभी, दानिश मोमीन बैठे है.......अब आप सबको जिस्मफ़रोसी के धंधे में लिप्त रही एक औरत का किस्सा सुनाती हूं, सुनिये। सुनने के बाद यह सोचना कि, मैने ऐसा क्यों कहा? उसके कोठे में, कई दौलतमन्द बिगड़े नवाब मुलाकात करने आते रहते थे।

शेरखान - फिर क्या हुआ, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- एक फक़ीर जिसका मकान, बिल्कूल उस मोहतरमा के कोठे के सामने था। उस फ़क़ीर की मति मारी गयी, वह ख़ुदा की इबादत करने की जगह उन आने वाले रईसजादों की गिनती करने लग गया। मगर उधर वह औरत फक़ीर को देखकर...

दाऊद मियां - अरी ख़ाला। फ़क़ीर में कुव्वते जाज़बा ही ऐसा होता है, इंसान क्या पशु-पक्षी ख़ुद खींचे चले आते हैं। यह तो बेचारी, एक समाज की ठुकरायी हुई मोहतरमा ठहरी। आगे कहो, ख़ाला। क्या हुआ?

शमशाद बेग़म- फ़क़ीर व ख़ुदा के इश्क को, वह अपनी तकदीर बनाने लगी। जब दोनों का इन्तिकाल हुआ, तब उस औरत को लेने आये फ़िरदौस के फ़रिस्ते। मगर, उस फक़ीर को ख़ुदा के हुक्म से ज़ाना पड़ा दोज़ख़ में। अब समझे?

(दोनों हाथ उपर करके, जम्हाई लेती है।)

शमशाद बेग़म- (जम्हाई लेते हुए) - मैं यह समझाना चाहती हूं, के 'बार-बार ज़बान पर नेकबख़्ती आये, ख़ुदा का नाम आये। इन्शाअल्लाह, यह आपका हुस्ने-समाअत होगा।'

(टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है। मगर शमशाद बेग़म उठती नहीं, वह खाना खाती रहती है। दाऊद मियां व मियां शेरखान साहब ठहरे अलहदी। उनके उठने का, सवाल ही पैदा नहीं होता। क्योंकि, ये दोनों तो किस्सा सुनते-सुनते ख़्यालों की दुनिया में खो चुके थे। उन दोनों के खर्राटे, चारो तरफ़ गूंजने लगे। तभी पी.टी.आई मेडम आयशा ख़ान बरामदे में आती है, वह घण्टी सुनकर शमशाद बेग़म से कहने लगती है।)

आयशा ख़ान - (शमशाद बेग़म से) - ख़ाला आप बैठी रहिये, मैं फ़ोन उठा लेती हूं।

शमशाद बेग़म- यहां ज़ाने वाला, था कौन..? किसको ज़रूरत है, हफ़्वात करते रहने की?

आयशा खान - (चोगा उठाकर कान के पास ले जाकर कहती है) हल्लो कौन?

फ़ोन से आवाज़ आती है - मैं आयशा अन्सारी बोल रही हूं। ज़रा आक़िल मियां को फ़ोन देना।

आयशा ख़ान - (वहीं से आवाज़ देती है) - ओऽऽ बड़े बाबूजी। ज़रा इधर आइये.....आयशा अन्सारी का फ़ोन है, आपके लिये।

(आयशा खान की आवाज़ सुनकर आक़िल मियां अपने कमरे से निकल कर आते हैं, और चोगा उठाकर कान के पास ले जाते हैं।)

आक़िल मियां - (फ़ोन पर) - हल्लो, मैं आक़िल बोल रहा हूं। फ़रमाइये, हुजूर।

आयशा - (फ़ोन से) - सुन लीजिये, आक़िल मियां। इस आयशा ख़ान को समझा दें, के बड़ी बी का नाम इज़्ज़त से लिया जाता है। इस तरह बदतमीज़ों की बदसलूकी, इस स्कूल में नहीं चलेगी।

आक़िल मियां - ठीक है, मेडम। उनसे गुस्ताख़ी हो गयी, हुजूर आप अपना बड़ा दिल रखें। अब छोड़िये, इन मोहमल बातों को। हुजूर, आप अपना हुक्म सुनाये। कैसे याद किया आपने, इस नाचीज़ को?

आयशा - (फ़ोन से) -आप ध्यान से सुनियें, हमारे ज़ाने के बाद, किसी का फ़ोन आया क्या..?

आक़िल मियां - हो सकता है, आपके शौहर-ए-आज़म जनाब रशीद मियां का हो सकता है। घण्टी सुनी थी, और वह बन्द हो गयी।

आयशा - (फ़ोन पर) - आप अक्लेकुल है, जनाब। बेदिली ना दिखाये करें। वल्लाह फ़ोन कर देते हमें, आपको हमने अपना मोबाइल नम्बर दे रखा है।

आक़िल मियां - (फ़ोन पर) - कैसे करता, फ़ोन? कमरे के बाहर तो आपने इनकमिंग फ़ोन रख छोड़ा है, आउट गोइंग फ़ोन आपके लॉक

में। मेरे पास, मोबाइल नहीं। वल्लाह कैसे फ़ोन करता, हुजूर? फिर इस फ़ोन से तो ख़ाली, ख़बरे सुन सकते है.......वह भी तब, जब किसी का फ़ोन आये। टप-टप वाला फ़ोन तो आपके पास है...

आयशा अंसारी - (नाराज़ होकर) - ये टप टप कहना छोड दीजिये, दे देती हूं अलमारी वाला फ़ोन आपके पज़ेशन में। मगर...

आक़िल मियां - मगर-तगर कहना छोड़िये हुजूर, हर्ज मुर्ज है, फ़ोन किसके पास रखा जाय? शरअी के तहत, यह फ़ोन दाऊद मियां के पास रहना चाहिये। आख़िर दाऊद मियां ठहरे, दफ़्तरे निजाम। फिर, क्यों हमें आप अफ़सोसनाक ज़हालत में डालती हैं?

(अनचाही बात सुनकर, आयशा अंसारी गुस्से में चोगे को क्रेडिल पर पटक देती है। अब फ़ोन में, आवाज़ आनी बन्द हो जाती है। फिर क्या? आक़िल मियां भी फ़ोन का चोगा, क्रेडिल पर रख देते हैं। खर्राटे ले रहे दाऊद मियां, अपने काम की बात अवश्य सुन लिया करते हैं। इस वक़्त पूरी गुफ़्तगू कान दिये बैठे दाऊद मियां व

आयशा खान, सहसा हंसी के ठहाके लगा बैठते हैं। फिर दोनों एक साथ, आक़िल मियां से कह बैठते हैं।)

दाऊद मियां और आयशा खान - (एक साथ) - फिर क्या हुआ, जनाब.अक्लेकुल..?

आक़िल मियां - (बिफरते हुए) - होना क्या? फिर वही टप..टप। चलते हैं, यहां कौन बैठा है, निक्कमा? काम के आगे सर ऊंचा नहीं होता, और यहां ख़ाली हरज़ा बातें...?

(आक़िल मियां अपने कमरे की ओर ज़ाने के लिये,क़दम बढ़ा देते हैं। तभी जाफ़री का दरवाज़ा खोलकर डाकिया बरामदे में दाख़िल होता है, फिर दाऊद मियां के पास आकर उन्हें स्कूल की डाक थमाता है। डाक देकर डाकिया चल देता है, दाऊद मियां डाक खोलकर देखते हैं। डाक में उन्हें टेलीफ़ोन का बिल दिखायी देता है। अब वे उस बिल में इन्द्राज बकाया राशि पर निगाहें डालकर, जाते हुए आक़िल मियां को रूकने की रिक्वेस्ट करते हैं।)

दाऊद मियां - (आक़िल मियां से) - रूकिये.. रूकिये, आक़िल मियां। इस टप.. टप की तख़रीब (इतिहास) बाकी है। देखिये इस बिल को, दो हज़ार का बिल आया है।

आक़िल मियां - (रूकते हुए) - छोड़िये, हेड साहब। अब करना क्या, क्यों मेरा मुंह खुलवाते हो? इनकमिंग फ़ोन रहता है, हमारे लिये। बस, बैठे-बैठे जवाब देते रहो। और वो हर दिल अज़ीज़ टप टप वाला फ़ोन, रहता है उनके पास। जहां ना फटके, स्टॉफ का बन्दा।

आयशा खान - लीजिये, एक नग़मा पेश करती हूं। सुनिये, 'बड़ी बी को हो गया इश्क, टप टप से रब्त अमीक। अक्लेकुल नातिका बन्द, कोदन बेचारा हो बेकैफ़। डी.डी., डी.इ.ओ., एम.पी.,एम.एल.ए., सबसे करती मेडम बात। किस किस का तबादला अब, लिस्ट पड़ी है उनके लब पर। जबसे दिल आया टप टप पर, तबसे टप टप बना तख़रीब। बड़ी बी को हो गया इश्क, टप टप से रब्त अमीक।'

(आयशा खान का नग़मा सुनकर, सभी ठहाके लगाकर हंसने लगे। अब तक, शमशाद बेग़म खाना खा चुकी है। वह अपने हाथ धोकर, अब दीवार घड़ी पर निगाहें डालती है। रिसेस का वक़्त हो गया है। अब वह जाकर, रिसेस की घण्टी लगा देती है। घण्टी की आवाज़', टन टन' ज़ोर से गूंज़ उठती है। अब मंच की रोशनी, लुप्त होती है।)

(अजज़ा ९) शौहर-ए-नामदारलेखक-०: दिनेश चन्द्र पुरोहित (1)

(मंच रोशन होता है, पोर्च में स्कूल की मेडमें बैठकर गूफ़्तगू कर रही है। कभी-कभी, हंसी के किल्लोर फूट पड़ते है। कैसी बढ़िया किस्मत पाई है, इन्होने? रशीदा बेग़म तो परमोशन लेकर, दूसरी सीनियर हायर सेकेण्ड्री स्कूल जा चुकी है, उनकी जगह आने वाली आयशा अन्सारी से तो इन्हें कोई खौफ़ रहा नहीं। क्योंकि यह मोहतरमा तो ख़ुद, इनके साथ ही सीनियर टीचर रही थी। उस दौरान आयशा अंसारी के विचार, कभी रशीदा बेग़म से नहीं मिले। उनके साथ, इनका छत्त्तीस का आंकड़ा बना रहा। दफ़्तरे सर्व

शिक्षा में तबादला हाने पर, डिस्चार्ज हाने के दौरान इन्होने एलान किया था "मैं इसी स्कूल की हेडमिट्रेस बनकर वापस आंऊगी और इसी हेड मिस्ट्रेस की कुर्सी पर बैठूंगी, जिस कुर्सी पर रशीदा मेडम बैठकर इतना इतराती रही है।" आख़िर उसने अपनी कही बात को साबित करके दिखा दिया, इस स्टॉफ को। अब आज़ वही आयशा मेडम, किसी सरकारी मिटिंग में शराकत करने गयी है। और साथ में जाते वक़्त, सितारा मेडम को अपना चार्ज देकर गयी है। फिर, उनसे डरने का तो कोई सवाल ही नहीं? यह सितारा मेडम बेचारी ठहरी, अल्लाह मियां की गाय। अब तो सारी मेडमें एक जूट होकर, सितारा मेडम को इस खुशी में जश्न मनाने के लिये उन्हें मज़बूर करने लगी। जश्न मनाने का मनसूबा तो उन्होने पहले से ही बना लिया था, अब तो केवल उनसे मिठाई व बामज़ नमकीन मंगवाना और उनका पर्स का भार हल्का करना ही ख़ास मक़सद रहा। सितारा मेडम साफ़ दिल की मोहतरमा होने के साथ-साथ, उन्होने रईस दिल भी पाया है। आख़िर, वे एलान कर देती है "आज तो मस्ती से, दाल का हलुआ और गरमा-गरम कोफ़्तों का लुत्फ़

उठायेंगे।" बस फिर क्या? सितारा मेडम पर्स खोलती है, और उनमें से कड़का-कड़क नोट निकालकर दाऊद मियां को थमा देती है। ऐसे मौक़ों में दाऊद मियां जैसे निज़ाम, बिरलों को ही मिलते है। थोड़ी देर बाद, दाऊद मियां व मियां दिलावर खां थैली लिये हुए चल देते हैं, पार्टी को अन्जाम देने। उनके रूख़्सत होने के बाद, गुफ़्तगू का दौर वापस चालू हो जाता है।)

सितारा बी - सुनती हो, ग़ज़ल बी? हमारे वोऽऽ, है ना....वो (शर्म से उनका मुंह, कश्मीर की सेब की तरह लाल हो जाता है) यानि, आपके जीजा। कल रात के बारह बजे उठ गये जनाब, और उठकर कहने लगे..

इमतियाज़ - ऐसा क्या कह डाला, उन्होंने? आपा, ज़रा उनकी आवाज़ की नक़ल करते हुए बयान करो ना।

सितारा बी - उनकी नक़ल उतारती हुई) -बेग़म...अरी ओ बेग़म। सुनती हो, सज्जाद की अम्मी। हमने शाही दावत का ख़्वाब

देखा.....ढेर सारी मिठाईयां क्या कहूं? कहते हुए मुंह में पानी भर उठता है। बस, फिर क्या?

ग़ज़ल बी - फिर क्या? आगे कहिये ना, क्या हुआ?

सितारा बी - आगे उन्होने कहा 'हम तो टूट पड़े, उन मिठाईयों पर। तभी हमारी नींद उड़ गई....और, हाय अल्लाह क्या मंजर देखा? जगे तब, हम तकिये को चबा रहे थे। बस, अब बेग़म सहा नहीं जाता। यह कम्बख़्त भूख, अब ज़ान ले लेगी मेरी। कुछ लाओ...जल्द करो, बेग़म।' '

गज़ल बी - फिर क्या, आपने सज़ा दिया होगा दस्तरख़्वान?

इमतियाज़ - नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। यह आपा हमारे जैसी आलसी नहीं है, यह तो ज़रूर चूल्हा फूंकने बैठ गयी होगी? (हंसती है)

सितारा मेडम - इमतियाज़,़ कुछ तो बोलने तो मुझे। मैं कह रही थी, के गज़ल बी...वक़्त का ख़्याल कर के बोला होता? आधी रात

थी, दस्तरख़्वान तो गया चूल्हे में। मोहल्ले वाले, क्या सोचते? खुली खिड़की की रोशनी देखकर?

इमतियाज़ -रोशनी हो जाती तो क्या, इन नामाकूल पड़ोसियों के मरहूम अजदाद (पूर्वज) जिन्न बनकर डराने आ जाते?

सितारा बी - तुम नहीं ज़ानती, इमतियाज़? इधर रोशनी हुई, और इन नामाकूलों के कान...अ◌ा◌ंख खिड़की की तरफ़। फिर, क्या? मैने आव ना देखा, ना ताव। दबे पांव, चली गयी फ्रीज़ के पास...फ्रीज़र खोला, और निकाली आइसक्रीम। फिर क्या? शौहर-ए-आज़म के दरबार में कर दी पेश, और क्या करती?

(आइक्रीम के लफ़्ज़ सुनते ही नज़मा मेडम के कान घोड़े के कान की तरह खड़े हो जाते हैं, बेचारी नज़मा ठहरी ब्लड प्रेसर की मरीज़। अच्छी बामझ चीज़ें खाये नहीं तो क्या? ऐसी बातों को, बड़े लुत्फ़ से कहा व सुना तो जा सकता है। झट पर्स से ऐनक निकालकर, कहने लगती है।)

नज़मा - (ऐनक लगाकर) -बेग़म, क्या खिला दिया आपने उनको? हमारे मुंह में पानी ला दिया, आपने। अजी, आइसक्रीम भी क्या चीज़ बनायी है ख़ुदा ने? मैं तो अब, उस वाकया को भूल ही नहीं सकती......

इमतियाज़ - क्या हुआ री? तेरी सास ने....

नज़मा - अरी, ना.. ना इमतियाज़। उस छिछोरी सास को ख़म्स (पांच) साल पहले, अल्लाह मियां ने अपने पास बुला लिया। अरी इमतियाज़, क्या करूं? जाते-जाते उसने अपने उस सनकी छोरे को, मेरे करम फोड़ने के लिये छोड़ गयी।

इमतियाज़ - अरी कौन, किसे छोड़ गयी? तेरे शौहर को...

नज़मा - अरी इमतियाज़, वो तेरे जीजा नहीं। मेरे सनकी जेठ हैं, न तो कमाते हैं...और न उनके पास कोई मकान? उसकी तीमारदारी में अल्लाह ज़ाने क्या-क्या पापड़ बेलने पड़ते हैं, अब क्या कहूं तुझे इमतियाज़?

ग़ज़ल बी - अरी नज़मा, तू क्या रखती होगी उसका ख़्याल? तू तो ख़ुद ठहरी, बी.पी. की मरीज़। अब एक बार कह देती तूझे, के बार-बार पटरी से उतरा मत कर। कहीं, ऐसा न हो, तुम गश खाकर गिर जाओ। अब जल्दी कर, मुद्दा बदल कर झट बताती जा, तेरी आइसक्रीम का क्या हुआ?

नज़मा - मैं कह रही थी, के इन दिनों बड़ी बेटी रूख़साना ससुराल से यहां आई हुई है। उसका बेटा, यानि हमारा लख़्तेजिग़र ने कल कर दी फ़रमाइश। कहने लगे (तुतलाते हुए) नानी हम भी थायेंगे आइतलीम। बेचारा ठहरा नन्ही ज़ान, क्या कहूं?

इमतियाज़ - कह दे, मेरी दिल-ए-अज़ीज़। मैं भी ख़्याल रखूंगी, जब मेरा नाती जन्म लेगा।

नज़मा - जैसे ही बेचारे ने आइसक्रीम को मुंह लगाया, और हमारी नवाबजादी तुनक उठी । कहने लगी हाय अल्लाह, आप कैसी नानी है? इसकी ज़ान की दुश्मन, बनी बैठी हैं। आगे, क्या कहूं? कम्बख़्त ने आइसक्रीम छीनी, और बाहर फेंक आई।

सितारा बी - अरेऽऽ, पीर दुल्लेशाह। क्या ज़माना आ गया, आज़कल? आज़ की छोरियां, इतनी बदतमीज़ है? ज़ानती नहीं कम्बख़्त? जिसने नौ माह तक, पेट में पाला है उसे। उस अम्मी से, इतना इख़्तिलाफ़?

(रोती है, फिर पर्स से रूमाल निकालकर अश्कों को पोंछती है । ग़ज़ल बी दिलासा देती है... और, समझाकर कहती है।)

गज़ल बी - हिम्मत रख, मेहरारू। औरत को अपने बच्चों के लिये क्या-क्या नहीं सुनना पड़ता है?

नज़मा - क्या कहूं? आप तो ज़ानती हैं, जब यह छोटी थी तब इसने फरमाइस की 'रजिया के घर पर, दाल का हलुआ बना है। मेरे भी बना दो अम्मी, मैं भी खांऊगी ।' घर पर पूरा रासन नहीं, घर के बाहर हो रही बरखा। क्या कंरू? औलाद ठहरी, उसे रूला नहीं सकती।

ग़ज़ल - आगे क्या हुआ? पड़ोसी के घर से मांगकर लायी होगी, दाल का हलुआ?

नज़मा - नहीं आपा, पहले आप सुन तो लीजिये। ख़ैर उठी, बदन पर बुर्का डाला और चल दी छात्ता लेकर पड़ोसी के घर। पड़ोसी के घर से फानीज़ वगैरा सारा सामान उधार ले आई, और आकर...

ग़ज़ल - फिर तो तूने, दाल का हलुआ बनाया होगा? काश आज़ तेरी तबीयत नासाज़ न होती, तो तू हलुआ बनाती और हम चखते।

नज़मा - नहीं आपा, ऐसी बात नहीं। दाल भिगोने का वक़्त कहां रहा, आपा? गेहूं के आटे का हलुआ पकाकर इस लाड साहिबा को खिलाया। मगर, हाय अल्लाह। उस कम्बख़्त हलुऐ की सोरम चली गयी नकचढ़ी सास के नथुनों में। फिर, क्या कहूं आपा?

सितारा बी - कहने की कोई ज़रूरत नहीं, नज़मा। दुनिया-ज़हान की सारी सास अेकसी है। सब शातिर है, सबके मनसूबे अेकसे....

नज़मा - (ख़ुश होकर) - सही कहा, आपने। क्या कह रही थी, मैं? (याद करते हुए) हां याद आया, हलुऐ की गन्ध चली गयी उस नासपीटी सास के नथुनों में। नासपीटी ने हाय तौबा मचाकर,

जमीन आसमान एक कर डाला। इकट्ठे हो गये पड़ोसी, उनके सामने चिल्लाने लगी..

इमतियाज़ - बता दे, उस नकचढ़ी सास की करतूत। यहां तेरा मियां नहीं बैठा है, जो तू इतनी डर रही है?

ग़ज़ल - अरी इमतियाज़, यह निकोटी कहां डरती है अपने शौहर से? बेचारा कमाता है, तो क्या? उसकी सारी तनख़्वाह छीन लेती है, उससे। फिर बेचारा हाथ फैलाता है, सिटी बस किराये के लिये।

नज़मा - अरी आपा, पहले सुन लीजिये मेरी बात। (सास की नक़ल उतारती हुई) देख लीजिये, हमारी दुल्हन के लक्खन। नासपीटी हलुआ उड़ाती है, और यहां बैठी सास दवाई के लिये तरस रही है।

(नज़मा कहते-कहते हाम्पने लगती है, पहलू में बैठी ग़ज़ल बी उसकी कमर सहलाती हुई, कहती है।)

ग़ज़ल - जल्दी-जल्दी मत बोल, तेरी सांस तो फूल रही है। तसल्ली से बयान कर, सास की नक़ल मत उतार। कहीं तेरी मरहूम सास का आसेब तेरे बदन में चला गया तो... हाय अल्लाह..?

नज़मा - सुनो, मेरी बात। मैं कह रही थी के 'हाय अल्लाह, क्या ज़माना आ गया? हमने औलाद के लिये क्या...क्या नहीं सहे? और यह औलाद बड़ी बेदिली से हमारे जख़्म कुरेद बैठी।

(साइकल की घण्टी बजती है, दालान के बाहर साइकल को खड़ी करके दिलावर खां पोर्च में दाख़िल होते हैं... और मेज़ पर रखी प्लेटों में गरमा-गरम मिरची बड़े रखकर, दस्तरख़्वान सजाते हैं। चारों ओर उन गरमा-गरम मिरची बड़ों की सोरम फैल जाती है।)

दिलावर खां - (सबके सामने, मिरची बड़ों की प्लेटें रखते हुए) - नोश फरमाये मेरे मेहरबानों व मेरे कद्रदानों । इन गरमा-गरम मिरची बड़ों का लुत्फ़ उठाइये। क्याऽऽ, बामज़ नमकीन है? (हर मेडम के पास प्लेट रखते हुए) शुक्रिया अदा कीजिये, सितारा मेडम का।

(सभी मोहतरमाएं, मिर्ची बड़ों का लुत्फ़ लेने लगती है। अब खाते-खाते, नज़मा कहने लगती है।)

नज़मा - हाय अल्लाह। आपा आपकी यह कैसी गुस्ताख़ी ? जीजा को खिला दी आइसक्रीम। और हमारे हाथ आये ये...मिर्ची... (मुंह बिगाड़ती है) हायऽऽ हायऽऽ, मुंह जला दिया आपा। अब तो, मिठाई मंगवानी बहुत ज़रूरी है।

ग़ज़ल - हम तो वादे के मुतालिक दाल का हलुआ तो खायेंगी, मगर इसके साथ दूसरी मिठाई और आपको मंगवानी होगी। आख़िर हमारा मुंह जो जलाया, आपने मिरची बड़े खिलाकर।

सितारा बी - सब कुछ खिलाया जायेगा, मेरी बहनों। मगर अब आपको, मुझे सपोर्ट बराबर देते रहना होगा। क्योंकि हाफ इयरली इमतिहान, जल्द ही चालू हो रहे हैं। आप ज़ानती है?

इमतियाज़ - अब क्या ज़ानना बाकी रह गया, आपा?

सितारा बी - इमतिहान के दौरान, शिफ्ट इन्चार्ज या आप उसे हेडमिस्ट्रेस का चार्ज कहें... वो हमारे पास रहेगा। और हम आपकी मदद के बिना, एक क़दम हम आगे बढ़ नहीं सकते। यह बिल्कूल

सच्च है, बस आप आज़ से ही इमतिहान की पूर्व तैयारी चालू कर दें।'

इमतियाज़ - नाऽऽ नाऽऽ, पहले हलुआ और मिठाई। नहीं तो क्या? आप और कोई शरायत (शर्तें) हम पर लाद देगी।

(तभी शमशाद बेग़म चाय से भरे प्याले, तश्तरी में रखकर लाती है। हरेक मोहतरमा को प्याला थमाती है, तभी उसे खंखारने की आवाज़ सुनाई देती है। शेरखांन साहब व तौफ़ीक़ मियां, दोनों बड़ी बी के कमरे से बाहर आते हैं।)

शेरखांन - (दाढ़ी को सहलाते हुए) - ग़ज़ल बी। हम तो ठहरे लाइब्रेरियन । मगर आप व रशीदा बी कमाल की होश्यिर निकली । दोनों मिलकर मुझ ग़रीब को फंसा दिया, इस इमतिहान के प्रभार देकर। अब मुझे अकेला, काम करने के लिये छोड़ दिया? और यहां बैठी आप, पार्टी का लुत्फ़ उठा रही हैं?

ग़्ाज़ल बी - क्या कहाऽऽ? फंसा दिया...अजी जनाब, कई सालों से इस चार्ज को लादे कर चल रहे थे हम। तब कभी चूं नहीं की, और न किसी से मदद मांगी... अब आया समझ में, मियां? और इधर आप, एक साल ही नहीं बीता? और जनाब, मदद के लिये लोगों को पुकारने लग गये?

शेरखांन - बस, रहने दीजिये। आप जैसी हमशीरा से, मेरी यही इल्तिज़ा है... आप सभी इमतिहान के वक़्त, बराबर सपोर्ट देते रहना। और, मुझे कुछ नहीं चाहिये।

ग़्ाज़ल बी - सपोर्ट तो बाद में देखा जायेगा, आप ठहरे इमतिहान के निज़ाम। इमतिहान खत्म होने के बाद, आपकी तरफ से मिठाई व नमकीन आ ज़ाने चाहिये । (मेडमों की तरफ मुंह करते हुए) बोलिये बहनों वज़ा फ़रमाया या नहीं?

इमतियाज़ -क्यों नहीं? इमतिहान के पहले, आज़ एक्टिंग हेडमिस्ट्रेस की ओर से आ गई मिठाई व नमकीन। इमतिहान के पहले दिन, आ जायेगी मिठाई-नमकीन नज़मा मेडम की तरफ से।

आख़िर यह मोहतरमा, अभी-अभी नानी बनी हैं। फिर, कुछ तो होना चाहिये।

(इस तरह मेडमों के बीच लिस्ट बनने लगी, किस मेडम की बारी कब आयेगी? और उस दिन का, मीनू क्या होगा? तभी शेरखांन साहब की निगाहें, तौफ़ीक़ मियां पर गिरती है। कहीं ये मुअज़्ज़म, आंखों में धूल डालकर कहीं चले ना जाय? बस उन्होने, आव देखा न ताव। झट उनसे कोपियां, सूतली, स्टॉम्प-पेड व मोहरे मंगवाकर अपनी मेज़ पर रखवा लेते हैं। शमशाद बेग़म व उन्हें, कोपियों पर मोहर लगाने का हुक्म देकर, उन दोनों को व्यस्त कर देते हैं।)

शेरखान - (शमशाद बेग़म की ओर देखकर) - देखो खाला । ऐसा कीजिये आप दोनों यहां बैठ कर टाईम-टेबल के मुत्तालिक आप कोपियों के बण्डल बना दें, फिर हर कोपी पर स्कूल की मोहर लगा दें । (जम्हाई लेते हुए) क्या कंरू? दिलावर मियां को, बुला नहीं सकता....वे दाऊद मियां की मदद कर रहे होंगे?

शमशाद बेग़म- (अपने आप) - चाय के बरतन मुझे भी धोने है, मगर मेरी मदद करने वाला यहां है कौन? ग़रीब की जोरू....ठहरी आाख़िर। शिकवा आख़िर किसके पास जाकर, बयान करूं? मेरी सुनने वाला है, कौन?

(थोड़ी देर बाद तौफ़ीक़ मियां हर कोपी पर धमा-धम मोहर ठोकना चालू कर देते हैं, फिर वे शमशाद बेग़म को कह बैठते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (शमशाद बेग़म की ओर देखकर) - उज्र किस बात का, ख़ाला? चालू हो जाईये, आप भी। फिर जाकर, आपको बरतन भी धोने हैं।

(शमशाद बेग़म, चाय के बरतन उठाती है। उन्हें नल के नीचे रखकर, वापस आती है। सभी मेडमें, अपनी क्लासों में चली जाती है। अब चारों तरफ़, सन्नाटा छा जाता है। इस सन्नाटे को पाकर, शेरखान साहब कुर्सी पर बैठे-बैठे वापस खर्राटों की दुनिया में चले जाते हैं। रफ़तह-रफ़तह, मंच की रोशनी लुप्त हो जाती है।)

(२)

(दूसरा दिन, मंच रोशन होता है। पोर्च का मंजर सामने आता है, पास रखे स्टूल पर तौफ़ीक़ मियां तशरीफ़ आवरी होते है। अचानक उनकी निगाह, दीवार पर लगी घड़ी पर जाकर टिकती है, जूहर के बारह बजे है।)

तौफ़ीक़ मियां - (मियां दिलावर को आवाज़ देते हुए) - अजी ओ, दिलावर खादिम साहब। हुजूर, ज़रा इधर तशरीफ़ रखें। अजी हमारे लख़्तेजिग़र ज़हीर, वक़्त हो गया है।

(कमरे से निकलकर, दिलावर पोर्च में आते हैं। उन्होंने अपने हाथ में, प्योन बुक और कई डाकें थाम रखी है।)

दिलावर खां - एक बार कह देता हूं, तौफ़ीक़ मियां। जाते वक़्त, रोकना मत मुझ। ज़ानते नहीं, डाक देने जा रहा हूं। आपको मालुम नहीं, ट्रेज़री एक बजे के बाद डाक नहीं लेती है। इधर देखिये, जनाब।

तौफ़ीक़ मियां - क्या देखूं, ख़ादिम साहब? इस वक़्त हुजूर, आपके दीदार कर रहा हूं।

दिलावर खां - बीच में बोलकर टोका न करें, तौफ़ीक़ साहब। अब सुनिये, आक़िल मियां ने अलग से डाकखाने से रूपये निकालने का विड्रोल फार्म दे रखा है। कहते हैं, हुजूर। (उनकी नक़ल उतारते हैं) जनाब, आपके जैसा इस स्कूल में और कोई वर्कर नहीं। इसलिये, आप जैसे क़ाबिल शख़्स को ही डाकखाना भेजता हूं।

तौफ़ीक़ मियां - वल्लाह। फिर, उज्र क्यों? सरे अदब ने आपकी तारीफ़ की है.....फिर, किस बात की नाराज़गी?

दिलावर खां - (आवाज़ धीमी करके) क्या करें, बिरादर? अब्बा मरहूम की कसम। हम ठहरे, नवाब ख़ानदान से ताल्लुकात रखने वाले। इज़्ज़त से नाम लिया जाता है, हमारा। इसलिये ख़ानदानी वज़ा के खिलाफ़, हम कोई काम नहीं कर सकते।

तौफ़ीक़ मियां - (सर पकड़कर) - इसमें, डाकख़ाने से क्या ताल्लुकात?

दिलावर खां - सब्र रखो मियां । ताल्लुकात, कैसे नहीं? सदाकत से कहते हैं, जनाब...कि बारह बज गये हैं। डाकखाने में, केस

ट्रांजेक्शन का वक़्त बीत गया है। अब वहां ज़ाना, ख़ाली वक़्त की बरबादी है । सफ़र-ए-तफ़रीह में ज़ाने का, हमारा इरादा नहीं ।

तौफ़ीक़ मियां - फिर, क्या हुआ..?

दिलावर खां - फिर, क्या? आक़िल मियां हो गये नाराज़ । और कहने लगे के 'मुजाविर साहब। आप जैसा हारूने फ़न, कहां मिलता है? इधर पढा आपने फातिहा, और उधर पोस्ट मास्टर साहब हो जायेंगे मजबूर। आपको आदाब बजाते कहेंगे...

तौफ़ीक़ मियां - (मुस्कराते हुए) - आप ठहरे, पाक मज़ार के मुजाविर। ख़ुदा के बंदे। आदाब तो छोड़िये जनाब, पोस्ट मास्टर साहब आपकी ख़िदमत के लिये आपके दर पर हाज़िर हो जायेंगे।

दिलावर खां - हो सकता है, तौफ़ीक़ मियां। पास्ट मास्अर साहब ज़रूर कहेंगे के 'वल्लाह। तशरीफ़ रखें, हुजूर। आपने, वक़्त क्यों बरबाद किया? हम खुद हाजिर हो जाते, आपके दीवानखाने।, सुनो मियां, तुम भी पढ लेना फातिहा पीर बाबा दुल्लेशाह का। अब जाओ बरख़ुदार, वक़्त खराब न करो ।

तौफ़ीक़ मियां - (ठहाके लगाकर) - हम तो काम कर ही रहे हैं, मियां। सुनो, एक बार हमारी बात। चले तो खूब चलती है वे मोहरे, मगर कभी बता देती है मोहरे, के खादिम न होकर तुम बिना इल्म के गधे हो।

दिलावर खां - (गुस्से में) क्या बकवास करते हो, मियां? पीराना मुअज़्ज़मों के साथ, बेअदबी से पेश नहीं आया जाता। ना तो, मियां...

तौफ़ीक़ मियां - (हंसते हुए) - क्या फ़र्क़ पड़ता है बिरादर? गधा न सही तो नशेड़ी ही सही । जनाब की टांगे है भी कमाल की, बीस मील बाईसिकल चलाने पर ही नशा उगता है....फिर काहे गुस्सा करते हो, जनाब? चले ज़ाना यार, अभी एक सिगरेट सुलगा देता हूं...

दिलावर खां -ला हौल व ला कुव्वत। क्या बकते हो? नशा करते हैं, तो खून पसीने की कमाई से। हराम की कमाई से नहीं। फिर, उज्र

क्यों? तुम्हारी तरह दूसरों पर अपने काम लादकर, आराम नहीं फ़रमाता.....समझे, बरख़ुदार?

तौफ़ीक़ मियां - (लबों पर मुस्कान लाकर) - जनाब, कल शमशाद बेग़म कह रही थी के, 'आज़कल बड़ी अलमारियों व बड़ी टेबलों के नीचे कोई शख़्स कचरा छुपा देता है.....कचरे के ढेर, उन्हे उठाने पड़े।'

दिलावर खां -झूठ ना बोलाए, अब्बा हुजूर की कसम। परसो शमशाद बेग़म अपनी कचरे की टोकरी ख़ाली करके, छोड़ गयी बरामदे में। वापस आने पर उनको वह टोकरी कचरे से भरी मिली, कचरा फेंकना तो दूर। बेचारी मोहतरमा की टोकरी, भर दी किसी ने कचरे से।

तौफ़ीक़ मियां - इससे क्या साबित करना चाहते हैं, आप? आपके कहने का, क्या मफ़हूम?

दिलावर खां - वह कहती है, मेरी टोकरी में किसने कचरा डाला? जबकि, वह ख़ाली छोड़कर रूख़्सत हुई थी। हाय बाबा गोस, इन

नापाक नाज़र मुलाज़िमों की बदौलत उस बेचारी को दूसरों का कचरा ढोना पड़ा ।

तौफ़ीक़ मियां - (गुस्से से) - जबान पर लगाम दो, मियां । हम वो है जो तन्हा-तन्हा बयावन जंगल में अकेले रहते हैं और वो शेर है, जिन्हे शिकार न मिलने पर गीदड़ नहीं बनते....समझे? आये हमारे ऊपर तोहमत लगाने वाले, खर्रास कहीं के।

दिलावर खां - काहे का शेर? आप ठहरे, कामचोर। और सुन लीजिये, शो-पीस वर्कर।

तौफ़ीक़ मियां - वर्कर ना होते तो जनाब, इन मोहतरमाओं की यह कहकर जबान नहीं थकती के, 'इमतिहान का काम एक तरह से तौफ़ीक़ मियां ने सम्भाल रखा है। यदि ये न होते, तो इमतिहान लेना दूभर हो जाता एक बार।'

दिलावर खां - अपने मुंह मियां मिठ्ठू मत बनो, तौफ़ीक़ मियां। हाथ में कंगन, तो आरसी की क्या ज़रूरत? चलिये आज़ अभी इसी

वक़्त, आप डाकखाने चले जायें। और, पैसे विड्रोल करवा दें। तब हम समझ लेंगे, आप भी एक वर्कर हैं। शो-पीस, वर्कर नहीं। समझे, क्या समझे?

तौफ़ीक़ मियां - छोड़िये...ख़ैर, ज़ाने दीजिये। आज़ रहम करके छोड़ रहा हूं, आपको। जनाब, ख़्वामख़्वाह क्यूं उलझ रहे हो हमसे? आज़ हमारे पड़ोसी का हो गया है, इन्तिकाल.....

दिलावर खां - फातिहा की दावत खिलाने ले जा रहे हो, मियां?

तौफ़ीक़ मियां - छोड़िये, मज़ाक करना। जनाजे में शराकत होना हैं, मियां। ना तो आपको दिखला देते, तौफ़ीक़ मियां भी क्या चीज़ है? जनाब हम तो वो परवाने हैं, जो शमा का दम भरते हैं। खामोश रहकर स्कूल के लिये जला करते हैं.....समझे ?

(तौफ़ीक़ मियां स्टूल से उठते हैं, फिर जेब से सिगरेट का पैकेट निकाल कर कहने लगते हैं)

तौफ़ीक़ मियां - डाकघर से पैसे लाना, हमारे बायें हाथ का क़माल है जनाब।

(तभी कमरे में बैठे आक़िल मियां को, तौफ़ीक़ मियां का कहा हुआ जुमला सुनाई देता है। अब वे हंसते हुए जनाब तौफ़ीक़ मियां को सुनाते हुए ज़ोर से कहते हैं।)

आक़िल मियां - (कमरे में बैठे-बैठे, तौफ़ीक़ मियां को पुकारते हुए कहते हैं) - ओ, तौफ़ीक़ मियां। ज़रा अपने बायें हाथ का क़माल, हमारे लिये आबे जुलाल लाकर दिखला दीजिये...।

(सिगरेट का पैकेट वापस अपनी जेब के हवाले कर, तौफ़ीक़ मियां दिलावर खां से रफ़तह-रफ़तह कहते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (धीमी आवाज़ में) - देख लीजिये, आपके सामने .....बड़े-बड़े मुसाहिबों को पानी पीला दिया है, अब और पीलाने जा रहा हूं।

(मटकी से बर्फ जैसा ठण्डा-ठण्डा पानी निकाल कर, तौफ़ीक़ मियां लोटा लिये आक़िल मियां के कमरे में दाख़िल होते हैं। जहां स्टूल पर बैठी शमशाद बेग़म, आक़िल मियां से कह रही है के)

शमशाद बेग़म- (थैली से नोट-बुक निकाल कर, उसे पढ़ते हुए) - जनाब दो माह पहले आपसे एक हजार रूपये उधार लिये थे, और तनख़्वाह के दिन आपको चुका दिये सारे रूपये।

आक़िल मियां - मुझे ध्यान है, ख़ाला। आपने रूपये चुका दिये, अब आप क्या कहना चाहती हैं?

शमशाद बेग़म- मगर, अब क्या करूं, आक़िल मियां? रजिया व उसके शौहर के आ ज़ाने से, घर का ख़र्च बढ़ गया है। मेहरबानी होगी हुजूर, पांच सौ रूपये और दे दीजिये उधार। एक तारीख को ज़रूर, कर्ज अदा कर दूंगी ।

आक़िल मियां - (मुस्करा कर) - हां ज़ानता हूं, ख़ाला । एक तारीख को लौटा दोगी और दस तारीख को वापस....(अलमारी से डायरी निकाल कर, उसमें कर्ज लेने की राशि इन्द्राज करते हैं। फिर गल्ले से पांच सौ रूपये निकालकर, शमशाद बेग़म को थमाते हैं।)

शमशाद बेग़म- (लबों पर मुस्कान लाकर) - क्या कंरू मियां, मज़बूरी है। ना तो, आपको ज़हमत देने की क्या ज़रूरत ?

तौफ़ीक़ मियां - (लोटा लिये हुए) - क्या बात है, ख़ाला ? कुछ हमें भी बताओ, ज़रा......

शमशाद बेग़म- सुनकर आप क्या करेंगे, जनाब? आप अपना काम कीजिये, पहले हुजूर को पानी पीला दीजिये। कब से इन्हे प्यास लगी है, और आप अब आ रहें हैं लोटा लिये। लो, मुझे थमा दीजिये लोटा।

(जैसे ही शमशाद बेग़म लोटे को थामती है, उसके हाथ काम्पने लगते हैं। फिर, क्या? वह झट उस लोटे को, वापस तौफ़ीक़ मियां को थमा देती है।)

शमशाद बेग़म- हाय अल्लाह। तौफ़ीक़ मियां, यह बर्फ कहां से उठा लाये? जाओ, बगीचे में। वहां धूप में पीतल का घड़ा रखा है, अब पानी गुनगुना हो गया होगा....बस, आप आप वहां से लोटा भरकर ला दें। और दूसरा घड़े को भी, आप धूप में रख दें। ख़ुदा करीम है, तुम्हारी ख़ता को माफ़ कर देगा ।

(तौफ़ीक़ मियां लौटकर वापस पोर्च में आते हैं, वहां स्टेण्ड पर रखे घड़े को कन्धें पर लादकर चलते हैं, उनका रास्ता रोक कर दिलावर खां सामने आकर खड़े हो जाते हैं। फिर, झल्लाते हुए दिलावर खां कह बैठते हैं।)

दिलावर खां - अब सदका उतारूं, आपका। क़िब्ला आपसे बाइसेरश्क है, जनाब। (ंहंसी उड़ाते हुए) हम जैसे नाचीज़ के सामने, वल्लाह आप पानी भरते हैं? (हंसते हैं)

तौफ़ीक़ मियां - (नाक भौं सिकोड़कर) - नावाकिफे गम अब दिले नाशाद नहीं है जनाब, कुछ हमारी तबीयत भी बेकैफ है। ठण्डा पानी पीया नहीं जाता हमसे, बस एक बार इस घड़े को धूप में रखेंगे तो पीने में सहूलियत रहेगी।

दिलावर खां - (खिल्ली उड़ाते हुए) - जनाब की नातिका का क्या कहना? हुजूर की फ़ितरत कुछ ऐसी, इनके हर काम में गंजलक है। फिर भी गुस्ताख़ी तसलीम करना, गवारा नहीं। हम तो ठहरे,

कोदन...यार ग़लती से शमशाद बेग़म क्या बोली, वह सब सुन लिया हमने।

(अब तौफ़ीक़ मियां अपनी पोल खुलती देख, बेचारे क्या जवाब देते? बस यहां से रूख़सत होने के लिये क़दम बढ़ाते हैं, तभी आक़िल मियां की आवाज़ सुनाई देती है।)

आक़िल मियां - (दिलावर खां को पुकारते हुए) - अरे ओ दिलावर मियां, नवाब ख़ानदान के चराग़। अपने ख़ानदान की तख़रीब पढ़ने, बैठ गये हो क्या? भय्या काम करना है, काम करने की ही तनख़्वाह मिलती है। ट्रेजरी से पारित सेलेरी बिल ला दीजिये, ना तो एक तारीख को इब्तिदाई तनख़्वाह से महरूम रह जाओगे।

(दिलावर खां की पेशानी पर फ़िक्र की रेखाएं छा जाती है, फिर वे तिलमिलाते हुए उठते हैं। फिर बिलों का पुलींदा और डाक बुक को बगल में थामकर, ऊंची आवाज़ में शमशाद बेग़म को पुकार कर कहते हैं।)

दिलावर खां - (ऊंची आवाज़ में) - अरी, ओ ख़ालाज़ान। लग्व अफ़सोसनाक सर्का है....आज़ से छोड़ दिया हमने, बस इस मर्तबा। सुन लीजिये, हम ट्रेजरी जा रहे हैं...शायद, लौटने में देरी हो जायेगी। क्योंकि, ट्रेजरी में हमारी चवन्नी चलती नहीं। बस अब आप, बाकी रहा सफ़ाई का काम कर लेना। आदाब।

(तमतमाये हुए दिलावर खां साइकल पर सवार होकर, बाहर निकल पड़ते हैं। उनके ज़ाने के बाद, आक़िल मियां की हंसी गूंज उठती है। तभी शमशाद बेग़म को वक़्त का भान होता है, वह दीवार घड़ी को देखकर घण्टी लगाने जाती है। उसके पैरों की आवाज़ सुनाई देती है, मंच पर अन्धेरा छा जाता है।)

(३)

(मंच रोशन होता है, दीवार घड़ी अब जूहर के दो बजे का वक़्त दर्शा रही है। स्टूल पर बैठी शमशाद बेग़म उठती है, मेज़ के पास जाकर वहां रखी थैली से जर्दे व चूने की पुड़िया निकालती है। उसे

पुड़िया निकालते हुए देखकर, दाऊद मियां उसे आवाज़ देते हुए कह बैठते हैं।)

दाऊद मियां - (ज़ोर से) - ओ ख़ालाज़ान, ज़रा सुर्ती कुछ ज़्यादा तैयार करना। पहले की तरह, सुर्ती देना भूल मत ज़ाना। हाय अल्लाह, कब से हमारा गला सूख रहा है?

(दाऊद मियां की सीट भी बरामदे में लगायी गयी है, वहां शमशाद बेग़म उनके नज़दीक आकर हथेली पर रखे चूने व जर्दे को अंगूठे से मसलती है। फिर दूसरे हाथ से हथेली पर थप्पी लगाकर, सुर्ती तैयार करती है। सुर्ती तैयार करके, दाऊद मियां को सर्व करती है। वे हाथ बढ़ाकर सुर्ती उठाते हैं, और उसे अपने होंठ के नीचे दबा देते हैं।)

शमशाद बेग़म- (होंठ के नीचे सुर्ती दबाती हुई) - किसने मना किया, हुजूर? पानी पीलाना हमारा फ़र्ज़ है, एक मर्तबा हमें मौक़ा तो देते आप।

दाऊद मियां - रहने दीजिये, ख़ाला। यहां पोर्च में क्या सीट मिली, हम तो परेशान हो गये फर्माइशी गर्मी से।

शमशाद बेग़म- कुछ बयान कीजिये, जनाब। बिना ज़ाने हमेंं क्या मालुम, आप किस लिये परेशान हैं?

दाऊद मियां - (उदास होकर) - ख़्वाहमख़्वाह हर कोई मुंह उठाये चला आता है यहां, कभी कोई पूछता है 'सेकेण्ड्री बोर्ड के फोरम कब भरे जायेंगे?' कभी कोई आकर कहेंगे, 'अजी साहब, ज़रा टी.सी. की फीस बतायें।'

(सर पकड़कर, दाऊद मियां रंज से कहते हैं।)

दाऊद मियां - (सर पकड़कर, कहते हैं) - अरे ख़ाला, अब क्या करूं? इन मुसाहिबों से गूफ़्तगू करते-करते, मेरी ज़बान थक गयी ख़ाला। ये सारी बातें, बड़ी बी के पास जाकर क्यों नहीं पूछते?

शमशाद बेग़म- (पहलू में रखे स्टूल पर, बैठती हुई) - तसल्ली रखें, हुज़ूर। बेचारी बड़ी बी को कहां फुरसत? जो इन नामाकूलों को,

जवाब देती रहे? बेचारी पूरे दिन, फ़ोन पर व्यस्त रहती है। परेशान कर रखा है, इन निक्कमों ने।

दाऊद मियां - ये निक्कमें क्यों परेशान करते हैं, बड़ी बी को?

शमशाद बेग़म- क्या कहूं, हेड साहब? बड़ी बी ठहरी, ख़ूबसूरत। कम्बख़्त आ जाते हैं, उनका दीदार करने। कोई डोनेशन देने की बात का जिक्र करेगा, तो कोई आकर कहेंगे के स्कूल की अमुख समस्या दूर कर दूंगा। बस बड़ी मेडम, उनकी ख़िदमत में चाय-पानी लाने का हुक्म देती रहती है।

दाऊद मियां - फिर, क्या? बड़ी बी इन नालायकों के सत्कार के लिये, बार-बार घण्टी बजाती रहती है। चाय-नाश्ता, क्या मंगवाना? यहां तो आपकी हालत खस्ता हो जाती है, चाय-नाश्ता लाने में। और इधर ये लोग, काम कोई करते नहीं... ख़ाली, बकवास करके चले जाते हैं।

शमशाद बेग़म- अरे हेड साहब, क्या कहूं आपको? यह मेंडम की घण्टी, बजनी बंद होती नहीं...मानो यह घण्टी नहीं, गिरजा का घण्टा हो? जिसे आये कोई, और बजा दो।

दाऊद मियां - ख़ाला, इससे आपको क्या तकलीफ़?

शमशाद बेग़म- आपको हेड साहब, मुझे तो बड़ी बी की फ़िक्र है। नाश्ता रखे हुए एक घण्टा हो गया, मगर उसका लुत्फ़ उठाना बड़ी बी के नसीब में नहीं। देखिये, वो नाश्ता कब से ठण्डा हो रहा है।

दाऊद मियां - आपको ख़ाला नाश्ते की पड़ी है, और यहां हमारे एहबाबों ने परेशान कर डाला हमें।

शमशाद बेग़म- हुजूर आपके एहबाब, आपका भला ही सोचेंगे। आप, काहे फ़िक्र करते हो?

दाऊद मियां - आप कुछ नहीं ज़ानती, ख़ाला। हमारे एहबाबों ने यहां तक कह दिया है, क्या आप स्कूल से निकाले गये मुलाज़िम हो...जिसे कमरे में नहीं बैठाकर, बाहर पोर्च में बैठा दिया

गया...मानो हम ठहरे, स्कूल के चौकीदर। बाइसेरश्क अब है, दफ़्तरे निज़ाम को कमरा नहीं और...

शमशाद बेग़म- और क्या, आगे कहो।

दाऊद मियां - और हमसे जूनियर आक़िल बाबू को शानदार कमरा, यह कैसे?

(अचानक दाऊद मियां की निगाहें बड़ी बी के कमरे पर गिर पड़ती है, उन्हें शक हो जाता है खिड़की के पास बैठकर कहीं बड़ी बी उन दोनों की गूफ़्तगू पर अपने कान तो नहीं दे रही है? फिर क्या? जनाबे आली धीमी आवाज़ में, शमशाद बेग़म से कह बैठते हैं।)

दाऊद मियां - (धीमी आवाज़ में) - अरी ख़ाला, आज़कल ये लोग तरह-तरह के ताने देते रहते हैं....हाय अल्लाह, मैं सुन नहीं सकता। (बाजू में थोड़ा खिसक कर, खिड़की की ओर इशारा करके) उस खिड़की के पास अपनी सीट ले जा दूं तो, बड़ी बी के कान भर देते हैं ये लोग...

शमशाद बेग़म- आगे कहिये हुजूर, कोई सुन नहीं रहा है अभी।

दाऊद मियां - कहते है, आज़कल दाऊद मियां को बीमारी लग गयी...बड़ी बी के कमरे में चलती हर गूफ़्तगू पर, अपने कान खड़े रखने की।

शमशाद बेग़म- लोग क्या कहें? यह उनकी कूव्वत। आपको तौबा, ऐसी मोहमल बातें की तो। इनको कोदन क्या, कुन्दजहन कहिये जनाब। आप तो जनाब शरे-ओ-अदब है... (पास रखे ख़ाकदान में पीक थूकती है)

दाऊद मियां - ख़ाला इन एहबाबों का सौलत, हमारे दिमाग़ पर छा गया है। कहीं ये अजलाफ़ (कमीने)़, अफवाह फैलाने की कमीनी हरकत नहीं कर दें? बस यही डर, सता रहा है हमें।

शमशाद बेग़म- अब आप इन ओछी बातों को भूल जाइये। आपको, सवाब कैसे हासिल हो? उस शैवा पर आपको तकरीर पेश करनी चाहिये। जिसके अमल पर, अल्लाह पाक जन्नत का रास्ता दिखा दें। अब बताइये, इन बेजुबान चींटियों को....

दाऊद मियां - (दीवार पर पीक थूकते हुए) - थू...थू..। एक आला कव्ूवत बताता हूं, आपको। पहले ज़मीन में गड्डा खोदिये, फिर उस खड्डे में नारियल की टोपाली डालकर उस पर वापस मिट्टी डाल दीजिये। अरी ख़ाला, यह उन चींटयों के लिये एक सप्ताह की खुराक़ होगी।

शमशाद बेग़म- कुछ और बताइये, इन चींटयों की खुराक़ के लिये... कोई और उपाय?   .

दाऊद मियां - सुनिये पूरी बात, उस नारियल की टोपाली को ये चींटयां एक हफ़्ते में चट कर जायेगी। देखिये आप, बाजरी या गेहूं के चूर्ण में देशी फानिज़ मिलाकर भी...आप इनकी खुराक, तैयार कर सकती हैं।

(इन दोनों को गूफ़्तगू में व्यस्त पाकर, दूर खड़ी कई मेडमें पोर्च में आ जाती है और आकर वहां रखी कुर्सियों व स्टूलों पर बैठ जाती है। फिर क्या? वे भी, गूफ़्तगू में शराकत कर बैठती है।)

सितारा - जनाब, मै तो ठहरी पीर दुल्ले शाह की पक्की मुरीद। पहले सुनिये, मेरे साथ क्या गुज़रा? एक रोज़ रात के सन्नाटे में हमारी गली में कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आ रही थी, गली के बाहर गुज़रता चौकीदार ज़ोर से आवाज़ दे रहा था 'जागते रहो...' और इन सबसे दूर, हमारे शौहर-ए-नामदार ज़ोरों के खर्राटे ले रहे थे।

शमशाद बेग़म- ऐसे खर्राटे हमारे शौहर भी लिया करते हैं, हम इन खर्राटों के कारण सो नहीं सकते।

सितारा - पहले मेरी बात तो सुन लीजिये, ख़ाला। फिर, अपने शौहर का जिक्र करना। सुनों, यकायक रात के दो बजे दीवार घड़ी का घण्टा टन टन करने लगा। और मेरी निगाहें इन पर गिरी....हाय अल्लाह, रात के दो बजे क्या देखा? ये हमारे शौहर, दहाड़े मारकर रो रहे थे।

(इतना कहकर, सितारा मेडम चुप हो गयी। चारों तरफ़, क़बरिस्तान का सन्नाटा फैल गया। इस सन्नाटे को शराकत हुई,

शमशाद बेग़म पानी का गिलास भर लायी...पानी का गिलास सितारा मेडम को थमाकर, वापस स्टूल पर बैठ गयी। युसुबूत गले को तर करके, सितारा मेडम ने ख़ाली गिलास टेबल पर रखकर दीवार घड़ी के कांटों को देखने लगी। देखा, दोपहर के बारह बजे हैं। वापस सन्नाटा छा जाता है, उस सन्नाटे को शराकत हुई सितारा मेडम आगे कहने लगी।)

सितारा - फिर क्या? उनको झंझोड़कर, किया सावधान। उनके कान के पास मुंह ले जाकर ज़ोर से कहने लगी 'ओ मुन्नी के अब्बा...ओ मुन्नी के अब्बा। अरे जनाब, ये क्या रोना-धोना मचा रखा है? वे नींद में बड़बड़ाने लगे.....

शमशाद बेग़म- यही कहा होगा 'खून पी जाऊंगा, तेरा।' मेरे हुजूर तो बस, नींद में यही बोला करते हैं। आपको भी, यही कहा होगा?

सितारा - यह क्या, ख़ाला? फिर, अलीफ लैला की तख़रीब पढ़ने बैठ गयी आप? अजी मै़ कह रही थी, वे इस तरह नीन्द में बड़बड़ाने लगे....'एं एं, कौन है? अरे तुम मुन्नी की अम्मी नहीं, तुम

तो सच्चे पादशाह पीर दुल्ले शाह हो। मुझे इस मर्तबा माफ़ करो, बाबा।....'

दाऊद मियां - सच कहा आपने, जब भी मैं आपके शौहर को देखता हूं.....मुझे वे सच्चे पीराना लगते हैं, उनकी पेशानी पर नूर टपकता है। तभी पीर दुल्ले शाह का दीदार, उनको सपने में हुए।

सितारा - (ख़ुश होते हुए) - शुक्रिया भाईज़ान। लो, आगे सुनो। फिर क्या? मैने झंझोड़कर उन्हें कहा 'क्या बक रहे हो, उठिये। मैं पीर दुल्ले शाह नहीं, आपकी बीबी हूं।' फिर आंखें खोलकर, उन्होने मुझे सर से लेकर पांव तक देखा...

शमशाद बेग़म- (सहमी हुई) - हाय अल्लाह, कहीं उन्हें आसेब लग लग गया क्या? (उठती हुई) अरी मेडम, दूर रहो अब हमसे...आप तो आसेब के साथ, हमबिस्तर होकर आयी हो। हाय अल्लाह, मैं अब बिना मौत आये, मर जाऊंगी?

सितारा - (हंसती हुई) - अरी ख़ाला, डरो मत। उन्होने होश में रहते हुए, कहा 'एं एं, बाबा तुम कहां चले गये?' फिर मुझे देखकर

कहा 'तुम गधी हो, एक नम्बर की।' फिर, मैने हंसकर यही कहा, 'डरावना ख़्वाब देखा या रात का खाना हजम नहीं हुआ, आपको?'

शमशाद बेग़म- अजी हमारा शौहर बस एक ही बात निकालता है, अपने मुंह से 'इस रजिया की बच्ची को ले जाकर बाहर सुला दो, चुड़ैल की बच्ची हमें रोमांस करने नहीं देती।'

नज़मा - अरी ख़ाला, हमारा तो हाल कुछ अलग है। मैं तो ख़ुद कह देती हूं 'मियां मुझसे दूर रहो, तुम्हारा हाथी का वजन मुझ बेचारी को कुचल डालेगा?

सितारा - अरी चुहिया की बच्ची, शौहर से ऐसे बात नहीं की जाती। उनको प्यार से पुचकारना पड़ता है। ले, अब आगे सुन। उन्होने दुरस्त होकर कहा 'अरी मुन्नी की अम्मी, हमारे ख़्वाब में ख़ुद पीर बाबा दुल्ले शाह आये थे। डांटते हुए, हमसे बोले 'क्यों रे, मन्नत कुबूल का क्या हुआ?'

(इतना कहकर, सितारा मेडम अपने पर्स से पान की डिबिया बाहर निकालती है। फिर, एक पान की गिलोरी अपने मुंह में ठूंसती है। थोड़ी ताज़गी का अहसास होने के बाद, वह आगे बयान करती है।)

सितारा - 'देशी घी में बने चूरमे का भोग, क्यों नहीं लगाया? फिर मैने कई मर्तबा हाथ-पांव जोड़े बाबा के आगे, तब कहीं जाकर बाबा बोले 'अभी इसी वक़्त मुझे, चूरमे का भोग लगा। नहीं लगा पाया, तो याद रखना.....' इतना सुनकर मैं तो डर गया, और मेरी आंखें खुल गयी।

शमशाद बेग़म- ख़ाली भोग, या और कुछ?

सितारा - बस उन्होने हुक्म दे डाला 'बेग़म, इसी वक़्त लोबान जलाकर लाओ और चूल्हा जलाकर चूरमा तैयार करो।' फिर क्या? रात के दो बजे चूरमा तैयार करके बाबा को भोग लगाया। फिर, वे आराम से पालथी मारकर बैठ गये। और, फिर क्या? ख़ुद मियां ने, बहुत मुहब्बत से चूरमा खाने लगे।

(अब शमशाद बेग़म दाऊद मियां को तैयार सुर्ती देने के लिये, अपनी हथेली आगे बढ़ाती है। मगर इधर दाऊद मियां हंसी के मारे थे बेहाल, बेचारे सुर्ती को थाम नहीं सके। और वह सुर्ती बिखर जाती है, इस तरह उसकी खंक हवा में फैल जाती है....वह खंक वहां बैठी मेडमों के नासा छिद्रों में चली जाती है, और छींकों की झड़ी लग जाती है। इन छींकों से परेशान होकर, नज़मा मेडम कहती है।)

नज़मा - बंद नाक का इलाज कराना हो तो, बैठ जाइये दाऊद मियां के पास। इलाज भी हो जायेगा, और वक़्त भी कट जायेगा।

सितारा - (रूमाल से नाक साफ़ करके) - क्या करें, जनाब? मकबूले आम सभी ज़ानते हैं, हम पक्की मुरीद ठहरी पीर दुल्ले शाह की। तसलीमात अर्ज़ है हुजरे आला, मआमला सैर-ओ-तफ़रीह का हो या मिठाई-नमकीन खाने का? मुझ कोदन कोदन समझकर, फ़ायदा उठा लेते हैं।

दाऊद मियां - वे लोग चाहे घर के हो, या बाहर के? मगर ऐसी तरकीबें काम में लेनी, सभी को आती है।

नज़मा - जैसे आपके शौहर ने दो बजे आपको उठाकर, चूरमा बनवाकर खा गये।

ग़ज़ल - और हम लोग आपसे मिठाई-नमकीन, मंगवाकर खाते आये हैं।

(वहां बैठी इमतियाज़ मेडम इतनी देर चल रही हिचकियों के कारण, बोल नहीं पा रही थी, मगर अब वह बिना बोले न रह सकी। वह अपनी कुर्सी कुछ आगे खिसका कर सितारा मेडम के नज़दीक आती है, फिर हिचकियों के साथ कहने लगती है।)

इमतियाज़ - (हिचकी खाती हुई) - हिच..हिच...गुस्ताख़ी माफ़ करना, आपा। मैं तो यह ज़रूर कहूंगी, आपके शौहर-ए-नामदार सलीके वाले हैं। आप उन्हें कुछ भी कह दो, वे बेचारे मुंह नीचे किये हुए चुपचाप आपकी बात सुनते रहते हैं। (हिचकी खाती है) मगर आप......

सितारा - बात पूरी करो, बोलना हो तो कोई अधूरा जुमला बोलकर उसे छोड़ा मत करो। बोलो क्या कहना चाहती थी, आप?

इमतियाज़ - आपकी ख़िदमत में बेचारे मियां, हर वक़्त तैयार रहते हैं। और, इधर आप? (फिर हिचकी आती है) कोई मौक़ा नहीं छोड़ती, उनकी मज़ाक उड़ाने का। सुबह आपको स्कूल में छोड़कर ही, अपनी स्कूल जायेंगे। और वापस स्कूल की छुट्टी होने के पहले, स्कूल के बाहर कड़ी धूप में मोटर साइकल लिये... आपको घर ले ज़ाने के लिये, तैनात रहते हैं।

नसीब - और एक आप हैं, जो कभी स्कूल में बुलाकर लाती नहीं। उन्हें गेट पर खड़ा रखकर, आपको अपनी इज़्ज़त बढ़ती हुई दिखती है?

सितारा - अपने-अपने भाग्य है, मोहतरमा। मगर, आपको जलन क्यों हो रही है? तभी मुझे यहां-कहीं, जलने की गन्ध आ रही है?

इमतियाज़ - अजी हमने पायी कहां है, ऐसी क़िस्मत? हमारे शौहर को तो ऐसा दफ़्तरे रब्त है, जिसे वो छोड़ नहीं पाते। घर में रहो तो

दफ़्तर की बात, बाहर किसी रिश्तेदार से मिलने जाओ तब भी दफ़्तर की बात। हाय अल्लाह, मुझे स्कूल छोड़ने की बात तो रही दूर...वो तो...

नसीब - मैं कुछ बयान करूं?

इमतियाज़ - अब, आपको क्या कहना बाकी रह गया? आप तो वही मोहतरमा है, जो अपने शौहर को पल्लू में बांधकर रखती है। बेचारे शौहर को जिधर चलने का हुक्म दोगी आप, बेचारे उधर ही चलेंगे। अरी फातमा, तुम तो एक-एक पैसे का हिसाब शौहर से लेती हो? मगर, हम इस सुख से महरूम है। ख़ालू ने कहा, हमसे के....

नज़मा - क्या कह दिया, आपके ख़ालू ने?

इमतियाज़ - अपनी नेक दुख़्तरा की शादी के लिये, बीस हज़ार रूपयों की सख्त़ ज़रूरत है। हमने चाहा, जी.पी.एफ. से लोन लेकर ख़ालू की मदद कर लूं? मगर यहां हमारे शौहर-ए-नामदार की

भौंए चढ़ गयी, कहने लगे 'अरी ओ बेग़म, क्या करती हो? आज़ लोन लोगी, कल चुकाओगी वापस...

शमशाद बेग़म- क्या हो गया, मेडम? लोन लेने से, कहीं आसमान तो नहीं टूट पड़ेगा?.हम सभी लोन लेते हैं, फिर नयी क्या बात है? कोई प्राइवेट बात तो नहीं थी, कह देती मैं ख़ालू की मदद कर रही हूं।

नज़मा - कैसे कहे? ज़ानती नहीं? अपने पीहर वालों की मदद, छुपकर की जाती है। ना तो यह शौहर जैसा जीव ताने मारकर अपनी बेग़म का जीना हराम कर देता है।

इमतियाज़ - सही कहा नज़मा, तूने। उनका कहना था, इस तरह लोन लेने से मुझे ख़र्च करने की बुरी आदतें लग जायेगी। और भूल जाऊंगी, किफ़ायत से कैसे काम चलाया जाता है? आदमी को अपनी चादर देखकर, पांव फैलाने चाहिये। उतना ही ख़र्च करो, जितनी ज़रूरत हो।

(वक़्त काफी बीत गया, गूफ़्तगू करते-करते और मालुम ही नहीं हुआ... सेकण्ड पारी चालू होने का वक़्त हो गया है? तभी सेकण्ड पारी की सलमा मेडम आकर बैठ जाती है, और उसे भी ये मोहतरमाएं अपनी गूफ़्तगू में शामिल कर लेती है।)

सलमा - कुछ रोज़, पहले की बात है। अपने शौहर को लेखक से तनख़्वाह लाने के लिये, मैने विथड्रोल फोर्म भरकर दिया। वे इतमीनान से ला सकते थे, मगर उन्होंने लेखक से लौटते वक़्त, एक अनज़ान आदमी को अपनी गाड़ी पर लिफ्ट दे दी। फिर क्या? इनकी लापरवाही का फ़ायदा उठाकर, उसने इनकी जेब काट डाली।

नज़मा - मैं तो कभी ऐसी ग़लती करती नहीं, ख़ुद जाकर लाती हूं लेखक से पैसे। ज़ानती नहीं आप? घर औरतों को चलाना पड़ता है, घर के राशन के बारे में उससे बेहतर किसी को ज़ानकारी नहीं होती। आगे कहिये, सलमा बेग़म। फिर, क्या हुआ?

सलमा - घर लौटने पर मैने कहा ‘लाइये पैसे, तिज़ोरी में रख दूं। फिर, क्या? वे खड़े-खड़े जेबें टटोलने लगे, और ऊपर कहने लगे ‘हाय अल्लाह, ज़माना बुरा है, किसी की मदद करो और वही आदमी आपकी जेब काटकर चला जाये?

शमशाद बेग़म- फिर, क्या हुआ? उन्होने कुछ बताया होगा, किसको बिठाया? कुछ शक्ल-सूरत, बतायी होगी? अल्लाह ने चाहा तो, पुलिस पकड़ लायेगी उसे।

(बेचारी सलमा बेग़म, ख़ाला को क्या जवाब देती? देती तो, वह सुनती कहां? बाहर मोटर साइकल के होर्न की आवाज़ सुनकर, वह उठ जाती है। और जाकर, जाफ़री के दरवाज़े के पास खड़ी हो जाती है। फिर वहीं खड़ी होकर, मेन गेट की तरफ़ निगाहें डालती है। फिर वापस आकर, सितारा मेडम से कहती है।)

शमशाद बेग़म- (क़रीब आकर) - सितारा मेडम, यह मोटर साइकल की आवाज़, किसी दूसरे आदमी की लगती है? आपके शौहर गेट के पास खड़े नहीं है। क्या बात है, आज़ रूठ गये क्या?

इमतियाज़ - (ख़ुश होकर) अच्छा हुआ, आज़ आपके शौहर-ए-नामदार में हमारे शौहर के गुण आ गये हैं। लेने नहीं आये, अपनी नूरजहां को?

सितारा - (घबराकर) - हाय अल्लाह, यह क्या हो गया? (इमतियाज़ से) अरी, निखट्टू। तेरी बुरी नज़र लग गयी, अब घर कैसे जाऊंगी?

(तभी बड़ी बी के कमरे में फ़ोन की घण्टी बजती है, आयशा क्रेडिल से चोगा उठाकर बात करती है। फिर चोगा क्रेडिल पर रखकर बाहर आती है, और सितारा मेडम के पास आकर कहती है।)

आयशा - (हंसती हुई) - फ़िक्र मत करो, मेडम। आपके शौहर-ए-नामदार का ही फ़ोन था, उन्हाने कहलाया है 'आप फ़िक्र नहीं करें, उनको कुछ देर हो गयी है। वे पांच मिनट के अंदर ही, तशरीफ़ रख रहे हैं।'

(शमशाद बेग़म उठकर घण्टी लगाती है, पहली पारी की लड़कियां बस्ते उठाकर मेन गेट की तरफ़ बढ़ती है। अब दूसरी पारी की

लड़कियां प्रेयर के लिये ग्राउण्ड में इकठ्ठी होने लगती है। अब सारी मेडमें पोर्च से उठकर, चली जाती है। मंच की रोशनी, धीरे-धीरे लुप्त होती दिखती है।)

(अजज़ा १०) बड़े बे आबरू होकर निकले, तेरे कूचे सेरा़क़िब -०: दिनेश चन्द्र पुरोहित (1)

(मंच रोशन होता है, स्कूल के बरामदे का मंजर दिखयी देता है। बरामदे में जमादार दिलावर खां दिखायी देते हैं। वे हाथ में झाड़ू लिये हुए खड़े हैं, ओर उनकी पेशानी पर फ़िक्र की रेखाएं दिखायी देती है। अब वे बड़बड़ाते हुए, नज़र आते हैं।)

दिलावर खां - (बड़बड़ाते हुए) - हाय ग़रीब नवाज़, इतना सारा कचरा कैसे उठाऊं? अगर कचरा उठाते हुए इन मोहल्ले वालों ने देख लिया तो, ख़ुदा ज़ाने ताने मार-मार कर मेरी बनी-बनाई सारी इज़्ज़त की बखिया उधेड़ देंगे।

(तभी मियां को टी टेबल के नीचे पड़ा कचरा दिखायी देता है, झट वहां जाकर सूपड़ी से कचरा इकठ्ठा करके अपने ख़ाकदान में डालते

हैं। फिर जाफ़री के क़रीब आकर, बाहर देखते हैं, तभी हेडपम्प की ओर जाते हुए मियां हिदायत तुल्ला से नज़र मिल जाती है। बस उनको देखते ही, झाड़ू नीचे पटक देते हैं। अब इन मुअज़्ज़म के दीदार को वे अपनी बदक़िस्मती समझते रहे, जो उनकी राय में वाजिब है? दिलावर खां कभी नहीं चाहते... के, कोई मर्दूद इस मोहल्ले वाला उन्हे कचरा निकालते देखें। फिर, क्या? निगाहें मिलते ही, मुअज़्ज़म सलाम ठोक बैठते हैं। उन्हें आदाब अर्ज़ करके, दिलावर मियां वापस आकर झाड़ू हाथ में लेते हैं। अब वे बड़ी बी के कमरे की खिड़की के बाहर, सफ़ाई करते हुए बड़बड़ाते हैं।)

दिलावर खां - (बड़बड़ाते हुए) - अच्छा हुआ, इस मर्दूद ने देखा नहीं हमें कचरा निकालते हुए। ना तो पूरे मोहल्ले में ख़बर फैला देता के, 'ओ मोहल्ले वालों ज़रा देखो, पागल बाबा की मजार पर बैठकर गण्डा-तावीज़ पहनाने वाले इस खादीम को क्या हो गया? शायद...इनकी अक़्ल धूल चाटने गयी है, बेचारे कचरा निकाल रहे हैं आज़। यह जनाब मज़ार के पास बैठकर, लोगों से अपनी ख़िदमत

करवाते हैं। और यहां बैठकर, सफ़ाई करने का मकरूर काम कर रहे हैं।

(कचरा बीनते-बीनते बेचारे दिलावर खां थक जाते हैं, पेशानी पर पसीने की बूंदें झलकने लगती है। जेब से रूमाल निकालकर, पसीना पोंछते हैं। फिर जेब से केवेण्डर सिगरेट का पैकेट निकालकर, एक सिगरेट निकालते हैं। फिर उसे सुलगाकर, लबों के पास ले जाते हैं।)

दिलावर खां - (धुंए का गुब्बार छोड़ते हुए, बड़बड़ाते हैं) - ओ बाबा गोस आप इस नाचीज़ को ज़रा अक़्ल दे दो, ताकि वह अपनी बनायी इज़्ज़त को बचा सके।

(सिगरेट का लम्बा कश लेकर, पास रखे स्टूल पर बैठ जाते हैं। कुछ देर सोचते हैं, फिर वापस बड़बड़ाना चालू कर देते हैं)

दिलावर खां - कमाल कर दिया, बाबा गोस। इस नासमझ को दिखला दिया आपने, अल्लादीन का चराग़।

(टी टेबल के नीचे रखी, शमशाद बेग़म के ख़ाकदान में सारा बीना हुआ कचरा डाल देते हैं। फिर वापस, बड़बड़ाना चालू कर देते हैं।)

दिलावर खां - (बड़बड़ाते हुए) - काम हो गया, बाबा गोस। अब कल से रोज़ आपकी ख़िदमत में लोबान हाज़िर। (वापस स्टूल पर बैठ जाते हैं) यह ख़ाकदान ठहरा, इस शैतान की ख़ाला शमशाद बेग़म का। अब कचरा बाहर जाकर फेंकने का सारा काम रहा, शमशाद बेग़म का। हम तो कह देंगे उनसे 'ख़ाला, हमें क्या मालुम? किस मर्दूद ने आकर, आपका ख़ाकदान में कचरा डाल दिया? हम ठहरे पाक मजार के खादीम, ऐसा मकरूर काम हम करते नहीं।

(खड़े होकर, हाथ ऊपर उठाते हुए अंगड़ाई लेते हैं। फिर वापस बड़बड़ाना चालू कर देते हैं।)

दिलावर खां - (बड़बड़ाते हुए) - आगे कहेंगे जी, 'अरी ख़ालाज़ान, हमें रूहानी इल्म हासिल है...कई शातिरों की रूह क़ब्ज की है हमने, तभी तो कई शैतान हमारी ज़ान के दुश्मन बन बैठे हैं। उसमें से यह एक शैतान का ताऊ, जो सफ़ेद कपड़े पहनने वाला है। वह

रोज़ बड़ी बी के कान भरने का काम करता है। मेरे लिये कहता है, 'मैं कामचोर हूं, बातें बनाना ज़ानता हूं... नापाक नशेड़ी हूं। आपको लगता है, ख़ाला। क्या, ऐसा हूं मैं? आप तो रहमत तुल्ला साहब की नेक दुख़्तरा ठहरी, आपसे क्या छुपा हुआ? यह शैतान का ताऊ, तौफ़ीक़ मियां है ना? उसकी नापक चालों से, आप ख़ुद वाकिफ़ हैं।

(दिलावर खां को कालांश की घण्टी के नीचे काग़ज़ के कुछ टुकड़े पड़े नज़र आते हैं, और क़रीब पड़े लोहे के बोक्स के पास तौफ़ीक़ मियां का ख़ाली ख़ाकदान। फिर, क्या? झट काग़ज़ के टुकड़े बीनकर, उस ख़ाकदान में डाल आते हैं। फिर सिगरेट के बचे टुकड़े को फेंक कर, वापस बड़बड़ाना चालू चालू कर देते है।)

दिलावर खां - (बड़बड़ाते हुए) - आगे हम ख़ाला को ऐसे समझायेंगे के, 'देखो ख़ाला कल ही तौफ़ीक़ मियां कह रहे थे...के 'यह ख़ाला काम से बचने के लिये, बहाने बनाती है। यह मोहतरमा तो, ऐसी

बहानेबाज है.. 'तबीयत नासाज है' ऐसा कहकर, स्कूल के किसी कोने में जाकर सो जाती है।'

(तभी जाफरी के दरवाज़े की 'खड़-खड़' आवाज़ सुनायी देती है, इस खड़-खड़ की आवाज़ के कारण दिलावर खां के विचारों की श्रृंखला टूट जाती है। वे घबरा कर, ज़ोर से कह बैठते हैं।)

दिलावर खां - (घबरा कर) - कौन है रे, नामाकूल? बेवक़्त करता है, फ़रियाद? ज़ानता नहीं, इस वक़्त बाबा का खादीम इबादत में व्यस्त है।

(उनके इतना कहते ही, दरवाज़े की ओट में खड़े तौफ़ीक़ मियां ठहाके लगाते हुए बाहर निकल आते हैं। फिर हंसते हुए, कहते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (हंसते हुए) - आफ़रानी में तरन्नुम, समझे मियां? दाल में काला, अब समझ गये खादीम साहब? आज़कल जनाब को इधर की लंगोटी उधर, और उधर की लंगोटी इधर रखने का शौक चर्राया है।

दिलावर खां - (खिसयानी हंसी हंसते हुए) - हें हें हेंऽऽ। मियां किसकी लंगोटी, किसकी दुम? हम तो ठहरे, ख़िदमतगार। जो हेमू गढ़ के नवाबी ख़ानदान से ताल्लुकात रखते हैं, जनाब। मरहूम अब्बा हुजूर कहा करते थे...

तौफ़ीक़ मियां - (हंसते हुए) - चलो मान लेते हैं, आप होगें नवाब ख़ानदान से ताल्लुकात करने वाले। मगर आपका ख़ानदान, पीढ़ी दर पीढ़ी नवाब साहब के गधों का इलाज करता रहा होगा? यही कहना है आपका?

दिलावर खां - (गुस्से में) - ए बिना बिना मुंछ की दुकान, क्या बकता है? सुन हमारे अब्बा हुजूर कहा करते थे, किसी मर्ज़ का इलाज किसी हकीम के पास नहीं...

तौफ़ीक़ मियां - बताने में कहे शर्म आ रही है, खादीम साहब?

दिलावर खां - सुनो...उस मर्ज़ का इलाज, हमारे ख़ानदान के पास है। हम ना तो लंगोटी पहनते हैं और ना किसी को लंगोटी पहनाते

हैं, मगर हम इसकी टोपी उसके सर व उसकी टोपी इसके सर ज़रूर रख दिया करते हैं। हुजूरे आला, हमारी अजमाइश देखना चाहेंगे?

तौफ़ीक़ मियां - (हंसकर) - हमें माफ़ करो, यार। हम तो ख़ुद बुनकर हैं जी, यानि टोपी बनाने वाले। एक टोपी हमारे सर पर रहती है और दूसरी टोपी हमारे जेब में रहती है, आप जैसे मुअज़्ज़म को पहनाने के लिये। अब समझे, मियां? कुछ और बोलू, या उठाते हो कचरा? जो आपने, दूसरों के ख़ाकदान में डाला है।

(तभी जाफ़री का दरवाज़ा खोलकर, शमशाद बेग़म अंदर दाख़िल होती है। वहां बरामदे में रखी टेबल पर थैली और टिफिन रखकर, गूफ़्तगू में शामिल हो जाती है।)

शमशाद बेग़म- क्या बात है, तौफ़ीक़ मियां? किस कचरे की बात कर रहे हैं, आप?

(तौफ़ीक़ मियां सकपका जाते हैं, मगर सम्भलते हुए अपने चेहरे पर मुस्कराहट लाते हैं। फिर, कहते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - कुछ नहीं ख़ाला, हम तो दिमाग़ के कचरे की बात कर रहे थे। देख लीजिये आप, आज़कल लोगों के दिमाग़ में इल्म तो होता नहीं... और भरा रहता है, उनके दिमाग़ में ख़ाली कचरा।

शमशाद बेग़म- वज़ा फ़रमाया आपने, क्या कहें? इंसानों की अक़्ल पर ताला लग गया है, जनाब। ख़िलक़त में मौजूद है, खालिस चीज़ें। मगर, वह गन्दी नाली में मुंह मारना नहीं छोड़ता। ख़ुदा कसम, सच कह रही हूं...

(खड़े-खड़े शमशाद बेग़म के पांवों में दर्द हाने लगता है, वह अब पास रखे स्टूल पर बैठ जाती है। फिर, आगे कहती है।)

शमशाद बेग़म- देखा आपने, कभी आयशा बी को शेखी बघारते हुए? वह कहा करती है.. (आयशा की आवाज़ की नक़ल करती हुई) देखिये जनाब, हमको इस स्कूल में बहुत प्यार मिला। आक़िल मियां बड़े भाई सरीखे, सितारा बी हमारी आपा सरीख़ी और ख़ालाज़ान तो मां सरीखी।

दिलावर खां - फिर क्या हुआ, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- कहती है...सभी लोग हम एक परिवार के ही लगते हैं, क़ायदे से रहने वाले। हम ख़ुद ख़म्स (पांच) वक़्त की नमाज अता करते हैं, हराम की खाना...(कान पकड़कर) ख़ुदा कसम हमारे खून में नहीं, आप सभी वाकिफ़ है...हम अभी प्रोबेसन पर हैं, महकमें के डाइरेक्टर साहब हमारे काम को देखकर ही हमें कन्फरम करेंगे।

(टिफिन खोलकर, शमशाद बेग़म रोटी से निवाला तोड़ती है। फिर, बेसन के गटों की सब्जी में डूबाकर खाने लगती है। खाना खाती हुई, वह आगे कहती है।)

शमशाद बेग़म- आगे आयशा बी कहती है, 'इसलिये ख़ाला हम ग़लत काम करते नहीं, अगर कोई अल्लाह का बंदा हमारी हथेली पर कुछ रूपये पैसे रखकर चला जाता है तो हम उसी वक़्त किसी ग़रीब दुख़्तरा की फीस भर देते हैं। (तौफ़ीक़ मियां को देखती हुई) अब समझे, तौफ़ीक़ मियां?

तौफ़ीक़ मियां - मुझे क्यों सुना रही हैं, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- इसलिये के, आपको बड़ी बी की बातों पर वसूक है या नहीं?

(कहती-कहती शमशाद बेग़म, दूध में बिदाम-काजू डालकर बनायी हुई खीर बिल्ली के माफ़िक झट पी जाती है। खीर पीने के बाद, पीछे घूमकर देखती है। मगर, वहां दोनों अल्लाह के बंदे नदारद पाये जाते हैं। अपने काम से मतलब रखने वाले, दोनों मुलाज़िमों का वहां क्या काम? वे क्यों बेफिजूल की लग्व सुने, यहां बैठकर? फिर, क्या? शमशाद बेग़म को अपनी ग़लती समझ में आती है, दूसरों की निंदा करने का गुनाह करने की ख़ता के लिये अब वह अल्लाहताआला से मुआफी मांगने लगी।)

शमशाद बेग़म- क्या बेदिली है, हमारी बात कोई सुनता ही नहीं? और मैं यहां बैठी, बके जा रही हूं...अल्लाहताआला, मेरा गुनाह माफ़ करना। अच्छा होता, इस बक-बक करने की जगह मैं कुरआने शरीफ की आयतें पढ़ लेती। ए मेरे मोला, आगे से यह मुंह पर-निंदा के लिये ना खुले।

(अब शमशाद बेग़म कुरान की पाक आयतों को गुनगुनाती हुई, बार-बार अल्लाह पाक से मुआफी मांगती है। थोड़ी देर बाद, मंच पर अंधेरा छा जाता है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, स्कूल का मेन गेट दिखायी देता है। इस गेट के सामने डवलपमेण्ट कमेटी के मेम्बर साबू भाई ने मकान व दुकाने बना रखी है, एक दुकान पर साबू भाई ने कमठा मेटिरियल की दुकान खोल रखी है व दूसरी दुकान को वे सिमेण्ट के गोदाम के लिये काम ले रहे हैं। इस तरह तीसरी दुकान जो कार्नर में आयी हुई है, उसे वे अपने दोस्त मनु भाई को किराये पर दे रखी है। इस दुकान में मनु भाई ने, किराणे का धंधा खोल रखा है। मनु भाई की दंकान के सामने साबू भाई ने दो पत्थर की बैंचे बना रखी है, जिस पर अक़्सर इनके दोस्त और मोहल्ले के मुसाहिब वक़्त बिताने बैठा करते हैं। पत्थर की बैंच के दोनों ओर दरख़्त लगे हैं, जिनमें एक बबूल का है और दूसरा दरख़्त विदेशी नीम का है। सेकेण्ड्री स्कूल

के बनने के पहले साबू भाई ने दो बबूल के दरख़्त लगाये थे, जिनमें एक तो यही बबूल का दरख़्त है और दूसरा बबूल का दरख़्त स्कूल की चारदीवारी के पास भीतर लगा है। स्कूल के ख़ाजिन आक़िल मियां को पेड़-पौधे लगाने का बहुत शौक ठहरा, उन्होने पत्थर की बैंच के पहलू में छाया के लिये विदेशी नीम का दरख़्त लगाया था। वक़्त बिताने के लिये हिदायत तुल्ला, फन्ने खां, हाजी मुस्तफा इन दोनों दरख़्तों की छाया में बैठकर गुफ़्तगू किया करते हैं। ये सारे साबू भाई के ख़ास दोस्त हैं, इन लोगों की गुफ़्तगू का सब्जेक्ट सनसनीखेज ख़बरों से भरे रहते हैं। इस कारण कई मोहल्ले वाले इनके आस-पास ख़बरें सुनने के लिये खड़े रहते हैं। इन लोगों के इजतमा (जमाव) का फ़ायदा उठाना साबू भाई व हिदायत तुल्ला साहब को बहुत अच्छा लगता है, वे दोनों अपने आप को मोहल्ले के लीडर के रूप में देखना चाहते हैं। इन निक्कमों का इजतमा मनु भाई को अक़सर अख़रता है। क्योंकि इन लोगों के इजतमा के कारण, मनु भाई के ग्राहक उनके पास फटकते नहीं। सभी जाकर, इन लोगों के आस-पास जाकर खड़े हो जाते हैं। यही कारण है, इन

लोगों को अक़सर मनु भाई के उलाहने सुनने पड़ते हैं। अब घड़ी, सुबह के नौ बजने का वक़्त दर्शा रही है। यही वक़्त है, जब दाऊद मियां साइकल पर सवार होकर, यहां तशरीफ़ रखते हैं। अब ये लोग, दाऊद मियां का ही इन्तजार कर रहे थे...तभी सामने साइकल पर आते हुए दाऊद मियां के दिखायी देते हैं।)

दाऊद मियां - (बैंच पर तशरीफ़ आवरी होते हुए) - आदाब अर्ज़ करना चाहता हूं....

मनु भाई - (दुकान पर बैठे-बैठे) - तशरीफ़ रखें, जनाब। यह इब्नुलवक़्ती कैसी? मियां, आज़कल आपके दीदार ईद के चांद की तरह होते हैं...क्या बात है? रशीदा बी के जाते ही, नयी बड़ी बी आयशा के गिरफ्त में आ गये क्या?़

साबू भाई - (हंसी के ठहाके लगाते हुए) - मनु भाई, अब इनके दीदार होंगे कैसे? जब गुलाब के फूल के साथ वक़्त गुज़र रहा हो, तब इन कांटों के पास आकर जनाब क्या करेंगे?

दाऊद मियां - (शरमाते हुए) - अब रहने दीजिये, शर्मिंदा ना करें। आप लोगों से रब्त ठहरा, आपसे मिले बिना हम कैसे रह सकते है जी? अजी वसूक आप पर है, फिर जाये कहां हम? लाइये पेसी, इस बात पर एक जर्दे की फाकी लगा ली जाये।

साबू भाई - फिर दाऊद मियां, हम लोग साले साहब के साथ एक शतरंज की बाजी लगायेंगे। आप यहीं बैठकर, हमारा खेल देखना।

फन्ने खां - अरे मनु भाई, ज़रा दाऊद मियां के हाथ शतरंज भी भेज भी देना।

(दाऊद मियां उठकर, मनु भाई के क़रीब जाते है। फिर उनसे शतरंज लेकर, फन्ने खां साहब को थमा देते हैं। उन्हें शतरंज थमाकर, मनु भाई से पेसी लेते हैं। फिर जर्दा व चूना पेसी से निकाल कर, अपनी हथेली पर रखते हैं। फिर, अंगुठे से उस मिश्रण को मसलते हैं। फिर दूसरे हाथ से, हथेली पर फटकारा लगाकर सुर्ती तैयार कर देते हैं। फटकारा लगाने से, खंक उड़ती है। जो पास बैठे साबू भाई के नासा छिद्रों में चली जाती है, फिर क्या? साबू

भाई छींकते-छींकते परेशान हो जाते हैं, अब मनुआर से बुलाये हुए अपने दोस्तों को झिड़कते हुए कहते हैं।)

साबू भाई - (फटकारते हुए) - अरे कम्बख़्तों, यह पत्थर की बैंच बनवायी मैने राहीगीर और हमारे ग्राहकों को बैठने के लिये...मगर तुम निक्कमों ने, इस बैंच पर कब्जा कर लिया... हथाई करने के लिये। ओर इधर बेशरमों ने, जर्दा उड़ाकर मेरे नाक की बारह बजा दी।

(गुस्से में बेकाबू होकर, फन्ने खां शतरंज के मोहरे समेटते हैं, फिर उठकर दाऊद मियां से कहते हैं।)

फन्ने खां - (मनु भाई को शतरंज सम्भलाते हुए) - लीजिये, सम्भालिये अपनी शतरंज। (दाऊद मियां से) चलिये दाऊद मियां, चलिये यहां से। बिन बादल बरस जाते हैं, जनाबे आली मोहल्ले आज़म साबू भाई।

दाऊद मियां - वाह, भाई वाह। कैसे हैं, यह आपके दुल्हे भाई? अपने साले साहब सद्दाम साहब यानि बहादुर फन्ने खां साहब को

पहले मनुआर करके बुलाकर लाते हैं, फिर... (सुर्ती को होंठ के नीचे दबाते हुए) अब चलिये, फन्ने खां साहब। यहां, क्या बैठना?

फन्ने खां - (उठकर, दाऊद मियां के गले में बांह डालकर) - वज़ा फ़रमाया, दाऊद मियां। हाय अल्लाह, बड़े बे आबरू होकर निकले तेरे कूचे से.....

(अब दुकान पर, मनु भाई अपने ग्राहकों को किराणा का सामान तोल कर दे रहे हैं। और इधर साइकल थामे हुए दाऊद मियां, फन्ने खां साहब को लिये स्कूल के गेट की तरफ़ क़दम बढ़ारहे हैं। मंच की रोशनी, धीरे-धीरे लुप्त होती है।)

(अजज़ा ११) सफ़ाई का जुम्मा लेखक-०ः दिनेश चन्द्र पुरोहित (1)

(मंच रोशन होता है। दूसरी पारी चालू होने का वक़्त हो चुका है, अब शमशाद बेग़म घण्टी लगाने जाती है। घण्टी लगने पर, सभी लड़कियां बस्ता लेकर मेन गेट की तरफ़ दौड़ पड़ती है। फिर दूसरे जैलदार दिखाई ना देने पर, वह इधर-उधर नज़रें दौड़ाती है। पोर्च

की तरफ़ तौफ़ीक़ मियां को आते हुए देख, वह उन्हे ज़ोर से पुकारती है। उनके नज़दीक आने पर, वह उनसे कहने लगती है।)

शमशाद बेग़म- (झाड़ू को कन्धों पर, सौटें की तरह उठाती है) - घण्टी बजने के बाद मियां, कोई काम ना किया करो। बस तब ध्यान रखो, इस सौटें को लेकर बन जाओ [1]जंगजू। और उतर जाओ इस [2]जंगाह में....बस अब बड़ी बी को दिखाना है, वक़्त पर सफ़ाई हो गयी है।

तौफ़ीक़ मियां - आप आगे-आगे चलिये ख़ाला, हरावल बनकर। ज़रा हम बड़ी बी को पानी पिला कर आ रहे हैं। (धीरे से कहते हैं) आप तो ज़ानती है, हम बड़े-बड़े मुसाहिबों को पानी पिला चुके हैं। (हंसते हैं)

(शमशाद बेग़म को कड़वा तुजुर्बा ठहरा, यह [9]कलाग़ कभी लाय में नहीं जलता है। कम्बख़्त आख़िर चला गया, काम से बचने के लिये.... इस बड़ी बी की, हाज़री में। शतरंज के खेल में हर मोहरे के पीछे, किसी बड़े मोहरे का ज़ोर होता है। बस यहीं आकर

शमशाद बेग़म मात खा जाती है। उसको ध्यान है, काम से बचने के लिये उसके पीछे कोई ज़ोर नहीं। आख़िर बेचारी चली जाती है, क्लासों में सफ़ाई करने। उसके जाते ही, तौफ़ीक़ मियां के चेहरे पर रौनक छा जाती है। अब वे आराम से तन्हाई को मिटाने के लिये, अपनी जेब में हाथ डालते हैं। मगर, यह क्या? हाथ वापस ख़ाली आ जाता है, सिगरेट नदारद? बस, अब तौफ़ीक़ मियां बड़बड़ाने लगते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (बड़बड़ाते हैं) - हम तो अपने आपको कहते हैं, उस्ताद। मगर हमारी बेग़म नूरजहां तो छुपी रूस्तम निकली? मार लिया हाथ हमारी जेब पर, कहती है....हम चेन स्मोकर ठहरे। अजी केन्सर पाल लेंगे आप? तब शौहर-ए-नामदार, हमारा क्या हाल होगा? तौबा करो, इस मुई सिगरेट से।

(फिर उठकर पानी पीने, मटकी के चले जाते है। पानी पीकर, फिर से बड़बड़ाना चालू कर देते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (बड़बड़ाते हुए) - तब जनाब, हाय अल्लाह हमने यह क्या कह दिया जोश में आकर....इस बेग़म को "हम क्या नहीं कर सकते, तुम्हारे लिये?...

(खड़े-खड़े तौफ़ीक़ मियां की की टांगे दुकने लगती है। अब वे पास रखे स्टूल पर बैठ जाते हैं। उन्हें मालुम नहीं, दालान के बाहर साइकल रखकर दिलावर खां इधर ही तशरीफ़ रखने वाले हैं। बस, वे तो लगातर बड़बड़ाते ही जा रहे हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (बड़बड़ाते हुए) - उस जहांगीर ने अपनी बेग़म नूरजहां के लिये, ताज़महल खड़ा कर दिया....अपना सारा राज-पाट बेग़म को सुपर्द कर, वह चैन से बंशी बज़ाने लगा। तब हम क्या कम है, उस जहांगीर से? हम अपनी नूरजहां के लिये, यह मुई सिगरेट नहीं छोड़ सकते क्या?

(तभी दालान के बाहर, दिलावर मियां अपनी साइकल खड़ी करके अन्दर आते हैं। तौफ़ीक़ मियां को इस तरह बड़बड़ाते पाकर, उनके कन्धे पर अपना हाथ रख देते हैं। अचानक पड़े इस दबाव से मियां

तौफ़ीक़ चमक जाते हैं, और ख़्यालों की दुनिया से न निकल कर, अपने ख़्यालों में ही घबराये हुए बोलते जा रहे हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (ख्यालों में घबराकर) - छोड़ो बेग़म, कान पकड़ कर कहते हैं के अब सिगरेट को कभी नहीं छुयेंगे।

(इतना सुनकर अब दिलावर मियां हंसते-हंसते, बेहाल हो जाते हैं। वे ठहाके लगाकर, हंस पड़ते हैं।)

दिलावर मियां - (हंसते हुए) - दिन में सपने मत देखो, बरख़ुदार। वल्लाह, यह बीबी का आसेब तो सपनों में भी मियां का पीछा नहीं छोड़ता? वाह। यह क्या कह दिया, मियां...सिगरेट छोड़ दोगे? क्या मर्द हो? डरते हो बीबी से से, वह भी सपने में?

(उनके हंसी के ठहाकों से, आख़िर तौफ़ीक़ मियां के ख़्याल आने बन्द हो जाते हैं। वे चेतन होकर कहने लगते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (झेंप मिटाते हुए) - अरे, ना रे मेरे काग़ज़ी शेर। हम तो रिहर्सल कर रहे थे नाटक का, और क्या? हम किसी नज़र से आपको डरपोक लगते हैं, क्या?

दिलावर मियां - कौनसा नाटक? क्या असल ज़िन्दगी का?

तौफ़ीक़ मियां - अरे नामाकूल। बड़े डफर निकले, इतना भी नहीं ज़ानते? बड़ी बी के शौहर, अपनी बीबी के सामने कैसे पीपल के पान की तरह काम्पते हैं? बस उनकी एक्टिंग कर रहा था, मियां। आपको मालुम है, कल बड़ी बी क्या कह रही थी?

दिलावर खां - (कौतुहल मिटाते हुए) - कहिये, जल्दी कहिये। क्या कहा, उन्होंने?

तौफ़ीक़ मियां - उन्होंने कहा (आयशा की नक़ल करते हुए) - 'तौफ़ीक़ मियां आप ठहरे, नेक दख़्त। हमारे शौहर, आपसे गुफ़्तगू ख़ूब करते हैं। आपकी बात मानते हैं, मियां। ज़रा एक दिन हमारे दौलतख़ाने तशरीफ़ रखिये ना, बस हमारे रशीद मियां को तहज़ीब सीखा दो ना....कैसे रहना चाहिये, सोसायटी में?

दिलावर मियां - फिर क्या, आप गये वहां?

तौफ़ीक़ मियां - (दोनों हाथ फेंकते हुए) - क्या करता, मियां? बेचारी मोहतरमा ने, इतनी लाचारी से मिन्नत की.. तो उस्ताद,

ज़ाना तो पड़ेगा ही। हम गये, उनके दौलतख़ाने....हाय अल्लाह, यह क्या देख लिया हमने? उनके शौहर-ए-नामदार, बावर्चीख़ाने में काम कर रहे थे?

दिलावर खां - (अचरच से) - क्या, यह सच है?

तौफ़ीक़ मियां - मेरे अज़ीज़ दोस्त, आपके सर की कसम। क्या आपसे झूठ बोलूंगा, क्या? ऐसा हो ही नहीं सकता, आपसे झूठ बोलने की गुस्ताख़ी करूं? आपको धोके में नहीं रख सकता, जनाब आप ठहरे पाक मज़ार के ख़ादिम।

दिलावर खां - (हंसते हुए) - चलिये...चलिये। अब आगे की ख़बर, बयान करो।

तौफ़ीक़ मियां - सुनिये हुजूर, ज़रा दिमाग़ की सारी खिड़कियां खोलकर सुनना। रशीद मियां रोटी पका रहे थे, बेचारे। और इधर यह मोहतरमा आराम से पलंग पर लेट हुई थी। जैसे ही मोहतरमा की निगाह इस नाचीज़ पर गिरी, तपाक से मियां शौहर को हुक्म दे डाला।

दिलावर खां - अरे यार, हुक्म तो हम दिया करते हैं अपनी बेग़म को। आप क्या ज़ानते हो, मियां?

तौफ़ीक़ मियां - इसमें, कौन सी बहादुरी? तुम दोनों मियां-बीबी के बीच का गेप ठहरा, बीस साल का। एक बच्ची पर, हुक्म लादना... कोई हुक्म देना, कहलाता है क्या?

दिलावर खां - (खिसयानी हंसी हंसते हुए) - हीऽऽ हीऽऽ। चलिये, अपनी बात पूरी कह दीजिये। क्या कह रहे थे, आप?

तौफ़ीक़ मियां - (आयशा की आवाज़ में) - 'अजी, सुना आपने? तौफ़ीक़ मियां तशरीफ़ लाये हैं। ज़रा शरबत-ए-आज़म तैयार करके, लेते आना।'

दिलावर खां - (लबों पर मुस्कान लाकर) - क़िस्मत वाले ठहरे, बिरादर। वाहऽऽ, क्या कहना? बड़ी बी के पहलू में बैठ कर, शरबत-ए-आज़म नोश फरमा कर आये हो?

तौफ़ीक़ मियां - यह तो अपनी-अपनी क़िस्मत है, प्यारे। ख़ुदा की इनायत से......

(सामने से झाड़ू थामे शमशाद बेग़म आती हुई दिखती है, जो आते-आते दिलावर खां का आधा-अघूरा जुमला सुन लेती है। उसे देखते ही, जनाब की ज़बान तालू पर चिपक जाती है।)

शमशाद बेग़म- (क़रीब आकर) - क़िस्मत अच्छी पायी है, साहबजादों ने। वाह, दोनों नवाब बहादुर ठहरे? ख़ाला निकालती रहे [4]ख़ारोखस, और इधर ये ख़ाला के भाई शरबत-ए-आज़म नोश फ़रमाये?

तौफ़ीक़ मियां - (सहम कर) - शरबत-ए-आज़म नोश नहीं फ़रमाया, ख़ाला। हम तो ख़ाली, तबादला-ए-ख़्याल में डूबे थे। अब आप हुक्म कीजिये, क्या करना है?

शमशाद बेग़म- (नाराज़गी ज़ाहिर करती हुई) - हुक्म हुक्म, यह क्या लगा रखा है? सफ़ाई के वक़्त, आये क्यों नहीं? सब काम हो ज़ाने के बाद, अब आप काम पूछ रहे हैं? जनाब। सभी कमरों की सफ़ाई करके, अभी फ़ारिग़ हुई हूं। देखते नहीं, पसीने से लथपथ ज़ान निकली जा रही है।

दिलावर खां - (हंसते हुए) - हमें तो लगता है, आप नहाकर आयी है?

शमशाद बेग़म- (पल्लू से पेशानी पर छाये पसीने को, पोंछती हुई) - काम करने से भय्या, जिस्म घिसता नहीं। सरकार तनख़्वाह देती है, पानी भरने के लिये..झाड़ू निकालने के लिये, समझे? ऐसा नहीं भय्या, इस्त्री किये हुए कपड़े पहन लो....फिर यहां बैठकर, करते रहो गुफ़्तगू?

(तौफ़ीक़ मियां व दिलावर खां शर्म के मारे, अपनी निगाहें झुकाये, एक-दूसरे को देखने लग जाते हैं। शमशाद बेग़म घण्टी लगाने चली जाती है। घण्टी बजने की अवाज,़ सुनाई देती है।)

दिलावर खां - बिरादर। ज़रा ध्यान रखा करो, बेचारी ख़ाला कब से काम में जुटी है?

तौफ़ीक़ मियां - (तुनक कर) - हुजूर। आपको इतनी हमदर्दी है उनसे, तो आप उठ जाते? कम से कम, आप घण्टी तो लगा सकते थे। इससे ख़ाला को थोड़ा-बहुत आराम, तो नसीब हो जाता?

(घण्टी लगाने के बाद शमशाद बेग़म पानी का लोटा लिये, बड़ी बी के कमरें में दाख़िल होती है। जहां बड़ी बी के पहलू में इमतियाज़ बैठी है। यह इमतियाज़, आयशा की पक्की सहेली है। आयशा उससे हर मसले में मश्वरा लेती है।)

इमतियाज़ - स्कूल के चपरासी कितना काम करते हैं, आपसे क्या छुपा? आपको सच कहती हूं, पहली पारी की चान्द बीबी बहुत मेहनती है। सफ़ाई का काम तो इतनी मेहनत से करती है, के फर्स को भी आइने के माफ़िक चमका देती है।

(शमशाद बेग़म से लोटा लेकर, आयशा पानी पीती है। लोटा वापस थमा कर, वह कहने लगती है।)

आयशा - अजी नाई से पूछो, के बाल कितने बढ़े? नाई कहता है, के अभी सामने आकर गिरते हैं....आप देख लेना। मेरे कहने का मफ़हूम यह है, के हाथ कंगन को आरसी की क्या ज़रूरत?

इमतियाज़ - सही कहा, आपने।

आयशा - ज़रा इस टेबल को देख लीजिये, इसे चमका दिया इस चान्द बीबी ने। अब इन दूसरे चपरासियों को देखिये, या तो बैठे-ठाले करेंगे गुफ़्तग या मेरी खिड़की के पीछे जाकर इस कमरे में चल रही गुफ़्तगू को सुनते रहेंगे।

शमशाद बेग़म- (झुंझला कर) - बड़ी बी। आज़ दिन तक, अपना फ़र्ज़ समझती हुई काम करती रही हूं। दूसरे चपरासियों ने अपने हिस्से का काम नहीं किया हो तो कुछ बात नहीं, चुप-चाप उनका काम भी करती आई हूं। हुजूर, इस सफ़ाई के मामले में...

आयशा - साफ़-साफ़, बिना डरे बात कीजिये। हमारी निगाहों में सभी जैलदार बराबर हैं।

शमशाद बेग़म- मैने कभी आपसे, उनकी कोई शिकायत नहीं की। कभी आपको यह नहीं कहा, किस चपरासी ने ख़ारोखस बाहर ना फेंक कर अलमारियों के पीछे छिपा दिया है या कोई अपने बदन पर पहनी हुई वर्दी की क्रीज बचाने के लिये काम के वक़्त गायब हो जाता है?

आयशा - (अचम्भे से) - क्या आप सच कहती हैं, ख़ाला? हम बिना देखें किसी जैलदार की तारीफ़ नहीं करते हैं, यह सब आप ज़ानती हैं।

(नाराज़ होकर शमशाद बेग़म, पांव पटकती हुई चली जाती है।)

आयशा - क्या करें, इमतियाज़ बी? अपनी इच्छा के मुताबिक, इन लोगों से काम करवाना कठिन हो गया है। आप तो हमारी सहेली ठहरी, आप तो मेरा भला चाहेगी। मैं चाहती हूं, आप हमारे लिये काम करें। इन सारे मुलाज़िमों पर कड़ी दृष्टि रखती हुई, मुझे सही-सही रिपोर्ट करें, के ये लोग सारे दिन करते क्या हैं?

इमतियाज़ - (हंस कर) - मल्लिका-ए-आज़म। (नीमतस्लीम कर बैठती है) हुजूर, इस बन्दी को आप इस स्कूल की होम मिनीस्टर बना दीजिये।

आयशा - (लबों पर मुस्कान लाकर) - चलो, समझ लीजिये आप। के, आपको मिनीस्टर क्या.....सहायक वज़ीरे आला, यानि

अस‍िस्टेण्ट हेडमिस्ट्रेट बना दिया। बस कल से आप, पहली पारी की शिफ्ट इन्चार्ज कहलायेगी।

इमतियाज़ - शुक्रिया, मल्लिका-ए-आज़म। अब ज़रा दीवान-ए-ख़ास पर ज़रा ग़ौर फरमा लिया जाय। समझ गई ना, आप? मरे कहने का मफ़हूम है, फाइनेन्स का महकमा।

आयशा - देखो इमतियाज़, उस जीनत को आप ज़ान गयी? जिसके शौहर दीन मोहम्मद, कुछ याद आया आपको?

इमतियाज़ - (अपना हाथ सर पर रखती हुई) - हाय अल्लाह। यह जीनत अब कौन है? याद नहीं आ रहा है, हमें।

आयशा - वल्लाह। आप तो, इतनी भुल्लकड़ ठहरी। उस मोहतरमा को भूल गयी, क्या? जो अपने जूड़े में गोभी का फूल डाल कर आती थी, स्कूल में। अरी वो अभी जो स्टेशन एरिया की स्कूल की हेडमिस्ट्रेस बनी हुई है। अब तो पहचाना, उसको?

इमतियाज़ - वल्लाह, उसे कौन भूल सकता है? वो तो, आपकी ख़ास सहेली है। एक दिन का वाकया यह भी रहा, आपने उसको

नीन्द में पाकर उसका जूड़ा खोल दिया था। फिर उसमे से गोभी का फूल निकाल कर, जैलदार फूली बाई को सब्जी बनाने के लिये दे दिया। आप तो, शैतान की ख़ाला ठहरी। (हंसती है)

आयशा - अब पहचान गयी ना, यह जीनत वही है ।इसके शौहर दीन मोहम्मद ने, हेडमास्टरी का कोम्पीटेशन टेस्ट हमारे साथ ही दिया था। हम दोनों का हो गया सलेक्शन। दीन मोहम्मद के ख़ास दोस्त ठहरे, ये जमाल मियां। कल का वाकया है....

इमतियाज़ - कहिये....कहिये ना, कहो तो खिड़की बन्द कर दूं? कोई जासूस हमारी गुफ़्तगू सुन ना ले?

आयशा - वह खिड़की तो, पहले से बन्द है। अपने कानों की खिड़कियों का ध्यान रखना, कहीं वे बन्द ना हो जाय? लो सुनो, कल जमाल मियां व दीन मोहम्मद हमारे दौलतख़ाने पर तशरीफ़ लाये। दीन मोहम्मद बहुत लाचारगी के साथ मुझसे कहने लगे, के...

इमतियाज़ - आगे क्या कहा, हुजूर?

आयशा - (दीन मोहम्मद की आवाज़ में) - मेडम। आपकी मेहरबानी होगी तो इस जमाले को [10]ख़ाजिन का चार्ज मिल जायेगा जी, ना तो ता जिन्दगी इसे यह चार्ज मिलेगा नहीं।

इमतियाज़ - दे दिजीये ना, ये ख़ाजिन का चार्ज। आपके दर पे, कोई भिखारी भी ख़ाली हाथ नहीं जाता....फिर, यह जमाला तो अपने ग्रुप का ठहरा। याद कीजिये, आप जब-जब भी रशीदा बेग़म से नाराज़ होती थी....यही जमाला आपको कानूनी मश्वरा देता था।

आयशा - याद है, बेचारा कितनी इज़्ज़त करता है हमारी? कहीं भी यह जमाला हमसे मिलता है, यह गधा हमारे पांव छूकर हमें इतनी इज़्ज़त देता है...जितनी हमारी छोटी बहन, रोशन आरा भी दे नहीं सकती। आदाब...आदाब कहते रहना, तो इसका ज़बान-ए-लफ़्ज़ बन गया है।

इमतियाज़ - फिर क्या? दिला दीजिये बेचारे को, केश का चार्ज।

आयशा - आप जिद्द ना करे, बीबी। आप नहीं समझती....आक़िल मियां ठहरे, रोकड़ शाखा के ज़ानकार। उन्हे अच्छा-ख़ासा तुजुर्बा ठहरा, और यह कोदन रोकड़ शाखा की ए बी सी डी नहीं ज़ानता। जानती नहीं, आप? यह तो डूबा देगा, मुझे ऑडिट के जाल में फंसाकर।

इमतियाज़ - (नाराज़ होकर) - मुझे ज़रा अलील है, बड़ी बी। मैं ठहरी कोदन मोहतरमा, आपको मश्वरा देकर ग़लती की है मैने। इस गुस्ताख़ी के लिये मुआफी चाहती हूं।

आयशा - (इमतियाज़ को मनाते हुए) - मेरी प्यारी सहेली....मेरी लख़्ते जिग़र। क्यों ख़्वामख़्वाह नाराज़ हो रही हो? आपके सिवा इस स्कूल में कौन है, मेरा भला सोचने वाला? अब ज़्यादा मस्का मत लगवा, यार। चेहरे की ओयली चमड़ी तेरे रोने से हो जायेगी ख़राब। अब कुछ बोलने का क्या लोगी, मेरी [11]हमशीरा?

इमतियाज़ - (अहसान लादती हुई) - तो इतना कहती है, आप.....अब मश्वरा तो देना ही पड़ेगा। अल्लाह मियां के फज़लो

करम से, सच कहती हूं के आप प्रोग्रेस की सीढियां ऐसे आराम से नहीं चढती नहीं आ रही हो...?

आयशा - क्या कह दिया, इमतियाज़?

इमतियाज़ - सच कह रही हूं, आपने कई लोगों के कंधों पर चढ़कर परमोशन और पोस्टिंग प्लेस पाया है। आप जैसी हुस्न की मल्लिका के लिये, यह कोई असम्भव नहीं। आप नये कपड़े पहन कर, पुराने कपड़े कहीं फेंक आती है।

आयशा - किसी काम ली गयी चीज़ को, अलमारी में क्या सज़ाना? काम न आने पर उसे ख़ारोखस मान कर, ख़ाकदान मे डालना ही अच्छा है। मेरी हमशीरा, यही तो ख़िलक़त का उसूल है। इसे आप अच्छी तरह से, ज़ानती है।

इमतियाज़ - वज़ा फ़रमाया, आपने। अब मुझे कुछ कहने की, क्या ज़रूरत?

आयशा - साफ़-साफ़ बोलो, बीबी। इस तरह बातों में उलझा कर मत रखो। हम कैसे हैं या कैसे नहीं हैं, इसकी बखिया उधेड़ कर मत रखो।

इमतियाज़ - वल्लाह। हम नावाक़िफ़ नहीं, आपके बारे में बहुत कुछ ज़ानते हैं। आप तो आयेंगे ठहरी, आपके लिये क्या कहूं? बस बात इतनी ही है, अच्छा खाया-पीया ना तो उगालदान में उगल दिया।

आयशा - मैं समझी नहीं। उगालदान, और उगल देना कुछ समझ में नहीं आया?

इमतियाज़ - (कान के पास मुंह ले जाकर) - इस नेकबख़्त आक़िल मियां को सबक सीखाना बहुत ज़रूरी है, कम्बख़्त आपके दिये वाउचरों को फ़र्ज़ी बता रहा है? मेरा मश्वरा बस अब यही है, के....

आयशा - आख़िर देती क्यों नहीं, अपना मश्वरा?

इमतियाज़ - इस गधे जमालिये को दे दीजिये, ख़ाजिन का चार्ज। वह जब तक आपको खुश रखेगा, तब तक आप उसके पास यह

चार्ज पड़े रखना। जब भी वह कम्बख़्त आपको आंखें दिखाये, तो हुज़ूर उससे चार्ज छीनकर फिर किसी ओर को दे देना।

आयशा - आक़िल मियां ऐसे गुस्सेल ठहरे, जिनके आगे हारून मियां का गुस्सा न के बराबर। बस अब हमें इस आक़िल मियां नाम के हिज़ब्र को भड़काना है।

इमतियाज़ - उन्हें भड़काने का काम, आप जमाल मियां पर छोड़ दीजिये। आप ज़ानती नहीं, वह गधा महाभारत के मामा शकुनी की तरह चालें खेलता है। फिर देखना आप, किस तरह से वह आक़िल मियां को गुस्सा दिलाकर बेनियाम करता है? इधर भड़केंगे शोले, और उधर आप उनसे...

आयशा - हम ठहरे आयेंगे, इतना तो हम भी समझते हैं..... बस, आक़िल मियां से चार्ज लेकर इस जमाल को दे देंगे। इस मामले में हमें तो ख़ाली, तवालत का ध्यान रखना है।

(गुफ़्तगू करती-करती आयशा, छत्त पर निगाहें डाल देती है। वहां मकड़ी के कई जाले है, इस मकड़ी मारना तो अलग.. ये ख़ुदा के

बन्दे चपरासी लोग तो ठहरे ऐसे सरकारी मुलाज़िम, जिन बेचारों के पास कहां है इतना वक़्त? जो वक़्त पर, इन मकड़ी के ज़ालों को साफ़ कर दे। बेचारे चपरासी अगर इस काम के लिये वक़्त जाया करेंगे, तो आपस में गुफ़्तगू कौन करेगा? और कौन, खिड़की के पास खड़े रहकर बड़ी बी व उनके एहबाबों की गुफ़्तगू सुनेगा? इसलिये यह मकड़ी बिना डरे, छत्त पर ज़ाल बुनती जा रही है। इधर उड़ते हुए कीट-पतंगे उसका शिकार भी बनते जा रहे है। अब उस मकड़ी को देखते हुए, आयशा को वह मंजर याद आने लगा। जब रशीदा बेग़म का हुक्म मान कर, आक़िल मियां ने कई कानूनों का हवाला देते हुए इमतियाज़ मेडम के ख़िलाफ़ एक्सप्लेनेशन लेटर तैयार किया। फिर उस पर रशीदा मेडम के दस्तख़त करवा कर उनके हाथ में थमाया था। क्योंकि यह इमतियाज़ मेडम चल रहे आठवी बोर्ड इमतिहान में, ज़ान-बूझ कर मेडिकल छुट्टी पर चल रही थी। मेडिकल सर्टीफिकेट भी, इमतियाज़ द्वारा फ़र्ज़ी पेश किया गया था। इस मआमले को सुलझाने में, इमतियाज़ के शौहर को अपनी नानी याद आ गयी....जब वे उसकी [12]शिफ़ाअत करने, हेड ऑफिस

गये थे। अब आज़ इस मोहतरमा इमतियाज़ को मिल गया मौक़ा। मौक़ा परस्त इंसान की तरह, इमतियाज़ भी मकड़ी की तरह ज़ाल बुनती जा रही है। व अपनी प्लानिंग बताती जा रही है, के किस तरह से आक़िल मियां से बदला लिया जाय? इमतियाज़ को स्वेटर बुनते देखकर, अब आयशा को ऐसा लग रहा है... मानों वह स्वेटर न बुनकर, मकड़ी तरह जाल बुन रही हो? अब आयशा, इमतियाज़ से कहती है।)

आयशा - इमतियाज़ बी। यह हाथ में, क्या ले रखा है?

इमतियाज़ - सलाइयां है, फन्दे डाल रही हूं और क्या?

आयशा - तुम तो यार, उस्ताद ठहरी। तुम्हारे द्वारा डाले गये फन्दों से शिकार ना फंसे, यह हो नहीं सकता? (हंसी के ठहाके लगाती है।)

(आयशा की गूढ़ बात इमतियाज़ समझ ना सकी, लाचार होकर वह छत्त की तरफ़ ताकने लगी। वहां मकड़ी को ज़ाल बुनते पाकर,

सिवेचशन समझगयी। बस अब वह भी आयशा के साथ-साथ, ठहाके लगाने लगी। मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।)

(२)

(मंच रोशन होता है। स्कूल के बाहर मनु भाई अपनी दुकान की दलहीज़ उतर कर, पत्थर की बैंच पर आकर बैठ जाते है। क्योंकि अभी उनका नेकदख़्तर वसीम आकर, दुकान पर आकर बैठ गया है। अब मनु भाई को कोई फ़िक्र नहीं, दुकान की। वे आराम से फन्नेखां साहब के साथ शतरंज खेल रहे हैं। तभी तौफ़ीक़ मियां दुकान पर तशरीफ़ लाते हैं, वसीम से सिगरेट ख़रीदते हैं। फिर आराम से उसे सिलगा कर, धुंए के छल्ले बनाते जा रहे हैं। छल्ले बनाते-बनाते वे इन लोगों के पास आते हैं। फिर इन लोगों के पीछे खड़े होकर, शतरंज का खेल देखने लग जाते हैं।)

फन्नेखां - (मुंछों पर ताव देते हुए) - मनु भाई। आज़ तो आप शहनशाह जहांगीर के वक़्त की चालें खेल लीजिये, मगर आप जीतेंगे नहीं। आपके मोहरे पिट जायेंगे, हमारे मोहरों से।

(मनु भाई अपना हाथी का मोहरा चलाते हुए, फन्नेखां साहब के बादशाह के सामने रख देते हैं। फिर, ज़ोर से बोल पड़ते हैं।)

मनु भाई - किश्तऽऽ....बिरादर बचाओ, अपने बादशाह को। ना तो आपका वज़ीर कुरबान हो गया समझो।

फन्नेखां - (झुंझला कर) - क्या किया? शरे-ओ-अदब हम तो बहदवासी में, [13]परवाज़े तख़य्युल में थे। आपने चढ़ा दिया, हाथी? वल्लाह, अब बादशाहे तख़्त का क्या होगा? अब तो हमारे बिगड़े शऊर से, बेचारा वज़ीर कुरबान हो जायेगा।

(शतरंज की चालों को कड़ी नज़रों से देख रहे, मियां तौफ़ीक़ मियां से अब रहा नहीं गया। झट बिछाये मोहरों में से फन्नेखां साहब का ऊंट उठाते हैं, और तिरछी चाल चलते हुए रख देते हैं। इससे अब एक तरफ़ मनु भाई का हाथी इसकी तिरछी चाल में सामने आ जाता है, और दूसरी तरफ़ मनु भाई के बादशाह को भी मिल जाती है किश्त।)

तौफ़ीक़ मियां - लीजिये, मनु भाई। सम्भालिये किश्तऽऽ.....अब किसकी हिम्मत, जो हमारे सद्दाम साहब का वज़ीर कुरबान करें?

(सद्दाम साहब यानि हमारे फन्नेखां साहब, जिनकी अब बांछे खिल जाती हैं। वे ख़ुशी से उछल पड़ते हैं।)

फन्नेखां - तौफ़ीक़ साहब आप तो छुपे रूस्तम निकले, यार। इतने दिन, कहां छुपे बैठे थे?

(तौफ़ीक़ साहब सिगरेट का लम्बा कश लेते हैं। फिर धुंए के बादल उड़ाते हुए आगे कहने लगते है।)

तौफ़ीक़ मियां - गुस्ताख़ी माफ़ करना, फन्नेखां साहब। मैं तो अदना सा प्यादा हूं आप जैसे फ़नकारों की सोहबत पाकर इस शतरंज के अलिफ़...बे...पे सीख गया हूं। हुजूर, आपसे क्या मुकाबला?

(इतना कहकर जनाब तौफ़ीक़ मियां, धीरे-धीरे कहने लगे।)

तौफ़ीक़ मियां - (दबी जबान में) - अरे, जनाब। हम वो खिलाड़ी है, जो डवलपमेण्ट कमेटी में आपके लफ़्ज़ी इख़्तिलाफ़ पर अलीगढ़ का ताला भी जड़ सकते हैं।

मनु भाई - मियां, आप क्या बुदबुदा रहे थे? सुनाई ना पड़ा? हुजूर आप तो आला चालें चलते आ रहे हैं, और ऊपर से कहते जा रहे हैं "यह नाचीज़ तो प्यादा ठहरा।"

(मनु भाई का दिमाग़ अब ठिकाने रहा नहीं, के जनाब क्या बोलते हैं? और करते क्या हैं? इंसानी फ़ितरत के तौर पर शह बचाने के लिये झट मनु भाई अपना बादशाह आगे बढा देते हैं। फिर क्या? इसका ही इन्तजार था, तौफ़ीक़ मियां को। बस....फन्नेखां साहब का प्यादा आगे बढ़ाकर दे देते हैं मात।)

तौफ़ीक़ मियां - लीजिये मनु भाई, हम तो शतरंज के प्यादे ही हैं। देख लो, इस प्यादे से दिला दी आपके बादशाह को मात।

(मनु भाई ठहरे शतरंज के शातिर खिलाड़ी। मात मिलते ही, जनाब की पेशानी पर झलकने लगा पसीना। तभी उनकी नज़र

दुकान की दीवार पर लगी दीवार-घड़ी पर, जाकर टिकती है। निगाह गिरते ही जनाब का सारा गुस्सा बेचारे वसीम पर उतार डालते हैं।)

मनु भाई - (वसीम से) - अरे ओ उल्लू की औलाद। पांच-सात रूपयों की कंजूसी, क्या काम की? घड़ी के सेल बदले नहीं, कम्बख़्त? तेरी इस घड़ी में बारह बजे हैं, अब उठकर बजाता हूं तेरी बारहा। (उठते हैं।)

फन्नेखां - अजी मनु भाई, क्यों बेचारे पर कहर ढाह रहे हो? आपके बोले गये जुमले के तहत, वसीम ठहरा उल्लू की औलाद..। तब आप क्या है, जनाब? उल्लू के बाप, यानि उल्लू....अबे उल्लू उस्ताद। अगली बाजी कब खेलोगे?

(गुस्से में मनु भाई ने मोहरों पर नज़र डाली, इस शतरंजी जंगाह में उनके बादशाह को मिली करारी मात। वो भी, एक अदने से प्यादे से? अब तो वह प्यादा भी, उन्हें डरावना लगने लगा। उस प्यादे के पीछे, हाथी व ऊंट का ज़ोर। इसके अलावा फन्नेखां साहब के

बादशाह को अलग से बचा रहा है, घोड़ा...जो ढाई क़दम की दूरी पर मुस्तैद है। चारों तरफ़ मनु भाई के बादशाह पर वार करने वाले, फन्नेखां साहब के मोहरे जंगजू की तरह खड़े। इधर इतने सारे मोहरों की तदाद होने के बाद भी, मनु भाई अपने बादशाह को बचा नहीं पाये। उनके लिये तो यह शर्मनाक हार थी, इस हार को दिल से क़बूल करना एक शातिर खिलाड़ी के लिये आसान नहीं। इस पराजय के कारण अब मनु भाई अपना सर पीट लेते हैं।)

मनु भाई - (सर पकड़े हुए) - वाकिफ़े अब दिल नाशाद है। क़िब्ला तौफ़ीक़ साहब, लाहौल विल क़ूवत...अब कभी ना खेलेंगे, आपके साथ। आप तो जनाब, उस्तादों के उस्ताद निकले।

(तौफ़ीक़ मियां के हाथ में थामी हुई सिगरेट, अब राख में बदल गई। अब वे नयी सिगरेट जलाकर, धुएं के गुब्बार उड़ाते हुए कहते है।)

तौफ़ीक़ मियां - जनाब। शतरंज की सौ चालें होती है, चाल से चाल निकलती है।

फन्नेखां - (मनु भाई से) - मनु भाई। चालों की ज़ानकारी रखने से उस्ताद की क़ाबिलियत नहीं, मोहरों को बचाने से उस्ताद की क़ाबिलियत मानी जाती है। क्यों जनाब, अब तो अपने-आपको उल्लू मानते या नहीं?

(फन्नेखां साहब की तकरीरों की झड़ी लग चुकी थी, उनको क्या मालुम...? के जनाब मनुभाई शतरंज के मोहरे व जाजम उठाकर, कब के दुकान की तरफ़ अपने क़दम बढा चुके हैं। इधर तौफ़ीक़ मियां भी, स्कूल का गेट पार कर स्कूल में दाख़िल हो चुके। इनको अकेले बैठकर बड़बड़ाते देख, अपनी दुकान पर बैठे साबू भाई ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे। फिर बुलन्द आवाज़ में कहने लगे।)

साबू भाई - (बुलन्द आवाज़ में) - सद्दाम साहब। जनाब, अब आपकी तकरीरें सुनेगा कौन? अब आप, किसको नसीहत दे रहे हैं? जिन्हें आपकी नसीहत की ज़रूरत थी, वे जनाब जाकर बिराज गये हैं अब... दुकान पर। ग्राहकों को सामान तौलकर, दे रहे हैं।

फन्नेखां - साबू साहब। मेरी तरफ़ से आप एक नसीहत ज़रूर दे दीजिये उन्हें, एक वक़्त में एक काम ही होता है। आप चाहे तो शतरंज खेलें, या दुकान पर आये-गये ग्राहकों का ध्यान रखेंं....दोनों काम, एक साथ नहीं हो सकते।

साबू भाई - दे दूगां, ज़रूर। मगर, अब सुनेगा कौन? बस आप बड़बड़ाते रहिये, पहले की तरह। शायद आप जैसे निक्कमों पर मेहरबानी करके, मनु भाई सुन ले?

(भन्नाए हुए, फन्नेखां साहब नज़रें उठाते हैं। नज़र ऊपर क्या उठायी, उन्होंने? उन्होंने, क्या देखा? वहां ना तो मियां तौफ़ीक़ खड़े हैं, ना दिख रहे हैं मनु भाई। मनु भाई तो बेचारे ग्राहको से इस तरह घिर चुके हैं, जैसे छत्त्ते को मधुमक्खियां घेरे रखती है। अब फन्नेखां साहब को लगने लगा, इतनी देर वे क्यों पागलों की तरह बड़बड़ा रहे थे? या वे खुद उल्लू ठहरे, जो अपना वक़्त इस बैंच पर बैठे-बैठे जाया कर रहे हैं? वक़्त की कीमत को समझने वाले मनु भाई पर एक निगाह डालते हुए, वे अपने घर की तरफ़ क़दम बढ़ाने

लगे। टन-टन की आवाज़ गूंजाती हुई स्कूल की घण्टी बजती है। मंच की रोशनी, धीरे-धीरे लुप्त हो जाती है।)

(३)

(मंच रोशन होता है। प्रेयर के बाद दूसरी पारी की लड़कियां, अपनी-अपनी क्लासों में जा चुकी हैं। कक्षा आठ की लड़कियां बहोत सफ़ाई-पसन्द ठहरी। इनकी यह सफ़ाई पसन्दगी, क्या काम की? जब इनके क्लास रूम की सफ़ाई का जुम्मा, दिलावर खां का रहा हो? क्लास-रूम में कचरा न निकाले ज़ाने पर, कुछ बच्चियां झाड़ू लेने बड़ी बी के कमरे की तरफ़ चली जाती है। मियां दिलावर को सुपर्द किये गये बाहर के सारे काम, वे एक साथ ही करते हैं। वे बार-बार स्कूल के बाहर जाकर, उन कामों को अन्जाम देना उनकी आदत में शामिल नहीं हैं। सुपर्द गये कामों में एक भी काम पूरा न होने की आशंका हो जाय तो वे काम के लिये बाहर न जाकर, बस इस मोहल्ले में कहीं चले जाते हैं। फिर क्या? कुछ वक़्त गुज़ार कर, वापस स्कूल में आ जाते हैं। ढेर सारे बहाने गढ़ कर, काम ना होने

का कारण बता देते हैं। आज़ भी कुछ ऐसा हुआ, डाकख़ाने से बोयज़ फण्ड के रूपये वीथड्रो करा कर लाने का वक़्त निकल गया। पैसे लाना अब सम्भव रहा नहीं, तब वे सारे दूसरे काम मुतलवी करके वापस स्कूल लौट आते हैं। आते वक़्त उनकी मुलाकात, दालान में खड़े तौफ़ीक़ मियां से हो जाती है।)

तौफ़ीक़ मियां - (दिलावर से) - कहां उड़न छू हो गये? कहीं जनाब [6]कनकौवा उड़ाने चले गये क्या?

दिलावर खां - (झेंप मिटाते हुए) - मुकर्रम बन्दा परवर आपकी फ़ितरत ही कुछ ऐसी ठहरी, जनाब इतनी बड़ी नातिका रखकर हम जैसे ख़ादिमों की सदाकत बातें झूठी बता देते हो। गुस्ताख़ी ना करें, जनाब। इतमीनान रखें जनाब, हम कहीं दुनिया ज़हान को छोड़ नहीं रहे हैं, वसूक ना हो तो देख ले....वक़्त, अपनी हाथ घड़ी से।

तौफ़ीक़ मियां - अजी खादिम साहब, आप कहां झूठ बोलने वाले? कह दीजिये ज़रा, एलकार-ए-ट्रेजरी ने बिल लिया

नही.....डाकख़ाने का वक़्त हो गया, और यह सब देरी हुई हमारे कारण। हमें क्या? कहीं जाओ, आप जैसे अक़्लेकुल के पास बहोत बहाने है....

दिलावर खां - तौबा... तौबा। क्यों मियां हमें आब आब करने का इरादा है, क्या? क्या, हम बहाने-बाज हैं? एक ख़ादिम के लिये, ऐसी बात आपने कह दी...

तौफ़ीक़ मियां - बस, आपसे फ़र्ज़ पूरा होता नहीं। अल्लाह कसम कर लिया मैने तौबा, अब कुछ कहा तो.....मगर यह ज़रूर कहूंगा, बिरादर....आठवी के क्लास-रूम में तशरीफ़ रखे, देख लीजिये हक़ीक़त। हमें इस तरह, अफ़सोसनाक ज़हालत से ना गुज़ारे।

(बेदिली से दिलावर मियां डाक का थैली रखने के लिये क़दम बढ़ाते हैं, तभी बड़ी बी की आवाज़ सुनाई देती है।)

आयशा - ज़रा इधर आना, तौफ़ीक़ मियां।

तौफ़ीक़ मियां - (वहीं से) - आया हुजूर।

(पानी का लोटा लिये तौफ़ीक़ मियां, बड़ी बी के कमरे में दाख़िल होते हैं)

तौफ़ीक़ मियां - लीजिये हुजूर। गर्मी बढ़ चुकी है, इधर लाइटे भी चली गयी। पानी से गले को तर कीजिये।

(आयशा पानी पीकर, लोटा वापस थमाती है)

आयशा - सफ़ाई करना, याद नहीं आता मियां? कौन ख़ारोखस निकालेगा? अभी-अभी आठवी क्लास की लड़कियों ने शिकायत की है, के किसी ने ख़ारोखस नहीं निकाला है?

तौफ़ीक़ मियां - आपके हुस्न-ए-समाअत से हम सभी कामों से फ़ारिग़ हो चुके हैं.....हुजूर बेकैफ़ ना हो। आठवीं क्लास की सफ़ाई करने का जुम्मा, मियां दिलावर को दे रखा है।

आयशा - (नाराज़गी से) - बुलाइये, आक़िल साहब को। जनाब करते क्या हैं, आज़कल? स्कूल में [7]बेदरेग़ [8]बदइन्तज़ामी फैला दी है। यह क्या है? कोई काम करना नहीं चाहता....अगर उनसे चार्ज

सम्भाला नहीं जाता, तो कह दें हमें... यह चार्ज किसी, दूसरे को दे दिया जाये।

(आयशा ने आख़िर, इमतियाज़ के मश्वरे को काम में लेना चालू कर दिया। तौफ़ीक़ मियां को अपनी ओर ताकते देख, मोहतरमा आगे कहने लगी।)

आयशा - क्यों मुंह ताक रहे हो, मियां? जाओ, मियां आक़िल को कहो के.....मियां दिलावर से स्पष्टीकरण मांगे, के उन्होंने अपने फ़र्ज़ के प्रति लापरवाही क्यों बरती? क्यों नहीं उनका मआमला, बड़े आफिस भेज दिया जाय? जाओ काग़ज़ तैयार करवा कर लाओ।

(तौफ़ीक़ मियां कमरे से बाहर आते हैं। बाहर आकर क्या देखते हैं? के मियां दिलावर आराम से, बड़ी बी के कमरे की खिड़की से सट कर खड़े हैं। और खड़े-खड़े, कमरे में हो रही गुफ़्तगू पर कान दिये बैठे हैं। उनकी चोरी इस तरह पकड़ी ज़ाने पर मियां बेकाबू होकर, तौफ़ीक़ मियां से बेबाक बोलने लगते हैं।)

दिलावर खां - (गुस्से में) - क्या लग्व है, मियां? तरन्नुम में आफ़रीनी को छुपाने की कोशिश ना करो। सभी ज़ानते हैं, अब हमारी ज़बान मत खुलवाओ। लाहौल-विल-कूवत.. झूठ बोलना क़िब्ला आपसे सीखे, के फ़र्ज़ क्या होता है?

तौफ़ीक़ मियां - आप काहे उबल रहे हो, आख़िर कहना क्या है, आपको?

दिलावर खां - (कलाई में बन्धी हाथ घड़ी दिखाते हुए) - जनाब स्कूल आने का वक़्त सरकार ने दस बजे का रखा है, मगर मुअज़्ज़म इब्तिदाई तैयारी करके ही तशरीफ़ रखते है....स्कूल में बारह बजे? बच्चियों के आने के बाद, आप कैसे सफ़ाई का जुम्मा निभायेंगे?

(तौफ़ीक़ मियां काहे सुने, उनकी बात? बिना सुने ही, वे आक़िल मियां के कमरे की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा देते हैं। मंच की रोशनी, लुप्त हो जाती है।)

कठिन अल्फ़ाज़ के अर्थ -ः 1 जंगजू : योद्धा, 2 जंगाह : युद्ध का मैदान, 3 शमशीर : तलवार, 4 ख़ारोखस : कूड़ा, 5 ख़ाकदान :

कूड़ादान, 6 कनकौवा : पतंग, 7 बेदरेग़ : बिना सोचे समझे, 8 बदइन्तज़ामी : प्रबन्ध की ख़राबी, 9 कलाग़ 10 ख़ाजिन : ख़जांची 11 हमशीरा : बहन 12 शिफ़ाअत करना : सिफ़ारिश करना 13 परवाज़े तख़य्युल : कल्पना की उड़ान

(अजज़ा १२) शतरंज की चाल। लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

(मंच रोशन होता हैं। स्कूल की बड़ी बी आयशा अपने कमरे में बैठी हुई, अपने होंठों पर लिपस्टिक लगा रही है। अपनी खूबसूरती का भान करती हुई, बार-बार आइने में अपनी सूरत देख रही है। तभी इस स्कूल के छोटे "दफ़्तर निगार" जनाब जमाल मियां, कमरे में

दा़खिल होते हैं। उन्हे आते देख, वह मोहतरमा झट आइने को अपने पर्स में डाल देती है। फिर क्रेडिल से चोगा उठा कर, किसी से गूफ़्तगू करने की एक्टिंग करती दिखाई देती है।)

आयशा - (फ़ोन पर गूफ़्तगू करने की एक्टिंग करती हुई) - वालेकम सलाम। ज़नाब आपके मिजाज़ कैसे हैं ?

(जमाल मियां कमरे के अन्दर आते हैं। टेबल पर काग़ज़ रख कर वहीं खड़े रहते हैं।)

जमाल मियां - बड़ी बी। ख़त व किताबत का काम पूरा कर लिया, अब ये सारे ख़त यहाँ रख रहा हूँ। आपसे [2]ख़्वासत है, आप इन पर दस्तख़त कर मुझे ज़ाने की इजाज़त दीजिये।

आयशा - (फ़ोन पर) - कौन? अरे, आप......जनाब, ख़ैरियत है? (जमाल मियां को देखते हुए, चोगे को रूमाल से ढक कर उनसे कहती है।) जमाल मियां। ज़रा इतमीनान रखो। ज़ानते नहीं, किनका फ़ोन है? डिप्टी डाइरेक्टर साहब से बात हो रही है। (फिर चोगे से रूमाल हटा कर, कहती है) ख़ैरियत है, जनाब। कभी हमारे दौलतखाने तशरीफ़ रखें, हुजूर। बड़ी मेहरबानी होगी.......हाँ.....जी हाँ....ठीक है......अजी क्या फ़रमाया, आपने?.......अच्छा कर्मचारी स्टे लायेंगे?....कुछ नहीं, जनाब इन

वकीलों को चार पैसे मिल जायेंगे, हुजूर।.....हाँ जी......फिर, केस तो आप ही निपटायेंगे?.....ख़ैर, बाद में आपका मज़मून देख लेंगे.....शबा ख़ैर, रखती हूँ।

(चोगे को क्रेडिल पर, रख देती है। फिर जमाल मियां से कहने लगती है।)

आयशा - जमाल मियां। गोया हमने कसम खा ली, आपके सर-ए-अजीज़ की। अब किसी से नहीं कहेंगें, के हमारे इन ऊंचे ओहदेदारों से कितने अच्छे रसूख़ात है? आप तो ज़ानते ही हैं, दिन-भर कितने लोगों के फ़ोन आते रहते हैं? सभी चाहते हैं, के मैं अपने रसूख़ात काम में लाकर उनका काम करवाऊं।

(दराज़ से एक पेपर निकाल कर, जमाल मियां को देती है। फिर, कहने लगती है।)

आयशा - (पेपर देती हुई) - क्या करूं, मियां? ये बड़े बाबू आक़िल है ना, मानते ही नहीं हमारा कहना। अल्लाह ज़ाने, इन्हे क्यों हमसे

इतनी है, [3]मुखासमत? देखिये, इस पेपर को हमने आपा की ख़्वासत के माफ़िक, उनका तबादला हुक्म जारी करवाया।

जमाल मियां - सच्च कहा, बड़ी बी आपने? वास्तव में आपकी बहुत चलती है, सियासत के गलियारे में।

आयशा - (ख़ुश होकर) - अजी मियां, आप क्या ज़ानते हो? बिल्कूल उनके घर के पास की स्कूल में ही, पोस्टिंग करवायी है। ऐसा कौन करवा सकता है, मियां? बोलिये आप?

(इतना सुन कर जमाल मियां, आयशा का मुंह ताकने लग गये। फिर, उस तबादला-ए-हुक्म को देखने लग गये। उस हुक्म को देखते ही, उनके चेहरे की रंगत बदलने लगी। [4]मग़मूम चेहरा, आशा की किरणों से चमकने लगा।)

जमाल मियां - बड़ी बी। महसूस करता हूँ, आपकी [5]ज़राफ़त और [6]जुरअत हर काम को क़ामयाब बना देती है। अब मैं समझता हूँ, हुजूर। आप ही वो मुख्तस हैं, जो मेरी बीबी का तबादला इस शहर

में करवा सकती है। आपको हमारे लिये जहमत उठानी होगी, हम आपके शुक्रगुज़ार रहेंगे।

आयशा - (बेरूख़ी से) - ना, बाबा ना। अब हम किसी पचड़े में, नहीं फंसेगे। ज़नाब, आना-ज़ाना कुछ नहीं। ऊपर से यह जिल्लत...बदनामी? ख़ौफ़ खा गये, हम।

(बड़ी मुश्किल से आई यह चेहरे की चमक, अब गायब होने लगी। अब जमाल मियां का [7]महज़ून चेहरा देख कर, आयशा बी के लबों पर मुस्कान छा जाती है। लबों को रूमाल से ढाम्पती हुई, वह कहने लगती है।)

आयशा - (लबों को रूमाल से ढाम्पते हुए) - मियां आप माना आफरीनी में भी कमाल रखते हैं, आपका काम हम करेंगे ही....मगर, हम चाहते हैं... पहले, आपकी क़ाबिलियत देखें। लीजिये, इस काग़ज़ में सारी डिटेल लिखी है।

जमाल मियां - हुजूर फ़रमाइये, आपका यह बन्दा दो मिनट में काम कर लायेगा।

आयशा - (काग़ज़ थमाती है) - आपाज़ान को, पांच माह का पगार नहीं मिला। आप, उनके एलीमेण्ट्री महकमें में जायें। अपने रब्त काम में लाकर, उनके पगार का भुगतान करावे। गोया यह परवाज़े तखय्यूल नहीं है, आपकी क़ाबिलियत का इमतिहान है।

जमाल मियां - (अपने-आप) - काहे की, यह इब्नुल वक़्ती? क्या फ़ायदा सभी नहीं लेते, काम के लिये क्या-क्या नहीं करते? हमें तो ख़ाली, यह एक बिल ही बनवाना है। महकमा भी कौनसा? अपनी बीबी का, और क्या? फिर इधर इनका यह काम हुआ, और उधर इनका लख़्तेजिग़र बनने से रोकने वाला कौन?

(ख़ुशी के मारे जमाल मियां के पांव, ज़मीन पर थम नहीं रहे थे। ख़ुशी से काफ़ूर होकर मियां, कमरे से आ गये बाहर। बाहर स्टूल पर बैठी शमशाद बेग़म को, नोट-बुक में हिसाब-किताब करते हुए देखा। वह हिसाब को इन्द्राज़ करने के दौरान, बराबर बड़बड़ाती जा रही है।)

शमशाद बेग़म- (बड़बड़ाती हुई) - इस नौकरी के सफ़र में, सर के बाल सफ़ेद हो गये। मगर पत्ता नहीं, यह ख़ानदानी जिम्मेदारी कब खत्म होगी? हाय ख़ुदा, अब इस जिम्मेदारी को उठाने की ताकत इन बाहों में नहीं रही। अल्लाह। अब उठा ले मुझे, इस ख़िलक़त से।

जमाल मियां - (उन्हे दिलासा देते हुए) - ख़ालाज़ान। आप बेफ़िक्र रहो। वल्लाह, क्यों दुनियाँ से उठने की इल्तिज़ा ख़ुदा से कर रही हो? मरे, तुम्हारे दुश्मन। कर्ज की बात ठहरी, तो दिलवा दूंगा लेखक से लोन। बस दरख़्वास्त का फार्म ला दीजिये, लेखक से। बाकी का सारा काम, हम सम्भाल लेंगे।

(इतना कह कर जमाल मियां चल दिये, अपनी सीट पर बैठने। सीट पर बैठ कर, अपनी अगली चाल पर सोचने लगे।)

जमाल मियां - (अपने-आप) - क्या चाल चली, हमने। शतरंज की यह चाल, अब ज़रूर लायेगी रंग। क्या करें? ख़ाला की अक्ल भी ठिकाने लानी, ज़रूरी है। हम ठहरे नवाब ख़ानदान के, रसिकता

हमारे रोम-रोम में व्याप्त है। जब भी, इस स्कूल की खूबसूरत दुख़्तर को देखते हैं। हमारे नयन अपने-आप, चल पड़ते हैं।

(बैठे-ठाले, जमाल मियां की नाक में खुजली आने लगती है। फिर कया? झट उंगली नाक में डालकर खुज़ाने लगते है। फिर छींकें आने पर, पास रखे ख़ाकदान में नाक सिनकते हैं। फिर वापस, बड़बड़ाने लगते हैं।)

जमाल मियां - क्या करूं, मैं? यह क़ारनामा इस ख़ाला को हैरत-अंगेज़ की ठौड़, [8]महसूद लगता है। तब यह शैतान की ख़ाला हमारे इस काम की तारीफ़ करने की ठौड़, मुखासमत पर उतर जाती है। अब ज़रूर आयेगा, ऊंट पहाड़ के नीचे। जब यह शैतान की ख़ाला लेखक का ब्याज़ भरेगी, तब उसे अपनी नानी याद आ जायेगी।

(दोनों हाथ ऊपर ले जाकर, अंगड़ाई लेते हैं। फिर जेब से मेडम सुपारी निकालकर, मुंह में डालते है। मीठी सुपारी को चूषते हुए, वापस बड़बड़ाने लगते हैं।)

जमाल मियां - (बड़बड़ाते हुए) - बड़ी आई दाऊद मियां की चमची बनकर, स्कूल को सर पर उठाये बैठी है। अब लेखक के काटेगी, सौ चक्कर। तब बजाऊंगा मैं, चैन की बंशी। चलो, अच्छा किया...एक लालच की फूलझड़ी, चला दी हमने अपने फितुरिया दिमाग़ से।

(तभी शमशाद बेग़म पानी का लोटा लिये आती है, मियां के पास।)

शमशाद बेग़म- किस सोच में बैठे है, मियां? छोड़िये, फ़िक्र को। चलिये गले को तर कीजिये, लीजिये पानी।

(जमाल मियां पानी का लोटा लेकर, पानी पीते हैं। बाद में लोटा, वापस शमशाद बेग़म को थमाते हुए कहते हैं।)

जमाल मियां - (लोटा थमाते हुए) - देखो ख़ाला। कल मेरे ख़्वाब में, मेरे मरहूम अब्बाज़ान आये। वे कह रहे थे "बेटा जमाल। लेखक का मैनेजर तुम्हारी दुनियाँ को छोड़ कर, हमारे जन्नत में आ गया। वह कह रहा था, के सरकार ने अब अवाम को बहुत सुविधाए दे दी है।

शमशाद बेग़म- और क्या कहा, हुजूर?

जमाल मियां - अब अवाम आराम से सस्ती दर पर लेखक से लोन लेकर, घर की कई समस्याओं से निज़ात पा सकती है। बच्चों की शादी, मकान बनवाना, गाडी ख़रीदना, बच्चों की पढ़ाई जारी रखना वगैरा कई काम निपट सकते हैं, इस ख़िलक़त में।

शमशाद बेग़म- आगे क्या कहा, आपके अब्बा हुजूर ने?

जमाल मियां - अब्बा हुजूर ने आगे कहा 'मैने तो बेटा, कह दिया उनसे के आप जन्नत में लेखक की ब्रान्च खोल दीजिये। हम ख़ुदा से शिफ़ायत करके आपको इजाज़त, ज़रूर दिला देंगे। बस इसकी ठेकेदारी, हमको ही मिलनी चाहिये।'

(इतनी लम्बी तकरीर पेश कर के, आदत से मजबूर जमाल मियां ने अपनी उंगली वापस अपने नाक में डाल दी। और, बेशऊर होकर खाज़ खुज़ाने लगे।)

जमाल मियां - (नाक में उंगली डाल कर) - अरे, मच्छर बहोत बढ़ गये ख़ाला। ऐसा लगता है, यहाँ काफी दिनों से सफ़ाई नहीं हुई है।

हमें तो ऐसा लगता है, किसी ने डस्टर झाड़कर भी सफ़ाई नहीं की है।

(लोटे को वहीं टेबल पर रख देती है, फिर वह डस्टर उठा कर कहती है।)

शमशाद बेग़म- (डस्टर उठा कर) - बेफ़िक्र रहे, आप। अभी झाड़ लेती हूँ......।

(फिर क्या? वह उनकी टेबल, अलमारी और दीवारों को झाड़ने लगती है। झाड़ने के बाद, उनके नज़दीक आकर कहती है।)

शमशाद बेग़म- (डस्टर रख कर) - जनाब, ज़रा बताइये। लेखक लोन के लिये, कौन-कौन से डोक्यूमेण्ट नत्थी करने हैं....? आपकी मेहरबानी से लोन मिल गया, तो हुजूर आपको दुआ दूंगी। आपकी मेहरबानी से छोरे की शादी पर लिया कर्जा, भी उतर जायेगा। आगे आपसे, क्या कहूँ? इस महाजन की औलाद ने कर्ज क्या दिया, मेरा जीना दुश्वर कर दिया।

(झाड़ने के बाद, टेबल पर रखे लोटे को वापस मटकी पर रखने के लिये उसे उठाती है। फिर जमाल मियां को, वापस याद दिलाती है।)

शमशाद बेग़म- अब बताइये, जनाब कौन-कौन से डोक्यूमेण्ट नत्थी करूं?

जमाल मियां - काहे फ़िक्र करती हो, ख़ाला? हम बैठे है ना, आपकी ख़िदमात में? तसल्ली से बता देंगें, अभी ज़रा इस टी.सीण् वाले काम से फारिग़ हो जाऊं।

शमशाद बेग़म- (मायूस होकर) - चलती हूँ। बाद में आ जाऊंगी।

जमाल मियां - नहीं....नहीं ख़ाला, आप रूख़्सत नहीं हो सकती। मैं तो अभी, दो मिनट में फारिग़ हो जाऊंगा। तब तक आप, इन अलमारियों के पीछे रेको में रखे हाज़री रजिस्टरों के बण्डल बान्ध दें। फिर आसानी रहेगी हमें, इनको जिल्द चढ़वाने के लिये भेजना है।

शमशाद बेग़म- जो हुक्म।

(जमाल मियां जहां बैठते है, उनके पीछे गोदरेज़ अलमारियों को एक लाइन में खड़ी करके उन्होने एक सेपरेशन दीवार बना रखी है। जहां रखी गई रेकों मे कई साल पुराने हाज़री रजिस्टर, अस्त-व्यस्त तरीके से रखे गये है। उन पर जमी धूल झाड़ने का वक़्त, इन जैलदारों को मिलता नहीं। क्योंकि, ये चतुर्थ श्रेणी अफ़सर अपना क़ीमती वक़्त हफ़्वात करने में बिताते आ रहे हैं। अब शमशाद बेग़म वहां आकर, जैसे ही उनके हाथ लगाती है....सारे रजिस्टर एक-एक करके, बेचारी शमशाद बेग़म पर गिरने लगते हैं। एक तो उनका बोझ, ऊपर से ये जमी हुई डस्ट। हवा में उड़ी इस खंक से, बेचारी शमशाद बेग़म बेहाल हो जाती है। नासा-छिद्रों में डस्ट के कण चले ज़ाने से, वह लगातार छींकने लगती है। धूल से सने वस्त्रों को झाड़ती हुई, वह चिल्ला उठती है।)

शमशाद बेग़म- (धूल भरे वस्त्रों को झाड़ती हुई) - ए मेरे मोला। कोयले की दलाली में हाथ काले।

(बरामदे में तौफ़ीक़ मियां आराम से स्टूल पर बैठ कर, सिगरेट का कश ले रहे हैं। साथ-साथ, वहां बैठी मेडमों से गूफ़्तगू भी करते जा रहे हैं। उनकी आवाज़, शमशाद बेग़म के कानों में गूंजती है। बस, फिर क्या? शमशाद बेग़मझट मदद के लिये उन्हे पुकारती है।)

शमशाद बेग़म- (ज़ोर से पुकारती हुई) - अरे ओऽऽ, तौफ़ीक़ मियां। अजी सुनते हो? ज़रा इधर आकर, मदद करना।

(जनाब तौफ़ीक़ मियां एक सलीके दार जैलदार ठहरे, वे खुद इग्यारवी पास मुलाज़िम है। दफ़्तरे निगार बनने की, उनमें पूरी क़ाबिलियत है। आख़िर, दफ़्तरे निगार की क़ाबिलियत होती क्या? ख़ाली सैकेण्ड्री पास, और क्या? मगर बेचारे मियां की बदक़िस्मती, वे किसी आरक्षण के कोटे में आते नहीं। इधर हमारे ये जमाल मियां, है ख़ाली सैकेण्ड्री पास। मगर ये जनाब आये हैं, मृत राज्य कर्मचारी के कोटे से। और बन गये, इनको हुक्म देने वाले? बस अब हमारे तौफ़ीक़ मियां अपनी खुनस मिटाने के लिये, अपनी पर्सनल्टी बनाये रखते हैं। सफ़ेद चिकन वर्दी, बराबर क्रीज़ की हुई

पहनना, जिसकी क्रीज़ ये टूटने नहीं देते। उधर इनके हेड साहब हफ़्ता-भर एक ही पोशाक पहने रखते हैं, जिन्हे वे बदलते नहीं। जिससे उनके बदन से निकली पसीने की बदबू के हाल का, क्या कहना? जनाब की हाज़री दूर से ही मालुम पड़ जाती है, के जनाब तशरीफ़ रख रहे हैं। इधर हमारे ये तौफ़ीक़ साहब इस्तेमाल करते हैं, इरान का बना इत्र। दूर से आती सुगन्ध से ही मालुम पड़ जाता है के, मियां तौफ़ीक़ तशरीफ़ रख रहे हैं। ये जनाब, ठहरे दानिश किस्म के इंसान। जनाब को शेरो-शाइरी का है, बड़ा शौक। शहर में ये जनाब, आले दर्जे के शाइरों की गिनती में आते हैं। इनका दूसरा शौक ठहरा, ख़ाली नहीं बैठ कर ये इल्म की चर्चा में डूबे रहना। जनाब रईसी तबीयत के होने के साथ, ये लखनऊ की तहज़ीब को अपनाये बैठे है। इतने सारे [9]महामद होने के बाद इनमें एक कमी है। ये जनाब अपने जिस्म को, किसी प्रकार की तकलीफ़ से गुज़रने नहीं देते। तकलीफ़ देने से, कहीं इनके वस्त्रो पर दाग न लग जाय? इसका अन्देशा, इन्हें हर वक़्त बना रहता है। अब ये जनाब, शमशाद बेग़म के तीन-चार मर्तबा पुकारने के बाद स्टूल से उठते

है। फिर बिना आहट किये जमाल मियां के पास आकर, उनके पहलू में रखे स्टूल पर तशरीफ़ आवरी हो जाते हैं। फिर, धीमे से कहने लगते है।)

तौफ़ीक़ मियां - (धीमे से) - आदाब। शरे ओ अदब.....ज़रा, हम पर मेहरबानी रखिये हुज़ूर।

(जमाल मियां मुस्कराकर, उन्हें वहीं बैठने का इशारा करते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - हुज़ूर। हम तो तबादला-ए-ख़्याल कर रहे थे। अल्लाहताआला, अब्बा मरहूम को जन्नत नसीब करे। उनके इतने बड़े कुनबे पर, मेरी नज़र ना लग जाय? जनाब इस कुनबे में आये दिन किसी का इन्तिकाल होता है, या कभी किसी का निकाह।

जमाल मियां - मियां, आपको काहे की फ़िक्र?

तौफ़ीक़ मियां - अरे, जनाब। अम्माज़ान के बाद, हम ठहरे सबसे बड़े इस घर में। हुज़ूर, आपको कैसे समझाऊं? के, ख़ानदानी वजा...इस रिश्तेदारी को निभाते हुए हमें बार-बार शरीक होना

पड़ता है.. कभी किसी के निकाह में, तो कभी किसी के जनाजे में। बस हुजूर, नसीबे-दुश्मना-ज़ान जोख़म पाल रखी है।

(शमशाद बेग़म के पुकारने की आवाज़, वापस सुनाई देती है। मगर, यहाँ तौफ़ीक़ मियां को कहाँ सुनने वाले उस महज़ून की पुकार? वे तो इस आवाज़ को अनसुना करते हुए, जमाल मियां को कुछ ना कुछ सुनाते ही जा रहे हैं। अब वे अपने शिकवे को "शेर" का जामा पहना कर, पेश कर देते हैं अपना कलाम।)

तौफ़ीक़ मियां - "जनाब, इन्तिकाल होता है उनका। मारी जाती तमाम छुट्टियाँ हमारी।। निभानी पड़ती हमें यह ख़ानदानी वज़ा। ख़ाक़ हो गयी छुट्टियाँ अब हमारी।।"

(फिर वापस शमशाद बेग़म की पुकारने की आवाज़, [10]आवाज़े बाज़गश्त बन कर लौटती है।)

शमशाद बेग़म- (पुकारती है) - ओ तौफ़ीक़ मियां। आपके दीदार के लिये तरस रहे है, इन फाईलों के नीचे दब गई हूँ। आकर निकालो, मुझे। साथ में, झाड़ू भी लेते आना।

(मगर, तौफ़ीक़ मियां को कहाँ ज़ाने वाले? वे वे वहीं से ज़ोर से चिल्लते हुए कह देते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (ज़ोर से) - अभी आता हूँ, ख़ाला। इतमीनान रखे। अरेऽऽ, ज़रा शेर पेश कर रहा हूँ। (जमाल मियां से) हुजूर। सच कह रहा हूं, पहला इत्तिफाक है, जी घबराता है। आपके सर-ए-अज़ीज़ की कसम खाकर कहता हूँ, हमने कभी धूल भरे रजिस्टर नहीं ढोये। धूल देख कर, कलेज़ा हलक़ में उतर आता है। और, क्या उज्र करूं? असतग़फिरूल्लाह, मालिक मुझे इससे निज़ात दिला दे।

जमाल मियां - (लबों पर मुस्कान लाकर) - ठीक है, मियां। अब आप फौरन बाहर जाइये। सवारी का बन्दोबस्त कर के, आ जायें। गाड़ी वाले से कहना, के चालीस अदद बस्ते हैं, फिर किश्तियाँ भी शामिल है। समझ गये, मियां?

तौफ़ीक़ मियां - मंजूर है, अभी गया और सवारी का बन्दोबस्त करके आता हूँ हुजूर। अब, रूख़्सत होने की इजाज़त चाहता हूँ।

(जमाल मियां का इशारा पाते ही, तौफ़ीक़ मियां झट हो जाते हैं....नौ दो इग्यारह। अब शमशाद बेग़म पल्लू से पसीना पोंछती हुई वहाँ आती है।)

शमशाद बेग़म- (जमाल मियां से) - क्या कहूँ, मियां आपसे? चक्कर आ रहा है....सर घूम रहा है। इस सबके बावजूद भी, हमने चालीस अदद बस्ते व किश्तियां तैयार कर दी है। वल्लाह। अच्छा रहता, मियां तौफ़ीक़ आ जाते।

(कुछ देर बाद, स्कूल-गेट के बाहर होरन की आवाज़ सुनाई देती है। गेट के पास टेम्पो आकर, रूकता है। टेम्पो से बाहर निकल कर, तौफ़ीक़ मियां गेट का दरवाज़ा खोलते हैं। फिर, उस ड्राइवर को हुक्म देते है।)

तौफिक मियां - चलो चान्द मियां दालान की तरफ़। (पाकिजा फिल्म का नग़मा गाते हैं) चलो दिलदार चलो, चान्द के पार चलो...

चान्द मियां - अरे मियां तौफ़ीक़ यार, क्या कर रहे हो? अपने दिलदार को वहीं रहने दो, कहां चढ़ाये जा रहे हो हम पर?

(अब टेम्पो साधा दालान के पास आकर, रूक जाता है। ड्राइवर चान्द के बाहर आते ही, तौफ़ीक़ मियां झट टेम्पो के अन्दर आकर ड्राइवर की सीट पर बैठ जाते हैं। दालान में हाथ-मुंह धोकर, शमशाद बेग़म जैसे ही वह खड़ी होती है...तौफ़ीक़ मियां की पुकार, सुनाई देती है।)

तौफ़ीक़ मियां - (शमशाद बेग़म को आवाज़ देते हुए) - तशरीफ़ लाये, ख़ाला। ज़रा बस्ते व किश्तियाँ गाड़ी में चढ़ा दीजिये।

शमशाद बेग़म- (हाथ-मुंह साफ़ करती हुई, ज़ोर से) - हायऽऽ अल्लाह। यह क्या, नाइंसाफ़ी? सारा सामान हमने तैयार किया, अल्लाह के मेहर से। अब, हाथ-मुंह धोकर फ़ारिग़ हुए है हम। और सामने, वापस यह इल्लत? अब मियां आंखें होते हुए, दिखाई नहीं देता क्या?

(तभी जमाल मियां सामान की फ़ेहरिस्त (सूची, इनडेक्श) लिये आते हैं।)

जमाल मियां - (शमशाद बेग़म को फ़ेहरिस्त[11] देते हुए) - लीजिये, यह फ़ेहरिस्त। इसके मुताबिक ये चालीस अदद बस्ते और किश्तियां टेम्पो में चढ़ा दीजिये, ख़ाला। फिर वापस आकर, चूल्हे पर चाय चढ़ा देना। रिसेस होने वाली है।

(अब वह जमाल मियां को क्या जवाब दे.. ? यहां तो जमाल मियां, इस वक़्त इनके मुअज़्ज़म ठहरे। ये जनाब ठहरे, लेखक से लोन दिलाने वाले। फिर क्या? शमशाद बेग़म ठहरी, बेचारी ग़रीब की जोरू। दिल के गुब्बार को दबा कर, अब शमशाद बेग़म सारा माल टेम्पो में चढ़ा कर फ़ारिग़ होती है। काम ख़त्म होने के बाद, अब वह खड़ी-खड़ी बेचारी, कपड़ों में लगी धूल को झाड़ने लगती है। इधर यह टेम्पो धूल के गुब्बार छोड़ता हुआ, आंखों से ओझल हो जाता है। उससे उड़ी धूल वापस आकर, उसके कपड़ों को वापस ख़राब कर देती है। बेचारी, अब क्या करे? फिर वापस, उन कपड़ो

को झाड़ने बैठ जाती है। दिल में समाये गुब्बार के आगे, ये धूल के गुब्बार कुछ नहीं। वह बेचारी कब की होने वाले अहसान के तले दब चुकी, जिसका उसे कोई भान नहीं। कपड़े झाड़ कर, वापस गैस के चूल्हे के पास आती है। भगोने में चाय का पानी चढा कर, दीवार-घड़ी देखने लगती है। थोड़ी देर बाद, वह रिसेस की घण्टी लगाने चली जाती है। मंच की रोशनी, लुप्त हो जाती है।)

(२)

(मंच रोशन होता है। पोर्च में लगी कुर्सियों पर स्टॉफ बैठा हुआ है। अब शमशाद बेग़म, सबको चाय के प्याले थमाती है। स्टॉफ को चाय के प्याले थमा कर, शमशाद बेग़म बड़ी बी के कमरे में दा़खिल होती है। उसे देखते ही, बड़ी बी आयशा कहने लगती है।)

आयशा - (शमशाद बेग़म से) - देखो ख़ाला। गेट पर बराबर ध्यान रखना। डवलपमेण्ट कमेटी के मेम्बर जनाब हाजी मुस्तफ़ा, अभी तशरीफ़ लायेगें। उनके आते ही, चाय, बिस्कुट वगैरा सभी एक साथ लेते आना।

(शमशाद बेग़म चली जाती है।)

आयशा - (होंठों पर लिपिस्टक लगाते हुए) - ये हाजी साहब आयेंगे कब? आख़िर चन्दा लेना है, तो इन्तज़ार करना भी होगा।

(हाजी मुस्तफ़ा, अचानक कमरे में दाख़िल हो जाते हैं। दाख़िल होते वक़्त, वे आयशा की कही बात सुन लेते है।)

हाजी मुस्तफ़ा - मज़ा तो इन्तजार में ही आता है, बड़ी बी। कहिये ख़ैरियत है?

आयशा - सलाम हाजी साहब। बहरहाल ख़ैरियत है। (जम्हाई लेती है, जिससे सर पर ढका दुपट्टा गिर कर कन्धो पर आ जाता है।) हुजूर ग़रीब बच्चियों की बकाया फीस भरने का केस दर्दे सर मोल ले लिया था, अब आपकी मेहरबानी से हमें राहत मिली है।

हाजी मुस्तफ़ा - हमारी मेहरबानी नहीं जी, ख़ुदा का मेहर समझिये।

आयशा - अब, क्या करें? क्या नहीं करें, कोई रहनुमा था नहीं, इसलिये आपको जहमत दी।

(रिदा[16] गिरने से बहदवास आयशा के हुस्न पर हाजी मुस्तफ़ा की निगाह गिर पड़ती है, सकपका कर वे अपनी नज़र नीचे कर देते है। फिर वे शर्मा कर कहने लगते हैं।)

हाज़ी मुस्तफ़ा - (शर्माते हुए) - हुजूर और कोई काम हो तो कहना, यह बन्दा आपकी ख़िदमत के लिये हाज़िर है।

(तभी उन्हे गिरे हुए रिदा का अहसास होता है। फिर, क्या? झट उज़ागर हो रहे हुस्न और सर को रिदा से ढकती है। लबों पर मुस्कान लाकर, फिर कहने लगती है।)

आयशा - (मुस्कराते हुए) - क़िब्ला....ज़रा अलील है। यह तो वल्लाह हो नहीं सकता कि जब हम किसी मसले से परेशान हो, और आप मदद ना करे? बस, जनाब से मैं क्या उज्र करूं? बस आप दे दीजिये, इन पांच ग़रीब दुख़्तरों की फीस। (काग़ज़ में दुख़्तरों के नाम लिख कर थमाती है।)

(हाजी साहब काग़ज़ पढ़ कर, जेब से करारे-करारे नोट निकाल कर आयशा को थमाते हैं। फिर, कहने लगते है।)

हाजी मुस्तफ़ा - एक तमन्ना रह गयी, बड़ी बी। यह मेरी छोटी नेक दुख़्तर, बेबी रौनक है, ना....? पढ़ाई में ज़रा कमज़ोर रह गयी, अल्लहताआला इस साल उसे पास करा दे, तो उसका निकाह करवा कर अपना फ़र्ज़ पूरा लूं। फिर, अल्लाह के फ़जलोकरम से हज कर आऊं। काश, ऐसा हो पाता?

आयशा - मआमला शायद, पढ़ाई से जी चुराने का हो सकता है?....क्या कोई?

हाजी मुस्तफ़ा - क्या करें, हुजूर? बेचारी जोड़ और ज़रब में कमज़ोर ठहरी। गये साल बेचारी ने, क्या-क्या नहीं किया? हर इमतिहान के रोज़ कारचोब वाला इमामजामीन पहना करती, घर से रूख़्सत होते वक़्त बेग़मउसको दही-मछली चखा देती...और क्या? मेहतरानी को बुलाकर सदका करती......

आयशा - हाय इस अल्लाह की बन्दी के कुछ काम नहीं आये, ये सारे टोटके। बेचारी रौनक, छः नम्बर से रह गयी। यही बात है, ना?

(आयशा झट नोटों को अपने कब्जे में लेते हुए, उन्हे पर्स में रख देती है। फिर भोली बनी हुई, हाजी साहब का मुंह ताकने लगती है। भोली शक्ल बनाये हुई आयशा का इस तरह देखना, हाजी साहब आगे कहने की हिम्मत बन जाती है। वे आगे कहते हैं।)

हाजी मुस्तफ़ा - रौनक इस साल, प्राइवेट स्टूडेण्ट के तौर पर इमतिहान में बैठेगी। मगर.....

आयशा - मगर क्या? तकल्लुफ़ की क्या ज़रूरत? कुछ बयान कीजिये, हाजी साहब। हम आपका काम ना करेंगे, तो जनाब किसका काम करेंगे?

(तभी शमशाद बेग़म, तश्तरी में चाय, मिठाई व नमकीन लेकर हाज़िर हो जाती है। सारा सामान टेबल पर, करीने रखकर, वह

चली जाती है। उसके ज़ाने के बाद, दोनों चाय के प्याले उठाते हैं। हाजी साहब, आगे बयान करते है।)

हाजी मुस्तफ़ा - असतग़फिरूल्लाह कहीं इन लबों से ग़लत बात न निकल जाय? आपका हुक्म हो तो..... यह बन्दा यह इल्तिज़ा करता है, आपसे यूं तो बेबी रौनक प्राईवेट इमतिहान में बैठेगी....मगर हम चाहते है, वह रेगुलर क्लास में बैठकर पढ ले। निहायत पास हो जायेगी, आपकी मेहरबानी से।

(नाश्ते की प्लेट, हाजी साहब की तरफ़ सरकाकर आयशा कहने लगती है।)

आयशा - हुजूर। नोश फरमायें। जनाब हाथ बराबर चलता रहना चाहिये, ना तो ये नमकीन ठण्डे होकर बेकार हो जायेंगे।

हाजी मुस्तफ़ा - (मिठाई का टुकड़ा उठाते हुए) - अगर मंजूर हो, तो उसे कल से कल से भेज दूं, स्कूल?

आयशा - (अपने-आप) - कुरबानी का बकरा, ख़ुद हलाल होने आ गया। अब हम क्यों पीछे रहें, इस भेड़ को मूण्डने?

(गिरते रिदा को वापस, ठीक करती है आयशा। फिर लबों पर मुस्कान लाकर कहने लगती है।)

आयशा - (लबों पर मुस्कान लाकर) - जनाब, परवाज़-ए-तख़्य्यूल (कल्पना की उड़ान) किस काम का? आप तो अपने हो, फिर कहने में शर्म क्यों? आप पर हम वसूक करते हैं, जनाब। ज़रा स्कूल में फर्नीचर की कमी है, अगर कहीं से इन्तज़ाम हो जाय.....फ़हवुल मुराद (तो ठीक है) है, बस एक-दो सेट....

हाजी मुस्तफ़ा - ख़ुदा की पनाह, कहीं से क्यों? अपने ग़रीबख़ाने से भेज देता हूं, फर्नीचर....हुजूर, अभी वापस हाज़िर हुआ।

(हाजी मुस्तफ़ा, जाते हुए दिखाई देते है। धीरे-धीरे, उनके पद-चाप की आवाज़ आनी बन्द हो जाती है। मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।)

(३)

म्ंच रोशन होता है, स्कूल का मेन गेट पार करके हाजी मुस्तफ़ा मनु भाई की दुकान की ओर जाते हुए दिखाई देते है। धीरे-धीरे वे मनु भाई की दुकान की तरफ़ क़दमबोसी करते हैं। जहां पत्थर की

बैंच पर फन्नेखां साहब व मनु भाई बैठे-बैठे, शतरंज खेल रहे है। उनकी चालों पर नज़र गढाये तौफ़ीक़ मियां, पास ही खड़े है। तभी सड़क से मूण्डी हुई भेड़ों का झुण्ड गुज़रता है। उस झुण्ड को देखकर, तौफ़ीक़ मियां के लबों पर मुस्कान छा जाती है। वे मुस्करा कर, कह बैठते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (मुस्करा कर) - शतरंज की सौ चालें होती है, हर चाल से चाल निकलती है। (हाजी मुस्तफ़ा को देखते हुए) और फिर क्या? हर चाल से मूण्ड ली जाती है, भेड़। क्या करें, जनाब? वह बेचारी भेड़ खुद ख़ुशी से जाती है, मूण्डने के लिये।

(बिछी शतरंज से प्यादे का मोहरा उठाकर, फन्नेखां साहब के ऊंट के आगे रख देते है। फिर चिल्लाकर कह बैठते हैं)

तौफ़ीक़ मियां - शहऽऽ। बचाओ सद्दाम साहब, अपने बादशाह को।

मनु भाई - (ख़ुश होकर) - वाहऽऽ तौफ़ीक़ साहब, क्या मारा। सद्दाम साहब का बादशाह बेमौत मारा गया, वो भी इस अदने से प्यादे की मार से, प्यादा खड़ा है, वज़ीर के ज़ोर पर। और क्या कहे

तौफ़ीक़ साहब? क्या सोचा आपने, वज़ीर खड़ा है....हाथी के ज़ोर पर।

फन्नेखां - अरे यार, इस बार मात मिली है तो क्या? मैं क्या भेड़ हूं, जिसे लोग बार-बार मूण्डते रहे? शतरंज की ऐसी चाल, फेंकूगा के.... (हाजी साहब को देखते हुए) क्यों हाजी साहब, मुंह क्यों उतारा है? कहीं किसी ने, आपको मूण्ड लिया क्या? (फन्नेखां साहब के साथ-साथ, सभी हंसने लगते हैं।)

हाजी मुस्तफ़ा - (अपने-आप) - कहीं वह बादशाह, हम तो नहीं? जिसे शह मिली है, या वह भोली-भोली भेड़ हम तो नहीं जिसे इस हुस्न की मल्लिका ने अभी-अभी मूण्ड लिया हो?

(अपने आप, उनके मुंह से ये अल्फ़ाज़ निकल पड़ते हैं)

हाजी मुस्तफ़ा - अरे, आरिफ़ लोगों। ज़राफ़त (विनम्रता) से कुबूल कर लीजिये, मिली हुई शह को। क्या आप ज़ानते नहीं, यह ऐसी जंगाह (युद्ध का मैदान) है...जहां.....

मनु भाई - (अधूरे जुमले को पूरा करते हुए) - शतरंज की सौ चालें होती है, चाल में से चाल निकलती है।

(मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।)

कुछ उर्दू अल्फ़ाज़ के मफ़्हूम :- 1 ख़त व किताबत : पत्र व्यवहार 2 ख़्वासत : प्रर्थना, 3 मुखासमत : विरोध, शत्रुता, 4 मग़मूम : दुखित, 5 ज़राफ़त : विनम्रता, 6 जुरअत : हिम्मत, दुस्साहस, 7 महज़ून : दुखित, 8 महसूद : घृणित, 9 महामद : गुण, 10 आवाज़े बाज़गश्त : प्रतिध्वनि, 11 फ़ेहरिस्त : सूची, इनडेक्श, 12 परवाज़-ए-तख़्य्यूल : कल्पना की उड़ान, 13 फ़ह्वुल मुराद : तो ठीक है, 14 ज़राफ़त : विनम्रता, विनोद, 15 जंगाह : युद्ध का मैदान 16 रिदा : चुन्नी, दुपट्टा ।

(अजज़ा १ ३) लौट कर बुद्धु घर को आये।

लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

(1)

(मंच रोशन होता है। मनु भाई अपनी दुकान पर बैठे-बैठे, आये-गये ग्राहकों को किराणा का सामान तौल-तौल कर दे रहे है। अब फन्नेखां हाज़ी मुस्तफ़ा के गले बांह डाले, दुकान पर तशरीफ़ रखते

हैं। दोनों मुअज़्ज़म आकर, पत्थर की बैंच पर तशरीफ़ आवरी होते है।)

फन्नेखां - (मूंछों पर ताव देते हुए) - मनु भाई। हम आ गये हैं।

मनु भाई - (लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए) - रूख़्सत बिला इतला यानि बिना बुलाये.....? जनाब, कहिये आपकी क्या ख़िदमात करूं ? निकालू शतरंज ?

फन्नेखां - (खिसयानी हंसी के साथ) - हैं...हैंऽऽहैं...ऽऽ ज़ानते हो, फिर पूछते क्यों हो ?

(मनु भाई उन्हे थैली में (मोहरों और [3]बिसायत सहित) शतरंज थमाते हैं।)

हाज़ी मुस्तफ़ा - (फन्नेखां से) - सद्दाम साहब। क्या करें, हुजूर ? आज़कल तो यह साबू भाई वाली गली, सूनी-सूनी लगती है। कोई चहल-पहल नहीं, हुजूर ?

फन्नेखां - सूनी ही रहेगी, जनाब। आज़कल हमारे एम.एल.ए साहब को काले भंवरे की तरह भम-भम करते हुए कहीं उड़ने की ज़रूरत नहीं, उनके घर में ही तितलियां आकर मण्डरा जाती है....उन पर। क्या किस्मत पायी है, हुजूर ? यह आहूचश्म मेहरारू, उनके दफ़्तर और घर की रौनक बनती जा रही है।

हाज़ी मुस्तफ़ा - क्या कहा, जनाब ? एम.एल.ए साहब, अब गली में कभी तशरीफ़ नहीं रखेगें ? अब हम तो, गये काम से ? अब, हमारे मोहल्ले का डेवलपमेण्ट, होने से रहा ?

(हाज़ी मुस्तफ़ा यह सुन कर हो जाते हैं, उदास। तभी मुन्नी तेलन मुंह लटकाये अपने खाविन्द के साथ, उनके पीछे साइकल पर बैठी हुई गली से गुज़रती दिखाई देती है। उसे देखते ही हाज़ी साहब, के मुख से टीस निकल उठती है।)

हाज़ी मुस्तफ़ा - हायऽऽ अल्लाह। यह, क्या हो गया ? अब मुन्नी तेलन का क्या होगा, हुजूर ? देखिये, बेचारी स्कूटर से साइकल पर

आ गयी ? हायऽऽ उसकी बदकिस्मती, कहां-कहां ठोकरे लगवायेगी ?

फ़न्नेखां - (हंसते हुए) - अजी हमारा एम.एल.ए कोई टटपूजिंया गली का मच्छर नहीं, वह तो भंवरा है....जनाब। भंवरा एक ठौड़ बैठ कर, फूलों का रस चूषता नहीं। वह तो ठौड़-ठौड,़ कई फूलों का रस चूषता रहता है। अरे बिरादर। फूल झर जाते है, तब तक कलियाँ खिल जाती है.....उस ख़ुशअख़्तर भंवरे के लिये।

(हाज़ी साहब को इस तरह उदास देखकर, फन्नेखां साहब ने कब की शतरंज बिछा दी है। अब तो वे मोहरों को चलाते-चलाते अपना हाथी का मोहरा, झट हाज़ी साहब के बादशाह के सामने लाकर खड़ा कर देते हैं। बेचारे हाज़ी साहब तो मुन्नी तेलन के ग़म में डूबे थे, और बिना ध्यान दिये मोहरों को चला रहे थे। उन्हें क्या पत्ता ? चालाक फन्नेखां साहब अपने हाथी के ज़रिये, उनको मात दे चुके हैं।)

फन्नेखां - (चहक कर) - मुन्नी तेलन की लगाम छोड़िये, हुजूर। अब तो आप खुद, अपने काम से गये। किश्त हो गयी है, अपने बादशाह को बचाइये...जनाब।

हाज़ी मुस्तफ़ा - जनाब। आपने यह अच्छा नहीं किया, हमें बातों में उलझा कर जनाब ने हाथी चढ़ा दिया....?

फन्नेखां - (हंसते हुए) - हाथी क्या ? जनाब। अब तो गधे भी सवार हो जायेंगे....इतने सीधे बने रहे तो। ज़ानते हैं, आप वार्ड मेम्बर का टिकट किसे मिलेगा ?

हाज़ी मुस्तफ़ा - मुन्नी तेलन को, और किसको ?

फन्न्ेखां - वह वक़्त तो रात को ही चला गया, हुजूर। अब राई के भाव, बढ़ने रहे। वक़्त वक़्त की बात है, हुजूर। यह मुन्नी तेलन, अब एम.एल.ए साहब की आंखों से उतर चुकी है। ख़ाक़ टिकट लेगी....अब ?

(उन दोनों की गुफ़्तगू की आवाज़, साबू भाई के कानों में गिरती हैं। फिर क्या ? वे झट बिना बुलाये, तशरीफ़ रख देते है। बैंच पर बैठ कर, जनाब अपनी बुलन्द आवाज़ में कह बैठते हैं।)

साबू भाई - बा अदब होशियर.....टिकट मिलेगा हमें ही, हम है साहबे आलम साबू भाई। कौन है ऐसा, जो हमसे करे बराबरी इस मोहल्ले में ? (फन्नेखां साहब पर निगाह डाल कर) क्यों साले साहब ? बताइये, कुछ ग़लत तो नहीं कह दिया हमने ?

फन्नेखां - (हंसी के ठहाके लगाते हुए) - क्या कहें, साहबे आलम ? आपसे कौन टक्कर ले सकता है, अब ? वह भी बूढे शेर से......अजी वक़्त आ गया, अब नौजवानों को आगे बढ़ाओ।

हाज़ी मुस्तफ़ा - क्या कह रहे हो ? अरे जनाब, ख़ाली नौजवान कहने से काम नहीं चल सकता। आप खूबसूरत जवान मेहरारू को आगे लाने की बात कीजिये, ज़ानते नहीं आप ? इस स्टेट के वज़ीरे आला का ओहदा, औरतों के कब्जे में चला गया। जनाब, अब यह ओहदा जनानी हो गया है।

फन्नेखां - ये क्या ज़ानेंगे, जनाब? कभी, इस मोहल्ले से बाहर गये हो तो ? यह तो यह भी नहीं ज़ानते, के सत्तासीन पार्टी की चेयरमेन भी एक औरत है। क्या करें ? आज़कल सियासत के गलियारे में, मर्दों का कोई काम नहीं रहा। हुजूर, ज़माना आ गया है....अब तो हिंजड़े भी एम.एल.ए. बने बैठे हैं। देखो, मध्य प्रदेश में क्या हुआ ?

साबू भाई - शबनम मौसी बन गयी एम.एल.ए, वह भी भारी वोटों से जीत कर। हायऽऽ अल्लाह। क्या ज़माना आ गया, अब तो हिंजड़े सरकार चलाने लगेंगे। (हिंजड़ों की तरह ताली वज़ाते हुए) बस अब तो ताली वज़ाओ, काम-धाम कुछ नहीं....सब बन जाओ, छक्के।

फन्नेखां - (हंसते हुए) - साहबे आलम। अब आप अपनी इन मूंछों को, कर लीजिये नीचे। रूख़सारों पर लगा दो, लाली। अब देखना छोड़ दो, वार्ड मेम्बरी का सपना।

(बातों में डूबे देख कर, फन्नेखां अपना ऊंट का मोहरा उठा कर हाज़ी साहब के हाथी पर वार करते हुए तिरछी चाल में रख देते हैं। इस तरह उनका बादशाह, लग रही किश्त से बच जाता है।)

फन्नेखां - (मोहरा रखते हुए) - असतग़फिरूल्लाह, कहीं ग़लत न कह दूं आपको? अभी यह क्या कर डालते, मियां ? आप तो इब्नुल वक़्ती ठहरे, जनाब। हाज़ी साहब, यार आप तो कत्ल कर देते हमारे बादशाह का।

साबू भाई - (चौंकते हुए) - कौन कर रहा है, हमारा कत्ल ? क्या समझ रखा है, लोगों ने ? साबू भाई अभी तक इतने कमज़ोर नहीं हुए हैं। उनके साले का, कोई एक बाल भी बांका करे?

फन्नेखां - (हंसते हुए) - हुजूर। आपका कत्ल नहीं, कत्ल तो हमारे शतरंज के बादशाह का हो रहा था। आप तो जनाब, हमारे दिल के बादशाह हैं। अगर आपका ऐसे कत्ल हो जाय, तो लानत है हमें। फिर किस मुंह से कहे आपको, के आप सियासती गलियारे में टिके रहेंगे।

साबू भाई - टिकना क्या मुश्किल? हम तो टिकने और टिकाने का ही, धन्धा करते हैं। ज़ानते हो, हम क्या बेचते हैं ? अम्बुज़ा सिमेण्ट.....। उससे बनी दीवार, टूट नहीं सकती। वह टिकी रहती है।

हाजी मुस्तफ़ा - शायद आपने, टी.वी. में आ रहे इश्तिहार देखे नहीं होंगे? देखने के बाद ही कुछ कहे, हमारे मोहल्ला-ए-शहंशाह को।

साबू भाई - ये क्या कहेंगे, जनाब? हम कहते हैं, टिकना क्या जनाब? हम तो चिपक जायेंगे, सियासती कुर्सी से लिपटकर। जुड़ जायेंगे ऐसे, जैसे चिपक जाता है......फेवीकोल का जोड़।

(अब दाऊद मियां, साइकल थामे आ रहे हैं। थोड़ी देर बाद आकर साइकल को पेड़ के सहारे खड़ी करके, खुद बैठ जाते हैं उनके साथ...बैंच पर। फिर वे भी उनके साथ, गुफ़्तगू में शामिल हो जाते हैं।)

दाऊद मियां - (साबू भाई से) - साबू भाई। सुना आपने, सियासती गलियारों में काफ़ी हलचल पैदा हो रही है।

मनु भाई - (दुकान पर ग्राहकों को सामान देते हुए) - हलचल नहीं, मियां इसे तूफ़ान कहिये। ज़ानते नहीं आज़कल, हमारे एम.एल.ए. साहब हूर की परियों से घिरे रहते हैं। और उधर देखिये, अपोज़िट पार्टी वालों को। अपने वार्ड में खड़ा कर दिया, एक दमदार उम्मीदवार।

फन्नेखां - (हाज़ी साहब का मज़ाक उड़ाते हुए) - अजी इस दमदार उम्मीदवार को छोड़िये, जनाब। भले किसी लंगूर को खड़ा कर दीजिये यहां, मगर वह कभी हमारी मुन्नी तेलन का मुकाबला नहीं कर सकता।

दाऊद मियां - (लबों पर मुस्कान लाकर) - वज़ा फ़रमाया, हुजूर। मुन्नी तेलन के लबों पर छायी मुस्कान से, मोहल्ले के बड़े-बड़े तुर्रम खां होश-हवास खो बैठते हैं। आपने हक़ीक़त से बयान किया है, उसे तो गज-गामिनी कहना अच्छा है।

साबू भाई - अरे छोड़िये उस गज-गामिनी को, जब आपके सामने साबू भाई नाम का यह सफ़ेद हाथी खड़ा है। क़िब्ला...एक मर्तबा इसे देख तो लीजिये।

मनु भाई - दिन लग गये, हुज़ूर। अब हाथियों के पीछे जंगली कुत्ते छोड़ दिये जाते हैं, और [4]आहूचश्म के दीदार पाने के लिये......लोग लम्बी-लम्बी पक्ंितयों में घण्टों खड़े रहते हैं, हुज़ूर।

(तभी आयशा बी की टेक्सी रूकती है, स्कूल के मेन गेट के पास। न ज़ाने कहां से इधर-उधर खड़े कई मोहल्ले के रहने वाले, उनका दीदार पाते ही झट उनके पास चले आते हैं। उन सबको बाहर खड़ा देख कर सुबह की पारी की जैलदार चान्द बीबी आकर, मेन गेट खोलती है। थोड़ी देर बाद वह आयशा का बेग लिये, अन्दर जाती हुई दिखाई देती है। उसके पीछे-पीछे आयशा बी और मोहल्ले वाले भी, कमरे की तरफ़ क़दम बढाते हैं। बैंच पर बैठे इन मुअज़्ज़म मोहल्ले वालों की आंखें आयशा पर टिकी पाकर, मनु भाई ठहाका लगा कर हंस पड़ते हैं।)

मनु भाई - (ठहाका लगाते हुए) - वाहऽऽ, भाई वाह। कमाल का है इस [1]ग्रज़ाल चश्म का कुव्वते जाज़बा? इसने आपकी आंखों की क्या दशा बना डाली ? भय्या इसी कारण सियासत में बैठी आला कमान कमेटी, किसी ग्रज़ाल चश्म को ही टिकट देना चाहती है। तुम जैसे पतझड़ के पत्तों को नहीं। जनाब, आख़िर वोटों का सवाल है।

दाऊद मियां - आपको याद होगा, आपके एम.एल.ए. साहब ने इस [4]आहू चश्म का तबादला हमारे स्कूल में करवाया था। तबादला क्या करवाया, हुजूर ? वे खुद, इस आहूचश्म की आंखों के जाल में गिरफ्त हो गये।

हाज़ी मुस्तफ़ा - गिरफ्त क्या हुए, जनाब ? यह कहिये हुजूर, के मोहतरमा ने अपनी कटीले नयन से, बेचारे एम.एल.ए. को बिना जुर्म कैद कर डाला। अब देखिये हुजूर, कभी एम.एल.ए साहब इस मोहतरमा के ग़रीब ख़ाने में तो कभी यह मोहतरमा उनके दौलत ख़ाने में.....।

दाऊद मियां - और बिचारे उनके शौहर रशीद मियां, घर बैठे आहे भरते रहते हैं।

(फन्नेखां साहब ठहरे, आयशा बी के वालिद के दोस्त। वे कब आयशा पर लगी तोहमत को नज़र अन्दाज़ कर सकते हैं ? वे झट, दाऊद मियां के द्वारा लगाये आरोप को झुठला देते हैं।)

फन्नेखां - बेचारी ग़रीब छोरी पर झूठी तोहमत मत लगाओ, मियां। बेचारी छोरी भोली है....हिरनी के माफ़िक। वह नहीं ज़ानती, वह किन लोगों के बीच में खड़ी है ? चारों तरफ़ ये सियासती जंगली भेड़िये, उसे नोंचने के लिये खड़े हैं।

दाऊद मियां - क़िब्ला बचा दीजिये ना, इस हिरनी को। वह क्यों मुंह लगा रही है, इन भेड़ियों को ? ज़रा जाकर पूछिये आप, उस मोहतरमा से।

(हाज़ी मुस्तफ़ा, फन्नेखां साहब के बादशाह के सामने अपना हाथी का मोहरा रख कर उसके पीछे अपने ऊंट का ज़ोर लगा देते हैं। और एक तरफ़ यह ऊंट, उनके वज़ीर को भी बचा रहा है। फन्नेखां

साहब का बादशाह खड़ा है अकेला, जिस पर किसी मोहरे का ज़ोर नहीं.....इस तरह हाज़ी साहब यह चाल चल कर, बरबस कह बैठते हैं।)

हाज़ी मुस्तफ़ा - (ज़ोर से) - माऽऽत। फन्नेखां साहब, आपकी हिरनी को बाद में बचाना। हुजूर, पहले आपके बादशाह को बचा दीजिये। (हंसते हैं) मारा गया आपका बादशाह.....बेमौत।

फन्नेखां - हायऽऽ, अल्लाह। आप तो बड़े फ़हीम निकले। चारों खाना चित्त कर दिया......आज़ तौफ़ीक़ साहब होते, तो चाल में से चाल निकाल देते। आपके बेरहम हाथों से, हमारा बादशाह मारा नहीं जाता।

दाऊद मियां - (उठते हुए) - अरे ओऽऽ, फ़सले ख़िजाँ के झड़ते पत्तों। अगर हम यहां बैठे रह गये, तो यह खूबसूरत बला हमारी मुख़्बिरी करवाने के लिये.....किसी जैलदार को यहां भेज देगी।

(दाऊद मियां रूख़्सत होते हैं। कुछ देर बाद, वे अपनी सीट पर बैठे नज़र आते हैं। तभी, आयशा अपनी टेबल पर रखी घण्टी बजाती है। घण्टी सुनकर, शमशाद बेग़म उनके कमरे में दाख़िल होती है।)

शमशाद बेग़म- कहिये हुजूर। ख़ैरियत है ?

आयशा - (ग़म भरे सुर में) - ख़ाला। आपसे क्या छिपी है, हमारी हालत। ग़म में जीये जा रहें हैं।

शमशाद बेग़म- हुजूर। बेदिरेग़ बयान करें.....हम से जो मदद होगी, वह ज़रूर करेंगे, हुजूर। कहिये, क्या ख़िदमत की जाये आपकी ?

आयशा - स्कूल के टूर्नामेण्ट का चन्दा लाना मेरे लिये, बन गया सर दर्द। अब वक़्त दे नहीं पाती, घर पर। इधर रशीद मियां के [2]मुख़्तलिफ़ मिज़ाज का, क्या बयान करूं ?

(दुखः से आंखे,ं अश्क से भर जाती है, उन्हे रूमाल से साफ़ करती हुई आयशा आगे बयान करती है।)

आयशा - (आंसू रूमाल से साफ़ करती है) - एक बात कहूं, ख़ाला। आप स्कूल में रहे, या फिर मेरे घर रहे.....बस, एक ही बात है। आपके हफ़्ता भर के दस्तख़त, एक साथ करवा दूंगी। बस आप कुछ दिन हमारे घर रह कर, हमारा घर सम्भाल लें। फिर, वहाँ काम भी क्या ? गेंहू बीनना, रोटी पकाना वगैरा और क्या ?

(जाफ़री के दरवाज़े के पास, किसी के पांवों की आहट सुनाई देती है। शमशाद बेग़म दरवाज़े की तरफ़ निगाह डाल कर कहती है।)

शमशाद बेग़म- हुजूर। फन्नेखां साहब तशरीफ़ लाये हैं। शायद वे, टूर्नामेण्ट के चन्दे की बात करेंगे। अच्छा, मैं चलती हूँ।

(शमशाद बेग़म जाती है, और फन्नेखां साहब कमरे में चले आते हैं। मंच की रोशनी लुप्त होती है।)

(२)

(मंच रोशन होता है। बड़ी बी आयशा, कमरे में अपनी कुर्सी पर तशरीफ़ आवरी है। तभी दरवाज़े पर दस्तक होती है, फन्न्ेखां साहब तशरीफ़ रखते हैं। फन्नेखां कुर्सी पर बैठते हैं। शमशाद बेग़म

आकर उन्हे पानी पिला कर, चली जाती है। अब आयशा फन्नेखां साहब का चेहरा देखती हुई, उनसे कहती है।)

आयशा - (पल्लू को सर पर लेती है) - लग्व करूंगी, चच्चा। लग्व ज़रा अफ़सोसनाक सर्का है.......मगर क्या करें, चच्चा ? इस स्कूल पर हेड ऑफिस वालों ने, टूर्नामेण्ट करवाने का भार थोंप दिया। अब, उसे करवाना हमारी मज़बूरी है।

फन्ने खां - कहो बेटी, मेरे लिये कोई काम हो तो?

आयशा - कहिये चच्चा, आप और आप सभी डेवलपमेण्ट कमेटी के मेम्बरान.....टूर्नामेण्ट का, कितना फण्ड जुटा सकते हैं ?

फन्नेखां - (अपने-आप) - हायऽऽ अल्लाह। हम तो आये यहाँ, बच्चियों से ली गयी कम्प्यूटर फीस को वसूल करने। जो क़ायदे के तहत, सरकार को देनी है। मगर, यहाँ तो यह मोहतरमा हमसे ही वसूल करने जा रही है.....चन्दा ? (अपनी बात रखते हुए) हम बड़ी उम्मीद लेकर आये हैं, बेटा। पहले हमारी इन दुख़्तरों की प्रोबलम पर ग़ौर कीजिये, बेटा।

आयशा - पहले हमें इस समस्या से निज़ात दिलायें, चच्चा। बच्चियों की बात, तो बाद में भी सुनी जा सकती है। हुजूर। बस आप सभी मेम्बरान, डेवलपमेण्ट फण्ड से पच्चास हजार रूपये निकालने की अपनी मंजूरी दे दीजिये।

फन्नेखां - (सर के बालों पर, अपनी उंगली फेरते हुए) - क्या कहा, पच्चास हजार ? (ज़ोर से) यह क्या....? किसी का निकाह करवाना है, क्या ? इतनी बड़ी रक़म ?

आयशा - (लबों पर, मुस्कान लाकर) - जनाब, हमारा निकाह तो हो गया दस साल पहले। आपने ग़लत समझा, हुजूर। यह बात ज़रूर सही है, आपकी नेक दुख़्तरा का निकाह होने वाला है, हुस्ने इतिफ़ाक़ से हम ज़रूर शराकत करेंगे....

(आयशा को भरोसा नहीं हो रहा है, वालिद जैसे चच्चा फन्नेखां साहब टूर्नामेण्ट के ख़र्चे को लेकर नाराज़ कैसे हो गये ? उनको शान्त करती हुई, आयशा आगे कहती है।)

आयशा - आप फ़िक्र ना करें। अभी तो इस टूर्नामेण्ट में आने वाले, आला कमान के सियासती लीडर यानि वज़ीरे आला, मिनिस्टर वगैरा की आवभगत करनी है। उसमें होने वाले खर्चे पर, आप ध्यान दे दीजिये।

फन्नेखां - (कुर्सी से उठते हुए) - वज़ीरे आला....और ये सियासती लीडरों का इस एज्यूकेशन महकमें में क्या काम ? मोहतरमा, यह इल्म की तामिर है.....स्कूल।

आयशा - चच्चा, पहले मेरी बात सुनिये।

फन्नेखां - अब सुनने में क्या रहा ? अब तरन्नुम में मानी आफ़रीनी को छुपाने की कोई ज़रूरत नहीं है, बेटी। अब आप छुपाने की कोशिश मत करें, हम सभी मेम्बरान ज़ान गये हैं...आख़िर आप क्या काम करवाना चाहती है, इन सियासती लीडरों से ?

आयशा - (आंखें तरेर कर) - आप, क्या ज़ानते हैं ?

फन्नेखां - अन्दाजे बयान, कुछ गंजलक है......अभी तक, आपके नवाबी खर्चों के बारे में सुनते आये......मगर, आज़ हमने अपनी आंखों से देख लिया।

आयशा - क्या देख लिया, हुजूर?

फन्नेखां - आप क्या ज़ानती, ये डवलपमेण्ट फण्ड का पैसा उन ग़रीब वालेदान की जेब से आता है.....जो एक वक़्त खाना ना खाकर, यह पैसा जुटाते हैं। माफ़ करना, बेटी। ज़हमत दी, चलता हूँ....ख़ुदा हाफ़िज़।

(फन्नेखां पांव पटकते हुए, लौट पड़ते हैं। आकाश में उड़ता हुआ एक कनकव्वा, [5]दफ्अतन कट कर ज़मीन पर आ गिरता है। मोहल्ले के बच्चे उसको लूटने के लिये, उसके पीछे दौड़ लगा बैठते हैं। इस कटे हुए कनकव्वे से ध्यान हटा कर फन्नेखां साहब, स्कूल के मेन गेट के पास आकर एक नज़र इस स्कूल की बिल्डिंग को निहारते हैं। बीती हुई बातें याद करते हुए, उनके दिल में एक टीस उठती है....। दिमाग़ में एक ख़्याल रोशन होता है, के कितनी कोसिसे कर,

डवलपमेण्ट कमेटी के लोगों ने इसकी तामिर खड़ी की ? और आज़ यह स्कूल किन लोगों के हवाला कर दी गई, जो ख़ाली अपने स्वार्थ के लिये इसे लूटने का साधन बना चुके हैं। इस दर्द को अपने सीने में दबाये हुए, आकर वे उसी पत्थर की बैंच पर बैठ जाते हैं। बरबस, उनके मुंह से यह जुमला निकल पड़ता है।)

फन्नेखां - जिस मोहतरमा को हमने इल्म-ए-नूर समझा, वह बुलन्द तो क्या ? बस एक तस्वीर बन कर रह गयी, इस मोहमल, बेमानी और हिमाकत की। हायऽऽ अल्लाह, अब क्या करें ? यह मोहतरमा तो बेचारी ग़रीब बच्चियों के पैसों को, फ़सले ख़िजाँ बना देगी।

मनु भाई - (ग्राहकों को [6]समान-ए-ख़ुरोनोश देते हुए) - क्या हो गया, जनाब ? कहीं [7]लफ़्ज़ी इख़्तिलाफ़ हो गया, या किसी ने आपको ज़लील कर डाला ?

साबू भाई - (पास आकर फन्नेखां का चेहरा पढ़ते हुए) - साले साहब। यह क्या नक़्क़ाशी है, चेहरे पर ? .आख़िर जाकर आ गये, उस खूबसूरत बला के पास ? क्या, हुजूर सही बात है ?

(फन्नेखां साहब, अब कहाँ ठहरने वाले ? वे तो झट, चल देते हैं अपने ग़रीब ख़ाने की तरफ़। उन्हें रूख़्सत होते देख, साबू भाई व मनु भाई ठहाके लगा कर हंस पड़ते हैं।)

साबू भाई - (लबों पर मुस्कान लाकर) - मआमला क्या था, भाईयों ? आया, कुछ समझ में ? ख़्वामख़्वाह, बेचारे साला साहब को आप लोग ले उड़े ?

हाज़ी मुस्तफ़ा - (शतरंज के मोहरे जमाते हुए) - मफ़हूम यह है मियां, के गये थे बेचारे अपनी [8]नातिका दिखाने। ख़्याल था के उनकी वह लाडली भतीजी, ज़रूर बच्चियों को कम्प्यूटर फीस लौटा देगी।

साबू भाई - खूब सोच कर भी गये थे बेचारे, वहाँ बैठ कर चलायेगें तकरीरों के तीर.....के सरकार ने माफ़ कर दी है, यह कम्प्यूटर फीस। अब आपको लौटानी ही होगी, यह फीस। मगर....

मनु भाई - (हंसते हुए) - मगर इनकी लाडली भतीजी ने ग़ारत कर दिये, सारे रब्त। गये थे बेचारे दिल-ए-आरजू बयान करने, मगर लौट आये वापस बेआबरू होकर।

साबू भाई - (बैंच पर बैठते हुए) - अब चलो, खेल ही लेते है यह शतरंज। बाद में देखेंगे यार, हम भी। आख़िर हम भी ठहरे, मेम्बरान डवलपमेण्ट कमेटी के। बदला ज़रूर लेंगे, जनाब।

हाजी मुस्तफ़ा - आख़िर, हम कोई ऐसी-वैसी चीज़ नहीं है। इस स्कूल की कमेटी के मेम्बरान है, भाई।

मनु भाई - मेम्बर भी वो....जनाब, जिसे एम.एल.ए साहब ने नोमीनेट कर के भेजा है।

साबू भाई - अब तो तहलका मचा देंगे, हुजूर। इस मोहतरमा पर ग़बन का आरोप लगायेगें, शिकायतों कें पुलिन्दे रख देंगे एम.एल.ए. साहब के सामने......फिर देखना, हुजूर ?

हाज़ी मुस्तफ़ा - हम क्या देखें, जनाब ? आप देखिये ज़रा.....आपका हाथी मारा गया। अब इस ऊंट की बारी है,

जनाब। (साबू भाई के हाथी को उठा कर, अपना वज़ीर रख देते हैं।)

मनु भाई - शतरंज के जंग में मारे जा रहे हो, मियां। अब, क्या सियासती जंग जीतोगे ? (मनु भाई ठहाका लगा कर हंसते हैं।)

(तभी एक सफ़ेद कार, स्कूल के गेट के पास आकर रूकती है। जैसे ही मज़ीद मियां कार से निकल कर बाहर आते हैं, तभी एक उड़ता हुआ शैतान कौआ उनकी सफ़ेद सफ़ारी पर बींट कर देता है। गेट खोल कर, आयशा बाहर आती है।)

आयशा - (नजदीक आकर) - वाह जनाब। क्या कहना है, आपका ? चलो, इस मर्तबा जनाब पर कलाग़ मेहरबान हो गये। अच्छा रहा, बदशगुन टल गये....आइये, अब चलने का नाम लीजिये। (दोनों कार में बैठते हैं।)

मज़ीद मियां - (कार स्टार्ट करते हुए) - मोहतरमा। अब तो आप मान गयी, ना? आपका जुमला, बिल्कूल ग़लत साबित हुआ। आख़िर, कलाग़ ने हम पर बींट कर ही दी।

(कार रवाना हो जाती है। कार के ज़ाने के बाद, बच्चियों के वालेदान इकट्ठे होकर मनु भाई की दुकान पर भावी लीडर साबू भाई के सामने....अपनी इल्तिज़ा रखते दिखाई देते है।)

एक वालेदान - साबू साहब।

साबू साहब - (अपनी मूंछों पर ताव देते हुए) - क्या चाहते हो, बिरादर ? पहले आप आराम से, बैंच पर तशरीफ़ आवरी होवे। फिर, तसल्ली से करेंगे बात।

दूसरा वालेदान - तसल्ली से बैठे, हमारा सर। आपको, कोई ग़म नहीं ? बैठे-ठाले आराम से, शतरंज खेल रहे हो आप ?

साबू भाई - ना वाकिफ़े-ग़म अब दिल-ए-नाशाद....ख़ाक करूं, ग़म ? कुछ बताओगे, या बाबरनामा पढ़ते रहोगे ? कुछ तो बताओगे, तब...

दूसरा वालेदान - हुज़ूर। यह कौनसा इंसाफ़ ? सरकार ने अख़बारों में इन स्कूल-ए-निज़ाम के नाम ओर्डर जारी कर दिये, के अब बच्चियों से ली गयी कम्प्यूटर फीस लौटाई जायेगी। मगर यहाँ तो

अन्धेर है, अभी तक यह फीस लौटाई नहीं गयी। साबू भाई, उठिये.....चलियेऽऽ। अभी, बड़ी बी से मिल कर आते हैं।

साबू भाई - रहने दीजिये जनाब....वो चौदवी का चान्द, बादलों की ओट में छुप चुका है। अब इस वक़्त, आपको बड़ी बी के दीदार होंगे नहीं। काहे वक़्त बरबाद करते हैं, आप ? चलिये, आप बैठिये बैंच पर....आपसे एक बाज़ी हो जाय।

दूसरा वालेदान - (खिसयाता हुआ) - काहे की बाज़ी ? यहाँ तो ज़िन्दगी की बाज़ी लगी है, कमठे पर गये नहीं। एक दिन की पग़ार मारी गई, अब आप आज़ की पग़ार दे सकते हो ? (दूसरे वालेदानों से) ये क्या चलेंगे ? नाम के मेम्बर हैं...इस डवलपमेण्ट कमेटी के।

(सभी वालेदान चले जाते हैं। उन लोगों के स्कूल में दा़खिल हाते ही, जनाब साबू मियां के लबों पर मुस्कान छा जाती है। फिर क्या ? बरबस कह बैठते है।)

साबू मियां - लौट कर आ ज़ाना, फन्नेखां साहब की तरह मुंह लटकाये। अब तो जो भी जायेगा, आयेगा वापस मुंह लटका कर। उन्हें यों कहो तो ज्यादा अच्छा, लौट कर बुद्धु घर को आये।

हाज़ी मुस्तफ़ा - (साबू भाई के बादशाह के सामने, अपना वज़ीर बढ़ाते हुए) - हुजूर को किश्त। अब मुंह लटकाने की बारी, आपकी है।

(साबू भाई के सिवा, सभी लोगों के ठहाके गूंज उठते हैं। मंच की रोशनी लुप्त हो जाती है।)

(३)

(मंच रोशन होता है। स्कूल का बरामदा दिखाई देता है। बरामदे में सभी वालेदान कुर्सियों पर तशरीफ़ आवरी है। टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है। शमशाद बेग़म कमरे की सफ़ाई लिये सामने से आरही है। झाड़ू को अपने दायें कंधे पर इस तरह ऊंचाये रखा है, मानों वह झाड़ू न होकर सौटां हो। वह वैसे भी, बार-बार टेलीफ़ोन की घण्टी बजने से परेशान हो चुकी थी। इसलिये, गुस्से में लाल-लाल आंखें

किये हुए....वह झाड़ू लिये ऐसे बढ़ रही थी, जैसे किसी [13]ख़न्नास को सज़ा देने जा रही हो। उसका यह रूख़ देख कर, सारे वालेदान घबरा जाते हैं। घबरा कर एक वालेदान कह बैठता है, दूसरे वालेदान से।)

पहला वालेदान - (घबरा कर) - ओऽऽ मेरे मोला। ख़ुदा रहम...ख़ुदा रहम। अरे भाईज़ान, यहाँ तो ऐसे आवभगत होती है। अब कभी फीस मांगने आयेंगे नहीं, यहाँ।

दूसरा वालेदान - (दिलासा देते हुए) - अरे ओऽऽ मरियम के अब्बा। क्यों, गला फाड़ रहे हो ? अल्लाह महफ़ूज़ रखे, आपको। अब तो जनाब, पानी सर पर आ गया....सहा नहीं जा रहा है। इन नामाकूल जैलदारों का दिमाग़ दुरस्त करना पड़ेगा....ना पूछा चाय का, ना पूछा पानी का।

पहला वालेदान - ऊपर से यह कम्बख़्त, झाड़ू मारने चली आ रही है ?

तीसरा वालेदान - कीजिये ना दुरस्त, किसने मना किया ? अभी फन्नेखां साहब को लेकर चलते हैं, जिला कलेक्टर के दफ़्तर। इस बड़ी बी व इन मुलाज़िमों के खिलाफ़, दरख़्वास्त पेश करनी होगी। फिर तो मियां, आप ज़रूर इनके हाथ के तोते उड़ते देखोगे।

(अब यह टेलीफ़ोन की घण्टी, टिंग-टिंग की आवाज़ करती हुई कर्ण-भेदी सुर पैदा कर देती है। फिर क्या ? बेचारी शमशाद बेग़मझाड़ू फेंक कर टेलीफ़ोन की ओर लपकती है। साथ में, बड़बड़ाती जाती है।)

शमशाद बेग़म- (बड़बड़ाती है) - ठण्ड के दिनों में, बादाम-पिस्तों का बना हलुआ खाओ। दिमाग़ में गर्मी बढ़ाना, तन्दरूस्ती के लिये अच्छा नहीं है। (वालेदानों से) चलिये, हटिये। टेलीफ़ोन अटेण्ड करना है। शयद, बड़ी बी का होगा।

(वालेदानों के एक तरफ़ हट जाते हैं। शमशाद बेग़म फिल्मी नग़मा गाती हुई टेलीफ़ोन के क़रीब जाती है।)

शमशाद बेग़म- अभी बोलेगी “आ जाऽऽ...आ जाओ, मेरे घर। (फिल्मी गीत गाती हुई) झलक दिखलाऽऽ जा...एक बार आ जाऽऽ...आ जाऽऽ आऽऽ जा.. झाड़ू लगा जा..... एक बार आजा आजा आऽऽ जा....।

(उसका गीत सुन कर, वालेदानों के लबों पर मुस्कान छा जाती है।)

एक वालेदान - ख़ाला। क्या कहना है ? माशाअल्लाह् आपके नग़में ने, रूख़्सत कर दिया हमारे गुस्से को। अब तो ख़ाला, आपको दिखलाना होगा बड़ी बी को... अपनी यह अदा, हाथ में झाड़ू लिये।

दूसरा वालेदान - अरे यार इसे झाड़ू नहीं, शमशीर कहो बिरादर....अच्छा रहेगा।

शमशाद बेग़म- (गुस्से में) - खामोश। नासपीटे, अभी दिखलाती हूं झलक.. यह शमशीर चलाकर। यहीं खड़ा रह, आती हूं अभी।

मरियम के अब्बा - गुस्सा थूको, ख़ाला। यह बेचारा नादान है, तुम तो टेलीफ़ोन की घण्टी सुनो। तुम क्या ज़ानो, बेचारी बड़ी बी चोगा सम्भालती-सम्भालती थक गयी होगी?

शमशाद बेग़म- आप लोग क्या ज़ानो, मेरी क्या दशा है ? इधर आ रहा है, चक्कर। सर में दर्द है, अलग से। करें क्या ? आख़िर ठहरे, जैलदार। आपका हुक्म तो हमें मानना ही पड़ेगा जनाब, आख़िर यह ठहरी हमारी मज़बूरी। (जाकर चोगा उठाती है) हल्लू, कौन साहिब है ?

टेलीफ़ोन से आवाज़ आती है - साहिब नहीं ख़ाला। ज़बान पर ज़ोर देकर कहिये...“ बड़ी बी हाज़िर हूँ, फ़रमाइये।”

शमशाद बेग़म- माफ़ करना, बड़ी बी। ग़लती हो गयी, आगे से ध्यान रखूंगी।

आयशा - (फ़ोन से) - आप सब भूल जाती है, ख़ाला। कल चान्द बीबी के साथ, हमने क्या कहलाया था ?

(शमशाद बेग़म कुछ ना कह कर, पल्लू को लबों पर रखते हुए हंसी को दबाती है।)

आयशा - (फ़ोन पर) - ज़बान तालू से, चिपक गयी क्या ? या ना बोलने की कसम खा रखी है, ख़ाला ? क्या ज़माना आया...? हमारी ज़बान ख़ाला ज़ान....ख़ाला ज़ान, कहते-कहते थकती नहीं। और जैसी [9]आरिफ़ मोहतरमा को मोहब्बत से बुलाते हैं, अपनी अफ़सरशाही को ताक में रखते हुए....मगर आप....?

शमशाद बेग़म- (फ़ोन पर) - गुस्ताख़ी माफ़ हो, बड़ी बी, ज़रा हमारी दास्तान तो सुन लीजिये एक बार...। कल फज्र की नमाज़ करने बाद, हमारे मियां का दुकने लगा पेट। तब से बड़ी बी, उनकी ख़िदमात में लगी हूं। करूं, क्या हुजूर ? नसीब ख़राब ठहरा, कल शाम को बेचारे दिलावर भाई को छुट्टी के बाद स्कूल के ताले लगाने पड़े।

आयशा - (फ़ोन पर) - तो फिर, चान्द बीबी ने आकर कहा नहीं आपको ?

शमशाद बेग़म- (फ़ोन पर) - यही, बात...तसलीमात अर्ज़ करना चाहती हूँ, हमारे रूख़्सत होने तक, वह मोहतरमा आयी नहीं। अब आप ही बता दीजिये बड़ी बी। हमारी मुलाक़ात, चान्द बीबी से तब कैसे होती ?

आयशा - (फ़ोन पर) - अब छोड़िये, मेरी अम्मा इन बातों को। अब आप यह बतायेंगे ? अब तो दीदार हो जायेंगे, आपके ? या फिर, आपके शौहर-ए-आज़म....

शमशाद बेग़म- (फ़ोन पर) - हुजूर। शौहर तो पड़े हैं, बीमार। वैसे भी वे मन-मर्ज़ी के मालिक है, आप समझ गयी होंगी, वे ऐसे [11]शाअबदा बाज़ नहीं जो मुझे साइकल पर बैठा कर आपके घर छोड़ दें।

आयशा - (फ़ोन पर) - उनको क्यों बुलाती हो, आप?

शमशाद बेग़म- कारण यह है, बड़ी बी..... मुझे चक्कर आते रहते है। मैं ठहरी, ब्लड प्रेसर की मरीज़। जनाब, पैदल चलती हूँ.......तो

दुकने लग जाते हैं मेरे घुटने। इधर जनाब, मेरा सर घूमने लगता है घन-चक्करी की तरह। उधर ये......हमारे शौहर....?

आयशा - (फ़ोन पर) - सब देख लेंगे, आप टेक्सी में बैठ कर तशरीफ़ रखिये। तबीयत ख़राब हो गयी, तो आप वहीं सो ज़ाना। और क्या ? हकीम साहब को भी बुला लूंगी, जाते वक़्त आपके लिये सवारी का भी इन्तजाम कर दूंगी। अब तो, ठीक है ? मंजूर है, मेरी अम्मा ?

शमशाद बेग़म- (फ़ोन पर, रूआंसी आवाज़ में) - क्या कर सकती हूँ, हुजूर ? आना तो पड़ेगा ही.....आप अफ़सर हैं, हम ठहरे आपके अदद मुलाज़िम। आप समझ लेना, हुजूर। सुर्ती फाँकती रहूंगी, फिर थूकूंगी पीक। फिर कभी शंका हो हो गयी तो, पाख़ाना चली जाऊंगी।

आयशा - आप फ़िक्र ना करो, हमारे ग़रीबखाने में ख़ुदा की फ़जल से, दो-दो पाख़ाने बने हैं। बस आप आ जाओ, अब मैं आगे कुछ

सुनना नहीं चाहती। (चोगा क्रेडिल पर रखने की आवाज़ आती है।)

(शमशाद बेग़म चोगा क्रेडिल पर रखती है, सामने तौफ़ीक़ मियां आते दिखाई देते हैं।)

शमशाद बेग़म- (तौफ़ीक़ मियां की ओर, देखते हुए) - या अल्लाह। ऐसा क्या मुलाज़िम बनाया है, हमें ? जिसे शौहर के साथ-साथ इन अफ़सरों को भी, ख़ुश रखना पड़ता है। हम ठहरे [10]शऊर वाले, इनके सामने बोल नहीं सकते.....

(शमशाद बेग़म ताक पर रखी, थैली व टिफिन उठाती है। फिर, तौफ़ीक़ मियां को आवाज़ देकर बुलाती है। तौफ़ीक़ मियां नज़दीक आकर, आदाब कहते हैं। वह उनसे कहती है।)

शमशाद बेग़म- हम चले ख़िदमत करने, इन अफ़सरों की। वापस लौटने का पत्ता नहीं, कब आयेंगे। आप देखते रहना स्कूल को, अब क्या करना है ?

तौफ़ीक़ मियां - इस स्कूल को देखते हैं, रोज़। आज़ भी देख लेंगे, ख़ाला। बदलती रहती है सियासत, मगर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हम तो वहीं खड़े हैं...और वहीं खड़े रहेंगे, ख़ाला।

(शमशाद बेग़म थैली और टिफिन लिये चल देती है। दीवार पर टंगी घड़ी की सूंई, दस बजे का वक़्त बता रही है। पोर्च में दाऊद मियां तशरीफ़ रखते हैं, वहां बैठी मेडमें उन्हे आदाब कहती है। अब दाऊद मियां ख़ाली रखी कुर्सी पर तशरीफ़ आवरी होते हैं।)

दाऊद मियां - (पसीना पोंछते हुए) - हायऽऽ परवरदीगार। क्या मुक़द्दर ठहरा, हमारा ? हम ठहरे दफ़्तर-ए-आज़म, फिर भी ज़ाना पड़ता है हमें कभी लेखक तो कभी हेड ऑफिस। (जम्हाई लेते हुए) थक गया, यार तौफ़ीक़ मियां। ज़रा, पानी लाना। (पास बैठे वालेदानों से) हुजूरे आला। आप लोग, यहां कैसे तशरीफ़ लाये हैं ?

एक वालेदान - जनाब। बड़ी बी के इन्तजार में बैठे हैं, हम। कब वह आये यहां, और हम उनसे कम्प्यूटर फीस वसूल कर लेंऽऽ ? बस, हुजूर यही हमारा मक़सद है। आपसे इल्तिज़ा है, के....

दाऊद मियां - (हंसते हुए) - बड़े मियां। कुछ देर बैठिये, हुजूर। आपकी अच्छी क़िस्मत रही तो, बड़ी बी के दीदार हो सकते हैं। आप नहीं ज़ानते, बड़ी बी की फ़ितरत ? फीस लौटाने की बात छोड़िये जनाब, आपकी जेब से... हजार-दो हजार रूपये, टूर्नामेण्ट के नाम चन्दा ज़रूर वसूल कर लेगी।

दूसरा वालेदान - (उठते हुए) - उठो रे ऽऽ, बिरादर। यहां कहाँ फंस गये, यार ? आये थे फीस वसूल करने, मगर यहां तो जेब के पैसे भी जाते रहेंगे। हायऽऽ अल्लाह। क्या ज़माना आ गया, मियां ? सर मुण्डाते ही, ओले आ गिरे।

मरियम के अब्बा - (उठते हुए) - चलो रे...चलो। वापस, घर चलते है। अब लौट चलो, बस अब लोग यही कहेंगे यहीं कहेंगे के 'लौट कर बुद्धु घर को आये।'

(सभी वालेदान, रूख़्सत होते हैं। उनके ज़ाने के बाद, दाऊद मियां के हंसी के ठहाके गूंज उठते हैं। मंच पर अन्धेरा छा जाता है।)

कठिन अल्फ़ाज़ों के मफ़हूम -ः 1 ग्रज़ाल चश्म : मृगनयनी, 2 मुख़्तलिफ़ : विभिन्न (अलग) , 3 बिसायत : जिस पर मोहरें जमाये जाते हैं, 4 आहूचश्म : मृगलोचना, मृगनयना, 5 दफ्अतन : अचानक से, 6 समाने खुरोनोश : खाने-पीने की समान, 7 लफ़्ज़ी इख़्तिलाफ़ : ज़बानी लड़ाई, 8 नातिका : वाक शक्ति, 9 आरिफ़ : ज्ञानी, सन्त, भक्त, 10 शऊर वाला : विवेकी, ज्ञानी, शिष्ट, 11 शाअबदा बाज़ : चमत्कारी, जादूगर, 12 बिसायत : छोटी जाजम जिस पर शतरंज के मोहरे जमाये जाते हैं। 13 ख़न्नास : शैतान ।

(अजज़ा १४) कलाग़ कभी लाय में नहीं जलता लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

(1)

(मंच रोशन होता है, स्कूल के बरामदे का मंजर दिखाई देता है। बरामदे में दाऊद मियां, आक़िल मियां, व मियां शेरखान कुर्सियों पर बैठे हैं। शमशाद बेग़म स्टूल पर बैठी-बैठी अपनी हथेली पर जर्दा व चूना रखकर, दानों को मसलती हुई सुर्ती तैयार कर रही है गुफ़्तगू का बाज़ार गर्म हो रहा है।)

दाऊद मियां - आक़िल मियां। ज़रा सम्भल कर बोला करें। न बोलो तो, और ही अच्छा। जानते हो, आज़कल मश्वरें देने का ज़माना नहीं रहा।

शेरखान - अजी सलाह दें, तो कोई गलत बात नहीं। मगर सच बोलना, इनकी बुरी आदत ठहरी। कोई बात दिल में छुपा कर नहीं रख सकते, यार। काहे ज़रूरत थी, तौफ़ीक़ मियां को जमाले की हरकतों के बारे में ज़ानकारी देने की ?

शमशाद बेग़म- हुजूर। ये तो भोले हैं। (तैयार सुर्ती पर थप्पी देती हुई) यही कारण है, दाऊद मियां इनसे कई मुद्दों पर बात ही नहीं करते। इनको क्या मालुम, तौफ़ीक़ मियां का जमाले के साथ कैसा रब्त है ?

दाऊद मियां - ख़ाला। तौफ़ीक़ साहब आज़कल, बड़ी बी के ख़ास प्यादे बने हुए हैं। अगर कोई बात कह दें इनके सामने...(इधर-उधर देख कर) ज़ानते नहीं, वे नमक-मिर्च लगा कर बड़ी बी के सामने परोस देते हैं।

शमशाद बेग़म- वज़ा फ़रमाया, हुज़ूर। अब तो मैं इनकी किसी बात की, ताईद ना करूंगी। अब देखिये बड़ी बी कह रही थी "ख़ाला। चान्द बीबी ने आपको दफ़्तर की चाबियाँ दी, आपने चान्द बीबी से मुलाकात की थी। फिर आप, झूठ क्यों बोल रही है ?" हुज़ूर, मैं तो उनके लग्व से परेशान हो गयी।

दाऊद मियां - ख़ाला। चाबियाँ देते वक़्त या तो मैं था वहां, या थे जनाब तौफ़ीक़ मियां....मौजूद। मैं तो कहने से रहा, और तौफ़ीक़ मियां को तो आप ज़ानती ही है। वे उगते सूरज को सलाम ठोकने में, वे कभी बाज़ नहीं आते।

(सिगरेट का अन्तिम कश लेते हुए, तौफ़ीक़ मियां आते दिखाई देते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (जाफ़री से बाहर, जली सिगरेट के टुकड़े को फेंकते हुए) - मुअज़्ज़म दानिशों की महफ़िल में किस मुद्दे पर लफ़्ज़ी इख़्तीलाफ़ चल रहा है, हेडसाहब ? (नज़दीक आते हैं)

दाऊद मियां - ना फर्माइशी गर्मी....ना कोई लफ़्ज़ी इख़्तीलाफ़ मियां, आप ज़रा अपनी नाक-भौं की कमानी को दुरस्त करके देख लीजिये।

तौफ़ीक़ मियां - (लबों पर मुस्कान बिखेरते हुए) - जनाब। हम तो मिडिया हैं, जर्रे-जर्रे की ख़बर रखते हैं। फिर कैसे छुपी रहेगी ये ख़बरें, जिन्हे आप सात पर्दो के अन्दर छुपा कर रखते आये हो ?

शमशाद बेग़म- यों आप तरदीद करना चाहे तौफ़ीक़ मियां, दूसरी बात है। अभी-अभी आपने सबके सामने क़ुबूल किया, आप जर्रे-जर्रे की ख़बर रखने वाले मिडिया है। अब बताइये, आपने बड़ी बी को क्या कह दिया ? आपके सिवा कोई ऐसा शख़्स नहीं, जो बेबाक़ ख़बरें परोस कर इत्मीनान से बैठ जाय ?

तौफ़ीक़ मियां - (तेज़ सुर में) - मैं कोई परोसने वाला बावर्ची नहीं हूं, ख़ाला। तसल्ली रखो, ख़ाला। हमने ऐसा कुछ नहीं कहा बड़ी बी से।

(अब सुर्ती तैयार हो जाती है, शमशाद बेग़म दाऊद मियां व मियां शेरखान को सुर्ती थमा कर बची हुई सुर्ती अपने होंठों के नीचे दबा देती है।)

तौफ़ीक़ मियां - हमें भूल गयी, ख़ाला ? हम भी बैठे है, महफ़िल में। दीजिये ना सुर्ती, काहे की इतनी बेरूख़ी ?

शमशाद बेग़म- (जर्दे की पेसी थमाती हुई) - लीजिये पेसी, आप ख़ुद ही बना लीजिये अपने लिये। यह ख़ाला तुम्हारी जैलदार नहीं है, मियां। जाइये...जाइये, बड़ी बी की ख़िदमात में....सोच लीजिये अब दुदस्तः रहना, अब कोई समझदारी नहीं। क्यों कहा आपने, चान्द बीबी से हमने उनसे चाबियाँ ले ली थी ?

तौफ़ीक़ मियां - (तेज़ आवाज़ में) - ली चाबियाँ, आपने....बिल्कूल सच है। कह दिया, तो कौनसा गुनाह किया ? (पेसी फेंकते हुए) लीजिये, अपनी पेसी। हमें नहीं चखनी, आपकी सुर्ती। चलता हूँ।

दाऊद मियां - कहां जा रहे हो, मियां ? (बैठने के लिये स्टूल आगे रखते हुए) बैठिये, ज़रा। तसल्ली से करते हैं, बात। ख़ाला कौनसी ग़ैर है ? कह दिया तो क्या हो गया, आपकी बड़ी बुज़ुर्ग है।

(तौफ़ीक़ मियां बैठते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - हेड साहब। ज़रा सी बात का, बवण्डर बना दिया ख़ाला ने....बड़ी बी ने पूछा, के दफ़्तर की चाबियाँ कहाँ हैं ? हमने कह दिया, चान्द बीबी के पास में। बड़ी बी ने वापस सवाल किया "चान्द बीबी को किसने दी ?" हमने कह दिया "ख़ाला ज़ान ने।" इसमें, मैने क्या ग़लत कह दिया ? हेड साहब। अब आप ही बताइये, के गुस्ताख़ी किससे हुई ?

शमशाद बेग़म- (तौफ़ीक़ मियां से) - आपने यह क्यों कहा? के, चाबियां हमने ही उनको दी है। यह भी कह सकते थे, के किसी ने चाबियां उनके घर पहुंचा दी है। हायऽऽ अल्लाह, हमने क्या ख़ता की ऐसी......? तौफ़ीक़ मियां की लग्व, जीव का जंजाल बना गयी।

तौफ़ीक़ मियां - हमने कहां गुस्ताख़ी की है, ख़ाला ? सदाकत से कहा है, मुख़्बिरे सादिक बनना काहे की गुस्ताख़ी ?

शेरखान - चलिये हेड साहब। आज़ से तौफ़ीक़ मियां का नाम, आक़िल मियां के साथ सच बोलने वालों की फ़ेहरिस्त में लिख दिया जाय......तो क़ाबिले एतराज़ ना होगा।

तौफ़ीक़ मियां - अब यहां क्या बैठना ? जहां लोगों ने गर्देमलाल का अलील पाल रखा है, जो इंसान के सलाहियत से जबीं ना रखता। चलता हूँ.....।

शमशाद बेग़म- रूख़्सत होना चाहते है, तो आप शौक से जाइये। मगर यह ना पूछेंगे सवाल, के हमको क्या-क्या ज़हमत उठानी पड़ी ?

तौफ़ीक़ मियां - हम क्यों सवाल करेंगे, ख़ाला ? हमसे मोहमल सवाल उठाये नहीं जाते.....आ़खिर हम काम करते हैं, स्कूल का। किसी के घर का काम करते नहीं...जो गालिबन, बाइसेरश्क का कारण बन जायें।

(इतना कहकर तौफ़ीक़ मियां पाँव पटकते हुए, चल देते हैं।)

शमशाद बेग़म- क्या कहूँ, हेड साहब ? आज़कल तौफ़ीक़ मियां के पर लग गये हैं, जब से ये जमाल मियां की सोहब्बत में आये हैं। हुज़ूर आक़िल मियां की नादानी, और तौफ़ीक़ मियां का जमाल मियां के कान भरना। इनकी हरक़तें अब सही नहीं जाती...हुज़ूर।

दाऊद मियां - क्या हुआ ? आपको क्यों नाराज़गी है, उनसे ?

शमशाद बेग़म- जनाब, आपको कुछ पत्ता नहीं ? जमाल मियां ने तौफ़ीक़ मियां से कह दिया, के आप आराम करें। और हमसे चालीस अदद बस्ते व किश्तियाँ तैयार करवा कर, हमारे इन हाथों से गाड़ी में रखवा दिए.....हायऽऽ अल्लाह। धूल से नहा गयी, इधर आ रहा था चक्कर।

शेर खान - अरे दाऊद मियां, जमाल मियां चूहे की तरह क्यों क्यों फुदक रहे हैं? ज़ानते हैं, आप? इनके पीछे, बड़ी बी का ज़ोर है जनाब।

दाऊद मियां - (शमशाद बेग़म से) - छोड़ो, ख़ाला....ये मोहमल बातें। वह खुद झूठ की तामिर पर खड़ी है, हर मुलाज़िम का अन्दाजे बयान कुछ गंजलक लगता है...उसे। वह क्या ज़ाने, ख़ाला ? उसका आने वाला ग़द क्या है ?

शमशाद बेग़म- हेड साहब, हम समझ ना सके। जनाब, आपका मफ़हूम क्या है ?

दाऊद मियां - जमाल मियां किस के पीछे, इतनी कूद-फांद मचा रहे हैं ? उसके पीछे, बड़ी बी का सपोर्ट है। अब आप, बड़ी बी के बारे में ही सुनो। तसलीमात अर्ज है, अभी कुछ रोज़ पहले का वाकया है। सुनो, रेल्वे क्रोसिंग पर नासीर मियां की मुलाकात हो गयी रशीद मियां से।

शमशाद बेग़म- नासीर मियां कौन मुअज़्ज़म है, जनाब ? कहीं....

दाऊद मियां - मुक़्तज़ाए उम्र, ख़ाला आपकी याददाश्त इतनी कमज़ोर ? याद करो....नासीर मियां कुछ रोज़ पहले, इस स्कूल में

डेपुटशन पर काम किया था। जो रशीद मियां के अज़ीज़ दोस्त ठहरे।

शमशाद बेग़म- याद आया, जनाब। ये नासीर मियां वो है, जिनको रशीद मियां ने अपनी बेग़म आयशा की मुख़्बिरी के लिये इस स्कूल में मुस्तैद कर रखा था....डेपुटेशन पर लगा कर। सब याद आ गया, हुज़ूर।

दाऊद मियां - बस...अब ये मियां उनके साहबे आलम से मिलते ही, उनके कान भरने लगे। कहने लगे, के......रेल्वे स्टेशन के प्लेट-फॉर्म पर भाभीज़ान खड़ी-खड़ी इस रसिक एम.एल.ए. से मुस्कराती हुई, गुफ़्तगू कर रही थी....और क्या कहूं, जनाब ? वे दोनों पहली श्रेणी के एयर कण्डीशन डब्बे में बैठकर, जयपुर रूख़्सत होने का प्लान बना रहे थे।

शमशाद बेग़म- फिर क्या कहा, हुज़ूर ?

दाऊद मियां - क्या कहें, ख़ाला ? मुनासिब नहीं लगता, कोई शौहर और बीबी के बीच दंगल करवा कर ऐसा मकरूर काम करे। मगर, नासीर मियां में कहां इंसानियत ?

शमशाद बेग़म- उनका तो ऐसी ख़बरें पाकर, कलेज़ा हाथों उछलता है। फिर क्या ?

दाऊद मियां - आव देखा, ना ताव। झट अंगारों से भरे इस वाकये को, परोस दिया रशीद मियां के सामने।

शेरखान - काहे फ़िक्र करते हो, हेड साहब ? (जम्हाई लेते हुए) बड़ी बी आयशा की फ़िक्र करने वाले मज़ीद मियां है, ना ? तौबा...तौबा। भूल गया, जनाब। अब नहीं लाऊंगा, ऐसी बात अपने लबों पर।

शमशाद बेग़म- (शेरखान से) - जनाब। सुस्ती आ रही है ? कहो तो, सुर्ती तैयार कर दूं ?

शेरखान - (आंखें मसलते हुए) - सुर्ती से क्या होगा, ख़ाला ? चाय बना दीजिये ज़रा, तो....इंशाअल्लाह ताज़गी आ जायेगी बदन में।

शमशाद बेग़म- (दाऊद मियां से) - इनकी बात छोड़िये, हेड साहब। ये जनाब, कहां चाय पीने वाले हैं ? सारी चाय, ठण्डी कर के रख देंगे। क़िब्ला....आप बताइये, आगे क्या हंगामा होगा ? या...

दाऊद मियां - ख़ाला, हमने बड़ी बी को सुबह-सुबह फ़ोन लगाया। बेचारी रोती हुई कहने लगी "हमारा मूड ख़राब है, तीन दिन से पीहर में बैठे हैं। ज़रा, उन रशीद मियां को समझा देना...."बस ख़ाला इतना ही बोली, और ज़ार-ज़ार रोने लगी। तौबा....तौबा। हमसे हो गयी ख़ता, हमने क्यों लगाया उनको फ़ोन ?

शमशाद बेग़म- आपकी क़िस्मत ज़हीन ठहरी मियां.....उन्हे क्या मालुम, आप ठहरे नावाक़िफ़ ?

दाऊद मियां - कोई नेकबख़्त ऐसी वाहियात हरकत नहीं कर सकता, ख़ाला। वो भी, अपनी बेग़म के साथ ? शक का बीज़, उगने के बाद, आदमी का दिमाग़ काम करना बन्द कर देता है। बस....फिर, क्या ?

शमशाद बेग़म- फिर, क्या? आगे कहिये, जनाब। कहीं कोई, ऐसी-वैसी बात तो नहीं?

दाऊद मियां - इस वाकया को सुन कर, रशीद मियां ने घर आये। और आकर, बेचारी आयशा मेडम को वहशी ज़ानवरों की तरह पीट डाला। बेचारी के मासूम बदन पर कई जगह, चोटें आई और उनसे खून रीसने लगा।

(तभी बड़ी बी के कमरे से, किसी के सिसकने की आवाज़ सुनाई देती है।)

दाऊद मियां - यह क्या ? ख़ाला, यह तो किसी के सिसकने की आवाज़ है। हायऽऽ, अल्लाह कहीं.....

शमशाद बेग़म- अरे जनाब, यह तो बड़ी बी आयशा के सिसकने की आवाज़ है। ख़ुदा ख़ैर करे, उनकी तबीयत हलकान ना हो। क़िब्ला....पत्ता ही ना पड़ा हमें, कब बड़ी बी तशरीफ़ लायी ?

दाऊद मियां - आपको फिर ध्यान क्या रहता है, ख़ाला ? आप तो एक नम्बर की भुलक्कड़ ठहरी, कल खो कर आ गयी अपने खाने का

सट उसी सुनार की दुकान पर। जहां आप अकसर, दूध लाते वक़्त हफ़्वात करने बैठ जाती हैं।

शमशाद बेग़म- अब देखो उधर, इमतियाज़ मेडम आ रही है बाहर, उनके कमरे से। (उंगली का इशारा करते हैं) अरे हेड साहब, वहाँ तो और भी मोहतरमाएं बैठी होगी...आपको क्या मालुम ?

(इमतियाज़ मेडम शमशाद बेग़म के पास आती है, और दस का नोट देकर शमशाद बेग़म से कहती है।)

इमतियाज़ - (दस का नोट थमाती है) - ख़ालाज़ान। ज़रा दूध लेकर आना, फिर आकर चाय बना देना।

शमशाद बेग़म- (उठती है) - ख़ैरियत तो है ? क्या...

इमतियाज़ - ख़ैरियत कहाँ ? ख़ाला। जो कहा है, वह काम पहले करो। बड़ी बी की तबीयत कुछ नासाज़ है, ज़रा अपनी थैली टटोलना। शायद कोई पेन किलींग टेबलेट मिल जाए, आपकी थैली में ? टेबलेट चाय के साथ दे दूंगी, तो सारी तासीर दूर हो जायेगी।

(शमशाद बेग़म थैली में टेबलेट टटोलती है, फिर मिलने पर इमतियाज़ को थमाती है। टेबलेट लेकर इमतियाज़, वापस बड़ी बी के कमरे में दा़खिल हो जाती है।)

दाऊद मियां - मुक़्तज़ाए फ़ितरत आपकी क्या गन्दी आदत है, हर किसी से ख़ैरियत पूछने की ? नहीं ज़ानती, इस इमतियाज़ की आदत? यह कम्बख़्त, हर किसी को मुंह-तोड़ जवाब देती आई है ?

शेर खान - कम्बख़्त हर वक़्त बड़ी बी की ख़ैरख़्वाह बनने का ढोंग करती है, ऐसा जताती है...जैसे उसके समान कोई, बड़ी बी का कोई एहबाब नहीं।

दाऊद मियां - अब जाइये, मुंह मत देखिये मेरा। जाकर दूध लेकर आ जाइये। ना तो यह मर्दूद बड़ी बी को क्या-क्या पट्टी पढ़ा देगी, आपको सफ़ाई देनी मुश्किल हो जायेगी।

शमशाद बेग़म- जग लेकर, रूख़्सत होती हूँ। मगर हेड साहब, तब तक आप क्या करेंगे ? कहो तो आपके लिये सुर्ती तैयार कर के ही जाऊँ ?

दाऊद मियां - मरहूम के मुताल्लिक मशहूर कर रखा है हमें, के हम खिड़की के पास बैठ कर बड़ी बी की गुफ़्तगू पर कान दिये रखते हैं। फिर वल्लाह आज़ क्यों ना सुन लिया जाय, के माज़रा क्या है ? आज़ तो चटपटी ख़बरें आने का ख़ास मौक़ा है।

शमशाद बेग़म- हुजूर। खिड़की के पास आपकी सीट लगी है, और वहीं है टी क्लब की टेबल। जैसा आप चाहें, वहीं कुर्सी पर तशरीफ़ आवरी होकर सुनते रहे उनकी बातें। आगे, आपकी मर्जी। आ़खिर, आपको रोकने वाला है कौन ? हम तो हुजूर, ठहरे हुक्म के गुलाम।

शेर खान - क्या करें, ख़ाला? आ़खिर आपको तो ज़ाना पड़ेगा दूध लाने, फिर वापस आकर चाय भी बनानी है। सुनार की दुकान खुली होगी, तो आप अपना सट भी लेती आना।

(शमशाद बेग़म रूख़्सत होती है, धीरे-धीरे उसके पाँवों की आवाज़ आनी बन्द हो जाती है। मंच पर अन्धेरा फैल जाता है।

(२)

(मंच रोशन होता है। बड़ी बी के कमरे की खिड़की दिखायी देती है, उससे सटकर जनाबेआली दाऊद मियां खड़े हैं। खड़े-खड़े वे अन्दर की गुफ़्तगू सुनने के लिये, खिड़की पर अपने कान लगाये बैठे हैं। उनके पास ही कुर्सी लगा कर मियां शेरखान, बैठे हैं। जो हमेशा की तरह, आंखें बन्द किये आराम से नीन्द ले रहे हैं। कमरे के अन्दर बड़ी बी के पास इमतियाज़, ग़ज़ल बी व नसीम बी कुर्सियों पर बैठी है। आयशा के चेहरे व हाथों पर, कई चोटों व खरोचों के निशान दिखाई दे रहे हैं। आयशा बार-बार उन मोहतरमाओं को अपनी चोटें दिखलाती हुई, सिसकती जा रही है।)

इमतियाज़ - (दुःख भरे लहजे से) - आपकी यह हालत देखकर, हमारी आंखें से तिफ़्लेअश्क गिर पड़ते हैं। आप बतायें क़िब्ला, ऐसी हरकत करने वाला है कौन ? ख़ुदा रहम। ख़ुदा बचाये ऐसे आदमी से, जिसके पास ऐसा कठोर कलेज़ा हो ?

नसीम बी - अरे जनाब, हम तो अपने शौहर को इस तरह की तालीम दे चुके हैं... वे कभी ऊंची आवाज़ में बात नहीं कर सकते,

हम से। वे क्या बोले, मेडम ? एक उंगली दिखा दूं उनको, बस बेचारे भीगी बिल्ली बनकर किसी कोने में दुबक कर बैठ जाते हैं।

गज़ल बी - हुजूर। हमारे साथ ही, हमारी सास रहती है। उनके होते हुए, शौहर-ए-आज़म की इतनी हिम्मत नहीं होती...वे हमें आंख दिखाये। जनाब, यही तो फ़ायदा है.. जोइन्ट फेमेली में, रहने का।

इमतियाज़ - अरी आपा। सदका उतारू आपका, इमामजामीन पहनाऊं क्या आपको ? क़िब्ला ऐसी दर्द-ए-अंगेज बातें क्यों लाती हैं, इनके सामने ?

नसीम बी - (पाला बदलती हुई) - ख़्वाहमख़्वाह यह क्या ले बैठी, ऐसी दर्द-ए-अंगेज बातों को ? ज़रा ख़्याल करो, बड़ी बी का। अब क्या करना है ? ज़ानती नहीं, बेचारी कितनी परेशान हैं ? इस मज़्फ़ूर पर, ज़रा सोचा जाय।

आयशा - रहने दीजिये, मज़्फूर का क्या करना ? (सिसकती जाती है, फिर इमतियाज़ से कहती है।) अरी इमतियाज़, दर्द सहा नहीं जा रहा है। ज़ानती हो? तीन दिन तक, पीहर रही।

गज़ल बी - उसके बाद ?

आयशा - उसके बाद एक दिन आख़िर, गयी अपने घर। घर पर उनसे हो गया वक़्ती इख्तिलाफ़। मियां पूछने लगे, तीन दिन कहाँ रही ? हायऽऽ अल्लाह, उन्होने झूठा आरोप मण्ड दिया हम पर। कहने लगे, हम उस शैतान एम.एल.ए. के साथ एक ही कोच में बैठ कर उसके साथ जयपुर गयी थी।

नसीम बी - हाय अल्लाह, ऐसी झूठी तोहमत? ख़ुदा ख़ैर करे, आपका। मेडम, तब आपका क्या जवाब रहा ?

आयशा - हमने कह दिया, 'जनाब, एम.सी. में रहने के कारण हम तीन दिन के लिये मायके चली गयी थी।' फिर उनको याद दिलाया, क्या आपको पड़ोसन जुबेदा ने कुछ नहीं बताया ? के,

हमारे अब्बाज़ान की तबीयत नासाज़ है...? इस कारण, तुरन्त आपसे बिना मिले पीहर चले गये।

ग़ज़ल बी - फिर क्या, जी?

आयशा - इतना सुन कर, मियां का दिमाग़ गर्म हो उठा। वे चिल्ला कर कहने लगे “झूठ मत बोलो, बीबी। आपका झूठ पकड़ा गया। मियां नासीर ने सारा भेद खोल दिया है, आप उस शैतान एम.एल.ए. के साथ सफ़र कर रही थी। आप खुद रेल्वे...

नसीम बी - कहीं नासीर मियां ने देख लिया होगा, जब आप प्लेट फॉर्म पर एम.एल.ए. साहब के पास खड़ी थी। अरे हुजूर, आप गयी थी मंजूरी लेने..के, वे टूर्नामेण्ट में शरकत करेंगे या नहीं? हाय अल्लाह, इस माजरे को उन्होंने दंगल का मुद्दा बना दिया?

आयशा - वे बोले ‘इस माजरे को नासीर मियां ने, अपनी आंखों से देखा है। आप क्या हो, और क्या बनने का दिखावा करती आ रही है? हमारी आंखों में धूल झोंक कर, आप क्या-क्या गुल खिलाती रही हो ? अब बीबी, हम सब कुछ ज़ान चुके हैं।’ (सिसकती है)

नसीम बी - ये अश्क बहुत क़ीमती है, इन्हें जाया मत करो। हिम्मत रखो, आप कोई अबला औरत नहीं हैं। अपने पांवों पर ख़ुद खड़ी हैं, किसी का दिया आप खाती नहीं। समझी, आप ? आगे बोलो, फिर आपने क्या कहा ?

आयशा - कहना क्या ? मियां को बहुत समझाया, के हम ख़ाली उनको....अपनी छोटी बहन का तबादला, नज़दीक करवाने का काम याद दिला रहे थे। मगर, हम उनके साथ गये नहीं थे। हाय, अल्लाह। उन्होने हमारी एक बात भी नहीं मानी, ऊपर से कहने लगे...

ग़ज़ल बी - उन्होंने ऐसा क्या कह दिया, मेडम? कहीं, बेनियाम हो गये क्या?

आयशा - वे बोले "मियां नासिर खर्रास नहीं हो सकते, खर्रास आप ख़ुद है.....आप एक आहिरः औरत.....

(आयशा अब ज़ोरों से सिसकती है, तभी टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है। चोगा उठा कर कान के पास ले जाकर कहने लगती है।)

आयशा - (चोगा उठाकर) - हल्लो। आप कौन ?

फ़ोन से आवाज़ आती है - मेडम। हम है, दीन मोहम्मद। रसाला सैकेण्ड्री स्कूल के, दफ़्तर-ए-निगार। ज़नाब। आपके हुक्म की तामिल हो गयी है। रशीद मियां के ख़िलाफ़, अदालत में मआमला दर्ज़ हो चुका है। अब तक तो सम्मन जारी हो गये होगें।

आयशा - (फ़ोन पर) - शुक्रिया, जनाब आपका यह अहसान कभी ना भूलूंगी.....आपने बहुत मदद की है। यहां तो हमारे मायके वाले हम टूट पर पड़े, और कहने लगे...

दीन मोहम्मद - (फ़ोन पर) - ऐसा क्या कह दिया, हुज़ूर? वे तो आपके अपने हैं...

आयशा - (फ़ोन पर) - उन्होंने कह दिया, के "अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, चली जाओ वापस अपने ससुराल। मियां-बीबी के बीच इस तरह बरतन खटकते रहते हैं, ऐसे में नाराज़ होकर, पीहर आकर नहीं बैठा जाता। तुम सुलह कर लो।" हाय अल्लाह किसी ने भी, हमारी तकलीफ़ों को नहीं देखा।

दीन मोहम्मद - (फ़ोन पर) - जनाब। आपकी यह मदद हमारे लिये, बुरी साबित होगी। आपको, क्या मालुम ? मियां रशीद के साथ, हमारे रब्त ग़ारत हो गये। अब.....

आयशा - अब क्या ? मियां रशीद को, हक़ीक़त के दीदार होगें। अब मालुम होगा उन्हें, आख़िर हम क्या हैं ? मियां रशीद है क्या, आख़िर? दूसरी श्रेणी के सिनीयर टीचर। और हम है, गजटेड ऑफिसर। अब समझ में आया, कुछ?

दीन मोहम्मद - (फ़ोन पर) - क्या समझें, मेडम? आपके कारण, हमारे रसूख़ात ख़राब हो गये मियां रशीद के साथ।

आयशा - (फ़ोन पर) - क्यों फिक्र करते हो, मियां?़ बिना फ़ायदा, कोई किसी का काम नहीं करता है? यह ज़रूर है, आपने मुसीबत के वक़्त हमारी मदद की। हम ज़रूर आपका ध्यान रखेंगे, मियां।

दीन मोहम्मद - (फ़ोन पर, ख़ुशी से चहकते हुए)) - सच्च कहा, मेडम? अब हमें, कोई इस स्कूल से हटायेगा नहीं?

आयशा - (फ़ोन पर) - आपको ध्यान होगा, एम.एल.ए. साहब के साथ हमारे कितने अच्छे रब्त हैं ? अब हम आपसे वायदा करते हैं, के आपको रसाला सैकेण्ड्री स्कूल से कोई नहीं हटायेगा।

(आयशा क्रेडिल पर चोगा रख देती है, शमशाद बेग़म आती है। हाथों में थामी तश्तरी से, सबको चाय भरे प्याले थमाती है।)

शमशाद बेग़म- (चाय का प्याला थमा कर) - आप कहे तो हुजूर, यह मूव ट्यूब आपके हाथ-पांवों पर मसल दूं ? आप, ज़ानती नहीं? मेरे हाथों में जादू है, मेडम। मालिश करती हूं, अभी दर्द छू मंत्र हो जायेगा जी।

आयशा - मरहबा....मरहबा। ख़ाला, बस आप चान्द बीबी को घर से बुला दें। वह देख लेगी। (वक़्त पर, ख़ाला को उनकी कही बात याद दिलाती हुई) वैसे आपको अलील है...चक्कर आते रहते हैं.....

(जवाब ना देकर, शमशाद बेग़म कमरे से बाहर आ जाती है। वहां जनाब दाऊद मियां को खिड़की के पास, खड़े पाकर कह बैठती है।)

शमशाद बेग़म- आपके लिये मुनासिब नहीं, ऐसी बातें सुनना। अल्लाह मियां ने दिमाग़ दिया है, इंसानों को। कुछ सोचने को, ऐसे नाज़ुक मौक़ों पर क्या करना चाहिये ? मगर वह इंसान वक़्तीजज़्बा के तहत फरेक़शानी से लड़ाई शुरू कर देता है।

दाऊद मियां - सच कहा है, ख़ाला आपने। (वापस अपनी सीट पर बैठते हैं, और शमशाद बेग़म से चाय का प्याला लेकर आगे कहते हैं) नतीजे के एतबार से देखा जाय, तो ऐसी हर लड़ाई बेनतीजे अन्ज़ाम पर खत्म होती है....

शमशाद बेग़म- हुजूर, ऐसे में हमेशा नुक्सान मज़ीद इजाफ़ा का सबब बनती है। छोड़िये हेड साहब इन बातों को, आख़िर हमें करना क्या ? आज़ ये लड़ते हैं, कल वापस एक हो जायेंगे। अब आपके लिये सुर्ती बनाती हूं, ज़रा शेरखान साहब....

दाऊद मियां - (स्टूल आगे खिसकाते हुए) - आप फ़िक्र ना करें, ख़ाला। आप बैठ जाइये, बस। शेरखान साहब अभी उठ जायेंगे, जैसे ही यह जर्दे की खंक इनके नथुने में जायेगी....

(शमशाद बेग़म पेसी खोल कर जर्दा व चूना हथेली पर रख कर मसलती है, फिर लगाती है...थप्पी।)

शेरखान - (छींकते हैं) - आंक छींऽऽ आंक छींऽऽ। ख़ुदा रहम। क्या करती हो, ख़ाला ? जन्नती ख़्वाब देख रहा था, आपने उठा कर ग़ारत कर दिया...

शमशाद बेग़म- (चाय का प्याला थमाते हुए) - लीजिये जनाब, चायेऽऽ चायेऽऽ ऊनी ऊनी चाये.. मसाले वाली, चायेऽऽ।

शेरखान - (प्याला थामते हुए) - यह क्या करती हो, ख़ाला आप ? लूणी स्टेशन के वेण्डरों के माफ़िक चायेऽऽ चायेऽऽ की रट लगा रखी हो ? कहीं आप इन वेण्डरों से ट्रेनिंग लेकर तो ना आ गयी, यहां ? माशाअल्लाह, क्या आवाज़ निकालती हैं आप ?

शमशाद बेग़म- लूणी के प्लेटफॉर्म को मारो गोली। अभी बात कीजिये, इस स्कूल के प्लेटफॉर्म की। जनाब, इस स्कूल की साख़ गिरती जा रही है, ज़रा देखिये.....हुस्न की मल्लिका के, नये-नये खेल।

शेरखान - (आँखें मसलते हुए) - वल्लाह। क्या कहती हो, ख़ाला ? ख़ुदा रहम, आप तो कभी-कभी बहकती हुई बचकानी बातें कर देती हो। क्या बड़ी बी मदारी है....? जो नये-नये खेल दिखाती है, इस स्कूल में ?

दाऊद मियां - आप तो जनाब, इनको मदारी समझ लीजिये। मोहतरमा नचा रही है अपने शौहर को, नये-नये खेल दिखला कर।

शमशाद बेग़म- लाहौल विल कूवत। यह क्या लग्व कर रहे हो, मियां ? एक तो बेचारी, शौहर-ए-नामदार की मार खाये बैठी है। चोटों को सहला रही है, जनाब। इधर मियां, आप यह क्या कह रहे हो ? वह बेचारी, क्या रशीद मियां को नचा सकती है ?

शेरखान - तौबा...तौबा। ऐसी ज़हीन बातें करके....मोहतरमा के दिल-ए-जख़्म पर आप नमक ना लगायें, हेड साहब।

दाऊद मियां - (हंसते हुए) - तौबा...तौबा। वल्लाह, यह क्या बोल दिया आपने ख़ाला ? बड़ी अजीब बात है, ख़ाला...तोला आपका,

और माशा भी आपका ? आप कुछ भी कह सकती हैं ? अगर हम कुछ कहें, तो....क़ाबिल-ए-एतराज़ ?

शमशाद बेग़म- जनाब आप हंसी उड़ा रहे हैं.......कुछ गम्भीर बनिये, हुजूर।

दाऊद मियां - ख़ाक बनूं, गम्भीर ? ख़ालाज़ान, क्या रशीद मियां ने अपनी आँखों पर पट्टी बान्ध रखी है ? देखा नहीं, आपने ? बड़ी बी कहाँ-कहाँ भटकी थी, चन्दा मांगने ? बड़े-बड़े मुसाहिब क्या, मिनीस्टरों से घिरी रही यह बड़ी बी। तब ये बातें, रशीद मियां की ज़बान पर नहीं आई ?

शमशाद बेग़म- अपना-अपना, वसूक ठहरा मियां....

दाऊद मियां - ख़ाक़ वसूक की बातें करती हो, ख़ाला ? जब रूपयों की बरसात होती हो, तब मियां के लिये यह मोहतरमा नहीं बनी...[1]महसूद ? देखा नहीं, ख़ाला ? उस दौरान बड़ी बी ने नगर सेठों की कोलोनी में मंहगा प्लॉट खरीद कर...

शमशाद बेग़म- क्या कहा, जी?

दाऊद मियां - मैने यह कहा, मकान बनवाना चालू कर दिया। यह वही रशीद मियां है, जिन्होंने उस वक़्त कहा था "आयशा बेग़म के मेहर से बिल्डिंग बन रही है, इसके बनने के बाद मैं वहाँ कोचिंग का धन्धा खोलूंगा। तब होगी, पैसों की बरक़त।"

शमशाद बेग़म- (पाला बदलते हुए) - मैं तो ठहरी, जाहिल औरत। ऐसी सियासती बातें, क्या ज़ाने? बस यह ज़रूर कहूंगी, इस औरत को तो लग गया है ऐश करने का [2]आसेब। यह आसेब बस यही चाहता है, कहीं से पैसा आता रहे।

शेरखान - (चाय का ख़ाली प्याला मेज़ पर रखते हुए) - मैं ज़ानता हूं, ख़ाला। इस आसेब की भूख, कभी मिटने वाली नहीं। औरत की इज़्ज़त, क्या होती है ? इससे, उसको कोई सारोकार नहीं।

शमशाद बेग़म- सच्च कहा, मियां। हम ग़रीब ज़रूर हैं मगर, यहां किस मर्दूद की हिम्मत ? जो हम पर, उंगली उठाये ? इतने साल हो गये, इस स्कूल में रहते हुए... यहां रहते-रहते जवानी ढल गयी, अब बुढ़ापा आ गया है। मगर, [9]रज़ील काम नहीं किया..

शेरखान - हमें मालुम है, ख़ाला। कोई दूसरी औरत होती, तो अपना खसम बदल देती। क्यों दुखः उठाती, आपकी तरह? आप जैसी इस ख़िलक़त में ऐसी औरत नहीं, जो इन मज़हबी उसूलों के ख़ातिर [10]साबीर और [11]साहिबे अख़लाक बनी रहे।

शमशाद बेग़म- (लबों पर मुस्कान लाकर) - वज़ा फ़रमाया आपने, हम भी दुखी हैं। हमारा शौहर, एक पैसा कमा कर लाता नहीं। अब तो हमने भी कसम खा रखी है, ख़ुदा के मेहर से हम इस शौहर का [3]ख़ास्सा बदल कर दिखायेगें। दिल-ए-तमन्ना है, ख़ुदा पूरी करे....

दाऊद मियां - (ख़ाला की बात पूरी करते हुए) - एक दिन आयेगा...

शमशाद बेग़म- (अपनी हथेली आगे करती हुई) - जब ये शौहर-ए-नामदार इस हथेली पर अपनी कमाई के पैसे लाकर रखेंगे।

(शमशाद बेग़म आपने दोनों हाथ ऊपर ले जाकर, ख़ुदा से अरदास करती है)

शमशाद बेग़म- (दोनों हाथ ऊपर ले जाती हुई) - ए मेरे मोला। हमारी ईमानदारी की इस ज़िन्दगी में, कभी दाग मत लगाना। (वापस हाथ नीचे करती है) हमको भूखा सुला देना, मगर दाग मत लगाना।

दाऊद मियां - ख़ाला ज़रा ग़ौर करें, आप। आप और हम कभी इन पार्षदों या किसी अवाम के ओहदेदारों को बुलाने की भरसक कोशिश कर भी लें, तो भी ये लोग हाज़र नहीं होते।

शमशाद बेग़म- अगर इस मोहतरमा का एक फ़ोन भी इन ओहदेदारों के पास पहुंच जाता है, और ये दुम हिलाते हुए तशरीफ़ रख देते हैं स्कूल में। अब मैं आपसे सवाल करती हूं, क्या यह मोहतरमा....आप और हम जैसे लोगों के लिये, कभी फ़ोन करती है या नहीं ?

शेरखान - अरे हुज़ूर, ये लोग तो बहुत ख़ुश होते हैं...जब यह मोहतरमा, इनको कोई काम करने को कहती है। देखा नहीं, आपने

? फ़ोन करते ही, वार्ड नम्बर दो के पार्षद जनाब मोहम्मद अली साहब कैसे आये यहाँ दुम हिलाते हुए ?

शमशाद बेग़म- आये तुरन्त-फुरन्त, और [12]ख़करोबों की टीम को साथ लेकर आ गये.....स्कूल के ग्राउन्ड की साफ़-सफ़ाई करवाने।

शेरखान - अरे, हुजूर। सफ़ाई के बाद तो यह ग्राउन्ड, बिल्कूल फ्रांस की सड़कों की तरह चमकने लगा। अरे जनाब, पाख़ाना साफ़ करने वाला यह सफ़ाई मजदूर मोहम्मद अली साहब को देख कर कैसा बन गया....[4]जंगजू की ठौड़, [5]आरिफ़ ? अजी क्या कहूँ, जनाब ? हाथ जोड़ कर खड़ा रहा, उनके सामने....शरीफ़ों की तरह।

दाऊद मियां - अब क्या कहें, आपसे मियां शेरखान ? हम बात करते हैं ईद की, और आप बात चालू कर देते है मोहर्रम की। मियां शेरखान साहब। हम कह रहे थे, यह मोहतरमा सियासती ख़तरों से खेल रही है। जिसके हर गलियारे में इसको ये कई गीद रूपी सियासती लीडर बाहें फैलाए इसका शिकार करने तैयार खड़े हैं।

शमशाद बेग़म- अब देखिये, शेरखान साहब। इस मोहतरमा को.....जनाब, यह अपना हुस्न दिखला कर उनको ललचा रही है। हाय अल्लाह कहीं इस स्कूल की चारदीवारी के भीतर, कोई गीद इस हुस्न की मल्लिका की ज़ान ना ले....लें।

दाऊद मियां - मुझे तो डर है, वह कहीं ख़ुदकुशी ना कर बैठे ? हमें तो यह मआमला ज़रा दर्द अगेंज का लगता है। क्या कोई शौहर इस तरह अपनी बीबी पर हाथ उठाता है, क्या ? अरे यह पढ़े-लिखे दानिशों की कौम, कैसे ज़ाहिल बन गयी ?

शमशाद बेग़म- इस तरह, सरे-राह बीबी को ज़लील करना या [6]ख़बासत दिखाना इन दानिशों की [7]ख़ब्स् है...ना कि इनकी [8]सिफ़त।

शेरखान - हाय अल्लाह। तौबा...तौबा। अब तो बेदिरेग़ कहना पड़ेगा, हेड साहब। अब ऐसे मआमले में पुलिस आयेगी स्कूल में, हथकड़ियां लेकर। हर मुलाज़िम को साथ ले जायेगी, हवालत।

दाऊद मियां - ओ मियां। यह क्या फरमाइशी गर्मी है ? (नाक भौं की कमानी चढ़ाते हुए) बदहवास में बदशगुनी बातें हवा में उड़ाते जा रहे हो, मियां ? ज़रा उस नेक बख़्त रशीद मियां का ख़्याल करो, जिसकी मेहरारू....

शेरखान - (बात काटते हुए) - क्यों करूं, रशीद मियां का ख़्याल ? क्या, वे हमारे एहबाब है ? अरे जनाब यह मियां मियां मिठ्ठू वही है, जिन्होंने इसी ठौड़ पर अपन चारों को इस शहर का पानी नसीब न होने की धमकी दी थी। क्या कहा था, उन्होने ? भूल गये, क्या ?

दाऊद मियां - याद आया, जी। उन्होंने कहा था एक जायेगा इस कोने, तो दूसरे को भेजूंगा दूसरे कोने। आक़िल मियां के बदन की सारी चर्बी लुप्त हो जायेगी, शहर के बाहर जाकर। जब वे करेंगे, रोज़ का आना-ज़ाना।

(आक़िल मियां के कानों में, दाऊद मियां का बोला गया जुमला सुनाई देता है। कमरे के किवाड़, जड़ने की आवाज़ आती है। आक़िल

मियां वहाँ तशरीफ़ रखते हैं। तभी पोर्च के बाहर, स्कूटी स्टार्ट होने की आवाज़ आती है। आवाज़ सुन कर, आक़िल मियां कह बैठते हैं।)

आक़िल मियां - (नज़दीक आकर) - हुस्न की मल्लिका रूख़्सत हो चुकी है, अब काहे का वक़्ती इख़्तिलाफ़ बढ़ाते जा रहे हो ? जनाब हम चारों का तबादला करवा कर, चारों कोने भेजने वाले जनाब की बेग़म व उनका वकील जमाल मियां भी इस स्कूल से अपना तबादला करवा कर कहीं ओर रूख़्सत हो रहे हैं।

दाऊद मियां - (अचरच से) - क्या कहा, बरख़ुदार ? यह हुस्न की मल्लिका चली जायेगी, अपने टोगड़े को लेकर ? और, यह रोकड़ का चार्ज वापस.....?

आक़िल मियां - अरे जनाब, वह पेशो-पेश में फंस गयी बेचारी। जमाल मियां ने झटक लिया अपना हाथ, मांगने लगे टूर्नामेण्ट में आये पैसों का हिसाब। उस पैसों में अपना हक़ ज़ाहिर कर जतला दिया, जमाल मियां ने, के...

दाऊद मियां - उन्होंने जतला दिया के, उसमे उनको भी हिस्सा मिलना चाहिये। सुन कर मोहतरमा बिफ़र उठी, शेरनी की तरह। कहने लगी "मियां, ज़ानते हो तुम ? यह रोकड़ का चार्ज, किसके कारण मिला आपको ?

(अब मियां आक़िल ख़ाली कुर्सी पाकर, उस पर बैठ जाते हैं।)

शमशाद बेग़म- (चाय के ख़ाली प्याले उठाती हुई) - यह क्या कर डाला, जमाल मियां ने ? यह तो वही हुआ, मेरी बिल्ली मुझसे म्याऊं। ग़्ारत कर डाले, सारे रब्त ?

आक़िल मियां - (हंस कर) - हाँ ख़ाला। बात सही है। तब जैरीली मुस्कान अपने लबों पर लाकर जमाल मियां बोल उठे "किस होश में हो, मोहतरमा ? तुम्हारे सारे राज़ पर, यह नाचीज़ पर्दा उठा सकता है.......समझी ?

शमशाद बेग़म- किस राज़ की बात का जिक्र कर रहे हो, मियां? जो हम नहीं ज़ानते?

आक़िल मियां - उनका यही कहना था, आपने टूर्नामेण्ट के चन्दे में से कितना ग़बन किया? अब आप चुपचाप, हिसाब दे दीजिये। हमारा हिस्सा, मार नहीं सकती आप। कैसे कहूँ, आपसे ? अब इस केश के चार्ज में हमारा कोई इन्टरेस्ट नहीं। इस चार्ज को आप जिसे चाहे, उसे दे सकती हैं।

दाऊद मियां - वाह रे, करमज़ले जमाले। तू तो मासूम मोहतरमा को, दगा दे गया ?

आक़िल मियां - आगे सुनिये, बीच में बोल कर बातों की गाडी की रफ़्तार को कम मत कीजिये। तब मोहतरमा बोली, अब तक की रोकड़ बही कौन भरेगा मियां ? चार-पांच दिन बाद डी.ई.ओ. मेडम आयेगी, तब क्या जवाब देंगे ? इस लफड़े में, तुम भी बराबर के जिम्मेदार हो।

शेरखान - बराबर के जिम्मेदार ? समझ में नहीं आया....जनाब, जमाल मियां तो वह हस्ती है इस एज्यूकेशन महकमें की। जो आँखों से सूरमा चुरा ले, और लोगों को पत्ता न चले के उन्होने चुराया

क्या है। अरे जनाब, वह तो दूसरे बेगुनाह इंसानों को बीच में लाकर उन्हे जिम्मेदार ठहरा देते हैं। ख़ुद पतली गली से निकल कर, बच जाते हैं।

आक़िल मियां - वज़ा फ़रमाया, जनाब आपने सौ फीसदी सच कहा। बस.....जमाल मियां तब अकड़ने लगे, और कहने लगे "क्या आप ज़ानती नहीं, हर टूर्नामेण्ट वाउचर पर आपने क्या लिखा ? आपने लिखा है, पेड बाई मी। इसका मायना समझती हैं, आप ?

शेरखान - असतग़फ़िरूल्लाह, कहीं हम कुछ ग़लत ना कह बैठें ? इस तरह तो मियां, बचे रहेंगे ऑडिट से। फिर, आगे क्या कहा उन्होंने?

आक़िल मियां - आपने केश बुक के हर पेज़ पर अपने दस्तख़त किये हैं, कहीं भी मेरे दस्तख़्त आपको मिलेंगे नहीं ? कहीं हो तो, बताइये।"

(पोर्च के बाहर, रखी स्कूटियों के स्टार्ट करने की आवाज़ आती है। अब एक-एक कर, सभी मेडमें अपने दौलतख़ाना की तरफ़ रूख़्सत

हो जाती है। उनके ज़ाने के बाद, मनु भाई की दुकान पर बैठे मेम्बरान के लबों पर हंसी के ठहाके गूंज उठते हैं। और उधर बरामदे में, अभी तक गुफ्तगू जारी है। अब आक़िल मियां कह रहे हैं, के..)

आक़िल मियां - अब क्या बताएं, हेड साहब ? मोहतरमा आई हमारे पास, और.....जनाब रिक्वेस्ट करती हुई, उन्होंने यह कहा था "मियां सम्भाल लीजिये रोकड़ का चार्ज, स्कूल की इज़्ज़त का सवाल है। फिर...

दाऊद मियां - वल्लाह। हम तो बड़े भुल्लकड़ निकले। बस...बस आगे का मआमला हमारे समझ में आ गया, मियां। आपने बचा दी स्कूल की साख़...बहोत अच्छा काम किया, आपने।

शमशाद बेग़म- (धुले बरतन लाती हुई) - क्या करें ? मियां ठहरे, रहम दिल। केवल इनमें एक ही कमी है, ये बड़े मुंह-फट है। ना तो ये इंसान, सौ टके के इंसान की खूबियां रखते होते ?

शेरखान - छोड़ो ख़ाला। ज़ाइद अज़ उम्मीद की जाती है, अब जमाल मियां व उनकी बेग़म सरयू का पारस्परिक तबादला हो जायेगा। कम से कम इस शैतान से, हमें निज़ात ज़रूर मिल जायेगी।

(तभी, तौफ़ीक़ मियां तशरीफ़ रखते हैं। तौफ़ीक़ मियां आकर, शमशाद बेग़म से कहने लगते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (शमशाद बेग़म से कहते हैं) - हमसे ख़ता हो गयी, ख़ाला। आपका दिल दुखा दिया, अनज़ाने में। मगर हम कहते है, हम वो नहीं हैं जो आप समझती हैं। लीजिये....आपको मुज़दा सुनाता हूं, सुनिये। बड़ी बी आयशा ने मिनिस्टर साहब को इस टूर्नामेण्ट में बुला कर, भारी ग़लती की है। यानि, अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मार दी।

शेरखान - क्याऽऽ ? साफ़-साफ़, पूरी बात बताएं। आख़िर, माज़रा क्या है ?

तौफ़ीक़ मियां - इसके साथ-साथ मिनीस्टर साहब ने एलान कर दिया, वे जल्द ही इस स्कूल में प्रिन्सिपल लगा रहे हैं। क्योंकि, यह स्कूल सिनीयर हायर सेकेण्ड्री बन चुकी है।

दाऊद मियां - (हंसी के ठहाके लगाते हुए) - मुज़दा इस बात का रहा, मियां। आपने आख़िर पाला बदल ही लिया, और आ गये हमारे पाले में। यह कहावत सही है के जंगल में लाय लगती है, मगर कलाग़ कभी लाय में नहीं जलता।

(सभी हंसने लगते हैं, उनकी हंसी सुन कर जनाब के ख़िसयाने चेहरे को सभी देखने लगते हैं। घण्टी लगाने का वक़्त हो गया, शमशाद बेग़म उठ कर घण्टी लगाने चली जाती है। टन-टन की आवाज़ सुनाई देती है, मंच पर अन्धेरा छा जाता है।)

(२)

(मंच पर वापस रोशनी होती है। मिनीस्टर साहब क्या बुलाया इस टूर्नामेण्ट में ? बड़ी बी आयशा ने अपने गले आफ़त मोल ले ली। अब वह पांच रोज़ से, स्कूल नहीं आ रही है। बड़ी बी के न आने की

खु़शी में दाऊद मियां, स्टॉफ के साथ बरामदे में कुर्सियां ढाल कर बैठे हैं। बैठे-बैठे वे स्कूल की डाक को भी देखते जा रहे हैं। तभी आक़िल मियां तशरीफ़ रखते हैं।)

आक़िल मियां - हेड साहब, यह क्या ? क्या मैं छुट्टी पर नहीं रह सकता ? क्या सी.एल पर रहने का भी, हमारा हक़ नहीं रहा ? कभी आपका फ़ोन आता है, मेरे पास। तो कभी डी.ई.ओ दफ़्तर से आते है फ़ोन हमारे पास, जनाब आख़िर यह क्या माज़रा है ? हाय परवरदीगार एक दिन मिला अराम करने का, वह भी चैन से गुज़ार नहीं सकता ?

दाऊद मियां - (हंसते हुए) - अब रोज़ चैन से बसर करना, मियां। आ रही है, ईमान की मंजूषा....बेनज़ीर बी। यहाँ बड़ी बी बन कर।

आक़िल मियां - (लम्बी सांस लेकर) - माशाअल्लाह। अब चैन की सांस आई, अब झूठे वाउचरों के दीदार ना होंगे।

(दाऊद मियां के पास लगी कुर्सी पर बैठी इमतियाज़ बी, तमक कर बोल पड़ती है। इस स्कूल में आने के पहले, बेनज़ीर की सियासत में

रह चुकी थी..यह, हमारी इमतियाज़। उसका इस तरह से बोलना, उसके तुजुर्बे का आधार था।)

इमतियाज़ - (तुनक कर कहती है) - ख़ाक...दीदार की बात कह रहे हो, मियां ? ज़ानते हो, इस औरत को ? यह मोहतरमा किसी पर वसूक नहीं करती है। चार दिन चैन से बीत जाए, तो कह देना "इमतियाज़। तुम खर्रास ठहरी।"

दाऊद मियां - अब यह दालान हो जायेगा, सूना-सूना। कलाग़ मण्डरायेंगे, कबूतर घूम-धूम कर आवाज़ निकालेंगे...गुटर गूँऽऽ...गुटर गूँऽऽ। इनसे आप अपना दिल बहलाते रहना, फिर हम आपके पास....कमरे में नहीं आयेंगे।

इमतियाज़ - शरे-ओ-अदब। इस मोहतरमा को, अल्लाह मियां ने आला दर्जे का दिमाग़ दिया है। क्या, आप नहीं ज़ानते ? अरे जनाब। आरिफ़ मोहतरमा, बहुत बड़ी दानिशमन्द है। इसके लिये कोई काम मुश्किल नहीं, आपके हर काम में दख़ल अन्दाजी करना....इसके लिये बायें हाथ का खेल होगा।

दाऊद मियां - अब समझे, आक़िल साहब ? इसलिये आपकी छुट्टी को नामंजूर कर, आपको बुलाया गया है। मोहतरमा आज़ आने वाली है, उसके जोइनिंग वगैरा के काग़ज़ तैयार करने है। जिससे स्टॉफ को समय पर तनख़्वाह मिल जाएं। (ग्राउन्ड की तरफ़ देखते हुए) लो देखो, नाइट ड्यूटी वाले नूरिया बन्ना भी तशरीफ़ रख रहे हैं।

(नूरिया दाऊद मियां के नज़दीक आकर, उन्हे सलाम करता है। फिर पास रखे स्टूल पर बैठ जाता है।)

नूरिया - (सलाम करता हुआ) - आदाब बजाता हूँ, हेड साहब। (मिठुन चक्रवती स्टाइल में डान्स के स्टेप हाथ घुमाकर करता है, और साथ में गीत गाता है) बहारों फूल बरसाओ। जुरअत-ए-हिन्द बेनज़ीर आयेगी....आयेगा गुलाब हलुआ बामझ नमकीन के संग, तब हेड साहब मुस्करायेगें। (बैठ जाता है, स्टूल पर।)

शमशाद बेग़म- (मीर अनीस साहब के ग़ज़ल की, दो पंक्तियां सुनाती हुई) - अर्ज़ किया है, हरारतें है मआल-ए-हलावत-दुनिया,

वो जहर है जिसे हम शहद-ए-नाब समझे हैं। 'अनीस' मख़मल ओ दीबा से क्या फ़क़ीरों को, इसी ज़मीन को हम फ़र्श-ए--ख़्वाब समझे हैं।

दाऊद मियां - (हंसते हुए) - लीजिये इमतियाज़ बी। कलाग़ ठहरे, होशियर। इन कम्बख़्तों को ख़बर हो गयी, आ गये मिठाई खाने। अब दस्तरख़्वान ध्यान से लगवाना, कहीं मिठाई कम ना पड़ जायें ? (नूरिया से) यहाँ क्यों खड़ा है ? जाऽऽ, ख़ाला की मदद कर। आ गया मर्दूद, मेरे पास...कम्बख़्त लोबान लगवाने ?

(नूरिया साइकल की चाबी घूमाता हुआ, शमशाद बेग़म के पास चला जाता है। शमशाद बेग़म, गैस के चूल्हे पर चाय बनाने के लिये, भगोना आग पर चढ़ा चुकी है।)

शमशाद बेग़म- (नूरिया को दस रूपये देती हुई) - बन्ना। अब यहाँ बैठो मत, जाओ दूध लेकर आ जाओ। यह पड़ा है, जग। इसे उठाओ, और फूटो यहाँ से।

नूरिया - (जग लेते हुए) - मज्ऊम था हमारा, खायेंगे हलुआ। मगर मुक़्तज़ाए फ़ितरत आपने मफ़हूम ना सोचा, और भेज दिया दूध लाने। ग़्ारत कर डाली दिल-ए-तमन्ना। ख़ुदादाद फ़हमीद है। हम ऐसे छोड़ेंगे नहीं, यह गुलाब हलुआ।

शमशाद बेग़म- (झुंझला कर) - अरे जा रे, जा। बड़ी बी आयेगी, तभी आयेगा यह कम्बख़्त गुलाब हलुआ।

(फिर क्या ? नूरिया "बहारों फूल बरसाओ" का गीत गाते हुए, दूध लाने चला जाता है। इसके निकलते ही, चान्द बीबी हाथ में डस्टर लिये आती है, तो उधर मेमूना भाई हाथ में गुलदस्ता लिये तशरीफ़ रखते हैं।)

चान्द बीबी - मेमूना भाई। पहले मैं बड़ी बी की टेबल, को कर देती हूँ चका-चक साफ़। फिर तुम टेबल पर रख देना, गुलदस्ता।

(दोनों जैलदार, बड़ी बी के कमरे में दाख़िल हो जाते हैं। उनके अन्दर दाख़िल होते ही, गज़ल बी बरबस बोल पड़ती है।)

ग़ज़ल बी - उगते सूरज़ को सलाम करने आ गये, हमारे एहबाब।

इमतियाज़ - (नग़मा गाती हुई) 'कहीं दूर कहीं दूर, मुझे ले चलो सनम.'

ग़ज़ल बी - कहीं दूर चली मत ज़ाना, इमतियाज़। बेनज़ीर की लख़्ते जिग़र बनने का मौक़ा खो देगी।

नसीम बी - क्या करें ? छुट्टी होने वाली.....इधर हमने गोली ली नहीं, ब्लड प्रेसर की। हाय अल्लाह...अब चक्कर आ रहा है, सर घूम रहा है। अरी ओ मेरी बहना इमतियाज़, क्या मैं अपने घर चली जाऊँ ?

इमतियाज़ - आज़...आज़ चली जाओ, नसीम बी। कल से वह मोहतरमा तमाम अलील निकाल फेंकेगी, तुम्हारे बदन से।

गज़ल बी - तुम तो इमतियाज़, जल-भुन गयी होगी......? तुम्हारी सियासत तो अब, खत्म। तुम भी आयशा के साथ-साथ चली जाती, तो अच्छा रहता।

इमतियाज़ - आपा। आप छोटे मुंह, बड़ी बात मत कहलाओ। तुम क्या कम थी ? आयशा के आगे-पीछे, चक्करघन्नी की तरह घूमती

रहती थी। (आवाज़ की नकल करती हुई) बड़ी बी। यह देखो, सीफ़ोन की साड़ी, ये लखनवी सलवार-कुर्ती। येऽऽ येऽ क्या क्या चोंचले आप करती आयी हो?

ग़ज़ल बी - मोहमल बातें ना करो, इमतियाज़। मैं ज़ानती हूँ, तुमने क्या...क्या किया.....?

दाऊद मियां - (मेन गेट की तरफ,़ उंगली का इशारा करते हुए) - ख़मोश। दुख़्तरेखान बड़ी बी बेनज़ीर, तशरीफ़ ला रही है।

(सभी गेट की तरफ़ देखते हैं। गेट के पास एक सफ़ेद कार आकर, रूकती है। कार का दरवाज़ा खोल कर पहले बेनज़ीर के रिश्तेदार, बाहर आते हैंकृफिर उनके बाद, ख़ुद बेनज़ीर। उनको देखते ही, बाहर दुकानों पर बैठे मेम्बरान उठ कर खड़े हो जाते हैं। और नज़दीक आकर, सलाम करते हैं। बेनज़ीर के बाहर आते ही, फूलों का हार लिये तौफ़ीक़ मियां दौड़ कर आते है। फिर क्या ? कहीं जोइन करने का मुहर्रत का वक़्त गुज़र ना जाएं, बस इसी अंदेशे को लेकर बेनज़ीर झट आगे बढ़कर तौफ़ीक़ मियां के हाथों से फूलों का

हार छीन लेती है। फिर, धड़धड़ाती हुई स्कूल में दाख़िल हो जाती है। बेचारे तौफ़ीक़ मियां, बिना देखे नीमतस्लीम कर बैठते हैं, शायद वह मोहतरमा वहीं खड़ी हो? उनके सामने खड़ा ड्राइवर, उनकी यह अदा देखकर हंस पड़ता है। अब दालान में खड़ा स्टॉफ, तालियों की गड़-गड़ाहट से बेनज़ीर का स्वागत करता है। दालान में रखी एक कुर्सी पर बेनज़ीर आकर बैठ जाती है। उनके बैठते ही, चान्द बीबी झट जाकर कमरे से चार-पांच कुर्सियां निकाल कर दालान में रख देती है। साथ आने वाले रिश्तेदार, कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। अब बेनज़ीर दाऊद मियां की ओर मुंह करके, कहती है।)

बेनज़ीर - दाऊद मियां। ख़ैरियत है ?

दाऊद मियां - (लबों पर मुस्कान लाकर) - आपकी मेहरबानी से सभी कुशल-मंगल। आगे आप, जैसा रखना चाहें...आप पर डिपेण्ड करता है, हुजूर। आख़िर, जनाब हम तो ठहरे हुक्म के गुलाम।

बेनज़ीर - मेहरबानी तो ऊपर वाले की होनी चाहिये, हम तो खुद उसके हुक्म के गुलाम ठहरे। वह ऊपर वाला ख़ालिक़ है, दाऊद

मियां। जिसके हुक्म से हम तबादला-ए-ख़्याल बना डालते हैं। आज़ यहाँ, तो कल कहाँ ?

दाऊद मियां - मरहूम के मुताल्लिक मशहूर है, उसकी इच्छा के बैगर कोई पत्ता नहीं हिल सकता। हुजूर आप देखिये, आप यहाँ....और चार्ज देने वाले कहाँ ?

बेनज़ीर - चार्ज ले लेंगे, मियां। काहे की उतावली ? क्या आप उनसे ख़फा हैं ? सुनने में तो, कुछ ऐसा ही आया है।

इमतियाज़ - बड़ी बी। आयशा बी अब आने वाली नहीं, उन्होने....

बेनज़ीर - (हंसते हुए) - उन्होने नयी स्कूल में जाकर, वहाँ का चार्ज एज़्यूम कर लिया, तो क्या हो गया ? हम यहाँ कर लेंगे एज़्यूम.....मेरे कहने का मतलब है, पोवर।

दाऊद मियां - जैसी, हुजूर की मर्जी।

बेनज़ीर - मगर, मेरे एहबाब। ऐसा किया नहीं जाता, उस ज़ाने वाले का का मान रखना पड़ता है, हमें। (इमतियाज़ से) चलिये

इमतियाज़ बी। आप चल कर, आयशा बी को फ़ोन लगा दीजिये। अभी करते हैं, उनसे गुफ़्तगू। मुबारक़ लेना-देना भी, साथ में हो जायेगा।

(इमतियाज़ पर्स से मोबाइल फ़ोन निकाल कर, नम्बर मिलाती है। घण्टी आने पर फ़ोन बेनज़ीर को थमा देती है। कुछ देर गुफ़्तगू करने के बाद, मोबाइल वापस इमतियाज़ को थमा देती है।)

एक रिश्तेदार - (दीवार घड़ी को देखते हुए) - अरे आपा। मुहर्रत का वक़्त, होने में अभी एक घण्टा बाकी है? हाय अल्लाह, एक घण्टा पहले तशरीफ क्यों रखी आपने?

बेनज़ीर - भाईज़ान। यह स्कूल की घड़ी है, यह स्टॉफ के बन्दों की चाहत पर वक़्त दिखलाती है। (हाथ में लगी घड़ी को देखते हुए) मुझे तो भय्या, इस पर वसूक है। इस घड़ी को, सही वक़्त पर चलाया जा सकता है। (दाऊद मियां को देखते हुए) क्यों दाऊद मियां ? सही कहा, ना ?

दाऊद मियां - (आब-आब होते हुए) - हुजूर। ऐसा भी हो सकता है, शायद घड़ी के सेल पुराने हो गये हो।

बेनज़ीर - (हंसते हुए) - जनाब, तनख़्वाह नहीं आती, तब तक यह पेट क्या ख़ाली रहेगा ? सामान उधार लाकर, काम चलाया जा सकता है। बस मियां, फिर आयेंगे...? यह क्या, आने का इन्तज़ार क्यों करते हो ? ला देते नये सेल, पांच रूपये तो कोई दे देता आपको।

(शर्म के मारे, दाऊद मियां अपना सर नीचा कर लेते हैं। अब बेनज़ीर, वापस अपनी हाथ-घड़ी पर निगाह डालती है।)

बेनज़ीर - (हाथ की घड़ी देखते हुए) - लो मियां। वक़्त हो गया, मुहर्रत का। (उठती है, चान्द बीबी को आवाज़ देती है) चान्द बीबी। पीर दुल्ले शाह बाबा का प्रसाद, इन [5]आरिफ़ बन्दों को बांट देना। अब चाय कमरे के अन्दर, लेती आना।

(स्टॉफ के साथ, बेनज़ीर कमरे के अन्दर दाख़िल होती है। उनका एक रिश्तेदार थैली से गुलाब हलुआ का पैकेट निकाल कर, चान्द

बीबी को थमा देता है। तौफ़ीक़ मियां तश्तरी में पानी भरे गिलास लिये आते हैं, बाहर बैठे उनके रिश्तेदारों को पानी पीला कर वे कमरे के अन्दर दाख़िल हो जाते है। वहाँ सबको पानी पीला कर, वापस शमशाद बेग़म के पास लौट आते हैं। अब, वे शमशाद बेग़म से कहने लगते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - देखो ख़ाला। तसलीमात अर्ज करता हूँ, यह मोहतरमा बड़ी घाघ है। मीठी-मीठी बोल कर, सबसे पहले सब लोगों की कमजोरियाँ हासिल करेगी। इसके बाद, सबकी नकेल कसती जायेगी।

शमशाद बेग़म- क्या करें ? आक़िल मियां बड़े भोले हैं, वे सबसे पहले खुलते जायेंगे। हाय अल्लाह, उनसे कुछ कहा भी नहीं जा सकता। वे जनाब तो झट इमोशनल होकर, मोहतरमा के सामने अपना मुख खोल देंगे?

तौफ़ीक़ मियां - दाऊद मियां भी कम नहीं है, ख़ालाज़ान। जानती हो, वे

मुख़्तारेख़ास बनने की होड़ में पीछे रहने वाले नहीं। अजी, आप क्या ज़ानती है ? हम वो परवाने हैं, जो शमा का दम भरते हैं। जो ख़मोश रह कर, स्कूल के जर्रे-जर्रे की ख़बर रखते हैं ख़ाला।

(बेनज़ीर पुकारती है।)

बेनज़ीर - (आवाज़ देती हुई) - अजी ओऽऽ, तौफ़ीक़ मियां। क्या चाय बन गयी क्या ? बन गयी हो, तो जल्दी लाइये।

शमशाद बेग़म- (हंसती हुई) - अजी, ख़बरनवीस मिस्टर मिडिया। यह ख़बर भी अपने दिमाग़ में बिठा दीजिये, के आपको बड़ी बी पुकार रही है। आपको चाय लेकर, उनके पास ज़ाना है। (चाय के प्यालों की तश्तरी, थमाती हुई) जनाब। लीजिये, और तशरीफ़ रखिये अन्दर।

तौफ़ीक़ मियां - (तश्तरी लिये) - आया हुजूर। (जाते हैं)

शमशाद बेग़म- (लबों पर मुस्कान लाकर) - क्या, मैं ज़ानती नहीं? यहां तो भय्या, कोई भी आ जायें......कोई उज्र नहीं, हमें। मगर ये जनाब, बन जाते है आने वालों के लिये "सर-ए-अज़ीज़"। हम ठहरे

कोदन इंसान, जो कायदों के ख़ातर जलते हैं लाय में। मगर, यह कलाग़ कभी लाय में नहीं जलता।

(मंच पर अन्धेरा छा जाता है।)

कठिन शब्द :- 1 महसूद : घृणित, 2 आसेब : भूत, प्रेत, 3 ख़ास्सा : स्वाभाव, प्रकृति, 4 जंगजू : झगड़ालू, 5 आरिफ़ : भक्त, 6 ख़बासत : दुष्टता, 7 ख़ब्स् : नीचता, 8 सिफ़त : गुण, खूबी, 9 रज़ील : कलंक लगाने वाला 10 साबीर : धैर्यवान, सहनशील, 11 साहिबे अख़लाक : चरित्रवान, 12 ख़कारोबों की टीम : कचरा निकालने वाले सफ़ाई कर्मचारियों की टीम ।

(अजज़ा १५) आसेबज़दः लेखक- दिनेश चन्द्र पुरोहित

(1)

(मंच रोशन होता है। स्कूल का बरामदा दिखाई देता है। बड़ी मुश्किल से नसीम बी, यूरीनल ज़ाने का बहाना बना कर बरामदे में आती है। अब वह ख़ाली कुर्सी पर बैठकर, पास खड़ी शमशाद बेग़म से पानी लाने का हुक्म देती है। फिर अपने पर्स से ब्लड प्रेसर की गोली निकालती है।)

शमशाद बेग़म- (लोटा थमाती हुई) - लीजिये मेडम। क्या बात है, आज़ आप सुस्त क्यों नज़र आ रही हैं ? ख़ैरियत तो है ?

(नसीम बी मुंह में गोली रख कर, पानी के साथ गिटती है। फिर वापस लोटे को शमशाद बेग़म को थमाकर, कहने लगती है।)

नसीम बी - हायऽऽ अल्लाह। हम पर, क्या-क्या गुज़रती है ? हमारा दिल ही ज़ानता है, ख़ाला। आस्मां की तरफ़ देख कर हम अल्लाह से कोई शिकवा भी नहीं कर सकते, के "ए मेरे मौला। कहां फंसा दिया हमें, इस स्कूल में ?

शमशाद बेग़म- अरे बीबी, यह क्या ? ऐसा क्या दर्द है आपको, जो सरेआम आप बयान नहीं कर सकती?

नसीम बी -अरी ख़ाला, क्या कहूं मैं ? यहां एक कालांश ख़ाली नहीं रखती, यह बेरहम आलीमा। ऊपर से यह जोलिन्दःबयाँ क्लासों में झांकती हुई सारे दिन, गलियारे में घूमती रहती है। अब बताओ, ख़ाला यह कोई ज़िन्दगी है ?

शमशाद बेग़म- (हंसती हुई) - तो क्या हुआ ? घूमने दीजिये बेचारी को, वह तो आपकी हिफ़ाज़त के लिये पहरा दे रही है। फिर आप लोगों को देख कर, ऐसे बोलेगी...(बेनज़ीर की तरह कमर झुका कर चलती हुई, उसकी आवाज़ में बोलती है) ओ मेडम। कहाँ जा रही हो ? कान कमज़ोर हो गये क्या, या सुना नहीं ? बच्चें शोर मचा रहे हैं, क्लासों में।

नसीम बी - वज़ा फ़रमाया, ख़ाला। अरे ख़ाला, अब तो पेशाब करने ज़ाना भी हो गया मुश्किल। हम तो ख़ौफ़ में जी रही हैं, ना मालुम कब इस जोलिन्दःबयाँ के दीदार हो जाय ? अरे ख़ाला यह मोहतरमा तो छिपकली तरह, चुप-चाप क्लास के बाहर आकर खड़ी हो जाती है।

शमशाद बेग़म- गंजलक है....आपके अन्दाजे बयान से लगता है, के यूरीनल के गेट के पास ही, इतनी गन्दगी और बदबू आख़िर है क्यों ? (मज़ाक उड़ाती हुई बोलती है) बड़ी बी के ख़ौफ़ के मारे आप सभी मोहतरमाओं को पेशाब की शिकायत बढ़ जाती है....

नसीम बी - (नाराज़गी से) - आप क्या बक रही हे, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- सदाकत से कह रही हूं, आप डर के मारे वहीं दरवाज़े के पास ही पेशाब करने बैठ जाती है....डरती हैं, आप। कहीं, यह जोलिन्दःबयाँ नाम की छिपकली आ न जायें......?

नसीम बी - (धीमे से) - ख़मोश, एक बार ख़मोश हो जाओ। देखो सामने, वह जोलिन्दःबयाँ इधर ही आ रही है।

(बरामदे में गुज़रती हुई बेनज़ीर, दिखाई देती है। वह दबे पांव हर क्लास का मुआइना करती, आगे बढ़ती जा रही है। चलते-चलते नाइंथ क्लास के कमरे के पास आकर रूक जाती है, और झांक कर अन्दर देखती है। अन्दर इमतियाज़ बी, बड़ी शालीनता से पढ़ाती हुई दिखती है। अब वह दरवाज़े से हट कर, आगे बढती है। फिर उसी क्लास की खुली खिड़की के बाहर, आकर खड़ी हो जाती है। मगर उसकी यह छुप कर देखने की तांक-झांक, इमतियाज़ बी की बुलन्द नज़रों से बच नहीं पाती। अब इमतियाज़ ज़ान-बूझ कर,

उसे चिढ़ाने के लिये उसी की आवाज़ मे साबू मियां की नेक दुख़्तर को डाण्टती है।)

इमतियाज़ - अरी ओ, साबू मियां की नेक दुख़्तर। (फिल्मी नग्में की तर्ज पर गाती हुई) मुड़ मुड़ कर ना देख, मुड़ मुड़ कर....

(सुन कर सारी बच्चियाँ हंस पड़ती है, और खिड़की की तरफ़ देखने लगती है। अब शर्म के मारे, बेनज़ीर की बुरी हालत हो जाती है। जैसे किसी शरीफ़ आदमी की चोरी, सरे-आम पकड़ी जाय। अब वह क़दमोंकी रफ़्तार बढाती हुई, दालान में चली जाती है। वहां रखी रिवोल्विंग कुर्सी पर, धड़ाम से आकर बैठ जाती है। कुर्सी पर बैठ कर, लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगती है। तभी उसके कानों में, इमतियाज़ मेडम की क्लास की बच्चियों की हंसी गूंज उठती है। और साथ में दूसरी मेडमों की छींटा-कशी की आवाज़ें, उसके दिल को दहला देती है। अब माहौल बिगड़ जाता है, कई मेडमें क्लासों के दरवाज़ों के पास खड़ी होकर काना फूसी करने लग जाती है।)

सितारा बी - अरी इमतियाज़, क्या बात है ? छिपकली आई, क्या ?

मुमताज़ बी - (बीच में) - चुप रहो। वह दालान में बैठी है, कहीं उसके कान पक ना जायें आपकी आवाज़ से। फिर, किसी की ख़ैर नहीं।

इमतियाज़ - काहे डरती हो ? हमने तो सुना दिया, उनको। (नग्मा गाने के अन्दाज़ में) मुड़ मुड़ कर ना देख, मुड़ मुड़ करऽऽ (तभी एक काग़ज़ की हवाई-जहाज़ उड़ती हुई, उसके लबों पर गिरती है) हायऽऽ अल्लाह। मर गयी मेरी अम्मा। (घबरा कर चिल्लाती है)

मुमताज़ बी - अरी इमतियाज़। तू ज़रा इस जोलिन्दःबयाँ की तरह मुड़ कर देख लेती, तो घायल ना होती।

(नसीम बी आती है, और खिड़की के अन्दर झांक कर देखती है। क्लास के अन्दर छोरी शकीरा वापस काग़ज़ का हवाई-जहाज़ बना कर उड़ाती है, जो उड़ कर सीधा खिड़की की तरफ़ फरणाटे से उड़ता है। नसीम बी की छाया का आभास पाकर, शकीरा के पास

बैठी छोरी शबनम अपनी हंसी दबाने के लिये लबों पर रूमाल ढाम्प देती है। फिर वह कहने लगती है।)

शबनम - (रूमाल से लबों को ढाम्पते हुए) - अरी देख, शकीरा। शैतान की ख़ाला वापस आ गयी है, खिड़की पे।

शकीरा - कौन बड़ी बी ? शबनम......देखती होगी, झुक-झुक कर। मुझे तो लगता है, उसका एक कन्धा टूट गया है। हायऽऽ अल्लाह। अब इस शैतान की ख़ाला के दीदार ना हो जाय?

शबनम - क्यों री ?

शकीरा - अब तो मैं इसे शैतान की ख़ाला ना कहकर, इसे नाज़र ही कहूंगी। कल का ही वाकया है, मोहल्ले के मुसाहिब फन्नेखां साहब के घर पोती हुई। और फिर, बख़्सीस लेने आ गये हिंजड़े।

शबनम - फिर, क्या हुआ ?

शकीरा - अरी शबनम। कहीं इमतियाज़ मेडम अन्दर ना आ जाय, अब मुख़फ़्फ़फ़ बयान कर देती हूं....फन्नेखां साहब की डरावनी मूंछें

क्या देखी, शबनम? वे सारे नाज़र थर-थर काम्पने लगे। तभी, फन्नेखां साहब की आवाज़ गरज़ उठी।

शबनम - अरी शकीरा, क्या कहूं तूझे ? वा फन्नेखां साहब तो कहीं अन्धेरे में कहीं दिख जाये, उन्हें ख़न्नास समझकर आदमी होश खो देता है। अब तू आगे बोल, क्या हुआ ?

शकीरा - उनकी गरज़ती आवाज़ से, हिंजड़े भगे घर से बाहर। कोई इधर भगा, तो कोई भगा उधर। इस भागम-भाग में, उनका लीडर गुलाबो खो गया।

मेहरून्नीसा - (पहलू में बैठी दूसरी छोरी, अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिये पूछ बैठती है) - अरी शकीरा, लीडर मत बोल। ये हिंजड़े, अपनी मुखिया को बड़ी बी नाम से पुकारते हैं। तू आगे बोल, फिर क्या हुआ ?

शकीरा - तभी एक हिंजड़े की निगाह, मेन गेट से बाहर आती अपनी बड़ी बी पर गिरी....बस वह चिल्लाया "मुजदा...मुज़दा।"

मेहरून्नीसा - बेचारी बड़ी बी की शामत आयी, क्या? हारू अल्लाह।

शकीरा - उसने दूसरे हिंजड़ों को इकट्ठा किया, फिर जा दबोचा सभी ने....बड़ी बी को। फिर सभी हिंजड़े कहने लगे उनसे " गुलाबो बी। कहां चली गयी, आप ?"

शबनम - हायऽऽ अल्लाह। यह क्या ?

शकीरा - यह माज़रा देख कर, सामने दुकान पर खड़े मोहल्ले के लोगों का हंसी के मारे बुरा हाल हो गया। तभी किसी ने ताना मार दिया "बिरादर। यह तो ना है मर्द, और ना है जनाना।" फिर क्या ? इतना कह कर, वह तो ज़ोरों से ठहाके लगा कर हंसने लगा। (हंसती है)

शबनम - हायऽऽ, गर्दिशज़दः बड़ी बी।

शकीरा - आगे वह आदमी बोला "अरे, भाइयों। यह तो नाज़र है। अब आगे से ख़ाली जेब लिये, स्कूल में दाख़िल मत होना।" उसकी बात सुन कर, सभी लोग हंसने लगे।

(खिड़की के पास खड़ी नसीम बी अपनी हंसी रोक ना सकी, बस फिर क्या ? हंसती हुई जाकर, इमतियाज़ के पास आकर खड़ी हो जाती है। फिर बच्चियों से सुनी दास्तान, सिलसिले वार उन्हे सुनाने लगी। दास्तान सुन कर, सभी मेडमें खिल खिला कर हंस पड़ती है। ग़ज़ल बी क्लास में पूरा लेसन पढ़ा कर, क्लास से बाहर आती है। ग़ज़ल बी के हाथ, चॉक के कारण सफ़ेद पुते हुए लग रहे हैं। वह वहां रूक कर, कहने लगती है।)

ग़्ाज़ल बी - (रूकते हुए) - चुप रहना सीखो। अभी तुम्हारी अम्माज़ान, चिराग़-ए-अलादीन के जिन्न की तरह यहां आ जायेगी। तुम्हारा हल्ला सुन कर।

मुमताज़ बी - आपा, आप उसे जिन्न क्यों कह रही हो ? जिन्न तो आप खुद दिख रही है, ज़रा आप इन अपने हाथों पर निगाह डाले। जिन्न के माफ़िक डरावने हाथ......

गज़ल बी - (बात काटती हुई) - तू फ़िक्र मत कर। अभी इन हाथों के साथ, तेरे पाप भी धो डालती हूं। (दालान की ओर, देखती हुई)

अब चली जाओ, क्लास के अन्दर। मेरी अम्माओं, वह जोलिन्दःबयाँ आ रही है।

(सामने बड़ी बी बेनज़ीर, आती हुई दिखाई देती है। सभी मोहतरमाएं, अपनी-अपनी क्लासों में चली जाती है। ग़ज़ल बी अपने अपने हाथ धोने के लिये, पानी के नल की तरफ़ क़दम बढ़ा देती है। मंच पर अन्धेरा छा जाता है।)

(२)

मंच रोशन होता है। बेनज़ीर को दसवीं क्लास की बच्चियों का शोर-गुल सुनाई देता है। वह तेज़ी से उस क्लास की ओर क़दम बढ़ाती है। उस क्लास में किसी मेडम को ना पाकर, वह खुद मेज़ के पास रखी कुर्सी पर बैठ जाती है। उसे देख कर, सभी बच्चियाँ चुप हो जाती है। और फिर खड़ी होकर, एक सुर में आदाब अर्ज करती है।)

सभी बच्चियाँ - (खड़ी होकर, आदाब अर्ज करती है) - आदाब, मेडम।

बेनज़ीर - (रूख़ेपन से) -बैठ जाओ। किसका पिरियड है ?

(बच्चियाँ चुप रहती है, कोई जवाब नहीं देती। तब बेनज़ीर, कठोरता से वापस पूछती है।)

बेनज़ीर - (कठोरता से) - सुनती नहीं, क्या कहा मैने ?

सभी बच्चियाँ - (एक साथ) - ग़ज़ल मेडम का...ग़ज़ल मेडम काऽऽ...

बेनज़ीर - (एक बच्ची की तरफ़ उंगली उठा कर) - तुम....तुम नहीं नहीं (दूसरी बच्ची की तरफ़ उंगली उठा कर) तुम...खड़ी हो जाओ, हिन्दी की किताब लेकर। (सभी बच्चियों से) खोलो अपनी हिन्दी की किताबें...लेसन फिफ्थ...(खड़ी बच्ची से कहती है) अरी, फातमा की छोरी। देखती क्या हो, मुझे ? चल, पढ़ना चालू कर।

(छोरी पढ़ना चालू करती है, उधर बेनज़ीर दीवारों को देखती हुई विचारों में तल्लीन हो जाती है। अब उसकी आंखें के आगे, स्कूल के बरामदे का मंजर दिखाई देता है। जहां मोहतरमाएं, कुर्सियों पर बैठी दिखायी है। उनके बीच में दाऊद मियां व मियां शेरखान भी, कुर्सियों पर बैठें हैं। शमशाद बेग़म टी क्लब की टेबल पर रखे गैस के चूल्हे पर, भगोना रख कर चाय बना रही है। पास बगीचे में

तौफ़ीक़ मियां व दिलावर खां, टेक्नीश्यन रमज़ान मियां के साथ बैंच पर बैठे हैं। वे तीनों गुफ़्तगू करते जा रहे हैं।)े

सलमा बी - दाऊद मियां। जब दो हाथी लड़ते हैं, तब उनके पावों तले घास कुचली जाती है.....यही बात, इंसानो के बीच होती है। आप ज़ानते हैं, दो ताकतवर इंसान आपस में लड़े, तो बहोत सारे कमज़ोर इंसान उनकी ज़द में आ जाते हैं।

दाऊद मियां - आपने वज़ा फ़रमाया, मोहतरमा। बस, ऐसे ही कमज़ोर इंसानो को टकरावों से दूर रहना चाहिये। इस तरह दूरी अपनाने से ही, वे उन ताकतवर इंसानो की ज़द में आने से बच सकते हैं।

सलमा बी - बात यही है मियां, के बड़ी बी के पास हेड ऑफिस से ख़त आया है। ख़त के तहत अब बड़ी बी किसी भी मेडम को, गाईड की बच्चियों के साथ श्री नगर में लगी जम्बूरी में ट्रेनिंग दिलाने ज़रूर रूख़्सत करेगी। तब से फ़िक्र होने लगी है....हायऽऽ अल्लाह.....

दाऊद मियां - ऐसी तकलीफ़ें सरकारी नौकरी में आती रहती है, मोहतरमा। कब तक आप अपनी सी.एल. व मेडिकल क़ुरबान करती रहोगी, इन मुसीबतों से बचने के लिये...? बहादुर बनो, और दिखाओ अपनी क़ाबिलयत।

सलमा बी - फिर, क्या करूं हेडसाहब?

दाऊद मियां - बस आप तो ख़िलक़त के क़ायदे के तहत, जिसको दबाने की पोज़ीशन में आप हो उसे ही दबाये....और जिसको दबाने की ताकत आपके अन्दर ना हो तो आप खुद दब जाये....उससे मिलकर सहूलियत हासिल कर ले।

शेरख़ान - वज़ा फ़रमाया, आपने। यही बहादुरी है, और यही है है शरीफ़ इंसान के काम करने का [5]शैवा।

शमशाद बेग़म- (भगोने में चाय की पत्ती डालती हुई) - जनाब। शेर को भूख लगती है, तो वह हिरण का शिकार करता है....लेकिन वो कभी हाथी का शिकार करने की भूल नहीं करता।

शेरख़ान - समझ गयी, ख़ाला आप ? शेर एक शाह पसन्द ज़ानवर है, ना कि जंग पसन्द। मेरा मफ़हूम यही है, खाला के हम ठहरे शेर....यानि ‘हिज़ब्र’ शेरख़ान, आख़िर कैसे इस जोलिदःबयाँ नाम के हाथी से लड़े? हम जंग पसन्द नहीं हैं, अल्लाह के मेहर से....

शमशाद बेग़म- अजी शेरख़ान साहब, यानि इस स्कूली जंगल के राजा हिज़ब्र। घर के हाल-चाल, तो बताइये। जनाब, आपकी बीबी कुछ शिकायत कर रही थी। (धीमी आवाज़ में) आप किसी नर्स....

शेरख़ान - तौबा....तौबा। घर की बातें यहां ना लायें, ख़ाला तो अच्छा रहेगा। आख़िर, करूं क्या ? गर्दिशज़द हूं.....यहां आता हूं तो यह बड़ी बी नाम की बेनज़ीर, और घर पर बैठी है बेनज़ीर नाम की बीबी.....आख़िर जाऊं, तो जाऊं कहां ?

शमशाद बेग़म- मोहमल बात करती नहीं, जनाब। इन दोनों मोहतरमाओं के नाम एक ही हैं। बेनज़ीर स्कूल में....घर में भी, बेनज़ीर।

दाऊद मियां - अरे जनाब, यह बेनज़ीर नाम ही ऐसी लियाकत रखता है जिसे देखकर लोग अपना रूख़ बदल लेते हैं। वसूक न हो तो देख लीजिये, पाकिस्तान की वजीरे आला बेनज़ीर को।

शमशाद बेग़म- इसलिये कहती हूं, बदकिस्मत के मारे आप दो हाथियों के बीच में फंस गये हो शेरखान साहब। थोड़े दिन.....

शेरख़ान - (गुस्से में) - क्या, शेरख़ान कहलाना बन्द कर दूं ? दूसरा नाम रख दूं क्या, गीदड़ खां ? हमने तो कुछ वक़्त के लिये अपनी ज़बान पर ताला जड़ लिया है, ख़ाला आप ऐसा ही समझ लीजिये। जैसा, आप मुनासिब समझे।

(शमशाद बेग़म चाय के प्याले तश्तरी में रखकर, लाती है।)

शमशाद बेग़म- (चाय का प्याला थमाते हुए) - मियां। ख़ुश रहा करो, फिर किसी बात की फ़िक्र मत करो। तब स्कूल में भी रहोगे ख़ुश, और घर पर भी रहोगे ख़ुश।

शेरख़ान - (कान पकड़ते हुए) - ख़ाला आपकी बातें, ज़िन्दगी की तालीम के लिये मफ़ीद है। हम ज़रूर आपका हुक्म मानेंगे जैसा आप चाहेंगे। हम आपके कहने के मुताबिक...

दाऊद मियां - क्या कहोगे, मियां ?

शेरखान - बड़ी बी का हर हुक्म मानेंगे, कभी [6]हारूनी नहीं बनेंगे। उनको यही कहेंगे, मैं वैसे ही करूंगा, जैसा आप कहेंगे। अगर बड़ी बी यह कहेगी, के "मियां शेरख़ान साहब, यह लीजिये पत्थर। इसको स्टॉक एन्ट्री कर के, रजिस्टर में मेरे दस्तख़त करवा दीजिये।" तो हमें क्या, उज्र ? पत्थर को भी चढ़ा लेंगे, रजिस्टर में...लाइब्रेरी हो तो क्या हुआ ?

शमशाद बेग़म- (दूसरों को चाय के प्याले थमाती हुई) - ठीक समझा, आपने। ज़हन की सतह पर आली हक़ीक़तों को दरयाफ़्त कीजिये, क्योंकि इसी ज़हन सरगर्मी से इंसान की तमाम तरक्क़ियां बन्धी हुई है। चलो, अब बड़ी बी को भी चाय देकर आ जाऊं।

(शमशाद बेग़म, जाती हुई दिखाई देती है। तौफ़ीक़ मियां व दिलावर खां, रमज़ान मियां के साथ बरामदे में तशरीफ़ लाते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - ऐसा करो रमज़ान मियां, आप ज़रा बड़ी बी से मुलाकत कर आये और उनसे अच्छी तरह समझकर आना के हॉल में इलेक्ट्रिक फिटिंग कैसे करनी है ? कितने पोइन्ट देने हैं, और कितने पंखे लगेंगे ? तब तक मियां, हम दोनों इसी बरामदे में बैठें हैं।

(रमज़ान मियां, बड़ी बी के कमरे में दाख़िल होते हुए दिखाई देते है। तौफ़ीक़ मियां व दिलावर खां, बरामदे में रखे ख़ाली स्टूलों पर आकर बैठ जाते है। तभी शमशाद बेग़म बड़ी बी के कमरे से निकलकर बाहर आती है, वहां बाहर बैठे दोनों बरख़ुदारों से कहने लगती है।)

शमशाद बेग़म- (दोनों से) - वाह भाई, वाह। ख़ाला काम करती रहे, सारे दिन इस स्कूल में। और यहां ख़ाला के दोनों भाई बगीचे में सैर-ओ-तफ़रीह करने निकल पड़ते हैं। (चाय के प्याले थमाती

हुई) लीजिये हुजूर। अब चाय पीकर अपनी थकावट दूर कीजिये। अब और हुक्म है, इस ख़ाला के लिये ?

(दोनों चाय के प्याले उठाते हैं, उधर दाऊद मियां आंख मारकर उन्हे इशारा करते हैं। दोनों मुअज़्ज़म अपने स्टूल उनके पास खिसका कर, उनके नज़दीक आकर बैठ जाते हैं। इधर रमज़ान मियां, बड़ी बी के कमरे से निकल कर बाहर आते हैं। बाहर आकर, वे तौफ़ीक़ मियां से कहने लगते हैं।)

रमज़ान मियां - (तौफ़ीक़ मियां से) - तौफ़ीक़ मियां, बड़ी बी से बात हो गयी है। उन्होने कहा है, के आक़िल मियां के कमरे में सिलिंग फेन के पार्सल रखे हैं। अब मैं कल दोपहर को आऊंगा, तब तक आप बिजली फिटिंग का सारा सामान लाकर हॉल में रख देना। लीजिये, सामान की फ़े़हरिस्त।

(फ़ेहरिस्त थमाकर, रमज़ान मियां रूख़्सत होते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (चाय की चुश्कियां लेते हुए) - हेड साहब। क़िस्मत अच्छी हो तो इंसान को सारे सुख मिलते है, और बदकिस्मत आदमी को बिना वजह ताने सुनने पड़ते हैं।

शमशाद बेग़म- (चाय के झूठे बरतन इकठ्ठे करती हुई) - एक तो ठहरे कामचोर, ऊपर से यह तोहमत लगाना ? दोनों बातें तौफ़ीक़ मियां, एक साथ नहीं चलती। चलिये चाय पी ली हो तो, चाय का प्याला दे दीजिये, आख़िर धोने तो मुझको ही है....यहां मेरी मदद करेगा, कौन ?

(सारे जूठे प्याले उठा कर, चाय के दूसरे बरतनों के साथ ले जाती है... नल के नीचे, उन्हें धोने के लिये। फिर, बरतन धोने वहीं बैठ जाती है।)

तौफ़ीक़ मियां - हेड साहब। आप ज़ानते हैं, हक़ीक़ी ख़ुदा से रिश्ता क़ायम होना इंसान के लिये सबसे बड़ी रहमत है। जिस औरत या मर्द का रिश्ता ख़ुदा के साथ क़ायम हो जाय, उसकी जिन्दगी में हमदायत का नूर आ जायेगा।

दिलावर खां - वज़ा फ़रमाया, बिरादर। उसमें रबानी शख़्सियत पैदा होगी। इसको ज़हनी इरतकाई का आली दरज़ा हासिल होगा। इसके बर अक्स जो शख़्स शरक में बतला हो, वह अन्धेरों में भटकता रहेगा।

तौफ़ीक़ मियां - बात हम भी यही कहना चाहते हैं, हेड साहब। आप ज़ानते ही हैं, के मौजूदा ज़माने में हम देखते हैं...हर आदमी ख़ुदा का नाम लेता है, हर आदमी किसी न किसी खपरी को ख़ुदा का दरज़ा देकर उसको अपना लेता है, मगर जहां तक ख़ुदा की रहमत और रबानी शख़्सियत का ताल्लुक है उसका.....

दाऊद मियां - (बात को पूरी करते हुए) - कहीं वजूद नहीं ? सबब वाजह बताइये, क्या है ?

तौफ़ीक़ मियां - यही है कि, लोग ग़ैर ख़ुदाओं को अपना ख़ुदा बनाये हुए हैं। क्या करें ? लोगों को, इतनी समझ क्यों नहीं है ? मज़ारों पर जाकर ख़ादिमों के आगे-पीछे चक्कर लगाते रहते हैं, और

ये ख़ादिम गण्डा-तावीज़ के नाम लोगों से पैसे ऐंठ लेते हैं ? फिर भी इन नासमझो को, इन ग़ैर ख़ुदाओं पर वसूक बना रहता है।

(शमशाद बेग़म ने, सारे बरतन धो दिये हैं। अब वह उन बरतनों को लाकर, चाय की टेबल पर रख देती है। फिर, हेड साहब के नज़दीक आकर कहने लगती है।)

शमशाद बेग़म- बहोत हो गया, हेड साहब। इन दानिश मोमीनो की बात सुन-सुन कर, हमारे कान पक गये। ज़रा इन कोदन [1]मुतशर्रेअ से पूछिये के मुसीबत से घिरे इंसानों को कोई ऊजाले की किरण दिखला दे, तो वह इंसान उस गर्दिशज़दः इंसान के लिये ख़ुदा ही होगा......

तौफ़ीक़ मियां - साफ़-साफ़ कह दीजिये, ख़ाला। आप कहना क्या चाहती हैं, आख़िर ?

शमशाद बेग़म- तौफ़ीक़ मियां, गर्दिशज़दः इंसान के बारे में आप क्या

(पास रखे स्टूल पर, शमशाद बेग़मबैठ जाती है।)

शमशाद बेग़म- तौफ़ीक़ साहब। गालों में घोड़े दौड़ते हैं, आपके। आप क्या ज़ानो, ग़रीबी व बैठल्म की ज़िन्दगी क्या है ? कोई मुफ़ालिसी में मुझ ग़रीब को दो पैसे की मदद कर दे, वही मेरा ख़ुदा है।

(दीवार घड़ी देख कर शमशाद बेग़म उठती है, जाकर कालांश बदलने की घण्टी लगाती है। फिर वापस आकर, स्टूल पर बैठ जाती है। कुर्सियों पर बैठी सारी मोहतरमाएं उठकर अपनी-अपनी क्लासों में चली जाती है। चारों तरफ़ सन्नाटा छा जाता है। इस सन्नाटे के कारण, दाऊद मियां व मियां शेरख़ान को झपकी आने लगती है।)

शमशाद मियां - मैं कह रही थी, मियां...जब मैं चौदहा साल की थी, तब मेरा निकाह हो गया। शौहर शादी के पहले तो ठीक-ठाक थे, मगर शादी के बाद न ज़ाने उनको क्या फितुर आया ? बस उन्होने कारखना ज़ाना छोड़ दिया, फिर पागलों की तरह करने

लगे हरक़तें। हायऽऽ अल्लाह, लोगों का कहना था जनाब को आसेब लग गया। कोई कहता, वे जिन्न के गिरफ्त में हैं।

दिलावर खां - ख़ाला। अब तो उनकी हालत में, सुधार आ गया होगा ?

शमशाद बेग़म- काहे का सुधार ? आज़ भी उनकी वही दशा है, मियां। शादी के बाद पीहर वालों ने खूब समझाया, मुझे....के मैं उस मर्दूद को तलाक देकर, दूसरे के साथ शादी कर लूं। मगर मियां, मैने ख़ुदा पर वसूक किया। सोचा के अगर.....

दिलावर खां - क्या सोचा, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- मेरी क़िस्मत में यही इंसान लिखा है, तो इस इंसान को रास्ते पर लाकर ख़ु़ादा का हुक्म क्यों ना अमल करूं ? बच्चे होते गये, मगर इस इंसान को अक़्ल ना आयी के अपनी जोरू और बच्चें के लिये कुछ कमा कर लायें ?

दिलावर खां - अच्छा हुआ, ख़ाला। आपको नौकरी मिल गयी, ना तो हाय अल्लाह न ज़ाने क्या होता?

शमशाद बेग़म- बस ख़ुदा के सहारे जी रही हूं। (गाती है, ग़म के मारे) "हम आये हैं तेरे जहां में रब। अब जीना ही पड़ेगा।। पेट के ख़ातिर जो कुछ, करना ही पड़ेगा....। हम आये हैं तेरे जहां में रब। अब जीना ही पड़ेगा।"

(गाती-गाती शमशाद बेग़म के आंखों से, अश्क गिर पड़ते हैं। पल्लू से उन आंसूओं को पोंछ कर, वह आगे कहती है।)

शमशाद बेग़म- हर दिन मियां.....ये ज़िन्दगी और मौत के खेल है, मेरे लिये। घर के ग़म को भूलने के लिये स्कूल चली आती हूं, स्कूल में कहां आराम ? बस हुक्म का अम्बार लग जाता है, यहां। दो मिनट तसल्ली से दाऊद मियां के पास बैठ कर, इल्म की चर्चा करती हूं तो...

दिलावर खां - कहिये ख़ाला, ऐसा कौन दोज़ख़ी है...जो ख़ुदा के पाक काम में ख़लल डालता है?

शमशाद बेग़म- अजी क्या कहूं, इस शैतान की ख़ाला कों अच्छा नहीं लगता.......बस, तोहमत के ऊपर तोहमत। घर में जिन्न के

साथ रहना, व स्कूल में आसेब के साथ....बस अब यही ज़िन्दगी है, मेरी।

तौफ़ीक़ मियां - ख़फ़ा ना होना, ख़ाला। एक बात पूछता हूं, आपसे....आप आज़कल, उस घण्टी वाले ख़ादिम के चक्कर में क्यो पड़ी है ? कितना पैसा लूटा चुकी हैं, आप ?

(दीवार पर एक छिपकली चुपचाप सरकती हुई आगे बढती है, तो उधर बड़ी बी भी उसकी तरह चुपचाप आकर खिड़की के पास आकर खड़ी हो जाती है। मगर इन अनज़ान नादानों को कुछ मालुम नहीं, उनकी हर गतिविधि पर वह नज़र गढ़ाये बैठी है, बड़ी बी।)

शमशाद बेग़म- उनको कुछ ना कहो, तौफ़ीक़ मियां। वह जनाब मेरे उस्ताद ठहरे। उनके मेहर से मुझे जीने की तमन्ना मिली है। आहऽऽ हाऽऽ क्या ख़ौफ़नाक मंजर था, आमवस्या की रात का ?

तौफ़ीक़ मियां - कोई आसेबज़दः वाकया तो ना देख लिया, ख़ाला ?

शमशाद बेग़म- (दोनों हाथ ऊपर ले जाकर) - ओ मेरे रसूल अलदसली अलद अलाया वसलम.....इस बेज़ान बदन में, ताकत दे.......उस बयावन वाकया को बयान करने का।

(अब कुछ देर इहर कर, शमशाद बेग़म उस ख़ौफ़नाक वाकया को बयान करने लगती है।)

शमशाद बेग़म- (वाकया बयान करती हुई) - रात के दो बजे थे, बाहर गली के कुत्ते भौंक रहे थे। उनकी आवाज़ सुनकर मैं उठी, क्या देखा ? पास लगा रजिया के अब्बा का बिस्तर ख़ाली ? घबराकर उठी, और गयी दालान में। अरे मियां, वहां क्या देखा ?

दिलावर खां -क्या देखा, ख़ाला?

शमशाद बेग़म- हाय अल्लाह, (हाथ नचाती हुई) यूं हाथ ऊंचे करके रजिया के अब्बा नाच रहे थे। जैसे ही उनकी नज़रें मुझसे मिली, और वे हो गये बेनियाम। अंगारों की तरह लाल सुर्ख़ आंखें किये हुए, बोले मुझ से “अरी ख़ातून। फानिज़ का डब्बा कहां रखा है, ढूंढ

डब्बे को। फिर बना, मेरे लिये बामज़ हलुआ। जल्दी कर, मेहरारू।"

तौफ़ीक़ मियां - फिर ?

शमशाद बेग़म- बस, फिर क्या? वे चक्कर लगा-लगा कर, घूमने लगे। [2]दफ्अतन, वे अपने बाल नोंचने लगे। हाय अल्लाह, मैं डर गयी। चिल्लाने लगी "घण्टी वाले बाबा। कुछ कर" मैं फफक-फफक कर, रोने लगी। रोने की आवाज़ सुनकर, मेरा छोरा रज्जब उठ गया। आकर कहने लगा "अम्मी क्या बात है ?"

दिलावर खां - मैं तो सच कहूंगा, यह आसेब की हरकत नहीं हो सकती। यह बाल नोंचने व इस तरह नाचने का [3]हिक़ारत से भरा काम, किसी ख़बीस या जिन्न की छाया पड़े इंसान का काम है। मैं तो यह भी दावे के साथ कहूंगा, के ऐसा आदमी कुलांचे मारता है....कभी-कभी वह कई फीट ऊंचा कूदता रहता है। आगे, क्या हुआ ?

शमशाद बेग़म- फिर क्या ? रज्जब ने घण्टी वाले बाबा के नाम, लोबान किया....बतासे चढ़ाये। जैसे ही लोबान का धुंआ उनकी नाक में पहुंचा, और वे तीन-तीन फीट ऊंचे कूदने लगे और मुझसे कहने लगे "अरी ओ ख़ातून...नापाक। मुझसे दूर रह।

तौफ़ीक़ मियां - ख़ाला। अगर आपने बाबा ग़ौस का वजीफ़ा पढ़कर, मिरचें जलाई होती तो....जिन्न क्या ? जिन्न का बाप ख़बीस भी, बोतल में बन्द हो जाता।

शमशाद बेग़म- सुनों मियां। पहले दास्तान सुन लिया करो, फिर मश्वरें पेश करना मुनासिब है। यह ख़बीस भी आगे जाकर, बोतल में भी बन्द होगा....उस्ताद ने ऐसा किया भी है, बाद में। अच्छा मैं क्या कह रही थी ? अच्छा याद आ गया, जनाब आगे कहने लगे "ज़ानती नहीं, मुझको ? मैं हूं अफ़ज़ल खां का ख़ास मुंहलगा गुलाम नादिर अली।'

तौफ़ीक़ मियां - अरे ख़ाला, यह गुलाम नादिर अली बड़ा वाहियात इंसान था। ऐसा हमने भी, तख़रीब में पढ़ा है। वह बदजात मुफ़लिस और महज़ून औरतों को बहका कर इन वहशी सूबेदारों को सुपर्द कर देता था। आगे कहो, ख़ाला...उसने आगे क्या कहा?

शमशाद बेग़म- आगे कहा 'जंगाह में पहाड़ी चूहे शिवा ने, अपनी शमशीर से मेरा सर क़लम कर दिया। न ज़ाने मेरा सर उस जंगाह (युद्ध का मैदान) में, न मालुम कहां जाकर गिरा ? हाय ख़ुदा, किसी को बाद में ना मिला। मुझ बदनसीब का धड़ सर से अलग होकर, घोड़े की पीठ पर पड़ा रहा।'

तौफ़ीक़ मियां - कहां का बदनसीब? कमजात, एक नम्बर का हरामी था।

शमशाद बेग़म- आगे कहा 'फिर क्या? मेरे वफ़ादार घोड़ा ने धड़ को अपनी पीठ पर लादकर, मेरे ग़रीबख़ाने ले आया। मेरी बेग़म रोयी चिल्लायी, आख़िर मेरे धड़ को सुपर्देख़ाक़ करने की रस्म अपना दी। तब से मेरी रूह भटक रही है, जिस्म पाने।'

दिलावर खां - आगे कहो, इस कम्बख़्त की कहानी।

शमशाद बेग़म- आगे कहा 'जब तुम अपने खाविन्द के साथ, रेल्वे की पटरियां पार कर रही थी। तब तुम्हारी खूबसूरती देखकर, मैं तुम पर फ़िदा हो गया......और तुम्हे हासिल करने के लिये, तुम्हारे शौहर के जिस्म पर कब्जा कर बैठा। पच्चीस साल से, मैं तेरे शौहर के जिस्म में हूं।'

तौफ़ीक़ मियां - लाहौल विल कूवत। यह तो [4]सिफ़ाहत से भरे, किसी ख़बीस की नापाक रूह निकली। ख़ाला जिन्न से तो ज़रूर हमारा पाला पड़ा है, मगर ऐसे ख़बीस को कभी देखा नहीं।

दिलावर खां - (तौफ़ीक़ मियां से) - बिरादर। कहीं जिन्न को आप, अपने जिस्म में लिये तो नहीं घूम रहे हैं ?

तौफ़ीक़ मियां - वल्लाह, ऐसा कैसे हो सकता है ? जिन्न तो हमारे मकान की ऊपर वाली मिंजल में रहता है। यार, मैं उसे जिन्न कहूं या फरिश्ता ? जब भी उस कमरे में दाख़िल होता हूं, क्या ख़ूश्बू छा जाती है चारों ओर ? ख़ाला जन्नत-ए-दर...

शमशाद बेग़म- (बात काटती हुई) - पहले मेरी दास्तान तो पूरी होने दें, मियां। बाद में आप आराम से, अपने जिन्न के हाल-चाल बता देना। सुनो मियां, फिर रजिया के अब्बा झूमने लगे....मैं ज़ोर-ज़ोर से कहने लगी "ओ फ़हीम रूह। तेरे बयान के मुतालिक, ये बच्चे तेरे हुए। तू मेरे शौहर के जिस्म में, सुहाग रात के पहले दाख़िल हो चुका था। अब इस तिहीदस्त पर रहम खा। मेरी बेनवाई को खत्म कर। ला रूपये-पैसे, तेरे बच्चों को पालना है।"

तौफ़ीक़ मियां - अरे ख़ाला, रूपये-पैसों को छोड़ो। उसने ज़रूर अपनी रूहानी ताकत के जरिये, सोने-चान्दी के कलदारों से आपका घर भर दिया होगा ?

शमशाद बेग़म- (हंसती हुई) - भरे, मेरी जूती ? कभी सुना है आपने, किसी ढपोल-शंख ने किसी को दौलत दी है ? सुनो आगे, इतना सुनकर वह रूह ठहाके लगाकर हंसने लगी, और कहने लगी "मोहतरमा आप हमें मुगल सल्तन का सूबेदार ही समझ सकती हैं।"

दिलावर खां - अजी, सूबेदार कहां का? कम्बख़्त राक्षस ठहरा, औरतों का दलाल। आगे कहो, ख़ाला। आगे, क्या हुआ?

शमशाद बेग़म- हंसते-हंसते कहा 'सूबेदार के पास दौलत की क्या कमी ? खूब पड़े हैं चान्दी के सिक्के। तेरे मकान के सामने लगे, गून्दी के पेड़ के नाचे दबे पड़े हैं....वो चान्दी के सिक्के।'

दिलावर खां - वाहऽऽ ख़ाला, वाह। आपको अनायस खज़ाना मिल गया।

शमशाद बेग़म- (पेशानी पर छायी, पसीने की बून्दों को पल्लू से साफ़ करती हुई) - ख़ाक। अरे भाई। वह मर्दूद रूह तो मेरे बदन से, लहू चूषने वाली निकली। हमने तो नसीबे दुश्मना ज़ान जोख़म पाल रखी है। बड़ी फ़ाजिर रूह ठहरी।

तौफ़ीक़ मियां - मुक़्तजाए उम्र, अब आपकी हज करने की है। मगर, उस रूह को कहां पत्ता ?

शमशाद बेग़म- सही कहा, मियां आपने। दिन देखे, ना रात। बस, बेड पर पड़ा-पड़ा हमबिस्तर होना और कपड़े गन्दे करना उसकी

मुक़्तजाए फ़ितरत है। बस पैसे का नाम सुनकर, रूह हो गयी गायब। बस, अब रजिया के अब्बा हो गये नोरमल। बस, फिर क्या ? कहने लगे "चलो बेग़म, यहां क्यों खड़ी हो ? चलते है, अपने बेड-रूम में।"

(सभी ख़ाला की बात सुनकर, हंस पड़े। इतना सर खपाने बाद, शमशाद बेग़म को जर्दा चखने की तलब बढ़ने लगी। फिर क्या ? झट उठकर ले आयी थैली। उसमें से पेसी निकाल कर, बनाने लगी सुर्ती। सुर्ती बनाते वक़्त वह ज़ोर से हथेली पर, थप्पी लगाती है। जिससे खंक उड़कर तौफ़ीक़ मियां के नाक में चली जाती है, और वे ज़ोरों से छींकने लगते है। उनको इस तरह लगातार छींकें खाते देखकर, शमशाद बेग़म कहने लगती है।)

शमशाद बेग़म- क्यों मियां ? दास्तान सुनकर, जनाब को आ गयी छींकें ? (दाऊद मियां को सुर्ती थमाते हुए) लीजिये, हेड साहब। कहां खो गये, जनाब ?

(आंखें मसलते हुए, हेड साहब उठते हैं। फिर हाथ आगे बढ़ाकर, सुर्ती लेते हैं। सुर्ती लेकर, कहते हैं।)

दाऊद मियां - (होंठों के नीचे सुर्ती रखते हुए) - ख़ाला सोचता हूं, इस स्कूल के हर कमरे में मुझे नीन्द आ जाती है। मगर आक़िल मियां के कमरे के सामने वाले कमरे में नीन्द आना तो दूर, जिस्म का रोम-रोम खड़ा हो जाता है।

शमशाद बेग़म- (होंठों के नीचे सुर्ती दबाती हुई) - आपने वज़ा फ़रमाया है, हुजूर। अल्लाह मुझे झूठ ना बोलाये, जब भी इतवार को डे-ड्यूटी लगती है मेरी। बस इस कमरे में तीन कदम अन्दर जाते ही, सहम जाती हूं हुजूर। अगर इस ठौड़ पर सो गयी, तो ऐसा लगता है कोई मुझको झंझोड़कर उठा रहा है।

दिलावर खां - मैं तो यही कहूंगा जनाब, यह कमरा आसेबज़दः है। यहां इसी कमरे में, किसी आहिरः औरत की रूह भटकती है। वह किसी को, यहां चैन से सोने नहीं देती।

तौफ़ीक़ मियां - अजी, वह रूह नज़दीक भटकने वाले इंसानों के जिस्म पर कब्जा कर बैठती है।

दाऊद मियां - अब हमें भी, तस्लीम करना पड़ेगा....आयशा मेडम इतना ख़ूबसूरत शौहर पाने के बाद भी, उस कौए समान मज़ीद मियां के आगे-पीछे क्यों घूमती थी....?

तौफ़ीक़ मियां - और इधर देखिये, जनाब। इस दुख़्तरेख़ान बेनज़ीर बी में हरेक से पंगा लेने की बुरी आदत, कैसे पैदा हुई?

शमशाद बेग़म- (वापस स्टूल पर बैठती हुई) - छोड़िये, बड़ी बी को। सुन लिया, तो बेदिरेग़ यहीं लपक पड़ेगी.....फिर कहना मत, मियां....हमने आपको चेताया नहीं। चलिये, अब आप अपना वाकया सुनाइये।

तौफ़ीक़ मियां - देखिये, हमें भी आसेब निकालने का इल्म हासिल है। आख़िर हम भी, रोज़ेदार मोमीन ठहरे। एक दिन ऐसा हुआ, दिलावर मियां.....आप तो खुद ख़ादिम ठहरे, आप समझ सकते हैं ? ये औरते क्यों आती है, गण्डा-तावीज़ बनवाने के लिये?

दिलावरखां - शैतानी ताकतों से महफ़ूज़ रहने के लिये, और क्या ?

तौफ़ीक़ मियां - गलत बात है, मियां। इन बेचारी औरतों को घर की चारदीवारी के अन्दर रहना ही नसीब में लिखा है, जिससे इनका दम घुटने लगता है। बस ये औरतें, घर की चारदीवारी से बाहर निकलना चाहती है।

शमशाद बेग़म- वज़ा फ़रमाया, जनाब। अक़्सर कई औरतें दिल-ए-तमन्ना को पूरी करने के लिये, आसेबज़दः होने का स्वांग रचती है।

तौफ़ीक़ मियां - बस, ख़ाला यह किस्सा कुछ ऐसा ही है। एक आले ख़ानदान की कुछ औरतें, अपनी दुल्हन के साथ मेरे घर तशरीफ़ लायी। उस दुल्हन ने अपने बाल बिखेर रखे थे, और अपने हाथ-पांव झटकती हुई अपने सर को घूमाती जा रही थी। ख़ुदा ज़ाने, वह किसी के काबू में क्यो नहीं आ रही थी ?

शमशाद बेग़म- हाय अल्लाह। वह तो आसेबज़दः, सौ फीसदी हो सकती है।

तौफ़ीक़ मियां - सुनिये ख़ाला। फिर, अपनी तकरीर रख देना। फिर हमने सबसे कह दिया, के "मोहतरमाओं। दुल्हन से चालीस फीट दूर चली जाओ।" उनके दूर हटने के बाद, हमने दुल्हन के कान में कहा "अरी ग्रजालचश्म। इस बोतल में हमने, अपना पेशाब इकट्ठा कर रखा है।"

दिलावर खां - हाय अल्लाह ? यह क्या, ऐसी नापाक चीज़ अपने रिहायशी मकान में रखते हो ?

तौफ़ीक़ मियां - (हंसते हुए) - फिर हमने कोने में रखी बोतल उसको दिखायी, फिर उससे कहा "इस बोतल का पेशाब, दवा के रूप में तुम्हारे मुंह में उण्डेला जायेगा। ना तो तुम हक़ीक़त बयान कर दो, आ़खिर तुम चाहती क्या हो? मैं वायदा करता हूं, तुम्हारी हर इल्तिज़ा अमल होगी। बस, तुम सच्चाई के साथ अपने बयान पेश कर दो।

शमशाद बेग़म- (गुस्से में) - अरे रेऽऽ नापाक असारी....तुमने यह क्या कर डाला? ख़ानदानी वज़ा के खिलाफ़?

तौफ़ीक़ मियां - बीच में मत टोको, ख़ाला। पहले पूरी बात, इतमीनान से सुनो। बस, फिर क्या ? घबराकर, दुल्हन बोल उठी "बाबा। मैं अपने पीहर ज़ाना चाहती हूँ, बहोत वक़्त गुज़र चुका है ससुराल में रहते हुए। बस बाबा, अब्बू और अम्मी की बहोत याद आ रही है।"

दिलावर खां - फिर क्या?

तौफ़ीक़ मियां - बस, फिर क्या? मैने औरतों को वापस नज़दीक बुलाया और फिर, बोतल ले आया। बोतल को देखते ही, वह दुल्हन उछल-उछल कर कहने लगी 'बोतल को दूर रखो, मैं इसका जिस्म छोड़ रही हूं।'

दिलावर खां - फिर, क्या हुआ?

तौफ़ीक़ मियां - दो मिनट में ही, वह दुल्हन नोरमल हो गयी। फिर मैने औरतों से कहा 'दुल्हन को सोजत ले जाओ, वहां नूर बाबा की मज़ार पर मत्था टिकाना। बस दुरस्त हो जायेगी, यह दुल्हन।'

दिलावर - अरे मियां, उसको सोजत कहां भेज दिया? उसको मायके भेजना, भूल गये क्या?

तौफ़ीक़ मियां - मियां दिलावर, बीच में टोका ना करो। मै ज़ानता था, दुल्हन का पीहर सोजत में ही है। बस, बात बन गयी। रूख़्सत होते वक़्त, उन औरतों को वो बोतल थमा दी। थमाते वक़्त मैने कह दिया 'जब कभी यह दुल्हन आसेबज़द हो, तब इस पाक पानी को इस पर छिड़काव कर देना।'

(इन लोगों की गुफ़्तगू पर कान दिये बैठी बेनज़ीर, पेशो-पेश में पड़ गयी और सोचने लगी 'इस बोतल में, इस ख़न्नास हारूने फ़न तौफ़ीक़ ने क्या भर डाला उस बोतल में? इसे ख़जालत न आयी, ऐसा काम करते..?)

बेनज़ीर - (बड़बड़ाती हुई) - 'हरारतें है म आल-ए-हलावत-ए-दुनिया, वो जहर है जिसे हम शहद-ए-नाब समझे हैं।' बेदरेग इस ख़न्नास कलब की शीरी ज़बान शैवा को देखकर, हम इसके कुव्वते

जाज़बा के जाल में फंस गये... हाय हाय, यह कम्बख़्त तौफ़ीक़ मियां कहीं आबे जुलाल की जगह यूरीन ना पिला दे हमें..?

(ठण्डे आबे जुलाल के छींटे बेनज़ीर पर गिरते हैं, और वह दिमाग़ में चल रहे विचारों को छोड़कर वह तुरन्त चेतन हो जाती है। अपनी आंखें मसलती हुई, उठती है। अब आंखें खोलकर, क्या देखती है? सामने पानी का लोटा लिये, तौफ़ीक़ मियां खड़े हैं। उनको देखते ही, बेनज़ीर घबरा जाती है। अब वह मुअज़्ज़म मोहतरमा को ऐसा लगता है, वह तोफ़ीक़ मियां की कुव्वते जाज़बा से हिप्नोटाइज़्ड हो चुकी है। अब उनके हाथ में थामा हुआ लोटा नज़र न आता है, उसकी जगह वह यूरीन से भरी हुई बोतल दिखायी देने लगती है। बेनज़ीर को इस तरह घबराते हुए देखकर, तौफ़ीक़ मियां मुस्कराते हुए कह देते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (चेहरे पर पानी के छींटे मारते हुए) - यूरीन यूरीन..? ला हौल व ला कुव्वत, यह क्या रज़ील बात कह दी

आपने? अल्लाह कसम, हम क्यों इस नापाक चीज़ को हाथ लगायेंगे? लीजिये आबे जुलाल, गले को तर कीजिये।

बेनज़ीर - (बेनियाम होती हुई) - भाड़ में जाये, आबे जुलाल। और साथ ़में, तुम भी जाओ दोज़ख़ में।

(इतना कहकर, बेनज़ीर कुर्सी छोड़कर उठ जाती है। कमरे से निकलकर, बरामदे में चली जाती है। रफ़्तह-रफ़्तह, पदचाप की आवाज़ सुनायी नहीं देती है। मंच पर, अन्धेरा छा जाता है।)

(३)

(मंच रोशन होता है, बगीचे के नल से ग़ज़ल बी अपने हाथ-मुंह धो रही है। हाथ-मुंह धोकर, वह अब बरामदे में चली आती है। जहां स्टूल पर बैठी शमशाद बेग़म, सुर्ती को अपने होंठ के नीचे दबा रही है। सुर्ती को होंठ के नीचे दबाकर, वह ग़ज़ल बी को कहने लगती है।)

शमशाद बेग़म- कहां तशरीफ़ ले जा रही है, मेडम?

ग़्ाज़ल बी - कहां क्या? क्लास में जा रही हूं, और कहां जाऊंगी?

शमशाद बेग़म- (हंसती हुई) - वहां क्या काम है, क्या बड़ी बी के दीदार करने की तमन्ना बाकी रह गयी क्या? मेडम, आपकी क्लास में यह बड़ी बी गेंडे की तरह घुस चुकी है, अब वह बच्चियों को पढ़ाने की अपनी अधूरी ख़्वाहिश पूरी कर रही है। उठने का नाम नहीं लेगी, अब।

ग़ज़ल बी - ठीक है, ख़ाला। फिर क्या? वापस चली जाती हूं, बगीचे में।

(तभी दूसरी मोहतरमाएं भी चली आती है, बरामदे में। अब इमतियाज़ उन्हें कहती है।)

इमतियाज़ - अरी ओ आपा, जन्नतम गुलशन की सैर हमारे बिना...? (दूसरी मोहतरमाओं से) ओ मेरी प्यारी बहनों, ज़रा बैठो ना कुर्सी लगाकर इसी बरामदे में। अब इस समय आसेबज़द जोलिदःबयां, यहां आने वाली नहीं।

(बरामदे में रखी ख़ाली कुर्सियों पर, सभी मोहतरमाएं आकर बैठ जाती है। बैठने के बाद, इमतियाज़ कहने लगती है।)

इमतियाज़ - हाय अल्लाह। आज़कल, बड़ी बी को क्या हो गया है? असतगफ़िरूल्लाह्, बेचारी कमर झुकाये चलती है। अरी ओ नसीम, ख़ुदा ख़ैर करे, कहीं बेचारी की [7]ख़बासत देखकर कोई ख़बती ख़बीस या ख़न्नास उस पर रींझ न जाय और उसके बदन को कब्जा न कर बैठे?

नसीम बी - (कलाम पेश करती हुई) - कब्जा तो कर चुका है, यह ख़न्नास। अब सुनिये, आप। 'क़दरदां वे होते हैं, जो क़ुरूह को कुरेदते हैं। इनसे बहतर ख़न्नास है, जो नेकी इज़ाद करते हैं। लिल्लाह के सुखनपर, उम्दा है दुनिया में। जो इखलास जुबां रब्बी को, याद करते हैं।'

ग़ज़ल बी - वाह, नसीम वाह। क्या हासिले तरह सुनाया है, सच यही है बड़ी बी आसेबज़द है। अब बता तू इमतियाज़, यह आसेब इस बड़ी बी को कैसी 'चाल' चलने को मज़बूर कर रहा है?

इमतियाज़ - (लबों पर मुस्कान लाती हुई) - अभी दिखाती हूं, इसकी चाल। ध्यान से देखना।

(बांयी तरफ़ सर व कमर झुकाती है, फिर एक हाथ कमर पर रखती है। अब वह कमर झुकाये हुए चलती है, उसकी चाल देखकर सभी मोहतरमाएं हंस पड़ती है। अब वह चलती-चलती क्लास रूम की खिड़की में झांकती हुई कहने लगती है।)

इमतियाज़ - (बेनज़ीर की आवाज़ की नक़ल करती हुई) - नेक दुख़्तरा, किसका पिरियड है? अरी ओ फातमा की नेक दुख़्तरा, ज़रा आबे जुलाल पिलाना इन बाबूजी को। बेचारे काम करते-करते, थक गये। (तेज़ सुर में) अरे कहां चले गये, ये सारे जैलदार? सारे कामचोर हैं, कम्बख़्त।

(उसका अभिनय देखकर, तमाम मोहतरमाएं हंसने लगती है। तभी इन लोगों को, सामने से आ रही बड़ी बी दिखायी देती है। उसे देखते ही, इमतियाज़ को छोड़कर, वे सारी मोहतरमाएं चुपचाप वहां से खिसक जाती है। बेचारी इमतियाज़ को मालुम नहीं, वह

जोलिदःबयाँ इधर ही आ रही है? बस, इमतियाज़ आव देखती ना ताव...झट जुम्ला बोल देती है।)

इमतियाज़ - (बिना देखे, मोहतरमाओं को कहती है) - अरी, शैतान की ख़ालाओं। कुछ तो बोलो, यह चुप्पी कैसे? यह जोलिदःबयाँ की चाल, पसन्द ना आयी क्या?

(तभी बेनज़ीर की तल्ख़ आवाज़, इमतियाज को सुनायी देती है।)

बेनज़ीर - माशाअल्लाह, बहोत शौक है आपको? शुक्र ख़ुदा का, हम ज़रूर आपके इस इल्म का इस्तेमाल करेंगे।

(इमतियाज़ कमर सीधी करके, पीछे मुड़कर देखती है...हाय अल्लाह, सामने बड़ी बी जंगजू बीबी फातमा की तरह लाल सुर्ख़ आंख़ों से जंगली ज़ानवर की तरह वह उसे घूरती जा रही है। इमतियाज़ को लगा, उसके इल्म के क़दरदाँ मोहतरमाएं उसे मुसीबत में डालकर चली गयी। ये क़दरदाँ कैसे होते हैं, आख़िर? यह सोचती हुई इमतियाज़, शायर जे. लतीफ़ नागौरी का कलाम बरबस कह बैठती है।)

इमतियाज़ - 'क़दरदाँ वे होते हैं, जो क़ुरूह को कुरेदते हैं, इनसे बेहतर आपख़न्नास है जो नेकी ईज़ाद करते हैं।'(बड़ी बी से) ख़ैरियत है, ख़ुदा की पनाह से। अरे हुज़ूर, हम तो ज़रा मुआइना कर रहे थे।

बेनज़ीर - सच कहा, बीबी आपने। आपकी क़दरदाँ आपके क़ुरूह को कुरेदकर चली गयी, अब हम आ गये ख़न्नास...नेकी ईजाद करने। ख़ुदा की पनाह, आपकी यह ख़न्नास कल चली जायेगी कम्प्यूटर एज्यूकेशन की इजलास में।

इमतियाज़ - (ख़ुश होकर, होंठों में ही कहती है) -ज़ान छूटी, कम से कम एक दिन तो हमारा आराम से गुज़रेगा।

बेनज़ीर - (लबों पर आये विचारों को भाम्पकर) - अरी, इमतियाज़ बी। इतना ख़ुश होने की कोई ज़रूरत नहीं, हम तो ठहरे, ख़न्नास। कैसे आपको चैन से बैठने देंगे? ओर्डर बुक में लिखा इजरा पढ़ लेना, कल आप स्कूल का काम देखेंगी। बदइन्तज़ामी न हो, याद रखना..नहीं तो....?

(मुस्कराती हुई बड़ी बी, अपने कमरे में चली जाती है। कमरे में जाकर आराम से कुर्सी पर बैठ जाती है। फिर अंगड़ाई लेकर, टेबल पर रखी घण्टी बजाती है। मगर, यह क्या? एक भी जैलदार, हाज़िर नहीं होता। तब वह दूसरी बार घण्टी बजाती है, मगर बदक़िस्मती से एक भी जैलदार नहीं आता... हुक्म बज़ाने। तभी एक देरी से आने वाली दुख़्तरा, बस्ते को नीचे रखकर जाफ़री का दरवाज़ा खोलती है। जैसे ही वह बस्ता लिये अन्दर दाख़िल होती है, बड़ी बी की निगाह-ए-रश्क से बच नहीं पाती। बस, फिर क्या? झट उठकर बड़ी बी बरामदे में चली आती है... और दबे पांव गुज़रने वाली उस दुख़्तरा का हाथ, ज़ोर से थाम लेती है। फिर डांटती हुई, कहने लगती है।)

बेनज़ीर - कहां जा रही हो चुप-चाप, बीबी फातमा की नेक दुख़्तरा? छुपकर निकलती हो, साहबजादी। हम क्या उल्लू की औलाद हैं, जो दिन में देख नहीं सकती? ज़ानती हो, हम इस स्कूल की बड़ी बी हैं? स्कूल के हर वाकये पर, हमारी निगाह-ए-रश्क है। (दुख़्तरा का हाथ छोड़ देती है।)

दुख़्तरा - बड़ी बी, बीबी फातमा हमारी अम्मीज़ान नहीं हैं, हुस्ने इतिफ़ाक़ से हम बीबी गुलशन की लाडो हैं। जो हाजी मुस्तफ़ा साहब की आपा हैं। (जब्हा पर आ रहे बालों को ठीक करती हुई) सोरी, आगे से देरी से नहीं आऊंगी। माफ़ कीजिये, बड़ी बी।

बेनज़ीर - सोरी कहने से काम नहीं चलता, माई डियर हाजी साहब की भाणजी। सलीका सीखाया नहीं, तेरी अम्मा ने? भूल गयी, बानो...के, बालों को रिबन से बान्धा जाता है? चल इधर आ, इस दीवार के सहारे खड़ी हो जा।

(बेचारी सहमी हुई दुख़्तरा आती है, और दीवार के सहारे खड़ी हो जाती है।)

बेनज़ीर - ऐसी क्या खड़ी हो गयी आकर, मेरे वालिद की शादी में नहीं आयी हो.. दावत के लड्डू लाकर, तेरे मुंह में डालूं? अब चल, लगा कान पकड़कर उठ-बैठक।

(कान पकड़कर, वह उठ-बैठक लगाना शुरू करती है। तभी कन्धे पर सौंटे की तरह झाड़ू लिये, शमशाद बेग़म सामने से आती दिखायी देती

बेनज़ीर - अरी, ओ मेरी अम्मा। ज्ाांगजू की तरह, अभी जंगाह में नहीं ज़ाना है। आकर इधर खड़ी हो जाओ, और इस बच्ची पर निगाह-ए-रश्क रखो, सौ उठ-बैठक पूरी न हो जाय...तब तक इसे ज़ाने मत देना।

(फिर क्या? हुक्म के गुलाम की तरह, बेचारी शमशाद बेग़मझाड़ू ऊंचाये वहीं उठ-बैठक की गिनती गिनने खड़ी हो जाती है।)

शमशाद बेग़म- (होंठों में ही) - अब भाड़ में गयी, सफ़ाई करनी। अब यहां इस जोलिन्दःबयाँ अम्मी आकर झाड़ू लगायेगी?

बेनज़ीर - (जाते-जाते कहती है) - अरी ख़ाला, सरकार मेरी अम्मी को तनख़्वाह देती नहीं..न तो उसे ज़रूर बुला देती। अगर तुम अपनी तनख़्वाह दे देती हो, उसे। तो उसे बुलाकर, तुम्हारी ख़्वाइश पूरी कर दूं? अरी देखती क्या हो, मुझे? अभी आती हूं, लंच लेकर।

(बेनज़ीर कमरे में आकर, क्या देखती है ? टेबल पर उसका जो टिफिन रखा था, उसका ढक्कन किसी ने खोलकर खाना बिखेर दिया। टेबल के चारों ओर, रोटी के टुकड़े और सब्जी फैली हुई नज़र आती है। यह मंजर देखते ही, बेनज़ीर अपने दोनों हाथ सर पर रखकर कुर्सी पर बैठ जाती है। तभी अलमारी पर चढ़ा हुआ एक शैतान चूहा, लम्बी छलांग लगाकर टेबल पर कूद पड़ता है। इस अचानक हुए हमले से बेनज़ीर घबराकर, डर के मारे चीख उठती है।)

बेनज़ीर - (चीखती हुई) - उई ऽऽ मेरी अम्मी। मार दिया पापड़ वाले ने।

(मगर, यह क्या? यह कम्बख़्त चूहा उसकी चीख सुनकर, घबराता नहीं। बस वह शैतान टेबल पर कभी इधर दौड़ता है, और कभी उधर। जैसे ही वह कम्बख़्त बेनज़ीर के क़रीब आता है, और बेचारी बेनज़ीर को यह नन्हा सा चूहा छोटा ज़ानवर की जगह हौलनाक हिज़ब्र लगने लगता है। फिर क्या? डरकर बेनज़ीर, उठकर खड़ी हो

जाती है। ख़ुदा रहम, अब तो बेचारी बेनज़ीर की आवाज़ उसके हलक़ में आकर रूक जाती है। तभी झाड़ू अपने कंधे पर रखे, शमशाद बेग़म कमरे के अन्दर दाख़िल होती है। बड़ी बी को वहां देखकर, झाड़ू वहीं नीचे रख देती है। उसका इस तरह झाड़ू नीचे रखना, बेनज़ीर को अच्छा नहीं लगता। वह चिल्लाकर, कह बैठती है।)

बेनज़ीर - (चिल्लाती हुई) - अरी ओ शैतान की ख़ाला, झाड़ू रखती कहां हो? अरी, देखती क्या हो ? मार झाड़ू।

शमशाद बेग़म- (कोर्निश करती हुई) - आप मालिक हो, हुजूर। हम तो ठहरे जैलदार, कैसे मारें आपको?

बेनज़ीर - (ज़ोर से) - अरी मुरदार, मुझे नहीं। इस चूहे को मार, तेरे झाड़ू से। बड़ी आयी कम्बख़्त शैतान की ख़ाला, चूहे की जगह मुझे मारने वाली।

(चीख-पुकार सुनकर, बेचारे तौफ़ीक़ मियां भी चले आते हैं। उन्होंने सोचा, शायद बड़ी बी ने पानी मंगवाया होगा। पानी का लोटा थामे, वे बेधड़ग कमरे में चले आते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - लीजिये हुजूर, ज़रा खुश्क हलक़ को तर कीजिये।

बेनज़ीर - (बेनियाम होती हुई) - एक कम था मेरे जनाजे को कंधा देने वाला, कम्बख़्त वह भी आ गया। अब देखते क्या हो, मुरदार? आबे जुलाल की जगह पिला दो, जहर। फिर, दुनिया जहान से रूख़्सत करके चैन की बंशी बजाते रहना।

(यह सुनकर, तौफ़ीक़ मियां की आंखें खुली की खुली रह जाती है। बेचारे सोच नहीं पाते, बड़ी बी को आख़िर हो क्या गया? बेचारे हैरान होकर, देखते रहे बड़ी बी को। बहदवास में बड़ी बी का रिदका कंधे से उतरकर नीचे गिर चुका था, चेहरे की हवाइयां उड़ी हुई, इधर घबराकर उसके बाल बीबी फातमा की तरह बिखर गये थे। यह मंजर देखकर, तौफ़ीक़ मियां के बदन के रौंगटे खड़े हो जाते

हैं। आख़िर हिम्मत करके मियां ने अपनी ज़बान खोलकर इतना ही जराफ़त से कहते हैं।)

तौफ़ीक़ मियां - (जराफ़त से) - हुजूर, आपके दुश्मन मरे। क़िबला आप जहर मत पिजीये, ख़ुदकुशी करना अजाब है। हुजूर, कुरआन की आयतें ऐसी ही बोलती है। कहीं आप, हाज़रात देखकर तो नहीं आयी हैं? ख़ुदा से मुआफ़ी मांगते हुए कह दीजिये, हुजूर 'असतग़फ़िरूल्लाह।'

बेनज़ीर - (सर पर दानों हाथ रखकर) - लाहौल विल कूवत। हाय अल्लाह, यह शैतान की जमात मुझे मारकर छोड़ेगी। जोलिदा-मू ओ चाक-गरेबाँ सब अहल-ए-दिल, कोई तो इस क़बीले में आक़िल भी चाहिये।

(अब बेनज़ीर की निगाह टेबल पर गिरती है, वहां अब शैतान चूहा दिखायी नहीं देता...क्योंकि वह शैतान तो, रोटी का टुकड़ा अपने मुंह में दबाये छूं मंत्र हो चुका है। इस शैतान चूहे को वहां न पाकर, बेनज़ीर की ऊंची चढ़ी हुई सांसें सामान्य हो जाती है। अब बेचारी

इतमीनान की सांस लेकर, कुर्सी पर बैठ जाती है। फिर सामने खड़ी शमशाद बेग़म, को कहने लगती है।)

बेनज़ीर - (शमशाद बेग़म से) - क्या मुंह ताक रही हो, मेरा? पेशानी देखी नहीं, मेरी? ख़ुदा के वास्ते, ख़ाला अपने हाथ-पांव चलाओ। देखती नहीं, इन चूहों ने कैसी हरक़त की है?

(पड़ोस की दरगाह में, पीर बाबा का उर्स का जलसा है। जहां कई जायरीन उस्ताद नुसरत फतेह अली खान साहब के गाये सूफी गीतों को बहुत पसंद करते हैं। इसलिये इस समय वहां, इन जायरीनों ने उस्ताद के गाये सूफी गीत रेकर्ड प्लेयर पर चला रखे हैं। इन गीतों का म्युज़िक कुछ ऐसा है, के इसे सुनकर कोई भी मुरीद गोल-गोल-गोल चक्कर काटते हुए, ख़ुदा की इबादत में लीन हो जाता है। इधर यह शमशाद बेग़म ठहरी, पक्की मुरीद इन सूफी फ़क़ीरों की। वह फिर, कम क्यों? वह भी उस म्युजिक को सुनकर, अपने होश-हवास खो बैठती है। और अपने हाथ-पांव फेंकती हुई, गोल-गोल चक्कर काटने लग जाती है। और इधर तौफ़ीक़ मियां को

भ्रम हो जाता है, कहीं ख़ाला आसेबज़दः तो न हो गयी हो? फिर क्या? कुरूआन की आयतें बुदबुदाते हुए, तौफ़ीक़ मियां बार-बार लोटे के पानी में फूंक मारते जा रहे हैं। यह मंजर देखते ही, बेनज़ीर महज़ून होकर अपने दोनों हाथों से सर को पकड़ लेती है।)

तौफ़ीक़ मियां - (आयत बुदबुदाकर पानी के छींटे शमशाद बेग़म पर डालते जाते हैं) - सदका करूं, पीर दुल्लेशाह बाबा। ख़ाला आसेबज़द हो गयी, उसे बचा मेरे मोला।

(पानी के छींटे शमशाद बेग़म पर डालते हुए, कुरूआन की आयतें बुदबुदाते जाते हैं। छींटे गिरते ही, शमशाद बेग़म हाथ-पांव फेंकना बन्द कर देती है। फिर आंखें तरेरती हुई, तौफ़ीक़ मियां से कहने लगती है।)

शमशाद बेग़म- (आंखें तरेरती हुई) - क्या कर रहे हो, मियां? यह क्या बदतमीज़ी है?

तौफ़ीक़ मियां - आप चुप रहे, ख़ाला। आयत का असर होने दो।

शमशाद बेग़म- (गुस्से में) - ख़ाक, आयत पढ़ोगे? मियां, आख़िर हो गया गया, कहीं पागल तो नहीं हो गये आप?

तौफ़ीक़ मियां - ख़ाला, क्या आप ज़ानती नहीं? आप आसेबज़दः हो चुकी हैं। बस आप चुप रहिये, हमारी पढ़ी गयी आयतों का असर होने दें...ना तो ये नापाक रूहे आपको सताती रहेगी।

शमशाद बेग़म- अरे, काठ के उल्लू। आसेबज़दः हम नहीं, आप हो गये हैं। तब आप, ऐसी बहकी हुई बातें करते जा रहे हैं। अपने दिमाग़ पर ज़ोर डालो, मियां। बड़ी बी ने क्या हुक्म दिया, आपने सुना नहीं? क़िबला उनके हुक्म को मानना, एक जैलदार के लिये ख़ुदा की इबादत से कम नहीं हैं।

तौफ़ीक़ मियां - हम कोई पागल नहीं हैं, ख़ाला। हमको भी बड़ी बी ने कहा था, पानी नहीं जहर पिला दो मुझे। क्या हम उन्हें जहर पिलाकर, मार देते क्या? मगर आप तो...

शमशाद बेग़म-ज़ानते नहीं, आप? बड़ी बी ने हमें हाथ-पांव चलाने का हुक्म दिया, बस हम वही करते जा रहे थे। यह तो अच्छा हुआ

इन कानों में, उस्ताद नुसरत फतेह अली ख़ान के बोल गूंज़ने लगे। बस, हमारे झूमने की रफ़्तार बढ़ गयी...बस, फिर तो रूकने का नाम नहीं।

बेनज़ीर - (गुस्से में) -ला हौल व ला कुव्वत। ये पागल जैलदार क्या नज़ारा दिखा रहे हैं, इस स्कूल में? हाय अल्लाह, एक जैलदार नाच रही है तो दूसरा कम्बख़्त जैलदार मुझे ही जहर देने की बात कर रहा है। अरे मेरे एहबाबों, काम करने के लिये हाथ-पांव चलाने का हुक्म दिया और.इन्हें...(कहते-कहते, बेनज़ीर की सांसे धौंकनी की तरह तेज़ चलने लगती है।)

शमशाद बेग़म- और क्या, तौफ़ीक़ मियां को रोज़ह रखने का हुक्म दिया? दिन भर सिगरेट फूंकते जाते हैं, ये दीनदार मोमीन।

बेनज़ीर - ज़्यादा ज़बान मत चलाओ, मोहतरमा। आपको चूहों द्वारा की गयी गन्दगी को साफ़ करनी थी, मगर मोहतरमा ख़ुदा की रूयत पाने के लिये पागलों की तरह हाथ-पांव फेंकने लगी? और

सुनों मेरे एहबाबों, जहर चूहों को मारने के लिये लाना था। मगर ये कोदन तौफ़ीक़ मियां...

(अब शममशाद बेग़म और तौफ़ीक़ मियां आब-आब होने लगे, फिर वे एक दूसरे का मुंह देखने लगे। उनको समझ में आ गया, वे इस दानिश व अक़्लमंद बड़ी बी के सामने निरे बेवकूफ ठहरे। अब उनके सामने खाली एक ही चारा रहा, बस एक दूसरे का मुंह हैरत से देखते रहने का।)

तौफ़ीक़ मियां - मुआफ़ी चाहता हूं, आगे से पानी नहीं जहर ही...अरे नहीं जनाब, ज़रा जबान फिसल गयी। चूहों को मारने के लिये ही जहर लायेंगे, आपको मारने के लिये नहीं।

शमशाद बेग़म- अब तो हुजूर, आपके सामने कभी भी ख़ुदा की रूयत पाने के लिये हाथ-पांव नहीं चलायेंगे। बस, आपको हक़ रहेगा जी रूयत पाने का..आप हुजूरे आलिया जब चाहें, अपने हाथ-पांव फेंक सकती हैं। अब तो हुजूर, हम दस बार आकर आपकी टेबल साफ़ करते रहेंगे।

(इस जंगाह में अपनी फतेह पाकर, बेनज़ीर का मन-मयूर झूम उठा। अब वह मुस्कराती हुई, अपना पर्स उठाकर कहती है।)

बेनज़ीर - कोदन से काम करवाना, ख़ुद के जी का जंजाल। ख़ुदा के लिये यहां से चले जाओ, और जाकर आक़िल मियां को मेरे पास भेज देना। उनको कहना, के बड़ी बी को किसी ज़रूरी मुद्दे पर बात करनी है।

(दोनों के रूख़्सत होने के बाद, बेनज़ीर पर्स लेकर बगीचे में चली आती है। वहां कुर्सी पर बैठकर, पर्स खोलती है। फिर उसमें से, कच्चे मटर से भरी एक थैली बाहर निकालती है। फिर, आराम से बैठ जाती है। और एक-एक मटर उठाकर खाने लगती है। तभी उसे आक़िल मियां आते हुए दिखायी देते हैं, उनके पैरों की आवाज़ रफ़्तह-रफ़्तह नज़दीक से सुनाई देती है। मंच पर अन्धेरा छा जाता है।)

....

....

कठिन शब्द -ः 1 मुतशर्रेअ : धर्मनिष्ठ, पुरातनपंथी, 2 दफ्अतन : अचानक से, 3 हिक़ारत : घृणा, 4 सिफ़ाहत : नीचता, 5 शैवा : तरीका, शैली, 6 हारूनी : अवज्ञाकारी, उदण्ड, 7 ख़बासत : दुष्टता

.(अजज़ा १६) जोलिन्दःबयाँ लेखक दिनेश चन्द्र पुरोहित

(1)

(मंच रोशन होता है, जाफ़री में लगे नल के नीचे शमशाद बेग़म चाय के बरतन रखकर नल खोलती है। फिर, बरतन धोने बैठ जाती है। आज़ उसका मुख, कुछ उखड़ा हुआ लग रहा है। ग़म के मारे, वह बड़बड़ाने लगती है।)

शमशाद बेग़म- (ग़म में बड़बड़ाती है) - "जोइन्दः को ज़रूरत है, कब मिले जोइदनी ? पहुंच जाता है स्कूल में, वह नादान जोयां। जहां जोलिन्दः बयाँ है, मगर ना सच्ची ख़ल्वत पसन्दी। अब इस आलिमा बेनज़ीर को, कैसे कहें ? असल में तुम हो, ज़ोरशिकनी अलूदएइसयाँ।

(अब यह मंजर, धुंधलासा दिखायी देता है। बहुत दूर से, धुंधली-धुधंली शमशाद बेग़म की तस्वीर दिखायी देती है। फिर इस बोले गये जुमले को सरल लफ़्ज़ों में अर्थ बताती हुई, वापस उसकी आवाज़ गूंज़ती है "खोज़ी को ज़रूरत रहती है कि, कब उसे ढूंढने योग्य या खोजने योग्य कोई सामग्री मिले। ऐसा नादान खोज़ी पहुंच जाता है, स्कूल में। जहां अनर्गल भाषी मोहतरमा ऊंचे ओहदे पर आसीन है, जिसे बेतुकी बातें करने वाली औरत कहे तो कोई ग़लत नहीं। यह एक ऐसी मोहतरमा है, जो ख़ुद अकेले रहती है मगर वह अकेलेपन का आनन्द लेने वाली नहीं। ऐसी मोहतरमा ही, स्कूल की बड़ी बी कहलाती है। उसे आलिमा-विदुषी नहीं कहा जा सकता, बल्कि वह मोहतरमा वास्तव में दिल में पाप रखती हुई लोगों का दमन करने की प्रकृति रखती है।" अब शमशाद बेग़म की तस्वीर, साफ़-साफ़ दिखाई देती है। दीवार पर टंगी घड़ी, जुहर के साढ़े-बारह का वक़्त दिखला रही है। मगर यह मोहतरमा अभी तक बैठी-बैठी, चाय के बरतन धोती जा रही है। अब घर ज़ाने की इल्तिज़ा रखती हुई, कुछ लड़कियां क्लास से बस्ता लिये बाहर आ

जाती है। तभी एक लड़की, नज़दीक आकर शमशाद बेग़म से कहती है।)

लड़की - (नज़दीक आकर) - तक़ालीफ़ होगी, ख़ाला। वक़्त हो गया, छुट्टी का। अभी तक, घण्टी लगी नहीं। क्या, हम आपकी इजाज़त से घर जा सकती हैं?

शमशाद बेग़म- (रिदा से सर, ढकती है) - क्यों पूछती हो, दुख़्तर ? हम तो ठहरे जैलदार। भले कहीं जाओ....मेरी बला से। (होंठों में ही) सारे बरतन धुल जायें, तब ही लगाऊंगी घण्टी। ना बाबा ना, अभी बड़ी बी नाम की जोलिन्दःबयाँ का ज़ान लेवा शोर बढ जायेगा। (आवाज़ बदल कर) हायऽऽ... अल्लाह। अब तो..... इस स्कूल का, बन्टाधार हो गया। जनाना जैलदार के होते हुए, कोई मर्द जैलदार, वक़्त पर आता नहीं ?

(तभी बड़ी बी के कमरे मे, घण्टी बज़ती है। घण्टी की आवाज़ शमशाद बेग़म के कानों में गिरते ही, वह बौख़ला जाती है। पास

खड़ी लड़की की तरफ़ देखती हुई, बड़ी बी की आवाज़ में बोलती है।)

शमशाद बेग़म- (नकल उतारती हुई) - इधर कितनी बारऽऽ घण्टी वज़ाई। मगर, ये मर्द जैलदार इतने सारे बैठे हैं निक्कमों की तरह......क्या करें ? कोई कम्बख़्त उठता ही नहीं, घण्टी सुनने। अरीऽऽ ओऽऽ साबू मियां की नेक दुख़्तर। यह घण्टी ले जाकर, ख़ाला को दे आ।

दुख़्तरा - क्या कह रही हो, ख़ाला? समझ में नहीं आ रहा है, मैं क्या करूं?

शमशाद बेग़म- (अपनी आवाज़ में) - कुछ नहीं, तुम अपना काम करो। वह समझ लेगी....बड़ी आलिमा। कब से, क्यों गला फाड़ रही है ?

(सारे बरतन धुलने के बाद, वह झाड़ू लेने जाती है। घण्टी ना लगने से, नेक दुख़्तराएं बस्ता लिये बाहर निकल पड़ती है। घर ज़ाने के लिये, मेन-गेट की तरफ़ अपने क़दम बढ़ाती है। इधर शमशाद

बेग़मझाड़ू लाने के लिये, अपने क़दम आक़िल मियां के कमरे की तरफ़ बढ़ाती है...मगर तभी सामने से दोनों हाथ फैलाये बड़ी बी बेनज़ीर, शमशाद बेग़म का रास्ता रोक कर खड़ी हो जाती है। अब तो मानों, शमशाद बेग़म पर आसस्मां 2तशक़्कुक़ हो जाता है। मुश्किल हो गयी, शमशाद बेग़म के लिये...अब, कैसे पकड़े1 तवस्सुत ? अब तो झाड़ू उठाना भी, आसान नहीं रहा।)

बेनज़ीर - (हाथ फैलाकर, शमशाद बेग़म से कहती है) - मैं ठहरी, 3तल्ख़गो। तल्ख़ाब लफ़्ज़ कहने की आदत ठहरी....जाओऽऽ। क्या देखती हो? उठाओ, घण्टी का डण्डा। अब मेरा मुंह, क्या देखती हो ? जाओऽऽ...लगाओ घण्टी। लड़कियां क़दमबोसी कर के मेन-गेट के पार चली गयी है, और यह ख़ाला ज़ान डूबी है अपने ख़्यालों में ?

(आख़िर....बेचारी शमशाद बेग़म, करे क्या ? बेदिली से घण्टी का डण्डा उठा कर, छुट्टी की घण्टी बज़ाती है। ख़्याल उठता है, दिल में "हायऽऽ अल्लाह। अब ये वालेदान क्या सोचेंगे, स्कूल के बारे में ? यहां तो बच्चियों के ज़ाने के बाद, छुट्टी की घण्टी लगायी जाती है ?

ग़म को ज़्यादा देर, सम्भाल कर रखा नहीं जा सकता। बस.....फिर, क्या ? 4मुक्तज़ाए ़फ़ि़़तरत, दाऊद मियां के कमरें की तरफ़ क़दमबोसी कर बैठती है। दाऊद मियां ठहरे, दफ़्तरेआज़म। यानि, ऑफिस असिसटेण्ट इस स्कूल के। उनके पास वक़्त को काम में लाने का का मात्र अेक ही साधन है, मुलाज़िमों के दुखः दर्द के वाकये सुनना और उनको तसल्ली देते हुए बड़ी बी के ख़िलाफ़ ज़रूर भड़का देना। अब यह रूंआसी शमशाद बेग़म, अपना दुखः दर्द सुनाने चल पड़ती है। उसकी समझ यही है, के दुखः दर्द बयान करने से पीड़ा कम हो जाती है। अब शमशाद बेग़म को आते देखकर, दाऊद मियां, झट अपनी नाक भौं की कमानी चढ़ाकर कह बैठते हैं।)

दाऊद मियां - (ऐनक चढ़ाकर कर) - बेतकल्लुफ़ होकर बयान करें, ख़ाला। किस 5मुख़त्विफ़ से 6मुख़ातबात होकर, आप ग़मगीन हो गयी है ? कोई पोशीदा बात हो तो, डरने की कोई ज़रूरत नहीं। यहाँ कोई नहीं है, सुनने वाला। मेरा मफ़हूम है के, वह 7बोलिदःबयाँ यहां नहीं है।

(कुर्सी पर बैठती है, फिर शमशाद बेग़म जर्दे की पुड़ी खोलती है। फिर हथेली पर जर्दा रखकर, चूना मिलाती है। अंगुठे से जर्दा मसल कर, सुर्ती तैयार करती है। जर्दे की गन्ध, चारों ओर फैलती है। जर्दा हथेली पर रख कर, दाऊद मियां के पास ले जाती है। दाऊद मियां सुर्ती उठाकर, अपने होंठों के नीचे रखते हैं। बची हुई सुर्ती को अपने होंठों के नीचे दबाकर, वापस कुर्सी पर आकर बैठ जाती है। फिर वहां बैठे-बैठे, शमशाद बेग़म अपने लबों पर मुस्कान छोड़ देती है।)

दाऊद मियां - (होंठों के नीचे सुर्ती रखते हुए) - अन्धेर नगरी चौपट राजा वाली कहानी, आपने सुनी होगी ? बस ख़ाला। आप वही रूख़, अख़्तियार करो। जो हुक्म देवें, वही करती जाओ। वह दिन को कहे रात, आप भी कह दो "जी हुजूर। रात है, हुजूर ने वज़ा फ़रमाया है।" क्यों अपने मश्वरे बेबाक़ परोस देती हो, थाली में रख कर ?

शमशाद बेग़म- (जर्दे की पुड़िया को वापस थैली में रखती हुई) - ऐसा नहीं कर सकती, हुज़ूर। आप तो ज़ानते होंगे, हुज़ूर। चाय के बरतन पड़े रह जाते, तो बाद में उन्हें कौन साफ़ करता ? यहां तो हुज़ूर, जब भी कोई मेहमान आ जाता...फिर क्या ? झट आलिमा के फ़रमान जारी हो जाते हैं...यह क्या ?

दाऊद मियां - कहिये, क्या फ़रमान जारी करती है?

शमशाद बेग़म- (बेनज़ीर की नकल उतारती है) - ख़ाला। जनाबेआली तशरीफ़ लायें हैं, अपनी स्कूल में। ज़रा...चाय-वाय तो तैयार कीजिये ना। (अपनी आवाज़ में) ख़ुदा रहम। आया एक 9नियाज़मन्द....मगर, चाय बने पूरे स्टॉफ़ की? यह है, क्या....माज़रा ?

(अब दाऊद मियां, शमशाद बेग़म की पेशानी पर टपकती पसीने की बूंदों पर निगाह डालते हैं।)

शमशाद बेग़म- (रिदा से पसीना पोंछती हुई) - पसीने को मारो, गोली। ख़ुदा रहम, फिर क्या ? मोहतरमा की 8निशस्त जब तक

जमी रहे, जनाब तब तक मुझे इनकी हाज़री उठानी पड़ती है। हुज़ूर, अब आप ही बतायें। कौन निकालेगा, झाड़ू ? अरे क्या कहूं, हुज़ूर ? मेरा कोई 10नियोश नहीं, किसे कहूं, अपने दिल की बात ?

(दाऊद मियां की अ०ा०ंखें फटी की फटी रह जाती है, और वे होंठों में ही बड़बड़ाने लगते हैं।)

दाऊद मियां - (होंठों में ही) -10नियोश नहीं ? दिल की बात, किसे कहूं ? ये क्या बोल रही है, यह मोहतरमा ? अब तक, कौन 9नियाज़मन्द नियोश मेरा अलावा रहा ? जो शान्ति से, इनकी बात सुने ? अरे, मेरे मोला। वो मैं हूं, जो इनके हर शिकवे को सुनकर चुटकी में हल कर देता हूँ इनकी हर तकलीफ़।

(शमशाद बेग़म मुंह फैलाये बैठ गयी, अब दाऊद मियां के लिये उनकी यह हालत देखना मुश्किल हो गया। आख़िर बेचारे रहमदिल इंसान, शमशाद बेग़म को समझाते हुए कहने लगे।ं)

दाऊद मियां - ख़ाला ज़ान। बताओ, यह स्कूल किसकी है ? क्या आप अपनी मुक़्तज़ा से, कोई काम करने को मुख़्तार हैं ?

शमशाद बेग़म- आपका मफ़हूम क्या है, हुजूर ?

दाऊद मियां - मैं यह कहना चाहता हूँ, ख़ाला। सोच लीजिये, कभी सुबह की पारी की जैलदार ने झाड़ू नहीं निकाला तब....वह आलिमा उसे सज़ा न देकर आप पर हुक्म चलायेगी।

शमशाद बेग़म- वज़ा फ़रमाया, हुजूर। वह आलिमा तो ऐसे तनकर बोलेगी...(बेनज़ीर की नकल उतारती हुई) जाओ ख़ाला। आपको कचरा दिखा है, आप ही झाड़ू निकाल दीजिये। आख़िर, सरकारे बहादुर ने यह नौकरी आपको क्यों बख़्सी है ? झाड़ू निकालो...पानी भरोऽऽ। अरेऽऽ, अभी तक देखती क्या हो ? जाती क्यों नहीं ?' (वापस अपनी आवाज़ में बोलती है) आख़िर यह बात है, हुजूर।

दाऊद मियां - आप, अब समझ गयी ना ? ये हमारी आलिमा बेनज़ीर, यानि बड़ी बी 38आलिमेकुल है। उनको मश्वरा देना, अपना 11निश्तर करवाना.....अेक ही बात है।

शमशाद बेग़म- (रूंआसी होकर) - मेरी भी इज़्ज़त है, जनाब। इतनी सारी मेडमें व कई नेक दुख़्तर खड़ी थी, उनके सामने आ गयी यह बीबी फातमा हाथ फैलाये.....और, कहने लगी ‘उठाओ घण्टी का डण्डा....फिर झाड़ू।’

दाऊद मियां - तो क्या हो गया, ख़ाला ? लगा देती घण्टी।

शमशाद बेग़म- आली जनाब, आप तो 31आली जर्फ है...42आली नज़र रखते हैं। फिर बताओ। के इस अलूदए इसयाँ को यह पत्ता नहीं कि, नब्बे फीसदी बच्चियां रूख़्सत हो चुकी है, अब घण्टी लगाकर मैं क्यों अपनी आबरू रेज़ी करवांऊ ?

(इतनी देर से, कमरे के बाहर खड़ी बड़ी बी बेनज़ीर गुफ़्तगू सुन रही थी। अब वह दबे पांव, कमरे में तशरीफ़ रखती है।)

बेनज़ीर - (अचानक सामने आकर) - कहो...कहो। ख़ाला, ये लोग क्या कहेंगे ? यह कैसी जैलदार है ? बच्चों के ज़ाने के बाद, छुट्टी का एलान करती है ? आगे यह क्यों नहीं कहती, मैं जोलिन्दःबयाँ हूँ.....मुझे क्या आता है, स्कूल चलाना ?

(शमशाद बेग़म बड़ी को देखते ही, कुर्सी छोड़कर खड़ी हो जाती है। बड़ी बी, शमशाद बेग़म के नज़दीक आकर कहती है।)

बेनज़ीर - (नज़दीक आकर) - अरेऽऽ...? इतना सुन लिया मोहतरमा, आपने। फिर भी, यहां खड़ी हैं ? 13निफ्रीं है....। तशरीफ़ रखिये, आलिमा। जाइयेऽऽ...सभी कमरों में, झाड़ू लगाना हैं। फिर हॉल में जाकर सफ़ाई करनी है, एक बार और याद दिला देती हूँ...

शमशाद बेग़म- मुझे आलिमा मत कहिये, हुजूर। आप तो हुक्म दीजिये जनाब, फ़र्नीचर किस तरह जमाने हैं ?

बेनज़ीर - अच्छी तरह़ से सुन लेना, बार-बार समझाऊंगी नहीं। के कल हॉल में, सर्व शिक्षा अभियान की निशस्तः होगी। कल वहाँ

जाकर “यू“ सेप में फ़र्नीचर जमाने हैं, आपको। समझ गयी ना, आप? सारे काम, वक़्त पर हो ज़ाने चाहिये।

(हाथ में झाड़ू लिये शमशाद बेग़म, वहां से रूख़्सत होती है। अब दाऊद मियां अलमारी से फाईले निकाल कर, उन्हे देखने लगते हैं। अब पास रखी ख़ाली कुर्सी पर, बेनज़ीर बी बैठ जाती है।)

बेनज़ीर - काम नहीं करना और हफ़्वात हांकना, मर्ज़े मुतअद्दी हो गया है। मर्ज़े मोहलिक कहो, तो कम नहीं। अरेऽऽ जनाब, इन जैलदारों को तो छोड़ो। यहीं इसी जगह....ये मेडमें बेधड़क यहां आकर, मज्ज़लिसे क्या जमाती है ? अरे जनाब, दही की तरह जम जाती है आपके पास।

दाऊद मियां - फिर जनाब, आपने मुझे इस कमरे में लाकर क्यों बिठाया? बरामदे में बैठता, तब भी आप यही आरोप लगाती रही है के, ये मोहतरमाएं मेरे पास आकर बैठ जाती है। अपना और मेरा वक़्त बरबाद करती जा रही है...और अब...

बेनज़ीर - हायऽऽ अल्लाह, पढ़ाने का काम तो चला गया अब, कोसों दूर। अब क्या कहूं, दाऊद मियां? अब तो ये सारी मोहतरमाएं, अपने बदन के अलील का रोना लेकर बैठ जाती है। ख़ुदा रहम, सुनिये। कोई तो ठहरी ब्लड प्रेसर की मरीज़, और कोई ठहरी हार्ट पेसेण्ट।

दाऊद मियां - तब तो हुजूर आपको, एक तुजुर्बेदार डाक्टर को बुलाकर इन मोहतरमाओं का मेडिकल चेक-अप करवा लेना चाहिये।

बेनज़ीर - (हताश होकर) -ज़ानती हूं, मियां। मगर अब क्या बयान करें, दाऊद मियां ? सारी की सारी, आलिमे बेअमल ठहरी। कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता....जाईये...जाईये, आप भी देख आइये इन्हें.....

दाऊद मियां - कहां देख आऊँ, हुजूर ? क्या क्लासों में चला जाऊं, या इनको पाख़नों में देख आऊं ? जहां ये अक्लेकुल मोहतरमाएं, दरवाज़े के ही बैठ जाती है पेशाब करने।

बेनज़ीर - नेक दुख़्तरों के पाख़ाने भी, देखते ज़ाना। सच्च यही है, ये आलिमे बेअमल मेडमें पेशाब करने आंगन पर ही बैठ जाती है...दरवाज़े के पास। ये क्या इल्म देगी, इन बच्चियों को ? जिनका ख़ुद का अमल आलिमे बेअमल हैं,....बस, ज़राफ़तपसन्द है।

दाऊद मियां - अजी मेडम, आप नहीं ज़ानती। इसी ज़राफ़तपसन्दी के, ज़रासीम रग़-रग़ में व्याप्त है। अजी, कुछ तो इतनी होश्यार है.....उन्होंने तो जनाब, स्कूले-हकूमत में ख़लल डालने के असरदार तरीके इज़ाद कर लिये हैं।

बेनज़ीर -ज़ानती हूं, दाऊद मियां। इन सबको दबिस्तान-ए-सियासत, हाथ में लेने का अलील है।

(एक दुख़्तरा, कमरें में दा़खिल होती है।)

दुख़्तरा - बड़ी बी। सलमा मेडम, आपसे इजाज़त चाहती है के...के...

बेनज़ीर - के......के.....क्या करती है ? कलाग़ है, क्या ?

दुख़्तर - वे क्लास की दुख़्तराओं को, बगीचे में बिठाना चाहती है।

(बेनज़ीर दाऊद मियां पर नज़र डाल कर कहती है, आगे।)

बेनज़ीर - देखा, दाऊद मियां ? मैने सच कहा था, ना ? देख लो, हाथ अंगन आरसी क्या ? यह तरीका है, आराम करने का.....गार्डन में तफ़रीह करेगी, या पढ़ायेगी ?

दुख़्तर - (तपाक से बोलती है) - बड़ी बी। ऐसी बात नहीं है, हमारा कमरा बिल्कूल पाख़ाने के सामने है। वहां से आती हुई बदबू से हम........

बेनज़ीर - (बात काट कर) - चुप रहो, दुख़्तरा। बदबू नहीं, तो क्या सुगन्ध आयेगी ? पाख़ाने के हर ठौड़-ठौड़ पर, पाईप का कनेक्शन दिया हुआ है। पेशाब करने के बाद, नल क्यों नहीं खोलती ? इतनी सफ़ाई पसन्द हो आप, तब पाख़ाना साफ़ क्यों नहीं रखती?

(तभी आक़िल मियां कमरें में दा़खिल होते हैं, और दुख़्तर रूख़्सत हो जाती है।)

आक़िल मियां - वज़ा फ़रमाया, हुज़ूर। ये बच्चियां इतनी बदसलूक हो गयी है, हुज़ूर। मेरे कमरें के बाहर, बिल्कूल मेरी खिड़की के नीचे बैठकर पेशाब करने बैठ जाती है। हुज़ूर, क्या कहें आपको ? अब तो दफ़्तरे काम-काज निपटाना आसान नहीं रहा, बस....दुर्गन्ध के कारण...

दाऊद मियां - अरे जनाब, वहीं पास में टी क्लब की चाय भी बनती है। और, उधर यह बदबू.....हाय अल्लाह, सांस नहीं ले सकते।

बेनज़ीर - सफ़ाई नहीं होती, पाख़ानों की। पाख़ानों पर निगरानी रखने वाला कोई नहीं, तब क्या ख़करोब को फोकट में पग़ार दे रहे हैं....आप ? सारी ग़लती आपकी है, मियां।

आक़िल मियां - (सकपका कर) - नहीं...नहीं, बड़ी बी। भुगतान आपके हुक्म से होता है......इसमें बेचारे ख़करोब की, क्या ग़लती हो सकती है ? उस बेचारे को जो दोगे, वही लेगा।

बेनज़ीर - मियां, क्या काजिया किये जा रहे हो ? ख़्याली तस्सवुर में रहने से काम नहीं चलता। सफ़ाई करवाने की जिम्मेदारी, मौज़ूदा जैलदार की है, उसकी गवाही पर ही भुगतान होना चाहिये।

आक़िल मियां - हुजूरेवालिया। भुगतान पर शहादत के दस्तख़त, मौज़ूदा जैलदार से लिये जाते हैं।

(कंधे पर सौटें की तरह झाड़ू थामे, शमशाद बेग़म कमरे दाख़िल होती है। आते वक़्त, वह आक़िल मियां की बात वो सुन लेती है। अब वह आक़िल मियां के क़रीब आकर, कहती है।)

शमशाद बेग़म- (कन्धे पर झाड़ू रखे हुए) - मियां, हद हो गयी ? जैलदार के दस्तख़त हो ज़ाने के बाद, जिम्मेवारी पूरी नहीं हो जाती है। जनाब, आप ज़ानते नहीं ? पाख़ाने पर रखी टंकी में, कई दरारें आई हुई है। इसके अलावा, उसमें इतनी काई भरी हुई है...आपको, क्या कहें ?

आक़िल मियां - तो क्या हो गया, तौफ़ीक़ साहब से कह दीजिये...के, वे टंकी में काई खाने वाली मछलियां छोड़ दें...?

शमशाद बेग़म- पाईप में भी काई फंसी हुई है, हुजूर। मछली को पाईप में फंसाने का इरादा है, क्या ? फिर बोलिये, आप। पाईप से पानी, बाहर कैसे निकलेगा ? इस मामले में, बेचारा जैलदार क्या करेगा ? सारी जिम्मेदारी लाद देते हैं, बेचारे ग़रीब जैलदार पर। बेचारे ग़रीब पर, कौन करे रहम ? वाऽऽह हुजूर, वाह। क्याऽऽ, ज़माना आ गया आज़कल ?

बेनज़ीर - ख़ाला, ख़ामोश हो जाओ। अब एक भी अल्फ़ाज़, बाहर निकाला तो। (दाऊद मियां से कहती है) मियां। हमें तो लगता है, कई सालों से टंकी की सफ़ाई नहीं हुई है ? क्या, यह सच है ?

शमशाद बेग़म- कह दीजिये, जनाब। सच्चाई से क्या डरना ? आज़ नहीं तो क्या, कल सबके सामने आ जायेगी।

दाऊद मियां - वज़ा फ़रमाया, हुजूरेवालिया। रशीदा बी के ज़माने में, हफ़्ते में एक बार सफ़ाई होती थी...... फिर उनके ज़ाने के बाद, आयशा मेडम जब बड़ी बी बनकर आई तब तो बस.....।

बेनज़ीर - मियां, हम स्कूल में आयें या नहीं ? सवाल यह नहीं है, सुन लीजिये कान खोलकर। हम लोगों का यह काम नहीं, के टंकी की सफ़ाई कराते फिरें ? यह सीनीयर हायर सैकेण्ड्री स्कूल है, मियां। प्रिन्सीपल यदि निज़ाम बन गया तो, इस 39दबिस्तान की ठौड़ आपको यतीमखाना दिखाई देगा।

आक़िल मियां - वज़ा फ़रमाया, हुजूर। आप तो 14दमबदम, सच्चाई को सामने ला देती हैं। ज़रा आप हमारी खिड़की तरफ़ निगाहें तो डालिये, हुजूर। इस ठौड़ को इन बच्चियों ने, यूरीनल बना दिया....अब तो हम बन गये यतीम। दमबदम नाक पर रूमाल ढाम्पना तो अब, 15दफ़्तरेनिगारों की मज़बूरी बन गयी है,.....हुजूर।

बेनज़ीर - 15दफ़्तरेनिगारों की मज़बूरी तो अब, जनाब स्कूल में [16]दस्तअन्दाजी करनी रह गयी है। स्कूल में सफ़ाई करवाना, वक़्त पर तनख़्वाह दिलवाना वगैरा कामों में बन गये हैं आप सभी मुख़्तरिकार 17दमकश। ख़ुदा ज़ाने, इस स्कूल का क्या होगा ? हायऽऽ अल्लाह। [18]दमे चन्द चैन नहीं.......अब क्या आराम से, 27दमे आब लूं।

शमशाद बेग़म- (बड़बड़ाती है) - बड़ी बी। दमे आब को छोड़ो, [40]दस्तावर पीओ। सब 19आलिमेरोज़गार, ख़त्म हो जायेगी।

बेनज़ीर - (जहरीली निगाहों से शमशाद बेग़म को देखती हुई) - कुछ कहा, क्या ? [21]मुख़्ती होकर, [20]मुग़ल्लज़ बातें बुदबुदा रही हो अपने दिल में ?

शमशाद बेग़म- (आंखें तरेर कर) - हमें क्या पड़ी है, बड़ी बी ? ख़ुदा, सब देखता है। मैने तो सब पढ़ रखे हैं, हुजूर। ये करीमा, मामुकीमा, आमदनामा, अयारदानिश.....फिर, जुबां पर मुग़ल्लज़

बातें ? (दोनों हाथ कानों पर रखती है) ख़ुदा माफ़ करें, ऐसा सोचूं तो ख़ुदाकरीम दोज़ख़ नसीब करे।

बेनज़ीर - (तेज़ आवाज़ में) - अरी, ओ माहरू। ख़ुदा की नमाज़ी बन्दी, तुम यहां कैसे ? क्या, कमरें साफ़ हो गये ? साफ़ हो गये हो तो, जाओऽऽ हॉल को साफ़ करो। हमारी मुख़्बिरी से, आपको कोई 22मुख़्बिरे सादिक का ख़िताब देने वाला नहीं।

शमशाद बेग़म- किसको शौक चर्राया, ख़िताब लेने का ? यह तो हुज़ूर, आलिमों का हक है। हम कहां ठहरे, आलिम ? बदनसीब ठहरे, मुख़्तारेकार जो हुक्म देंगे....हमको तो तामिल करना है, हुज़ूर। बदनसीब हैं हम, क्लास के बाहर सलमा मेडम खड़ी थी, मुक़्तजाए फ़ितरत हमने सलाम बोला। बस...

दाऊद मियां - फिर क्या हुआ, ख़ाला ? उन्होंने कुछ कहा, क्या ?

शमशाद बेग़म- उन्होने हुक्म दे डाला "जाओ बड़ी के पास, जाकर कहो '23'दरख़ुरेअर्ज है......बच्चियां बदबू के कारण घबरा रही है, जी मचल रहा है उनका। कहीं कोई दुख़्तर, उल्टी ना कर दें ? अब कहां

बिठाये, उनको ?" यह बात दरख़ुरेएतीना थी, इसलिये बीच में चली आई। मुझे कौनसा शौक है, आपकी मुख़्बिरी करने का ?

बेनज़ीर - (हंस कर) - आपने ज़र्रा नवाज़ी की, उसके लिये शुक्रिया। ख़ाला, आप तो जन्नत-ए-वफ़ादार 43जैलदार ठहरी। कह देना, सलमा मेडम को। दुख़्तरों को हॉल में बैठा दें, (रौब से) और सुनो। यहीं रख दो, झाड़ू। पहले जाकर, 44ख़करोब को बुला कर लाओ। उसे कहना, के बड़ी बी ने अभी इसी वक़्त बुलाया है। याद रखना, वापस आते ही कमरे साफ़ करने हैं।

(कोने में झाड़ू रख कर, दाऊद मियां के पास जाती है।)

शमशाद बेग़म- हुजूर, बाहर जा रही हूँ। सोचती हूँ, एक बार जाऊं और दो काम कर लूं। बस, आप दूध के पैसे दे दीजिये। लौटते वक़्त, दूध लेते आऊँगी। तब तक, टी क्लब की चाय बनाने का वक़्त हो जायेगा।

बेनज़ीर - (तपाक से) - ना...नाऽऽ। (कुर्सी से उठ जाती है) ऐसा नहीं। आप सीधे नाक की दण्डी जाओ, और एक मिनट कहीं रूके

बिना वापस यहां आ जाओ। कोई काम बीच में नहीं, देर से आने की बहानेबाजी मेरे सामने नहीं चलेगी। क्या पत्ता, कोई आपको रास्ते में रोक ले....और, हफ़्वात करने के लिये बैठा दे ?

शमशाद बेग़म- हुजूर, मैं छोटी बच्ची नहीं हूँ। मुझे ध्यान है, बेचारी बच्चियां परेशान है। उनका दर्द समझती हूं, मैं।

(इतना कहकर शमशाद बेग़म, रूख़्सत हो जाती है। बेनज़ीर वापस आकर, कुर्सी पर बैठ जाती है।)

बेनज़ीर - (दाऊद मियां से) - दाऊद मियां, हमने इन लोगों की कई दास्तानें सुनी है। अक़्सर, ये जैलदार किस तरह काम से बचते रहते हैं ? अब देखिये, ख़ाला को कितना दर्द होता है....बदहाल टंकी को देखकर ? मैं पूछती हूं, आपसे। इतवार को अकसर, इनकी डे-ड्यूटी लगती है।

दाऊद मियां - आपके कहने का मफ़हूम क्या है, मेडम ?

बेनज़ीर - ये क्या करती है, इस दौरान ? बस आई मोहतरमा, और दस्तख़त करके पंखा लगाकर सो गई। क्या.....यही काम है, इनका

? आप कभी तहक़ीकात नहीं करते, ना काम करने का हुक्म देते हैं इन्हें ?

(दाऊद मियां को नज़ले का अलील है, उनके किये जा रहे काम में कोई ग़लती दिखा दे.. तो जनाब का यह मर्ज़, कुछ ज्यादा ही बढ़ जाता है। बस, फिर क्या ? मर्ज़ बढ़ते ही झट रूमाल निकाल कर, नाक सिनक कर साफ़ करते हैं। फिर, तसल्ली से कहते हैं।)

दाऊद मियां - (नाक साफ़ करके, वापस रूमाल को जेब में रखते हैं) - हज़ूर। इधर अल्लाहताआला ने, नज़ले का मरीज़ बना दिया। इधर काम दे दिये, बहोत। मगर करूं, क्या ? ये 43जैलदार तो, जनाब हुक्मअदूली करना ये लोग अपनी शान समझते हैं। कुछ कहें तो, ये जनाब सामने बोलते हैं। अरेऽऽ, हुज़ूर ...

बेनज़ीर - आपका मफ़हूम क्या है, साफ़-साफ़ कहिये ना। इन जैलदारों की शान में, 46मुरस्सा काहे लाते हो ?

दाऊद मियां - इन सारो को, आयशा बी ने निखट्टू बना दिया। अब आप ही देखिये, हुज़ूर। किसी भी वक़्त ये नदारद पाये जायें,

और इनसे पूछा लिया जाय "जनाबेआली। आप कहां पधारे थे ?" तब बरख़ुदार, बड़े अदब से फ़रमायेगें, "हुज़ूर। बड़ी बी से छुट्टी लेकर गया था।" फिर क्या ?

बेनज़ीर - आगे कहिये, रूकते क्यों हो ?

दाऊद मियां - अरे हुजूर इन्तज़ार करते-करते हमारे 45अबसारों में दर्द होने लगता है, मगर उनके दीदार हमारे क़िस्मत में नहीं। जनाब, क्या कहूं आपको ? ये लोग, सैर-ओ-तफ़रीह में वक़्त बरबाद करते रहते हैं। अब बतायें आप, इन लोगों से कैसे काम करवायें स्कूल का ?

आक़िल मियां - (बीच में बोलते हुए) - जनाब, आपने वज़ा फ़रमाया। देखिये हुज़ूर, इधर ये जनाना जैलदार बाहर के काम से कतराती है, और ये मर्द जैलदार झाड़ू लगाना व पानी भरना....अपनी शान में गुस्ताख़ी समझते हैं। सभी प्रोबलम का सोलशन, बड़ी बी के पास है।

बेनज़ीर - मेरे पास, क्या है ?

आक़िल मियां - (बेनज़ीर को देखते हुए) - बस, हुजूर। कर दीजिये ना, पोवर का डेलीगेशन। दाऊद मियां को सपोर्ट मिलेगा, [41]दस्तगिरिफ्त होगें आपके। बाद में किस जैलदार की हिम्मत होगी, जो दाऊद मियां का कहना नहीं मानें ?

(कोई भी अफ़सर हो, वो 'पोवर डेलीगेशन करना' अपने मफ़ाद में नहीं मानता। इसी कारण आक़िल मियां की बात सुन कर, बेनज़ीर हो जाती है बेनियाम।)

बेनज़ीर - (गुस्से में) - आक़िल मियां, आपसे कब पूछा गया ? क्या आपसे मश्वरा मांगा, क्या ? आप मुख़्तारे ख़ास नहीं। जाइये अपने कमरे में। अभी आती हूँ, आपके कमरें में। आज़ तो ज़रूर केश का फिज़ीकल वेरीफिकेशन करूंगी, आकर। बहोत लम्बा वक़्त हो गया....रोकड़ को देखे हुए। अब चलिये, चलिये...जाइये, रोकड़ तैयार करके रखें।

आक़िल मियां - (जल्द बाज़ी में) - बड़ी बी आप सुबह आते ही, हुक्म दे देती...तो रोकड़ तैयार करके रख देता। अब तो हुज़ूर, बहोत काम है आज़। उसे निपटाना भी, बहोत ज़रूरी है।

बेनज़ीर -ज़ानती हूँ, काम बहोत है। काम ना होगा तो सरकार, घर बैठे तनख़्वाह देने वाली नहीं। जाइये, आप रोकड़ तैयार रखें। और सुन लीजिये, आक़िल मियां। वेरीफिकेशन करना मुझे है, आपको नहीं। कब करूं ? यह सब, मुझे देखना है।

(वेरीफिकेशन का काम तो टलने वाला नहीं, फिर क्या ? बेचारे आक़िल मियां, रूख़्सत होते है। अब बेनज़ीर अपनी कुर्सी खिसका कर, दाऊद मियां के और नज़दीक बैठ जाती हैं।)

बेनज़ीर - मियां आप क्या ज़ानो, यह दुनिया बड़ी ज़ालिम हैं। आपको पत्ता है ? हर सिक्के के, दो पहले होते हैं। कई लोग ऊपर से लगते है, बहोत सीधे...अल्लाह मियां की गाय सरीखे। मगर जनाब, ये अपने दिल में रखते हैं ख़ोट। अभी क्या कह गये, आक़िल मियां ?

दाऊद मियां - आपने भी सुना होगा, हुजूर। आप ही कह दीजिये, जनाब। आख़िर क्या कहा, उन्होंने ?

बेनज़ीर - कहा उन्होंने, के... 'काम बहोत है।' अजी, क्या करें ? रोज़ काम का रोना लेकर बैठ जाते हैं, आक़िल मियां। कुछ कह दो जनाब को, तो झट मुंह फाड़कर जवाब दे देंगे 'मेडम चार्ज बदल दीजिये मेरा। कई सालों से, वे इस केश के चार्ज को सम्भाले बैठा हूं।

दाऊद मियां - कुछ और कहा होगा, उन्होने ?

बेनज़ीर - कहते हैं, सारे दिन काम में उलझा रहता हूं। सर ऊपर करने का भी, चान्स नहीं। और आगे इस तरह से बोलेंगे, दाऊद मियां। 'देखिये, जनाब। उधर बेचारे दाऊद मियां, काम से हैं महरूम। बेचारे वक़्त गुजारने के लिये, क्या-क्या नहीं करते ?

दाऊद मियां - आपके कहने का क्या मफ़हूम है, जनाब ?

बेनज़ीर - उनका कहना है, 'जैलदारों को अपने पास बैठायेंगे, उनसे सुर्ती बनवायेंगे.....फिर, फाकेंगे। और इधर ये मेडमें भी, तितलियों

की तरह उनके आगे-पीछे मण्डराती रहती है। मेडमें यहां इनके पास बैठ कर, अपना टिफिन खोलेगी। फिर जमायेगी यहां, अपनी निशस्त।

दाऊद मियां - हुजूर और यह भी कहा होगा, 'फिर हफ़्वात का पिटारा खुलेगा। बस......फिर दिल में आया तो मियां, आंखें मून्द कर चले जायेंगे परवाज़े तख़्य्यूल में सैर करने।' हुजूर, वास्तविक़्ता क्या है ? कौन ज़ानता है, हुजूर ?

बेनज़ीर - आप ही बता दीजिये, आख़िर वास्तविकता क्या है ?

दाऊद मियां - यहां तो ख़ुद के काम देखने के बाद, दूसरों के काम भी निपटाने पड़ते हैं। आप ख़ुद ही देख लीजिये हुज़ूर, ये मेडमें अपनी क्लास के हाज़री रजिस्टर इस टेबल पर रख कर क्या-क्या बोलकर जाती है ?

बेनज़ीर - आप ज़ानों दाऊद मियां, मुझे कहां मालुम ?

दाऊद मियां - कहती है "भाईज़ान। ये मंथली की टोटलें कर दीजिये ना, देखिये ना पढ़ाते-पढ़ाते थक गयी। बस, फिर क्या ?

तहज़ीब के कारण हम तो बैठ जाते हैं, उनकी मंथली रिपोर्ट तैयार करने।

बेनज़ीर - फिर तो जनाब, मोहतरमाए बैठ जायेगी यहां निशस्त लगाकर।

दाऊद मियां - अब बताइये, हुजूर। कहां और किसके पास, वक़्त पड़ा है.....नींद लेने का ? यहां तो ख़ुद का भी काम करो, और लोगों का भी काम निपटाओ।

बेनज़ीर - और कुछ कहना है, आपको ?

दाऊद मियां - और क्या कहूं, आपको ? आक़िल मियां तो भोले हैं, कह दिया होगा भोलेपन में.......के, मैं आंखें मून्द कर परवाज़े तख़य्यूल चला जाता हूं। आपको तो पत्ता होगा, ये हेड ऑफिस जाकर मेरे बारे में क्या-क्या बयान दे आते हैं अपने भोलेपन में।

बेनज़ीर - और कुछ कहना है, आपको ?

दाऊद मियां - हुजूर मुझको तो तब ऑफिस जाकर, सफ़ाई देना मुश्किल हो जाता है। ये तो जनाब, अपनी सीट पर बैठे रहें तो अच्छा है। बस हुजूर, आप तो इन साहबजादे को सीट से उठने नहीं दें...तो सबके लिये अच्छा है।

बेनज़ीर - हूंऽऽम देखती हूं, ये बहोत जाते हैं बाहर। ख़ुद जायें तो कुछ नही, मगर अपने साथ इन दाढ़ी वाले बाबा शेरखान साब को भी साथ ले जायेंगे। अब बताइये, एक शिक्षक को अध्यापन से दूर करना कहां की समझदारी है ? (उठती है)

(बेनज़ीर खड़ी होकर, दोनों हाथ ऊपर ले जाती हुई अंगड़ाई लेती है। फिर वापस, जनाबेआली दाऊद मियां को मश्वरा दे बैठती है।)

बेनज़ीर - बहोत लम्बा सेवा काल हो गया है आपका, अब तो मुक़्तज़ाए उम्र आराम करने की है। मुक़्तज़ाए फ़ितरत, मुझको कहना पड़ेगा.....आप इन जैलदारों को सुधारो। स्कूल की छवि, ख़राब हो रही है।

दाऊद मियां - बिना पोवर क्या कर सकता हूँ, हुजूर ? सारे पोवर तो आपने ले रखे हैं.....

बेनज़ीर - (गुस्से में) - पोवर ? अरेऽऽ...मियां, पावर तो अफ़सर के पास ही रहते हैं। दिये नहीं जाते। समझ गये ना, बरख़ुदार ? या और कुछ कहना है, आपको ?

(पांव पटकती हुई बेनज़ीर, रूख़सत हो जाती है।)

दाऊद मियां - (होंठों में ही) - फिर, आप ही मुख़्तार है.....पूछना मत बाद में, के काम कैसे चल रहा है इस स्कूल का ?

(मंच की रोशनी लुप्त हो जाती है।)

(२)

(मंच रोशन होता है, स्कूल के बरामदे का मंजर सामने आता है। बरामदे के छोर पर, ख़ाजीन आक़िल मियां का कमरा दिखायी देता है। उनके कमरे के बिल्कूल सामने, एक क्लास रूम है। जिसकी खिड़की से सटी, एक टेबल रखी है, जिस पर गैस का चूल्हा रखा

है। उसके पास ही एक पटवारी साइज़ की अलमारी रखी है, जिसमें "टी क्लब" का सामान रखा है। इस ख़ाजिन रूम से सटा, बड़ी बी का कमरा है। जिसकी एक खिड़की, इस टी क्लब वाले बरामदे में खुलती है। इस खिड़की के सामने ही एक टेबल व उसके पास कई कुर्सियां रखी है, जहां स्कूल की मेडमें बैठ कर चाय पीती है। इनके बैठने की जगह के बिल्कूल पीछे, क्लास रूम में दा़खिल होने का दरवाज़ा है। मगर ये मेडमें, इस दरवाज़े से कोई सारोकार नहीं रखती है। दूसरे अल्फ़ाज़ों में यह कहा जा सकता है, इनको कोई लेना-देना नहीं। चाहे किसी दुख़्तर को, क्लास रूम में दा़खिल होने के लिये कितनी ही ज़हमत उठानी पड़े। बस मेडमों का यही ख़्याल है, के 'वे यहां ही बैठेगी। क्योंकि यहां से हम अपनी बुलन्द नज़र से, पूरी स्कूल को देखते हुए हर दुख़्तर पर नज़र रख सकती हैं।' अब शमशाद बेग़म आकर, दूध की थैली लाकर, टेबल पर रखती है। बरामदे में राउण्ड काटती हुई बेनज़ीर भी, वहां पहुंच जाती है। और फिर दीवार पर टंगी घड़ी देख कर, बरबस बोल उठती है।)

बेनज़ीर - गजब हो गया, ख़ाला। रिसेस का वक़्त हो गया, और आपने रिसेस की घण्टी नहीं लगायी....आख़िर आप अपने दिमाग़ को, कहां रख कर आ जाती हो?

शमशाद बेग़म- (होंठों में ही) - मैं तो बाज़ आ गयी, इस नौकरी से। यह काम करो, वह काम करो। पहला काम पूरा होता नहीं, और यह फातमा गजब ढाह देती है हुक्म देकर......के, ये करो...वह करो। यहां तो जूतियाँ घिस चुकी है, काम करते-करते। अरी.... ओ अलदूए इसयाँ, ज़रा देख। हम तो ठहरी ब्लड प्रेसर की मरीज़, इधर आ रहे हैं चक्कर पे चक्कर। पाँवों में ताकत रही, नहीं। हायऽऽ अल्लाह। कभी.....दुःखी होकर, खुदक़शी ना कर लूं ? क्या करूं ? ये बेरहम मोहतरमा तो ठहरी, अफ़सर । आख़िर, शिकस्त तो मेरी ही होगी.....। फिर क्या ? हारना, मुझे ही है। इसका, क्या जाता है ? यह तो ठहरी, शैतान की चलती-फिरती तस्वीर।

(फिर क्या ? बेचारी शमशाद बेग़म पहले के जूठे कपों को तश्तरी में रख कर, नल के नीचे रखने के लिये क़दम बढ़ाती है। सोचती है,

कप नल के नीचे रख कर, वहीं पड़े लोहे के डण्डे से लगा दूंगी घण्टी। दो बार चलना न होगा, मुझे। मगर हाय री बदक़िस्मती, बेनज़ीर के कड़वे बोल गूंज उठते हैं।)

बेनज़ीर - क्याऽऽ बुद बुदा रही हो, मेरी अम्मा ? अबे क्या, शौहर के जिन्न की छाया लग गयी क्या ? चलो, यहीं टेबल पर वापस रख दो, तश्तरी।

(बेचारी शमशाद बेग़म, आख़िर क्या करती ? नीम की पत्तियों के माफ़िक बड़ी बी की कड़वी आवाज़ सुनकर, वह पास रखी टेबल पर तश्तरी रख देती है।)

शमशाद बेग़म- हुजूर, चाय बनाने के पहले बरतन धुल जाते तो......

बेनज़ीर - जाओ, पहले घण्टी लगाओ.....भाड़ में जाय, चाय। पहला फर्ज़ है, स्कूल का काम करना....समझी ?

(फिर क्या ? बेचारी ग़रीब की जोरू करती, क्या ? घण्टी लगाने के लिये, क़दम बढ़ा देती है।)

(रूंआसी शमशाद बेग़म लोहे का डण्डा उठा कर, घण्टी लगाती है। फिर जाकर चाय बनाने के लिये चाय-फानिज़ के डब्बे सम्भालती है।)

शमशाद बेग़म- (रूंआसी शमशाद बेग़म का दिमाग़ काम नहीं करता, वह फानिज़ के डब्बे के स्थान पर, नमक का डब्बा उठा लेती है) - काम हो गया, हुजूर। (डब्बे को देख कर) हायऽऽ अल्लाह। इस चैं...चैं...मैं...मैं की वज़ह, अभी फानीज़ की जगह नमक डाल देती चाय में।

(नमक का डब्बा रख कर, वापस फानिज़ के डब्बे की ओर हाथ बढ़ाती है। तभी, टेबल पर रखी तश्तरी दिखायी दे जाती है। फिर उसे उठाकर, नल के नीचे रख आती है। अब चाय व फानिज़ डब्बों से निकालकर, भगोने में डालती है।)

बेनज़ीर - दिल की आग को ठण्डी करो, बीबी। औरत का आली दिमाग़ होता है, सब कुछ सहते हुए तहज़ीब व तमीज़ ना भूलना

ही औरत की मजिंल है। लाहौल विल कूवत...मुझसे नराज़गी रखने वाले लोग कहते हैं, के तुम तो 24ख़ानम हो.....

शमशाद बेग़म- ख़ानम हो तो लोगों का क्या गया, क्या आप उनके घर की रोटी खाती हैं?

बेनज़ीर - पहले सुन लिया करो, ख़ाला। फिर, बोलना। वे कहते हैं, आटा, दाल व लूण-लकड़ी के बारे में क्या समझती हो ? मगर मैं कहती हूँ, मैं [23]दुख़्तरेख़ानः हूं। बच्चों को पढ़ाना और उन्हे इल्म देना मेरी [32]दुख़्तरे रज़ है, इसका मुझे नाज़ है।

([27]दमे आब का एक घूंट पीकर, माथै का पसीना पोंछते हुए बेनज़ीर आगे कहती है।)

बेनज़ीर - मैने अपने मरहूम अब्बा की सच्चे मन से ख़िदमत की है, ख़ाला ज़ान। अरेऽऽ ख़ाला, उनको नहाना-धुलाना से लेकर उनके पाख़ाने तक को साफ़ किया है मैने। इस ज़माने में बेटे होते हैं, माँ-बाप के लाडले......

शमशाद बेग़म- मगर ख़िदमत करने के वक़्त हो जाते हैं, गधे के सींग की तरह गायब।

बेनज़ीर - अरी ओ अल्लाह की पाक नमाज़ी, हमने तो बेटी होकर यह सब काम किया है। जो काम, बेटे को करना चाहिये। क्या ग़लत किया है, मैने ? जो बेटे माँ-बाप को भूल जाते हैं, जिन्होने पैदा किया है उन्हे..

(इतना कहकर बेनज़ीर चुप हो जाती है, ग़मगीन होकर छत्त को देखने लग जाती है। फिर जाकर कुर्सी पर बैठ जाती है। मगर, ये ख़ाला ज़ान चुप रहने वाली कहां ? जो मसाला दाऊद मियां के पास आसानी से नहीं मिल पाता, वही मसाला आज़ बड़ी बी से मुफ़्त में जो मिल रहा हो ? ख़ाला को और चाहिये, क्या ? बस, हफ़्वात करने का मसाला। अब वह चाय तैयार करती हुई, बरबस कहने लगती है।)

शमशाद बेग़म- (चाय तैयार करती हुई) - हुजूर। बेटे तो माँ-बाप की ज़ायदाद का हक रखते है, जनाब। क्या आपके अब्बा हुजूर, बेटों के साथ नहीं रहते थे ? फिर, आप कहां रहती हैं ?

बेनज़ीर - (सीरीयस होकर) - कौन नेक दख़्तर करता है, ख़िदमात ? बस ये भाई तो शादी के बाद, बीबी को लेकर हो गये अलग। बस, आज़कल इस ख़िलक़त की यही तहज़ीब ठहरी। अब, समझ गयी ख़ाला।

शमशाद बेग़म- समझ गयी, हुजूर। यह मकान आपके अब्बा हुजूर ने बनाया होगा ?

बेनज़ीर - ऐसा नहीं है, अब्बा हुजूर की दुआ से हमने अपनी मेहनत की कमाई से यह नीड़ तैयार किया है। अकेले ही, इस मकान में अब्बा हुजूर को रखकर उनकी ख़िदमत की है मैने। अब उनके इन्तिकाल के बाद, इस मकान में अकेले ही रहती हूँ। जहां, मेरे अब्बा हुजूर की यादें जीवित है।

(चाय तैयार हो चुकी है, अब शमशाद बेग़म चाय को चीनी के प्यालों में डालती है।)

बेनज़ीर - ख़ाला अब बोलो, मै अकेले रहकर अपना जीवन बसर कर रही हूँ......इसमें, मेरा क्या दोष ? ये 28ख़िलवत पसन्दी मेरी ज़िन्दगी बन गयी है, ख़ाला। मैं शुक्रगुजार हूं सरकार की, जिन्होने इस जिन्दगी को गुज़ारने का जरिया मुझे दे दिया......

शमशाद बेग़म- ऐसा कौनसा जरिया है, हुजूर ?

बेनज़ीर - वह जरिया है, बड़ी बी की कुर्सी। अब, फिर क्या ? बच्चियों को अच्छी तालीम देना ही, मेरा मक़सद बन गया। फर्ज़ को निभाते हुए किसी को कुछ कहना भी पड़े, उसके लिये मैं 21मुख़्ती नहीं।

(अब तक बेचारी शमशाद बेग़म इतनी लम्बी तकरीर सुन कर, परेशान हो गयी। सोचने लगी, इस चाय के काम से कब फ़ारीग़ होगी ? आख़िर चाय से भरे प्याले तश्तरी में रखकर, सबको सर्व

करने के लिये क़दम आगे बढ़ा देती है। मगर बेनज़ीर का, चुप रहने का कोई सवाल नहीं। तकरीर को बढ़ाते हुए, कहने लगी।)

बेनज़ीर - दबीस्ते सियासत को चलाने के लिये स्टॉफ़ को बुरा-भला कहना ही पड़ेगा, चाहे ये मुख़्तारेकार नाराज़ हो या ख़ुश ? कहना तो पड़ेगा ही....यह कुर्सी मेरे वालिद की नहीं.....जो मैं, इनसे घर का काम लेती हूँ।

(इतना कहकर बेनज़ीर ग़मगीन हो जाती है। शमशाद बेग़म चाय का प्याला बड़ी बी के पास रखकर, तश्तरी लिये दाऊद मियां के कमरे की तरफ़ बढ़ जाती है। तश्तरी लिये, वह दाऊद मियां के कमरे में दाख़िल होती है। जहां सरयू बीबी स्कूल की मेडमों के साथ बैठ कर, लंच ले रही है। सरयू बी इस स्कूल की 15दफ़्तरनिगार ठहरी। जो अकसर मेडमों के साथ बैठना ज़्यादा पसन्द करती है। शेरखान साब ठहरे, लाइब्रेरियन। जिन्हे दाऊद मियां से हफ़्वात करना, अच्छा लगता है। जो अभी, दाऊद मियां के पहलू में बैठे हैं।

अब चाय का प्याला थमाती हुई, शमशाद बेग़म उन दोनों को कहती है।) े

शमशाद बेग़म- (चाय का प्याला थमाती हुई) - लीजिये, साहेबान। अब, आप बैठे-बैठे चाय की चुश्कियां लीजिये । हमारा तो पेट आलिमा की तकरीरें सुनकर, भर चुका है। हायऽऽ अल्लाह। घर पर शौहर-ए-आज़म का फरमाइशी प्रोग्राम सुनते हैं, और स्कूल में बड़ी बी का।

(अब वह दाऊद मियां के पास रखी कुर्सी पर बैठ जाती है, वहां टेबल पर रखी अपनी थैली से सेरीडोन की गोली निकालती है। फिर, टेबल पर रखे जग से आबे जुलाल का एक घूण्ट लेकर, गोली को गिटती है।)

शमशाद बेग़म- (जग वापस टेबल पर रखती हुई) - ए पीर दुल्ले शाह बाबा, यह गोली ली है... शायद सर-दर्द ठीक हो जाय। अब गोली वापस गिटनी नहीं पड़े, बस बाबा ऐसी मेहरबानी कर देंगे तो तुम्हे सदका करूं... प्रसाद की रेवड़ियां, फ़क़ीरों को बांट दूंगी।

(एक दुख़्तर कमरे में, दाख़िल होती है।)

दुख्तर - (शमशाद बेग़म से) - ख़ाला ज़ान। आपको बड़ी बी बुला रही है। आप, जल्दी आना।

(दुख़्तर लौट जाती है, दुख़्तर की बात सुनकर दाऊद मियां के पास बैठे मियां शेरखान हंसते हैं ठहाका लगाकर। फिर क्या ? दाऊद मियां तपाक से, ताना मारते हुए कहते हैं।)

दाऊद मियां - हम फ़क़ीर लोग, कहीं ज़ाने वाले नहीं। ख़ाला, आप फ़िक्र ना करें। बस अप तो तशरीफ़ रखे, ना तो तूफ़ान आ जायेगा।

(शमशाद बेग़म रूख़्सत होती है, जाफ़री में बैठी बेनज़ीर उसको देखते ही हुक्म सुना देती है।)

बेनज़ीर - जाओ। सलमा मेडम को बुला लाओ।

शमशाद बेग़म- अभी लंच ले रही हैं, हुजूर। बाद में, बुला लाऊंगी।

बेनज़ीर - (अांखें तरेर कर) - हुक्म अदूली ना करो, ख़ाला। जाओ इसी वक़्त....

(शमशाद बेग़म वापस लौटती है, उसे कमरे में दा़खिल होते देख, सभी मेडमें खिल खिला कर हंस पड़ती है। और इनके साथ, दाऊद मियां के कहकहे तो दीवारों को गूंज़ा देते है। अब सलमा मेडम लबों पर मुस्कान बिखेरती हुई, शमशाद बेग़म से कहती है।)

सलमा बी - लगता है, ख़ाला दवाई लेकर आ गयी है। क्यों, ख़ाला ?

शमशाद बेग़म- (गुस्से में) - क्या कहा, मेडम आपने...दवाई लाना क्या ? पीकर भी आ गयी। अब आपको बुलाया है, अब आप दवाई पीकर आ जायें। जाइये...जाइये, कहीं देर की तो इन्जेक्शन ना लगवाना पड़े आपको ? फिर क्या ?

दाऊद मियां - जाइये...जाइये, मेडम। दो मिनट में आपका चिकनगुनिया बुख़ार हो जायेगा गायब, हमेशा के लिये।

सरयू बी - (रोटी का कोर मुंह में डालकर) - हायऽऽ अल्लाह। यह क्या ? परवरदीगार तूने इस बेनज़ीर को बड़ी बी ना बनाकर, तुमने तो इसे जल्लादों की ख़ाला की मंजूषा बनाकर रखी है।

थकीहारी सलमा बी यदि दो कोर रोटी मुंह में डाल देती, तो मेरी अम्मा तेरा क्या जाता ?

शमशाद बेग़म- अल्लाह मियां के घर में, इन्साफ़ है......क्या मुंह दिखलाओगी, वहां जाकर ? (सर से नीचे गिरे पल्लू की ओर इशारा करती हुई) अरे अभी तो सर से गिरे रिदका से, वापस ढक लो अपना सर। न तो यह बेरहम.....

(सरयू बी उठ कर, अपना पल्लू सर लेती है। इधर, सलमा बी कहने लगती है।)

सलमा बी -ज़ाने दीजिये, सरयू बी। उसे रहम नहीं आता तो क्या ? अल्लाहताआला सब कुछ देख रहा है, तब इन [19]आलामेरोज़गार से क्या डरना ?

(सलमा बी रूख़्सत होती है, उधर बाहर जाफ़री में बैठी बेनज़ीर अब आक़िल मियां को आवाज़ देती है। मगर वे वहां हाज़र ना होकर, वहीं से वापस जवाब दे देते हैं "मेडम केश तैयार है, आप

तशरीफ़ रख सकती है।" अब सलमा बी, बेनज़ीर के क़रीब पहुंच जाती है।)

सलमा बी - क्या हुक्म है, मेडम ?

(बेनज़ीर आंखें तरेरकर, सलमा बी को देखती है। फिर, कहती है।)

बेनज़ीर - आप बैठ जाइये।

(उनके पास कुर्सी खिसकाती है। फिर खड़िया (चॉक) लेने आई दुख़्तर को, आवाज़ देकर पास बुलाती है।)

बेनज़ीर - अरी ओ नेक दुख़्तर। ज़रा, सलमा मेडम को पानी पिलाना। (उठती है) ज़रा आती हूं, वापस।

(बेनज़ीर जाती है, दुख़्तर पानी से भरा लोटा लेकर आती है। उसे सलमा बी को थमाती है, सलमा बी पानी पीकर वापस लोटा दुख़्तर को लौटाती है। दुख़्तर खड़िया लेकर, अपनी क्लास में चली जाती है। अब शमशाद बेग़म चाय के जूठे बरतन इकट्ठे करके, उन्हे नल के नीचे रखती है। फिर क्या ? मुक़्तज़ाए फ़ितरत वापस दाऊद

मियां के कमरे में लौट आती है, और पानी के साथ वापस सेरीडोन की गोली गिटती है। अब मोहतरमा, हथेली पर जर्दा और चूना मिला कर सुर्ती तैयार करने बैठ जाती है।)े

शमशाद बेग़म- (दाऊद मियां और शेरखान साहब को सुर्ती थमाती है) - सुर्ती थामिये, हुजूर। (अब दोनों अपने होंठ के नीचे, सुर्ती को दबाते हैं। इधर अब सुर्ती फांक कर, 35बेदिली से शमशाद बेग़म कहने लगती है) घर में रहूं तो दुःख, स्कूल में आती हूं तो यह बेनज़ीर लाद देती है दुखों का पहाड़।

शेरखान - हिम्मत रखो, ख़ाला। ऐसे कह देने से, दुःख ख़त्म नहीं होते।

शमशाद बेग़म- क्या करूं, बाबजी ? उससे 30बेपनाह इस 36बेबक़ा जिस्म से 29बेनियाज़ हो गयी, या ख़ुदा अब उठा ले.....मुझ34दुदस्त दुखी इंसान को, निज़ात दिला दे क़ब्र में।

दाऊद मियां - (पीक थूक कर) - अपने-आप को 30बेपनाह मत समझो, ख़ाला। जिसका कोई नहीं, उसका ख़ुदा है। 37बेदिरेग

बयान कर दिल को तसल्ली दे दीजिये ख़ाला, 35बेदिली से निज़ात मिल जायेगी।

(अब थैली से खाने का सट निकाल कर, मेज़ पर रखती है। फिर उसे खोल कर, रोटी का टुकड़ा सब्जी में डूबा-डूबा कर खाने लगती है। अब वापस अपनी बात, जारी कर देती है।)

शमशाद बेग़म- हुजूर, आपके इन दो अल्फ़ाज़ से इस दिल को तसल्ली मिली। कुछ चैन मिला, अब अेक रोटी प्याज़ के साथ खा लेती हूं। आख़िर ज़िन्दा रहने के लिये, इस बेबक़ा जिस्म को दो रोटी की ज़रूरत रहती है।

दाऊद मियां - गला घोंटकर या जहर पीकर मर ज़ाना ख़ुदक़शी कहलाती है, जो दोज़ख़ की पहली सीढ़ी है। ख़ाला, क़यामत के दिन ख़ुदा को जवाब देना है।

शमशाद बेग़म- (सरयू बी की तरफ़ देख कर) - बीबी, आपने खाना खा लिया ?

सरयू बी - (अपनी अलमारी से आम के अचार की शीशी निकाल कर, शमशाद बेग़म को थमाती है) - हमारा दस्तरख़ान तो ख़ाला, चाय के पहले लग जाता है। लीजिये ख़ाला, आम का अचार घर का बना है...बहोत टेस्टी है।

(शमशाद बेग़म, आम का अचार लेती है।)

दाऊद मियां - क्या हुआ था, ख़ाला ? आप कुछ कहना चाहती थी ? आप तो बेदिरेग बयान करें, बड़ी बी इधर आने वाली नहीं। आक़िल मियां के पास गयी हुई है।

शेरखान - उनका मगज़ खाना, कोई आसान काम नहीं। वे तो ऐसे है जनाब, हर मुद्दे पर आले दर्जे की तकरीर पेश करते हैं। बेख़ौफ़ रहे आप, वहां तो तकरीरों के तीर चलते होंगे।

शमशाद बेग़म- हुजूर। [32]आली ज़र्फ़ हैं, आप। ना तो कहां हिम्मत होती, मुझमें ? ये ग़म भरी बातें, आपके सामने रखने की ? हुजूर, आपको कहकर अपना दिल हल्का करती हूं। घर के कई वाकये होते है, जिन पर आपकी राय.......

दाऊद मियां - कहो, ख़ाला कहो। चुप क्यों हो ?

शमशाद बेग़म- आप तो ज़ानते हैं, उस छोटी दुख़्तर रजिया को ? जनाब, उसका मर्द कमाता-धमाता नहीं। वह तो 32दुख़्तरे रज पीने का आदी हो गया। रजिया की सास व ननद तो हुजूर, शैतान की ख़ाला निकली.....बेचारी को रोटी के लिये, तरसाती रहती है। हद हो गयी, एक बार....

दाऊद मियां - बोलो...बोलो ख़ाला, आप बेख़ौफ़ कह सकती हैं।

शमशाद बेग़म- हायऽऽ ख़ुदा। क्या, कहूं आपसे ? रजिया ने अपने ख़ाविन्द को ख़ाली, कमाने का ही कहा। बस, फिर क्या ? वे दोनों माँ-बेटी 33बेनियाम होकर, पिल पड़ी बेचारी रजिया पर। चोटी पकड़ कर, घसीटा और लेकर आ गयी आंगन में।

शेरखान - आगे क्या हुआ, ख़ाला ?

शमशाद बेग़म- तब बेचारी रजिया ने अपने बचाव में, उनका हाथ झटक क्या दिया ? हायऽऽ अल्लाह। उस ज़ालिम बुढिया ने मोहल्ले

के लोगों को इकठ्ठा कर, सुनाने लगी के....देखो रेऽऽ, इस छोरी ने मेरे ऊपर हाथ उठाया है......

दाऊद मियां - (बात पूरी करते हुए) - यही कहा होगा उसने, इस छोरी को ना तहज़ीब ना तमीज़ इसकी कुंजड़ी माँ ने सीखायी है। फिर क्या हुआ, ख़ाला ?

शमशाद बेग़म- यही कहा, हुजूर। बस इतना सुनते ही, रजिया आग बबूला हो गयी और फट पड़ी.......कहने लगी "अरी ओ निखट्टू की अम्मा....शैतान की ख़ाला। तुम्हारे घर में तामचीनी की पतीली तक नसीब नहीं, तुम्हारा भाई कन्धो पर बोरियां लादते-लादते कुकड़ू कू बना फिरता है.....'

दाऊद मियां - अरे ख़ुदा। क्या, ज़माना आ गया ? एक मेहनती व ख़ुद्दार औरत पर, सरासर झूठी तोहमत ? आगे कहो, ख़ाला। क्या हुआ ?

शमशाद बेग़म- रजिया ने आगे कहा 'मेरी माँ के आली तबार से काहे बराबरी करती हो ? अह कुंजड़ी नहीं, तुम्हारे जैसे दस

मिनख़ों को खाना खिला सकती है, वह ठहरी सरकारी मुलाज़िम। (अ◌ा◌ंखों में आये अश्कों को, पोंछती है) फिर क्या ? घमासन लड़ाई छिड़ गयी, मियां।

दाऊद मियां - रोओ मत, ख़ाला। इन आंसूओं को जाया ना करो, ये बड़े क़ीमती है।

शमशाद बेग़म- अब आगे क्या कहूं, मियां ? वह तो रजिया थी समझदार, सीधी रेल में बैठ कर पहुंच गयी यहां। और पीछे-पीछे उसका मर्द आ गया, निक्कमा कहीं का। अब आगे क्या बयान करूं, मियां ? यहां चार जनों का पेट तो भरना, मुश्किल।

शेरखान - बहुत तकलीफ़ देख रही हो, ख़ाला। फिर कुछ किया, आपने ?

शेरखान - अब इस नये मेहमान की आवभगत करना, हमारी औकात नहीं। खाना खिलाऊँ.....इसके मर्द को रोज़गार दिलाऊँ, क्या-क्या करूँ....मियां ? हायऽऽ अल्लाह। पास पैसे नहीं, घर में नहीं है दाने और अम्मा चली भुनाने ?

(इतना कहकर, शमशाद बेग़म चुप हो जाती है। चारों तरफ़ सन्नाटा छा जाता है, दीवार पर टंगी घड़ी देख कर वह उठती है। फिर क्या ? बेचारी, घण्टी लगाने चली जाती है। थोड़ी देर में, मंच की रोशनी लुप्त हो जाती है।)

(३)

(मंच रोशन होता है, जाफ़री का मंजर समने आता है। जहां सलमा बी व बेनज़ीर, कुर्सियों पर बैठी है। अब शमशाद बेग़म आकर, लोहे का डण्डा उठाती है...फिर जाकर घण्टी लगाती है। डण्डा रखने के बाद, वापस वह उनके नज़दीक आती है।)

बेनज़ीर - (शमशाद बेग़म से कहती है) - सुना दी.....पूरी दास्तान ? या, अभी कुछ बाकी है ? याद है, आपको ? हॉल साफ़ करना है, फिर ख़करोब के घर ज़ाना है......बाद में। अभी तक, वह ख़करोब निखट्टू आया नहीं। अब आप, यहां खड़ी क्यों हैं ?

शमशाद बेग़म- हुजूर, ज़रा...

बेनज़ीर - जाइये...जाइये अपना काम कीजिये.....क्यों बेतकल्लुफ़ में यहां खड़ी हैं ?

(शमशाद बेग़मझाड़ू लेने टी क्लब की टेबल के पास जाती है, मगर कमरें में बैठे आक़िल मियां की बुलन्द नज़र से वह बची नहीं रह सकी। झट उसे आवाज़ देकर, बुलाते है कमरे में।)

शमशाद बेग़म- (अन्दर आकर) - हुक्म दीजिये, हुजूर।

आक़िल मियां - केश बुक तैयार है, ख़ाला। (केश बुक देते हुए) लीजिये, बड़ी बी के दस्तख़त करवा लाओ। फिर वापस आकर कमरे का लॉक लगा देना, मुझे रूख़्सत होना है।

शमशाद बेग़म- ज़रा अलील है, पैसों की ज़रूरत है....पाँच सौ रूपयों का बन्दोबस्त हो सकता है, हुजूर ?

(इतना कहकर वह केश बुक वापस मेज़ पर रख कर, वह टी टेबल की ओर बढती है। वहां रखी थैली से अपनी डायरी निकालती है। तब तक, मियां आक़िल कहां ठहरने वाले ? वे झट केश बुक ख़ुद उठाकर, दस्तख़त करवाने के लिये बड़ी बी के पास चले जाते हैं।

फिर उनकी मेज़ पर केश बुक रख कर, पास रखी कुर्सी पर बैठ जाते है। वहां अभी तक बेनज़ीर व सलमा बी के बीच, गूफ़्तगू चल रही है।)

सलमा बी - (बेनज़ीर से) - आप ज़ानती है, बड़ी बी ? मेरी सास बीमार है....इधर चिकुनगुनिया बुख़ार के कारण, मैं घुटनों के दर्द से परेशान हूं।

बेनज़ीर - सरकारी हुक्म है, मोहतरमा। आपको, तामील करना ही होगा। आप, एक जिम्मेवार सरकारी मुलाज़िम ठहरी। आपके सिवाय, इस स्कूल में गाईड टीचर है कौन? बोलिये...बोलिये। फिर....आ़खिर जायेगा कौन, बच्चियों को लेकर जम्बूरी में ?

(सहसा उसकी फ़राख़ नज़र, निठ्ठली खड़ी शमशाद बेग़म पर गिर जाती है। फिर क्या ? झट, हुक्म दे मारती है।)

बेनज़ीर - अरी ओ, ख़ाला ज़ान। जाओ दाऊद मियां को कह दो, के जम्बूरी में सलमा बी जायेगी। उनका रिलीविंग ओर्डर तैयार कर के, मेरे पास लेते आयें।

(हेड ऑफिस से आया ख़त, जिसमें श्रीनगर में जम्बूरी लगने की इतला और बच्चियों को लाने व गाईड टीचर को कैम्प में हाज़िर करने का हुक्म लिखा था। वो पेपर, शमशाद बेग़म को थमाती है। अब काग़ज़ लेकर, शमशाद बेग़म जाती है।)

बेनज़ीर - हाँ सलमा बी, मैं कह रही थी, के यह स्कूल जन्नत की कोलोनी नहीं है। यहां मेहनत करनी पड़ती है, कई सुख-आराम छोड़ने पड़ते है....तब कहीं जाकर, यह सरकर दो पैसे हाथ में रखती है। देखो मुझको, मैं इस नौकरी के लिये क्या-क्या नहीं करती हूँ ? सुबह चार बज़े....

सलमा बी - (बेमन से) - बड़ी बी। मुझे....

बेनज़ीर - (तपाक से) - चुप रहो, बीबी। पहले सुनो, कह रही थी....चार बज़े उठने के बाद, नहा-धो कर खाना बनाती हूँ। फिर नमाज़ अत्ता करती हूँ, इसके बाद इस स्कूल में सुबह छः बज़े आ जाती हूँ। फिर क्या ? घर जाती हूँ, तब घड़ी में बज़ जाते हैं शाम के छः।

सलमा बी - मेडम, ज़रा सुनिये....

बेनज़ीर - बाद में सुन लूंगी, पहले बोलो बीबी.. मेरा जिस्म, आराम करना नहीं चाहता...? क्या मेरा दिल नहीं होता, के अपने माँ भाई-बहनों से मिल कर आऊँ ? मगर करें, क्या ? हमारा पहला उसूल है, इन बच्चियों को तालीम देना। जब हम खुद तालीमयाफ़्ता हैं, तब ये बच्चियां हमसे ही कुछ सीखेगी।

(आक़िल मियां उठते है, रूख़्सत होने के लिये। फिर जाकर कमरें से अपना बेग लेकर आ जाते हैं। बेग को कुर्सी पर रख कर वे कुछ चाहते हैं, मगर बेनज़ीर उन्हे बोलने का कोई मौक़ा नहीं देती है। तभी, शमशाद बेग़म लौट कर आ जाती है।)

बेनज़ीर - (आक़िल मियां से) - कहां ज़ाने की तैयारी हो रही है, जनाब ? अभी पाँच बज़ने में काफ़ी वक़्त है। (तभी खिड़की के पास रखे, फ़ोन की घण्टी बज़ उठती है।) जाइये, उठाइये फ़ोन। न ज़ाने, किसका फ़ोन आया है ?

(आक़िल मियां उठकर, फ़ोन एटेण्ड करने जाते हैं। फिर फ़ोन पर आवाज़ सुनकर, शमशाद बेग़म को आवाज़ देते है। फ़ोन का चोगा शमशाद बेग़म को थमाकर, वापस बेनज़ीर के पास चले आते हैं।)

आक़िलमियां - (बेनज़ीर से) - ख़ाला की दुख़्तर, रजिया का फ़ोन है। अब, बड़ी बी। ज़रा केश बुक पर दस्तख़त कर दीजिये ना, फारीग़ हो जाऊँगा....बड़ी बी, बहोत देर हो चुकी है।

बेनज़ीर - (लबों पर मुस्कान लाकर) - जनाब। पहले कुर्सी पर बेठिये तो सही....(तल्ख़ी से) खड़े क्या हो ? बैठ जाओ। (चॉक ले जाती दुख़्तर को आवाज़ देती है) अरी ओ नेक दुख़्तर। ज़रा, बड़े बाबूजी को पानी पिलाना। दिन-भर काम करते-करते, थक गये बेचारे।

(दुख़्तर पानी पिला कर, चली जाती है। चोगा क्रेडिल पर रख कर, शमशाद बेग़म आती है।)

शमशाद बेग़म- (बेनज़ीर से) - हुजूर। रजिया का फ़ोन था, कह रही थी के....अम्मीज़ान। जल्दी, घर आ जाओ। अब्बूज़ान की तबियत, नासाज़ है। अब 24दमेतस्लीम चाहती हूँ.........(थैली उठाती है।)

बेनज़ीर - (नाराज़गी से) - जाइये....जाइये, मोहतरमा। अब तो सभी ज़ाने का ही कहेंगें....कोई ऐसा नहीं है, जो रूकने का नाम लेवे ? आख़िर हम बैठे है, ना स्कूल में ? (थोड़ी सीरीयस हो जाती है) देखो ख़ाला। ज़ाने के पहले तौफिक मियां को फ़ोन कर देना, कहना बड़ी बी ने अभी बुलाया है।

शमशाद बेग़म- और कुछ कहना है, मेडम ?

बेनज़ीर - और साथ में यह ज़रूर कहना, के छुट्टी होने कें बाद.....स्कूल के सारे दरवाज़ों के ताले आप लगाओगे। यह भी याद दिला देना, जब तक आप यहां तशरीफ़ नहीं रखेंगे.......बड़ी बी, स्कूल में ही बैठी रहेगी।

(सलमा बी जाती है, शमशाद बेग़म चोगा उठा कर नम्बर डायल करती है।)

आक़िल मियां - (बेनज़ीर से) - तौफिक मियां को ना बुलाओ, बड़ी बी। आपकी मेहरबानी होगी। वे बेचारे सुबह की पारी में, ड्यूटी दे चुके हैं। इधर ठहरा, रमज़ान का पाक महीना। रोज़ह रखने वाले मोमीन को तकलीफ़ देने से, अल्लाहताआला भी ख़फ़ा हो जाते हैं।

बेनज़ीर - देखिये, आप अपना काम कीजिये। फ़ुजूल में, स्कूल के कामों में दख़ल देना अच्छा नहीं।

आक़िल मियां - हुजूर, आज़ जुम्मा अलग है। जुम्मे की नमाज़ अत्ता होने तक, रोज़ह खोलने का वक़्त हो जायेगा। बेचारे....

बेनज़ीर - (गुस्से में) - बोलिये, क्या आप दरवाज़े बन्द करवा देंगे ? जनाब से काम तो होता नहीं, फिजूल बीच में बोल कर वक़्त जाया करते हैं। जाइये, अपना काम कीजिये। अब केश बुक में दस्तख़त, कल करूंगी। आपको मैं रोकूगी नहीं, आप शाम के पाँच बज़े के बाद स्कूल से रूख़्सत हो सकते हैं।

(इतना कहकर बेनज़ीर उठ जाती है, और बिना आवाज़ किये बिल्ली की तरह चुपचाप दाऊद मियां के कमरे के बाहर....बिल्कूल

दरवाज़े से सट कर खड़ी हो जाती है। कमरे में दाऊद मियां व सलमा बी के बीच गुफ़्तगू चल रही है, और मियां शेरखान कुर्सी पर बैठे नीन्द ले रहे हैं।)

दाऊद मियां - (सलमा बी से) - सलमा बी। इस जोलिन्दःबयाँ से बचने का एक ही रास्ता है बस, मेडिकल छुट्टी। अर्जी घर जाकर, भेज देना।

सलमा बी - जनाब। गाईड का चार्ज क्या ले लिया, हमने ? अब ना तो घर में चैन, ना रहा स्कूल में चैन। बार-बार ये कम्बख़्त ट्रेनिंगे....मिटिगें ? इन सबके कारण, मेरी एक तिहाई छुट्टियाँ कुरबान हो चुकी है। ख़ुदा रहम। बस, अब इस जोलिन्दःबयाँ से निज़ात दिला दे मेरे मोला।

दाऊद मियां - इतना ग़म मत करो, सलमा बी। अल्लाह पर भरोसा रखो, वो कोई रास्ता दिखायेगा।

सलमा बी - (ग़मगीन होकर) - क्या करूं, दाऊद मियां ? यह मोहतरमा तो ख़ंजर लिये, मेरी छुट्टियों को हलाल करने.....पीछे पड़ी है। या मेरे मोला, कुछ कर। ना तो यह नेक बन्दी......

(तभी, बेनज़ीर अन्दर दाख़िल हो जाती है।)

बेनज़ीर - (हंस कर) -42आली नज़र वालों। हम बेतुकी बातें करने वाले, ज़ालीम जालीन्दःबयाँ हैं। (सलमा बी से) सलमा बी। आपके 31आलिफ़ जर्फ दिल़ वाले दाऊद मियां, अभी आपको रिलीविंग ओर्डर देंगे। (दाऊद मियां से) सुन रहे हो, मियां ? मैं क्या कह रही हूँ ?

दाऊद मियां - (प्योन बुक में रिलीविंग ओर्डर डाल कर, सलमा बी को थमाते हैं।) - क्यों नहीं मेडम, क्यों नहीं ? अभी यह दिया इनको, और क्या ? आख़िर दफ़्तरे आज़म की कुर्सी पर, हम किस लिये बैठे हैं ?

(सलमा बी दाऊद मियां का ऐसा व्यवहार पाकर, उन्हें जहरीली नज़रों से देखती है। बेनज़ीर रूख़्सत होती है.....थोड़ी देर बाद,

बाहर बरामदे में बेनज़ीर के ठहाके गूंज उठते हैं। उनके ठहाकों की आवाज़ सुन कर, जाफ़री में बतिया रही मेडमें डर कर क्लासों में घुस जाती है। ऐसा मंजर देख कर, शमशाद बेग़म घबरा जाती है। ख़ुदा ज़ाने, अब आगे क्या होगा ? कहीं ज़ाने की इजाज़त, केन्सल ना हो जाय ? यह सोच कर, थैली उठाये उल्टे पाँव स्कूल के मेन-गेट की तरफ़ बढ़ती है। इस तरह शमशाद बेग़म को जल्दबाज़ी में क़दमबोसी करते देख, सामने वाली किराना स्टोर के दुकानदार मनु भाई शमशाद बेग़म को पीछे से आवाज़ लगाते हैं। शमशाद बेग़म के रूकने का, कोई सवाल नहीं। मगर पीछे मुड़ कर, वह ज़ोर से चिल्लाती हुई कह बैठती है।)

शमशाद बेग़म- (पीछे मुड़ कर) - भागोऽऽ भागोऽऽ...। जोलिन्दःबयाँ......कहीं आ ना जाय ?

(मंच की रोशनी, लुप्त हो जाती है।)

कठिन शब्द -०ः 1 तवस्सुत : बीच की राह, 2 तशक़्क़ुक़ : फटना, 3 तल्ख़गो : कटु भाषी, 4 मुक्तज़ाए फ़ितरत : स्वाभाव का तकाज़ा 5 मुख़त्विफ़ : त्रासक, डराने वाला, 6 मुख़ातबात : ख़तोकिताबत, परस्पर बातचीत 7 बोलिदःबयां : उलझी-उलझी बातें करने वाला, 8 निशस्त : गोष्ठी, बैठक, 9 नियाज़मन्द : आज्ञाकारी, 10 नियोश : सुनने वाला, 11 निश्तर : शल्य क्रिया 12 दुख़्तर : लड़की, बेटी, 13 निफ़्रीं : लानत, 14 दमबदम : हरदम, 15 दफ़्तरनिगार : लिपिक, 16 दस्तअन्दाजी : बाधा डालना, 17 दमकश : मौन, 18 दमे चन्द : थोड़ी देर, 19 आलिमेरोज़गार : सांसारिक कष्ट, 20 मुग़ल्लज़ात : गन्दी गालियाँ, 21 मुख़्ती : कसूरवार, 22 मुख़्बिरे सादिक : सच्ची ख़बर देने वाला, 23 दरखुरे अर्ज : कहने योग्य, 24 दमे तस्लीम : आज्ञा चाहना, 25 दुख़्तरेख़ानः : ख़ानम, ऐसी लड़की जिसकी शादी नहीं हुई हो, 26 फ़ानिज़ : शक्कर, 27 दमे आब : पानी का एक घूण्ट, 28 ख़ल्वत पसन्दी : अकेला जीवन पसन्द करने वाली, 29 बेनियाज़ : जिसे किसी से कुछ लेने की इच्छा नहीं, 30 बेपनाह : जिससे रक्षा ना हो सके, बेअमान, 31 आली जर्फ : बड़े दिल वाले 32 दुख़्तरे रज : शराब, 33 बेनियाम : गुस्से में बेकाबू, 34 दुदस्तः : दोनों तरफ़ 35 बेदिली : उदासी, 36 बेबक़ा : नश्वर, 37 बेदिरेग़ : बिना संकोच के, 38 आलिमेकुल : सब कुछ ज़ानने वाली, 39 दबिस्तान : स्कूल की ठौड़, 40 दस्तावर : दस्त लगाने वाली दवाई, 41 दस्तगिरिफ़्त : जिसे साहयता दी हो, 42 आली नज़र रखने वाले : बुलन्द नज़र रखने वाले, 43 : जैलदार : निम्न कोटि का राज्य कर्मचारी, 44 ख़करोब : कचरा उठाने वाला, सफ़ाई कर्मचारी, 45 अबसारों : आंखें, 46 मुरस्सा श्रृंगारित, अलंकृत,--------------------------------------

दबिस्तान-ए-सियासत (उर्दु हास्य नाटक) राक़िब दिनेश चन्द्र पुरोहित, ई मेल

dineshchandrapurohit2@gmail.com